

ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨਿਵਰਸਿਟੀ ਪੇਪਰਬੈਕਸ

# ਪੰਜਾਬੀ ਸੀਖਿਓ

ਸੀਤਾਰਾਮ ਬਾਹਰੀ



ਪਬਲਿਕੇਸ਼ਨ ਬਯੂਰੋ  
ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨਿਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ

# ਪੰਜਾਬੀ ਸੀਖਿਏ

ਸੀਤਾਰਾਮ ਬਾਹਰੀ

SIKHBOOKCLUB.COM



ਪਬਲਿਕੇਸ਼ਨ ਬ੍ਯੂਰੋ  
ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ



पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला

**PUNJABI SIKHIYE (Hindi)**

*by*

**DR. SITARAM BAHARI**

**M.A., M.O.L., Ph.D.,**

**Reader, Language Department,  
Punjabi University, Patiala**

**ISBN 81-7380-818-X**

**2002**

**कापियाँ : 1100**

**मूल्य : 200-00 रुपये**

**लेजर टाईप-सेटिंग : यैसनैन ग्राफिक्स, पटियाला**

---

**प्रो. के. एस. सिद्धू, रजिस्ट्रार, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला द्वारा प्रकाशित तथा  
राम प्रिंटोग्राफ, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।**

## आमुख

इस विश्वविद्यालय में पंजाबी के विकास-कार्यों की बहुमुखी योजनाओं में से एक विशेष योजना है—पंजाबी भाषा को लोकप्रिय बनाना और विविध भाषाओं के माध्यम से पंजाबी सीखने के लिए पुस्तकें तैयार करवाना।

डा. सीताराम बाहरी, ने पिछले वर्ष उर्दू के माध्यम से पंजाबी सीखने वालों के लिए पुस्तक लिखी थी 'पंजाबी पढ़ाई लिखाई'। इस का प्रकाशन पंजाबी युनिवर्सिटी ने अगस्त 1967 में किया था। मुझे हर्ष है कि हमारे भाषा-विज्ञान विभाग के इसी लेखक ने हिन्दी भाषा-भाषियों के लिए 'पंजाबी सीखिए' पुस्तक बहुत परिश्रम से तैयार की है।

इस पुस्तक में पंजाबी और हिन्दी के उच्चारण, शब्द-भण्डार तथा व्याकरण की समानताओं एवं विषमताओं पर विशेष प्रकाश डाला गया है। इसमें गुरुमुखी लिपि सीखने के लिए सात विशेष वैज्ञानिक पाठ दिए गए हैं। पंजाबी भाषा की गठन और वाक्यों की संरचना को ध्यान में रख कर 29 विशेष पाठ हैं, किन्तु व्याकरण के नियमों का अभ्यास परोक्ष रूप में करवाया गया है। अंत में पंजाबी संरचना के विशेष नियम, पंजाबी हस्तलेखों के नमूने, पंजाबी-हिन्दी शब्द-कोश एवं सहायक सामग्री के विवरण दिए गए हैं।

13 अप्रैल, 1968 के शुभ दिन से पंजाब के सभी सरकारी कार्यालय अपने काम-काज राजभाषा पंजाबी के माध्यम से करने लगेंगे। ऐसे अवसर पर इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक का प्रकाशन विशेष अभीष्ट है।

जो व्यक्ति हिन्दी के माध्यम से पंजाबी सीखना चाहते हैं उनके लिए यह पुस्तक काफी उपयोगी सिद्ध होगी। ऐसी मेरी आशा है।

कृपाल सिंह नारंग

पंजाबी युनिवर्सिटी पटियाला

उप-कुलपति



SIKHBOOKCLUB.COM

## विषय विवरणिका

|                                                  | पाठ | पृष्ठ |
|--------------------------------------------------|-----|-------|
| <b>प्रस्तावना</b>                                |     | 1     |
| <b>खण्ड 1 पंजाबी वर्णों एवं चिह्नों का परिचय</b> |     |       |
| 1. पंजाबी वर्णमाला                               | ... | 1     |
| 2. पंजाबी अक्षरों का अभ्यास                      | ... | 2     |
| नागरी से गुरमुखी                                 | 1   | 2     |
| गुरमुखी से नागरी                                 | 2   | 3     |
| गुरमुखी से नागरी                                 | 3   | 4     |
| 3. पंजाबी अक्षरों के नाम                         | ... | 4     |
| 4. हिन्दी वर्णमाला और गुरमुखी रूपान्तर           | ... | 5     |
| 5. देवनागरी और गुरमुखी अक्षरों की तुलना          | ... | 6     |
| 6. सावधानी की आवश्यकता                           | ... | 6     |
| 7. गुरमुखी मात्राएं                              | ... | 7     |
| उ ऊ एवं ओ के लिए                                 | 1   | 8     |
| अ आ ऐ एवं औ के लिए                               | 2   | 9     |
| इ ई एवं ए के लिए                                 | 3   | 10    |
| 8. देवनागरी के अन्य अक्षरों के पंजाबी रूपान्तर   | ... | 10    |
| 9. पंजाबी के चिह्न-विशेष                         | ... | 11    |
| <b>खण्ड 2 पंजाबी उच्चारण की कुछ विशेषताएं</b>    | ... | 15    |
| <b>खण्ड 3 पंजाबी लिखना सीखिए</b>                 |     |       |
| सीधी, आड़ी और वक्र रेखाओं पर आधारित वर्ण         | 1   | 34    |
| ढलती वक्र रेखाओं पर आधारित वर्ण                  | 2   | 35    |
| संपूर्ण ढलती वक्र रेखाओं पर आधारित वर्ण          | 3   | 36    |
| मिश्रवक्र रेखाओं पर आधारित वर्ण                  | 4   | 37    |

|                                              |   |    |
|----------------------------------------------|---|----|
| आगे पीछे दोनों ओर वक्र रेखाओं पर आधारित वर्ण | 5 | 38 |
| गोल वक्र रेखाओं पर आधारित वर्ण               | 6 | 40 |
| गोल वक्र मिश्रित रेखाओं पर आधारित वर्ण       | 7 | 42 |

#### खण्ड 4 पंजाबी संरचना

|                                          |    |    |
|------------------------------------------|----|----|
| प्रश्नवाची शब्द                          | 1  | 45 |
| प्रश्नवाची वाक्य                         | 2  | 46 |
| विशेषणों का प्रयोग                       | 3  | 47 |
| सरल साधारण वाक्य                         | 4  | 48 |
| (हैं—एक वचन, हैं—बहु वचन)                | 5  | 49 |
| सी, सन, (था, थे), का प्रयोग              | 6  | 51 |
| दा, दे, दी (का, के, की) का प्रयोग        | 7  | 53 |
| आज्ञार्थ क्रिया पद                       | 8  | 55 |
| कुछ नये वाक्य                            | 9  | 57 |
| होणा (होना) के रूप : वर्तमान एवं भूत काल | 10 | 59 |
| भविष्यत् काल (होणा से)                   | 11 | 61 |
| कुछ नये शब्दों के प्रयोग                 | 12 | 63 |
| कुछ प्रश्नवाची वाक्य                     | 13 | 65 |
| साधारण भविष्यत्                          | 14 | 67 |
| साधारण भविष्यत् के नये वाक्य :           | 15 | 69 |
| वर्तमान कृदन्त के प्रयोग                 | 16 | 71 |
| अतिरिक्त वाक्य                           | 17 | 73 |
| भूत कृदन्त के प्रयोग                     | 18 | 75 |
| भूतकाल के रूप                            | 19 | 77 |
| भूत काल के और रूप                        | 20 | 79 |
| दुहराई                                   | 21 | 81 |
| गुणवाचक विशेषण                           | 22 | 82 |
| विस्मयादि बोधक                           | 23 | 84 |
| रहणा के प्रयोग                           | 24 | 85 |
| संयुक्त क्रियाएं : सकणा, चुकणा           | 25 | 87 |
| पैणा (पड़ना) के प्रयोग                   | 26 | 89 |

|                                                         |    |     |
|---------------------------------------------------------|----|-----|
| कुछ और संयुक्त क्रियाएं                                 | 27 | 91  |
| पंजाबी में कर्म वाक्य                                   | 28 | 94  |
| वाक्य विशेष                                             | 29 | 96  |
| <b>खण्ड 5 पंजाबी बात चीत</b>                            |    | 99  |
| 1. जाण पछाण                                             |    | 100 |
| 2. सतकार                                                |    | 103 |
| 3. छुट्टी लई प्रार्थना                                  |    | 106 |
| 4. ओपरे बन्दे नाल                                       |    | 108 |
| 5. रिकशे वाले दे नाल                                    |    | 110 |
| 6. फल वाले दे नाल                                       |    | 111 |
| 7. बज़ाज़ दी दुकान ते                                   |    | 113 |
| 8. मां पुत                                              |    | 116 |
| पंजाबी बात चीत के प्रसंगों का हिन्दी रूपांतर            |    | 119 |
| <b>खण्ड 6 हिन्दी से भिन्न शब्द-निर्माण की विशेषताएं</b> |    | 130 |
| <b>खण्ड 7 हस्तलेख एवं साहित्यिक नमूने</b>               |    |     |
| (क) पंजाबी हस्तलेख                                      |    | 153 |
| (ख) कुछ साहित्यिक रचनाएं                                |    | 175 |
| <b>खण्ड 8 शब्द-कोश</b>                                  |    |     |
| (क) हिन्दी-पंजाबी सामान्य शब्दावली                      |    | 183 |
| (ख) पंजाबी में प्रचलित अंग्रेजी शब्द                    |    | 196 |
| (ग) पंजाबी की विशेष शब्दावली                            |    | 199 |
| <b>परिशिष्ट : सहायक सामग्री</b>                         |    |     |
| 1. पंजाबी पुस्तकें                                      |    | 212 |
| 2. पंजाबी पत्र पत्रिकाएं                                |    | 213 |
| 3. पंजाबी फ़िल्में                                      |    | 213 |
| 4. पंजाबी ग्रामोफ़ोन रिकार्ड                            |    | 214 |
| 5. विविध                                                |    | 215 |

## भाषाएं सीखिए

‘जिस तरह इन्द्र धनुष के विभिन्न रंग होते हैं उसी तरह भारत की भी विभिन्न भाषाएं हैं। इन्द्र धनुषी रंग एक दूसरे से मिलते जुलते हैं, इसी प्रकार कहीं कहीं दो तीन भाषाओं का मिश्रण होता है। इसी लिए ऐसी जगह के लोगों को दो तीन भाषाओं का अच्छा परिचय होना चाहिए। इस से ज्ञान प्राप्त होगा, बुद्धि का विकास होगा। एक दूसरे की भाषा सीखने से प्रेम बढ़ेगा। प्रेम बढ़ाने के जितने साधन हैं उन्हें हमें अपना लेना चाहिए।’

—संत विनोबा

भाषा सीखना तथा भाषा जीना एक दूसरे से भिन्न है तो आश्चर्य नहीं। प्रत्येक भाषा अपने ज्ञान और भाव की समृद्धि के कारण ग्रहण करने योग्य है, परन्तु अपनी समग्र रागात्मक तथा बौद्धिक सत्ता के साथ जीना अपनी सांस्कृतिक भाषा के संदर्भ में ही सत्य है।

मानव-व्यक्तित्व जैसे प्राकृतिक परिवेश से प्रभावित होता है, उसी प्रकार उसकी भाषा भी अपनी धरती के प्रभाव ग्रहण करती है और यह प्रभाव की भिन्नता का कारण हो जाता है। परन्तु भाषा सम्बन्धी बाह्य भिन्नताएं पर्वत की अनमिल ऊँची-नीची श्रेणियां न होकर एक ही सागर-तल पर बनने वाली लहरों से समानता रखती हैं। उनकी भिन्नता समष्टि की गति को निरन्तरता बनाए रखने का लक्ष्य रखती है, उसे खण्डित करने का नहीं।

—महादेवी वर्मा



## प्रस्तावना

जिसे आज राष्ट्रभाषा हिन्दी कहते हैं, उसका मध्यकालीन रूप था हिन्दवी। उस के आरम्भिक नमूने पंजाब और हैदराबाद दक्षिण की पुरानी रचनाओं में सुरक्षित हैं।

पंजाब में 1391 ई. से पहले गुज़नवी वंश का शासन लगभग डेढ़ शती तक रहा। हिन्दवी का विकास उसी काल में शुरू हुआ था। लाहौर-निवासी मसऊद सअद सलमान हिन्दवी भाषा का पहला कवि था जिस ने अपना काव्य-संग्रह (दीवान) संकलित किया था। बुरहानुद्दीन जानम, बाबा फरीद शकर गंज, भगत छज्जू आदि सूफियों और संतों की अनेक हिन्दवी रचनाएं पंजाब में प्रचलित रही हैं। यही कारण है कि उर्दू के पश्चात् हिन्दी खड़ी बोली की निकटवर्ती भाषा पंजाबी ही है।

पंजाबी भाषा में तद्भव शब्दावली का जो भंडार मिलता है वह अन्य भारतीय भाषाओं में विरले ही होगा। कई पंजाबी शब्दों में प्राकृत और अपभ्रंश काल की भाव-भंगिमा और रंग-रूप विद्यमान है। इस भाषा का जो साहित्य मुसलमानों ने लिखा है वह प्रायः फारसी लिपि में है और जो साहित्य सिखों एवं हिन्दुओं ने लिखा वह अधिकतर गुरमुखी में है। देवनागरी में बहुत कम पंजाबी साहित्य विकसित हुआ, जबकि गुरमुखी लिपि सिंधी भाषा के लिए भी 19वीं शती तक प्रचलित रही। गुरुगोबिन्द सिंह के प्रोत्साहन से ब्रजभाषा और खड़ी बोली में अनेक काव्य-ग्रन्थ लिखे गए थे जिनकी लिपि गुरमुखी थी। हिन्दी वाले इस लिपि में अनभिज्ञ होने के कारण इस सुन्दर साहित्य से पूरा पूरा लाभ नहीं उठा सके। हिन्दी के अपने क्षेत्र में भी उस काल के कवियों ने इतने उत्तम प्रबन्ध-काव्य नहीं रचे जितने पंजाब में रचे गए, यथा

|                    |   |                 |
|--------------------|---|-----------------|
| गुरु प्रताप सूर्य  | : | भाई सन्तोष सिंह |
| नानक चन्द्रोदय     | : | गणेशा सिंह बेदी |
| जनमेजय का नाग यज्ञ | : | टहकण कवि, आदि   |

पंजाबी भाषा का अध्ययन उस भाव-राशि का परिचय करा सकता है जिस के कारण पंजाब का सूफीवादी काव्य, सिख गुरुओं की अमृत बाणी और आधुनिक काल का मल्प-साहित्य प्रसिद्ध रहा है। पंजाबी में लिखित बाबा फरीद के सलोक; गुरु नानक के शब्द; शाह हुसैन एवं बुल्हे शाह की काफियां; वारस शाह की 'हीर'; भाई वीर सिंह का गद्य पद्य; प्रो. मोहन सिंह, अमृता प्रीतम और प्रीतम सिंह सफ़ीर का आधुनिक काव्य; नानक सिंह, कर्तार सिंह दुग्गल एवं संत सिंह सेखों का गल्प-साहित्य; ईश्वर चन्द्र नंदा, बलवंत गार्गी एवं कर्तार सिंह दुग्गल का नाटक साहित्य हिन्दी वाङ्मय को भी नयी, चाशनी और नयी सुगंधि दे सकता है।

बहुत सा पंजाबी लोक-साहित्य लिपि-बद्ध हो चुका है। पंजाबी का अध्ययन इव बहुमूल्य निधि का द्वार भी खोल देगा। पंजाब की वीरता, कुशलता और उदारता के सुन्दर दर्शन पंजाबी पढ़ कर ही प्राप्त हो सकते हैं। जिन्हें अपने देश की भाव-एकता प्रिय है वे सदा प्रादेशिक भाषाएं भी सीखने की उत्सुकता रखेंगे। किन्तु खेद की बाह है कि जितनी लगन और जागरूकता हम अंग्रेजी सीखने सिखाने में दिखाते हैं उतनी अपनी प्रादेशिक भाषाओं के लिए नहीं दिखाते। यह सच है कि इन भाषाओं में जो स्नेह और प्रकाश के चित्र मौजूद हैं, जो लोकमानस के आदर्श रूपमान हैं वे विदेशी भाषाओं के अध्ययन से भासित नहीं हो सकते।

भारत के प्रहरी पंजाब प्रदेश की भाषा सीखने की दिशा में सक्रिय प्रयत्न करना हिन्दी-भाषियों का सुखद कर्तव्य ही है। यह भी देशदर्शन का एक सुन्दर उपाय है।

पंजाबी भाषा का विकास उस भू-भाग में हुआ है जहां इतिहास के उषा-काल में वेद की ऋचाएं गुंजती रहीं। उत्तर पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) के सुदूर नगरों से लेकर सिंध और राजस्थान की सीमाओं तक, चम्बा कुल्लू आदि पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर यमुना तट तक लगभग तीन करोड़ व्यक्ति पंजाबी बोलते हैं और हजारों पंजाबी लोग उक्त क्षेत्र के बाहर जीवन यापन करते हैं। पंजाबी सैनिक और व्यापारी विदेशों में भी इस भाषा की सुगंधि फैलाते रहे हैं। बरमा, मलाया, कैंनेडा, अफ़गानिस्तान, ईरान आदि देशों में कई परिश्रमी पंजाबी आदर और मैत्री-भाव के पात्र बने हैं।

इस पुस्तक का प्रमुख प्रयोजन यह है कि पाठकगण स्वयंसेव सुगमता से पंजाबी भाषा गुरुमुखी लिपि में पढ़ सकें, बोल सकें और लिख सकें। इसी

लिए इस पुस्तक में विविध प्रकार के पाठ दिए गए हैं, और पंजाबी-संरचना का परिचय कराया गया है।

पंजाबी के अनेक वाक्यांश बोलचाल में से संचित किए गए हैं; फिर भी गुरुमुखी लिपि में प्रचलित पंजाबी भाषा का साहित्यिक रूप अधिक महत्व पा गया है।

इस पुस्तक में विशेष प्रयत्न किया गया है कि पाठक पंजाबी में ही सोचने का अभ्यासी बन सके। अतः अन्तिम भाग में पंजाबी में बात-चीत के प्रकरणों के पाद-टिप्पण हिन्दी में नहीं अपितु सरल पंजाबी में लिखे गए हैं। परिशिष्ट में कुछ पंजाबी हस्तलेखों और साहित्यिक रचनाओं के नमूने भी दिए गए हैं।

गुरुदेव डा. सिद्धेश्वर वर्मा और अग्रज डा. हरदेव बाहरी ने इस कृति के संशोधनार्थ अनेक मूल्यवान सुझाव प्रदान किए। उन का आभार शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

28 फरवरी, 1968

भाषा विज्ञान-विभाग

पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला

(डा.) सीताराम बाहरी

SIKHBOOKCLUB.COM

# ਖण्ड 1

## ਪੰਜਾਬੀ ਵਰ੍ਹਾਂ ਏਵੰ ਚਿਹ੍ਨਾਂ ਕਾ ਪਰਿਚਯ

### ਪੰਜਾਬੀ ਵਰ੍ਣਮਾਲਾ

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| ੳ | ਅ | ੲ | ਸ | ਹ |
| ੳ | ਅ | ੲ | ਸ | ਹ |
| ਕ | ਖ | ਗ | ਘ | ਙ |
| ਕ | ਖ | ਗ | ਘ | ਙ |
| ਚ | ਛ | ਜ | ਝ | ਞ |
| ਚ | ਛ | ਜ | ਝ | ਞ |
| ਟ | ਠ | ਡ | ਢ | ਣ |
| ਟ | ਠ | ਡ | ਢ | ਣ |
| ਤ | ਥ | ਦ | ਧ | ਨ |
| ਤ | ਥ | ਦ | ਧ | ਨ |
| ਪ | ਫ | ਬ | ਭ | ਮ |
| ਪ | ਫ | ਬ | ਭ | ਮ |
| ਯ | ਰ | ਲ | ਵ | ੜ |
| ਯ | ਰ | ਲ | ਵ | ੜ |

ਇਸ ਵਰਣਮਾਲਾ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ ਪੈਂਤੀ (ਪੈਂਤੀਸ ਅਕਸਰੀ) ਕਹਿੰਦੇ ਹਾਂ। ਇਸਮੇਂ ਓ, ਅ, ਏ ਦੇ ਸਾਥ ਸਾਥਾਂ ਲਗਾ ਕਰ ਸੁਰ ਲਿਖੇ ਜਾਣੇ ਹਾਂ :

ਅ ਆ ਏ ਈ ਉ ਊ ਏ ਐ ਓ ਐ ਅੰ ਆਂ  
 ਅ ਆ ਈ ਈ ਚ ਚ ਏ ਏ ਐ ਐ ਅੰ ਆਂ

ਪ੍ਰਾਸ਼ਿਕ ਵੰਜਨਾਂ ਮੇਂ /ਸ, ਹ/ (ਊਘ ਧੁਨਿਯੋਂ) ਕਾ ਸੁਥਾਨ ਪੁਰਾਤਨ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਕੇ ਕਾਰਣ ਹੈ। ਓ ਤੋ ਅਓ ਕਾ ਪ੍ਰਤੀਕ ਹੈ। /ਸ/ ਏਵਂ /ਹ/ ਸੋਹੰ (ਅਥਵਾ ਔ ਨਮ: ਸਿਧੁਸੁ) ਕਾ ਸੰਕੇਪ ਹੈ। ਇਸ ਲਿਏ ਇਨ ਵੰਜਨਾਂ ਕਾ ਉਲੇਖ ਆਰੰਭ ਮੇਂ ਹੁਆ ਹੈ। ਅਨੁਤ ਮੇਂ ਙ (ਙ) ਉਤਕ੍ਰਿਸ਼ਟ ਧੁਨਿ ਕਾ ਉਲੇਖ ਹੈ ਜੋ ਭਾਰਤ ਕੀ ਅਨੁਧ ਵਰਣਮਾਲਾਓਂ ਮੇਂ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ।

ਟਿਪਣੀ : 1. ਖ ਏਵਂ ਸ਼ ਕੇ ਲਿਏ ਸ ਚਿਹ੍ਨ ਔਰ ਖ਼, ਗ਼, ਜ਼, ਫ਼ ਕੇ ਲਿਏ ਖ਼, ਗ਼, ਜ਼, ਫ਼ ਚਿਹ੍ਨ ਹਾਂ। ਕ ਧੁਨਿ ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਫ਼ਾਰਸੀ ਸ਼ਬਦੋਂ ਕੇ ਲਿਏ ਕ਼ ਕਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕ੍ਰਿਯਾ ਜਾਤਾ ਹੈ।

2. ਹਿੰਦੀ /ਫ਼/ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ /ਝ/ ਰੂਪ ਮੇਂ ਲਿਖਦੇ ਹਾਂ।

ਖ਼ = ਕ਼; ਜ਼ = ਜ਼; ਗ਼ = ਗ਼

### ਵੰਜਨ ਤਾਲਿਕਾ

|           |   |    |   |   |   |
|-----------|---|----|---|---|---|
| ਕਵਰ੍ਗ     | ਕ | ਖ  | ਗ | ਘ | ਙ |
| ਚਵਰ੍ਗ     | ਚ | ਛ  | ਜ | ਝ | ਞ |
| ਟਵਰ੍ਗ     | ਟ | ਠ  | ਡ | ਢ | ਣ |
| ਪਵਰ੍ਗ     | ਪ | ਫ  | ਬ | ਭ | ਮ |
| ਤਵਰ੍ਗ     | ਤ | ਥ  | ਦ | ਧ | ਨ |
| ਅਨੁਤ:ਰੁਥ  | ਯ | ਰ  | ਲ | ਵ |   |
| ਊਘ        | ਸ | ਸ਼ | ਹ |   |   |
| ਉਤਕ੍ਰਿਸ਼ਟ | ੜ |    |   |   |   |

### ਪਾਠ 1

ਸੀਖਿਏ ਤੋ ਧੇ ਸ਼ਬਦ ਗੁਰਮੁਖੀ ਲਿਪਿ ਮੇਂ ਕੈਸੇ ਹੋਂਗੇ :

|    |      |         |
|----|------|---------|
| ਅਬ | ਸਦਨ  | ਸ ਰ ਸ   |
| ਭਰ | ਸ਼ਰਣ | ਥ ਰ ਥ ਰ |
| ਜਲ | ਨਜ਼ਰ | ਬ ਰ ਕ ਤ |
| ਥਲ | ਨਰਕ  | ਧ ਰ ਤ ਕ |

|      |       |       |
|------|-------|-------|
| ਘਰ   | ਗਰੁ   | ਚ ਸ ਕ |
| ਸਰ   | ਪਗੁ   | ਦ ਸ ਕ |
| ਕਰਪਟ | ਜਲ ਥਲ | ਸ਼ਰਬਤ |
| ਅਦਰਕ | ਸਰਪਟ  | ਅਕਸਰ  |
| ਚਟਪਟ | ਦਰ ਦਰ | ਜਬ ਜਬ |

## ਪਾਠ 2

| 1  | 2     | 3     |
|----|-------|-------|
| ਘਰ | ਮਦਨ   | ਘਰ ਤਕ |
| ਡਰ | ਬਰਕਤ  | ਗੜਬੜ  |
| ਜਲ | ਕਲ ਤਕ | ਜਲ ਭਰ |
| ਚਲ | ਝਟਪਟ  | ਸਚ ਸਚ |
| ਲੜ | ਮਤ ਕਰ | ਹਸ ਹਸ |
| ਦਸ | ਅਜ ਕਲ | ਵਲ-ਛਲ |

ਨਾਗਰੀ ਰੂਪਾਂਤਰ :

ਘਰ, ਡਰ, ਜਲ, ਚਲ, ਲੜ, ਦਸ (10, ਬਤਾ)

ਮਦਨ, ਬਰਕਤ, ਕਲ ਤਕ, ਝਟਪਟ, ਸਚ ਕਰ, ਆਜ ਕਲ (ਆਜਕਲ)

ਘਰ ਤਕ, ਗੜਬੜ, ਜਲ ਸਰ, ਸਚ ਸਚ, ਹਸ ਹਸ (ਹੰਸ ਹੰਸ ਕਰ)

ਵਲ-ਛਲ (ਛਲ ਕਪਟ)

ਧਿਆਨ ਦੇ ਧੜਿਓ :

1. ਮਦਨ। ਵਲ ਛਲ ਮਤ ਕਰ।
2. ਅਜ ਕਲ, ਕਲ ਅਜ ਮਤ ਕਰ।
3. ਹਸ ਮਤ। ਗੜਬੜ ਮਤ ਕਰ।
4. ਸਚ ਸਚ ਦਸ।
5. ਮਦਨ ਮਦਨ। ਘਰ ਚਲ।
6. ਬਰਕਤ। ਘਰ ਤਕ ਚਲ।
7. ਲੜ ਮਤ, ਮਤ ਡਰ।
8. ਝਟਪਟ ਜਲ ਭਰ।
9. ਮਦਨ ਮਦਨ। ਝਟਪਟ ਘਰ ਤਕ ਚਲ।

## ਪਾਠ 3

| 1  | 2    | 3       |
|----|------|---------|
| ਫਲ | ਚਮਕ  | ਸਰਬਤ    |
| ਚਖ | ਦਮਕ  | ਕਲ ਤਕ   |
| ਛਲ | ਨਜ਼ਰ | ਜਲਥਨ    |
| ਗਲ | ਸਰਸ  | ਮਗਰ ਮਗਰ |

## ਹਿੰਦੀ ਰੂਪਾਂਤਰ :

1. ਫਲ, ਚਖ, ਛਲ, ਗਲ (ਬਾਤ)
2. ਚਮਕ, ਦਮਕ, ਨਜ਼ਰ ਸਰਸ, (ਫੁੱਫੀਆ)
3. ਸ਼ਰਬਤ, ਕਲ ਤਕ, ਜਲ ਥਲ ਮਗਰ ਮਗਰ (ਪੀਛੇ ਪੀਛੇ)

## ਧਿਆਨ ਸੇ ਪੜ੍ਹਿਓ :

1. ਫਲ ਚਖ! ਸਰਬਤ ਮਤ ਚਖ!
2. ਮਦਨ ਮਦਨ! ਦਫ਼ਤਰ ਚਲ!
3. ਹਸ ਹਸ ਗਲ ਕਰ!
4. ਝਟਪਟ ਗਲ ਦਸ!
5. ਮਗਰ ਮਗਰ ਮਤ ਚਲ!
6. ਅਜਕਲ ਮਤ ਕਰ!
7. ਦਸ ਦਸ, ਸਭ ਗਲ
8. ਵਲ-ਛਲ ਮਤ ਕਰ!
9. ਬਰਕਤ, ਡਰ ਮਤ!
10. ਸਚ ਸਚ ਦਸ!

## ਪੰਜਾਬੀ ਅਖ਼ਰਾਂ ਦੇ ਨਾਮ

|   |      |   |      |
|---|------|---|------|
| ੳ | ਊੜਾ  | ਢ | ਢੜਾ  |
| ਅ | ਏੜਾ  | ਣ | ਣਾਣਾ |
| ੲ | ਐੜੀ  | ਤ | ਤੱਤਾ |
| ਸ | ਸਰਸਾ | ਬ | ਥੱਥਾ |
| ਹ | ਹਾਹਾ | ਦ | ਦੱਦਾ |
| ਕ | ਕਕਕਾ | ਧ | ਧੱਧਾ |
| ਖ | ਖਖਖਾ | ਨ | ਨੱਨਾ |
| ਗ | ਗਗਾ  | ਪ | ਪੱਪਾ |



|   |       |   |        |
|---|-------|---|--------|
| ਘ | घग्घा | ਛ | फफ्फा  |
| ਙ | ङङा   | ਬ | बब्बा  |
| ਚ | चच्चा | ਭ | भभ्भा  |
| ਛ | छच्छਾ | ਮ | मम्मा  |
| ਜ | जज्जा | ਯ | यय्या  |
| ਝ | झझ्झਾ | ਰ | रारा   |
| ਞ | ञञਾ   | ਲ | लल्ला  |
| ਟ | टँका  | ਵ | वावा   |
| ਠ | ठट्ठा | ੜ | ड़ाड़ा |
| ਡ | डङङा  |   |        |

### हिन्दी वर्णमाला और गुरमुखी रूपांतर

|    |    |   |   |   |    |
|----|----|---|---|---|----|
| अ  | आ  | इ | ई | उ | ऊ  |
| अ  | आ  | ਇ | ਈ | ਉ | ਊ  |
| ऋ  | ए  | ऐ | ओ | औ | अं |
| रि | ऐ  | औ | ਓ | ਔ | ਅੰ |
| क  | ख  | ग | घ | ङ |    |
| क  | ਖ  | ਗ | ਘ | ਙ |    |
| च  | छ  | ज | झ | ञ |    |
| च  | छ  | ਜ | ਝ | ਞ |    |
| ट  | ठ  | ड | ढ | ण |    |
| ट  | ਠ  | ਡ | ਢ | ਣ |    |
| त  | थ  | द | ध | न |    |
| उ  | ਥ  | ਦ | ਧ | ਨ |    |
| प  | फ  | ब | भ | म |    |
| प  | ਫ  | ਬ | ਭ | ਮ |    |
| य  | र  | ल | व |   |    |
| ਯ  | ਰ  | ਲ | ਵ |   |    |
| श  | ष  | स | ह |   |    |
| ਸ਼ | ਸ਼ | ਸ | ਹ |   |    |

ऊपर आ, ऐ, ई, और ऐ, में जो मात्राएं लगी हैं वे बहुत कुछ हिन्दी

की मात्राओं के समान हैं। हिन्दी ू और गुरमुखी ू का अन्तर स्पष्ट है।  
हि. ी, गु. ी, हिन्दी ी गुरमुखी ी का अन्तर भी समझ लेना चाहिए।

ऋ, लृ, लृ अः वर्णों का शुद्ध उच्चारण पंजाबी में नहीं मिलता और न इनके साथ शब्दों का निर्माण हुआ है।

क्ष, त्र, झ, वर्ण वास्तव में संयुक्त अक्षर हैं—क् + ष ; त + र, ज + ञ।  
ऊपर के 45 वर्णों में ये 7 वर्ण मिला कर बावन अक्खरी बनती है।

### देवनागरी और गुरमुखी अक्षरों की तुलना

|    |   |   |   |   |   |
|----|---|---|---|---|---|
| 1. | ग | ग | ट | ठ | ड |
|    | ग | ग | ट | ठ | ड |
| 2. | उ | अ | य | च | छ |
|    | उ | अ | घ | च | छ |
| 3. | ज | ज | झ | ड | ढ |
|    | ज | ज | झ | ड | ढ |
| 4. | द | प | म | ल | र |
|    | द | प | म | ल | र |

पढ़िए :

|    |    |    |       |
|----|----|----|-------|
| ठग | लठ | ठप | टप टप |
| जग | गज | लज | इट पट |
| इट | यर | कल | अटकल  |
| यर | चल | उट | मउलघ  |

### सावधानी की आवश्यकता

|       |       |          |       |
|-------|-------|----------|-------|
| उ = त | उ = उ | उ = ऊ    | उ = ओ |
| उ = ड | ड = ड | ओ = औ    | ओ = ऐ |
| ऐ = ए | ऐ = इ | ਈ = ई    | ट = ट |
| स = स | म = म | ਸ = श, ष |       |
| प = ध | प = प | ਯ = य    |       |
| ब = ब | ਘ = घ | ਅ = अ    |       |
| ध = ख | ਬ = थ | ਪ = प    |       |

|        |       |       |
|--------|-------|-------|
| ਹ = ਫ਼ | ਰ = ਰ | ਕ = ਕ |
| ਫ = ਫ  | ਢ = ਢ | ਝ = ਝ |
| ਨ = ਨ  | ਣ = ਣ | ੜ = ਝ |
| ਡ = ਡ  | ਭ = ਭ | ਤ = ਤ |
| ਝ = ਝ  | ਞ = ਞ | ਵ = ਵ |
| ਕ = ਕ  | ਭ = ਭ | ਉ = ਉ |

ਪੜ੍ਹਿਯੋ :

1. ਖਟ ਪਟ ਮਤ ਕਰ।
2. ਘਰ ਤਕ ਝਟਪਟ ਚਲ।
3. ਮਦਨ। ਚਮਚ ਰਖ।
4. ਟਨ ਟਨ ਮਤ ਕਰ

ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ /ਏ/ ਕੋਈ ਅਕਸਰ ਨਹੀਂ ਹੈ ਅਤ: /ਏ/ ਕੇ ਲਿਏ /ਐ/ ਕਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਸੀਖ ਲੀਜਿਏ।

— — —

## ਗੁਰਮੁਖੀ ਸਾਤ੍ਰਾਏਂ

ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ ਸਾਤ੍ਰਾਏਂ ਕੋ ਲਗਾਂ ਸਾਤ੍ਰਾਏਂ (ਲਗਾਂ, ਮਾਤ੍ਰਾਏਂ) ਕਹਿਯੋ ਐਰ ਇਨ ਕਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਪ੍ਰਾਯ: ਦੇਵਨਾਗਰੀ ਕਾ ਸਾ ਹੀ ਹੋਤਾ ਹੈ, ਯਦ੍ਯਪਿ ਇਨ ਕੇ ਆਕਾਰ ਮੈਂ ਕੁਝ ਅਨ੍ਤਰ ਹੈ :

| ਸਵਰਾਂ ਕੇ ਪੂਰੇ ਰੂਪ | ਸਾਤ੍ਰਾ ਰੂਪ | ਸਾਤ੍ਰਾਓਂ ਕੇ ਨਾਮ | ਦੇਵਨਾਗਰੀ ਰੂਪ |
|-------------------|------------|-----------------|--------------|
| ਅ                 | ਅ          | ਕ               | ਮੁਕਤਾ        |
| ਆ                 | ਆ          | ਕਾ              | ਕੰਨਾ         |
| ਇ                 | ਇ          | ਕਿ              | ਸਿਹਾਰੀ       |
| ਈ                 | ਈ          | ਕੀ              | ਬਿਹਾਰੀ       |
| ਉ                 | ਉ          | ਕੁ              | ਐਕੜ          |
| ਊ                 | ਊ          | ਕੂ              | ਦੁਲੈਕੜੇ      |
| ਏ                 | ਏ          | ਕੇ              | ਲਾਂ          |
| ਐ                 | ਐ          | ਕੈ              | ਦੁਲਾਈਆਂ      |
| ਓ                 | ਓ          | ਕੋ              | ਹੋੜਾ         |
| ਐ                 | ਐ          | ਕੋ              | ਕਨੌੜਾ        |

ਉਦਾਹਰਣ : ਮਲ, ਮਿਲ, ਮੀਲ, ਮੁਲ, ਮੂਲ, ਮੇਲ, ਮੈਲਾ, ਮੇਲੀ, ਮੇਲੀ



7. ਮਦਨ। ਝਟਪਟ ਉਠ।
8. ਚੁਪ ਚੁਪ ਮਤ ਰਹ।
9. ਅਫਸਰ ਕੋਲ ਚਲ।
10. ਸਭ ਕੁਛ ਸਚ ਸਚ ਦਸ।
11. ਦੂਰ ਤਕ ਦੁਖ ਹਨ।
12. ਹਸ ਹਸ ਵਕਤ ਕਟ।

## ਪਾਠ 2

|   |   |   |   |
|---|---|---|---|
| ਅ | ਆ | ਐ | ਓ |
| ਅ | ਆ | ਏ | ਔ |
|   | । | ~ | ~ |
|   | । | ~ | ~ |

### ਧਫਿਯਗਾ :

1. ਮਦਨ । ਐਨਕ ਰਖ
2. ਐਬ ਨ ਰਖ । ਸਚ ਬੋਲ
3. ਆਲੂ ਚਖ । ਜਲ ਛਕ ।
4. ਬਾਬਾ ਬਾਬਾ ਆਖ ।
5. ਮਦਨ । ਪੈਦਲ ਚਲ ।
6. ਆਮ ਰਖ ।
7. ਉਧਰ ਕੋਣ ਹੈ ?
8. ਮਦਨ ਉਧਰ ਹੈ ।
9. ਕੋੜਾ ਫਲ ਮਤ ਖਾ ।
10. ਭੈੜਾ ਮਤ ਬਣ ।
11. ਬੋੜਾ ਬੋਲ । ਸਚ ਸਚ ਦਸ
12. ਐਖਾ ਮਤ ਹੋ ।
13. ਇਹ ਪਾਠ ਸੋਖਾ ਹੈ ।

|      |         |      |             |      |           |
|------|---------|------|-------------|------|-----------|
| ਐਨਕ  | ਏਨਕ     | ਕੋਣ  | ਕੌਯ (ਕੌਨ)   | ਬੋੜਾ | ਥੋੜਾ      |
| ਐਬ   | ਏਬ      | ਕੋੜਾ | ਕੌੜਾ (ਕੜਵਾ) | ਦਸ   | ਦਸ (ਬਤਾ)  |
| ਆਖ   | ਆਖ (ਕਹ) | ਭੈੜਾ | ਭੈੜਾ (ਬੁਰਾ) | ਐਖਾ  | ਐਖਾ (ਤੰਗ) |
| ਪੈਦਲ | ਪੈਦਲ    | ਬਣ   | ਬਯ (ਬਨ)     |      |           |

## ਪਾਠ 3

|   |   |   |   |
|---|---|---|---|
| ਇ | ਈ | ਏ | ਐ |
| ੜ | ੴ | ਏ | ਐ |
| ਿ | ੀ |   |   |

ਪੜ੍ਹਿਆ :

1. ਦਿਨ ਰਾਤ ਇਕ ਕਰ।
2. ਇਕਬਾਲ । ਸਖਤ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰ ।
3. ਗਲੀ ਵਿਚ ਭੀੜ ਸੀ ।
4. ਭੀੜ ਵਿਚ ਬਰਕਤ ਵੀ ਸੀ ।
5. ਤਨ ਮਨ ਧਨ ਅਰਪਨ ਕਰ।
6. ਗੀਤਾ ਦੇਵੀ। ਇਕ ਤਸਵੀਰ ਬਣਾ ।
7. ਇਕਬਾਲ ਕੋਰ। ਈਸਾ ਮਸੀਹ ਦੀ ਤਸਵੀਰ ਬਣਾ।
8. ਨਿਰਮਲਾ। ਸੋਚ ਸਮਝ ਕੇ ਲਿਖ।

**ਸੂਚਨਾ :** ਹਿੰਦੀ-ਪੰਜਾਬੀ ਦੀ ਸਾਮਾਨਤਰ ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ ਜੋ ਪੁਸਤਕ ਕੇ ਪਰਿਸ਼ਿਸ਼ਟ ਭਾਗ ਮੇਂ ਦੀ ਗਈ ਹੈ ਇਸਕਾ ਅਧਯਯਨ ਪਹਲੇ ਹੀ ਕਰ ਲੀਜ਼ਿਏ। ਇਸ ਸੇ ਆਪਕੋ ਯਹ ਅਨੁਮਾਨ ਲਗ ਜਾਏਗਾ ਕਿ ਆਪ ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਪ੍ਰਯੁਕਤ ਕਿਤਨੇ ਸ਼ਬਦ ਪਹਲੇ ਹੀ ਜਾਨਤੇ ਹੈਂ।

|         |         |       |
|---------|---------|-------|
| ਵਿਚ—ਮੇਂ | ਕੁਝ—ਕੁਝ | ਦੀ—ਕੀ |
| ਸੀ—ਥੀ   | ਬਣਾ—ਬਨਾ | ਦੀ—ਭੀ |

## ਦੇਵਨਾਗਰੀ ਕੇ ਅਨਯ ਅਕਸ਼ਰਾਂ ਕੇ ਪੰਜਾਬੀ ਰੂਪਾਂਤਰ

1. /ਲ/, /ਲ/ ਕਾ ਕੋਈ ਪ੍ਰਯੋਗ ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਨਹੀਂ ਹੈ।
2. /ਕ੍ਰ/ ਕੇ ਲਿਏ /ਰਿ/ ਸੇ ਕਾਮ ਚਲਾਯਾ ਜਾਤਾ ਹੈ।  
/ਕ੍ਰ/ ਧ੍ਵਨਿ ਤੋ ਹਿੰਦੀ ਮੇਂ ਭੀ ਵਿਰਲੇ ਹੀ ਮਿਲਤੀ ਹੈ। ਸੰ. ਸ੍ਰੰਭੁਲ: ਅੰਪ. ਸਙਕੁਲੋ ਪੰ. ਸੰਗਲ; ਸੰ. ਨ੍ਰੁਤਯਤਿ, ਅਪ. ਨਚਯਙ > ਪੰ ਨਚਯੇ; ਸੰ. ਪ੍ਰਚਙਤਿ > ਪ੍ਰਾ. ਪੁਚਙਦਿ > ਅਪ. ਪੁਚਙਙ ਪੰ. ਪੁਚਙੇ
3. /:/ ਵਿਸਰਗ ਕਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਢਾਹੇ ਹਿੰਦੀ ਕੇ ਦੁ:ਖ, ਪ੍ਰਾਯ: ਪੁਨ: ਆਦਿ ਸ਼ਬਦਾਂ ਮੇਂ ਯਹ ਪ੍ਰਯੁਕਤ ਹੈ। ਗੁਰਮੁਖੀ ਲਿਪਿ ਮੇਂ ਲਿਖੀ ਸੰਸਕ੍ਰੁਤ ਰਚਨਾਓਂ ਮੇਂ ਵਿਸਰਗ ਕੋ /ਹ/ ਕੇ ਸਪ ਮੇਂ ਵਯਕਤ ਕਿਆ ਗਯਾ ਹੈ।  
/ਖ/ ਵਾਸਤਵ ਮੇਂ ਕ + ਖ ਹੈ ਜੋ ਬਹੁਤ ਸੀ ਬੋਲਿਯਾਂ ਮੇਂ /ਖ/ ਏਵੰ /ਙ/ ਸਾ ਰਹ ਗਯਾ ਹੈ, ਯਥਾ ਖਤ੍ਰੀ, ਙਤ੍ਰੀ < ਙਤ੍ਰਿਯ, ਙਿਨ < ਙਖਿਨ। ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ

प्रायः /क्ष/ को /ख/ में रूपांतरित किया जाता है यथा परीखिया < परीक्षा, सिखिया < शिक्षा, पख < पक्ष आदि। वैज्ञानिक रूप में /ब/ अक्षर भाई कान्ह सिंह ने अपने गुरशब्द रत्नाकर महान कोश में /क्ष/ के लिए दिया है। आजकल /क् ष/ अथवा /क् ष/ से भी काम चलाया जाता है, यथा अपिअक्ष। /ष/ वर्ण को गु. र. म. को.\* में /म/ रूप दिया गया है।

4. /त्र/ को /त्र/ रूप में सुविधा से लिखा जाता है क्योंकि इसका मूल रूप /त्र/ ही है।
5. /ज्ञ/ वास्तव में /ज + ज्ञ/ है, पंजाबी में इसके लिए कोई ध्वनि चिह्न प्रचलित नहीं है चाहे \*गु. र. म. को. में इसके लिए /ए/ रूप दिया गया है। अब तो हिन्दी में भी 'ज्ञान' को 'जान', रूप में लिखने की परिपाटी वर्धा में चल निकली है। उत्तर भारतीय भाषाओं की भांति पंजाबी में यों तो 'गिआन' अथवा 'ग्यान' (गिआन, गजान) रूप मिलते हैं किन्तु जहाँ कहीं पंजाबी लिपि में मूल उच्चारण देना पड़े इसे नूतन रूप में लिखा जा सकता है।

### पंजाबी के चिन्ह-विशेष

1. (°) यह 'टिप्पी' नामक चिह्न ह्रस्व स्वरों अ, ए, उ एवं ए के साथ अनुस्वार ध्वनियों के लिए लगाया जाता है यथा पँध पथ, मिप सिंध, वुँडा, कुँडा।
2. (ˆ) बिन्दी चिह्न अन्य ध्वनियों के लिए प्रयुक्त है, यथा \*घाँदर बाँदर, घी बीं, गोंद गेंद, मैं मैं, गोंद, गोंद, मेंप सोंप।  
जब कभी उ, ऊ अलग अक्षर बनाएं तो इन के साथ भी बिन्दी लगती है—  
उँगली उंगली; उँट ऊंट  
इन चिह्नों के ना लगाने से अर्थों में अन्तर पड़ सकता है :

|        |       |                                |
|--------|-------|--------------------------------|
| आटा    | आवाँ  | मैं आऊँ                        |
| आटा    | आवा   | मिट्टी के बर्तन पकाने की भट्ठी |
| घंगाला | बंगला | भवन                            |

\* गुरमसिंह रतनाकर महान कोश : डाँटी कानु सिंघ नाडा

\* यह भी सच है कि पंजाबी में ण, न, म ध्वनियों के साथ आने वाले स्वर कई बार अनुस्वार ध्वनि भी रखते हैं, यथा मांमां, रांणां, नांनां

|        |      |              |
|--------|------|--------------|
| घगला   | बगला | पंछी विशेष   |
| पेट    | पेंट | रोगन         |
| पेट    | पेट  | उदर          |
| माष्टी | साई  | फकीर, स्वामी |
| माष्टी | साई  | पेशगी, धन    |
| हंडा   | वंडा | बटवा दे      |
| हडा    | वडा  | बड़ा         |
| हंवा   | वंग  | चूड़ी        |
| हवा    | वग   | रेवड़, वर्ग  |
| ठां    | नां  | नाम          |
| ठा     | ना   | नहीं         |
| जां    | जां  | या, जब       |
| जा     | जा   | तू जा        |

3. /ʌ/ इस चिह्न को अधिक (अधिक) कहते हैं। यह दोहरे (द्वित्व) व्यंजनों के लिए प्रयुक्त होता है। अंग्रेजी में इन्हें लम्बे व्यंजन Long Consonants कहने लगे हैं। वास्तव में यह चिह्न व्यंजन की दीर्घता और जोर दिखाता है।

|       |            |      |       |            |
|-------|------------|------|-------|------------|
| पिंठ  | पिट्ठ, पीठ | तँव  | नक्क, | नाक        |
| तँष   | हत्थ, हाथ  | वँच  | कच्च, | कांच (कंच) |
| मिंठी | मिट्ठी     | मीठी |       |            |

इन चिह्न के न लगने से अर्थों में अन्तर पड़ सकता है :

|       |       |                        |
|-------|-------|------------------------|
| वँवा  | कत्था | पान में प्रयुक्त कत्था |
| वषा   | कथा   | कहानी                  |
| पँवा  | पक्का | मजबूत                  |
| पव्वा | पका   | पका दे                 |
| घँचा  | बच्चा | नन्हा बालक             |
| घव्वा | बचा   | बचा दे                 |
| कँद   | कद्द  | ऊँचाई                  |
| कव    | कद    | कब                     |

4. /ʌ/ यह संयुक्त /व/ =र के लिए चिह्न है पड़ू—पत्र, धूम—प्रेम, मीमन—श्रीमान, वूँध—क्रोध, चिड़ू—चित्र आदि। (ऋ) के लिए इस



ਚਿਹ੍ਰੇਂ ਕੇ ਸਾਥ /ੜ/ ਦੀ ਮਾਤ੍ਰਾ ਪ੍ਰਯੁਕਤ ਹੋਤੀ ਹੈ ਧਥਾ ਅਮ੍ਰਤਸਰ ਅਮ੍ਰਿਤਸਰ, ਪ੍ਰਥਵੀ ਪ੍ਰਿਥਵੀ, ਕ੍ਰਪਾਲੁ ਕ੍ਰਿਪਾਲ, ਮ੍ਰਤ੍ਯੁ ਮ੍ਰਿਤ੍ਤੁ, ਫ੍ਰਫ਼ ਦ੍ਰਿੜ੍ਹ ਆਦਿ।

ਹਿੰਦੀ ਕੇ ਉਧ੍ਵ 'ਰ' ਕੇ ਲਿਏ ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਕੋਝੀ ਚਿਹ੍ਰੇਂ ਨਹੀਂ। ਇਸੇ ਪੂਰੇ /ਰ/ ਰ ਕੇ ਰੂਪ ਮੇਂ ਲਿਖਾ ਜਾਤਾ ਹੈ। ਸਵਰ-ਭਕਿਤ ਕੇ ਕਾਰਣ ਇਸ ਕਾ ਉਚ੍ਚਾਰਣ /ਰ-ਅ/ ਦੀ ਭਾਂਤਿ ਭੀ ਹੋਤਾ ਹੈ।

(i) ਤਰ੍ਹਕ ਤਰਕ, ਤਰਕ; ਰਰ੍ਫ਼ ਰਰਫ, ਰਰਫ, ਰਰ੍ਤ ਰਰਤ, ਰਰਤ; ਰਰਮ ਰਰਮ, ਰਰਮ;

(ii) ਰੰਦ ਅਕਸ਼ਰ (syllable) ਕੇ ਆਗੇ ਹਲ ਕਾ ਨਿਸ਼ਾਨ ਨਹੀਂ ਲਗਤਾ ਜੈਸੇ ਰਰਤਾ ਕਰ੍ਤਾ, ਰੁਰ੍ਗਤਿ ਦੁਰਗਤ, ਰੁਰ੍ਗਾ ਦੁਰਗਾ, ਰਚ੍ਰਾ ਰਚਰਾ, ਰਦ੍ਰਾ ਰਦਰਨ, ਦਰ੍ਸ਼ਨ ਦਰਸ਼ਨ, ਰੁਰ੍ਲਭ ਦੁਰਲਭ, ਰਰ੍ਤਮਾਨ ਰਰਤਮਾਨ, ਪ੍ਰਾਰ੍ਥਨਾ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ, ਆਦਿ ਮੇਂ ਧਵਨਿ /ਰ/ ਦੀ ਭਾਂਤਿ ਰੋਲੀ ਜਾਤੀ ਹੈ।

/:/ ਸ਼ਬਦੋਂ ਕੇ ਸੰਕੇਪ ਕੇ ਲਿਏ ਧਹ ਚਿਹ੍ਰੇਂ ਪ੍ਰਯੁਕਤ ਹੈ :

ਡਾ: (ਡਾਕਟਰ), ਪ੍ਰੋ: (ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ), ਮ: (ਸਰਦਾਰ)

ਕਿੰਨ੍ਤੁ (:) ਚਿਹ੍ਰੇਂ ਭੀ ਇਸੀ ਤਰਹ ਪ੍ਰਯੁਕਤ ਹੋਤਾ ਹੈ ਔਰ ਅਰ ਤੋ ਕੇਵਲ ਰਿਰਾਮ ਲਗਾ ਕਰ ਕਾਮ ਚਲਾਧਾ ਜਾਤਾ ਹੈ :

ਪ੍ਰੋ.=ਪ੍ਰੋ., ਡਾ.=ਡਾ., ਮ.=ਮ. ਆਦਿ

/, / ਹਲ ਕਾ ਚਿਹ੍ਰੇਂ ਅਰ ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਭੀ ਪ੍ਰਯੁਕਤ ਹੋਨੇ ਲਗਾ ਹੈ—

ਸਪਸ਼ਟ (ਸਪਸ਼ਟ), ਦੋਸਤ (ਦੋਸਤ) ਆਦਿ।

5. /, / — ਹ

ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਪ੍ਰਾਧ: ਇਸ ਕਾ ਉਚ੍ਚਾਰਣ ਸੁਰ ਕਾ ਸਾ ਹੈ ਜਿਸੇ ਇਸ ਚਿਹ੍ਰੇਂ ਸੇ ਵਯਕਤ ਕਿਧਾ ਜਾਤਾ ਹੈ :

|        |        |              |
|--------|--------|--------------|
| ਕਲ੍ਹਾ  | ਕਲ੍ਹਾ  | = ਲੜਾਝ       |
| ਕਲਾ    | ਕਲਾ    | = ਮਸ਼ੀਨ, ਆਰਟ |
| ਸਨ੍ਹ*  | ਸਨ੍ਹ   | = ਸੇਂਧ       |
| ਸਨ     | ਸਨ     | = ਸਨ, ਸਾਲ    |
| ਗਲ੍ਹ   | ਗਲ੍ਹ   | = ਗਾਲ        |
| ਗਲ     | ਗਲ     | = ਗਾਲ        |
| ਪੜ੍ਹਦਾ | ਪੜ੍ਹਦਾ | = ਪੜ੍ਹਤਾ ਹੈ  |
| ਪੜਦਾ   | ਪੜਦਾ   | = ਪੜ੍ਹਾ      |

\* ਡਾ. ਸਿੰਧੇਸ਼ਵਰ ਰਮਾ ਕਾ ਵਿਚਾਰ ਹੈ ਕਿ ਧਹ ਸੁਰ ਵਾਸਤਵ ਮੇਂ ਪ੍ਰਥਮ ਰ੍ਥਾ ਪਰ ਹੈ ਜਬ ਕਿ ਲਿਖਨੇ ਮੇਂ ਧਹ ਦੂਸਰੇ ਪਰ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਹੈ।

/ਵ/, ਵ

6. /ਰ/ ਰ एवं /ਹ/ ਹ के लिए अतिरिक्त /व/ व व्यंजन भी संयुक्त रूप में पंजाबी में प्रयुक्त होता है :

मृए, स्वाद; मृए, सुलादे; मृए, सवार; मृए, स्वाह; मृए, सुआल;  
आदि। द्वियाक्षर आदि में इसके लिखित रूप दो प्रकार से मिलते हैं :

- |      |           |         |          |         |
|------|-----------|---------|----------|---------|
| (i)  | मृउंउ,    | मृमी,   | मृएवी    | मृवीकार |
|      | स्वतंत्र, | स्वामी, | स्वार्थी | स्वीकार |
| (ii) | मृउंउर,   | मृमी,   | मृएवी,   | मृवीकार |
|      | सुतंतर,   | सुआमी,  | सुआरथी,  | स्वीकार |

SIKHBOOKCLUB.COM

## खण्ड 2

### पंजाबी उच्चारण की कुछ विशेषताएं

मूर्धन्य भाग और ऊपरी अग्र वत्स्य भाग एक तरह से इस भाषा के उच्चारण की तान का केन्द्रस्थल बन गया है।\* इसी लिए पंजाबी उच्चारण और स्वर भंगिमा में कुछ जोश और जोर सा झलकता रहता है। गले के स्नायुओं का तनाव जिह्वा के पिछले भाग को अधिक महत्व देता है। दीर्घस्वर तो अधिक दीर्घ हो गये और ह्रस्व स्वर क्षीण होकर शब्दों के अंत में सूक होते गए हैं। केवल गिने चुने शब्दों के अन्त में ह्रस्व स्वरों की प्रतिच्छाया सी प्रतीत होती है :

वेड़ाव, चारव, नूँह, सेंह, बिछिँकि, आधिआ कि, आदि

#### 1.0 अन्तिम ह्रस्व स्वर का दीर्घीकरण :

/-इ/ > /-ई/

|         |        |        |        |         |          |
|---------|--------|--------|--------|---------|----------|
| शक्ति   | शकती   | सकती   | मुनि   | मुनी    | मुनी     |
| भक्ति   | भगती   | भगती   | पति    | पती     | पती      |
| बुद्धि  | बुद्धी | बुँधी  | कवि    | कवी     | कवी      |
| व्यक्ति | विअकती | विअकती | दृष्टि | द्रिशटी | द्रिष्टी |
| स्थिति  | सथिती  | सथिती  |        |         |          |

#### 1.1 /-उ/ > /-ऊ/

|        |          |          |
|--------|----------|----------|
| साधु   | साधू     | साधू     |
| वस्तु  | वस्तू    | वस्तू    |
| कृपालु | क्रिपालु | क्रिपालू |

\* The Normal Punjabi focus (Tone quality) is against the upper front teeth and this gives a voice of splendid carrying quality. Pecularity : low back tongue and tense muscles of the throat'

—T. Grahme Bailey : *Punjabi Manual & Grammar*, p. 20

2.0 ਅੰਤਿਮ ਹ੍ਰਸ਼ ਸਵਰ ਕਾ ਲੋਪ :

2.1 /-ੳ/ ਕਾ ਲੋਪ

|        |              |
|--------|--------------|
| ਪ੍ਰੀਤਿ | ਪ੍ਰੀਤ        |
| ਯੁਕਿਤ  | ਜੁਗਤ         |
| ਮਤਿ    | ਮਤ           |
| ਬੁਧਿ   | ਬੁਧ          |
| ਸ਼ਾਂਤਿ | ਸਾਂਤ         |
| ਪਤਿ    | ਪਤ, ਪਨਪਤ     |
| ਸੁਨਿ   | ਸੁਨ, ਨਾਰਦਸੁਨ |

2.2 ਅੰਤਿਮ /-ਤ/ ਕਾ ਲੋਪ

|       |                   |
|-------|-------------------|
| ਸਾਧੁ  | ਸਾਧ               |
| ਦਯਾਲੁ | ਦਿਆਲ, ਦਇਆਲ (ਦਯਾਲ) |

2.3 इसी वृत्ति के कारण अकारांत शब्द भी प्रायः व्यंजनांत रह गये हैं :

राम = 'र आ म् अ' को /राम्/ बोलते हैं।

मिर्च = मिर् च अ का अन्तिम /अ/ जब उच्चरित नहीं होता तो 'र च' का 'र अ च' उच्चारण सुविधा-जनक हो जाता है।

3. कई व्यंजन-समूहों में स्वरभक्ति महत्व पा गई है :

|        |       |        |      |
|--------|-------|--------|------|
| वस्त्र | वसुत  | पर्व   | परघ  |
| प्रश्न | पुसुन | गर्म   | गरम  |
| बर्फ   | बरढ   | जन्म   | जनम  |
| शर्म   | सरम   | मन्त्र | मंत  |
| धर्म   | धरम   | इन्द्र | इंदर |
| चक्र   | चकर   | भ्रम   | भरम  |
| पुत्र  | पुंतर | अर्थ   | अरथ  |

इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं :

|     |        |      |         |
|-----|--------|------|---------|
| घरढ | ∠ बर्फ | कघर  | ∠ कब्र  |
| दरद | ∠ दर्द | पुसक | ∠ खुशक  |
| वकु | ∠ वक्त | मुलक | ∠ मुल्क |
| नरम | ∠ नर्म | सुतर | ∠ सूत्र |
| ढसल | ∠ फसल  | सधत  | ∠ सखत   |

रुपिंदर रुपिंदर    ∠    रूपेंद्र    देहिंदर देहिंदर    ∠    देवेंद्र  
रविंदर रविंदर    ∠    रवींद्र    सुरिंदर सुरिंदर    ∠    सुरेंद्र

4. हिन्दी में व्यंजन-समूह (Cluster) अधिक हैं पंजाबी में कम। पंजाबी में जिन व्यंजन-समूहों के साथ दीर्घ स्वर आते हैं उनका उच्चारण हिन्दी का सा होता है (यदि प्रथम व्यंजन/स, श/ न हों) चाहे गुरमुखी लिपि में उन के संयुक्त रूप भली भाँति अंकित नहीं होते :

(i) प्रेम            प्रेम            कर्मों            कर्मों  
दीर्घीकरण दीर्घीकरण    शस्त्रों            शस्त्रों  
वस्त्रों            वस्त्रों            मन्त्री            मन्त्री  
प्राप्तियाँ        प्राप्तिआँ

(ii) पंद्रह            पंद्रह  
मुस्कुरा            मुस्कुरा

अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार और नई उच्चारण रूचि के कारण स एव श के साथ मिलकर आने वाले कई व्यंजन शब्दों के आरंभ में संयुक्त रूप में बोले जाने लगे हैं :

स्पैमल            स्पैमल  
स्पैमल            स्पैमल  
स्पैमल            स्पैमल

### 5.1 कुछ नई ध्वनियाँ

/ल/ यह ध्वनि मराठी के /ल/ वर्ण जैसी है किन्तु साहित्यिक भाषा में इसका उपयोग कम है। पंजाबी बोल चाल में यह /ल/ ध्वनि स्पष्ट रूप में सुनाई देती है।\*

गल्ली    हाली    अभी                    गल    गल    बात  
गल्ली    हाली    हल चलाने वाला    गल    गल    गला  
दल    दल    तरफ                    गली    गली    गली कूचा  
दल    दल    फेर                    गली    गली    सूराख, घाव

- 5.2 /य, ड, ड, प, ड/ अर्थात् /घ, झ, ढ, ध, भ/ ध्वनियाँ पंजाबी शब्दों में विशेष उच्चारण रखती हैं और सुनने में क्षीण /ह/ अथवा अरबी 'ऐन' की भाँति होती हैं। पंजाबी में ये व्यंजन शब्द रूप में महा-प्राण

\* 'ल' बोलते समय जिह्वा निचले दाँतों के साथ रूकती नहीं अपितु कठोर तालू को छू जाती है।

घोष स्पर्श नहीं होते अपितु अघोष अल्प-प्राण के रूप में उच्चारित जाते हैं और इनके साथ आने वाले स्वर नीची उठती सुर में बोले जाते हैं, यथा :

|      |       |      |      |      |      |
|------|-------|------|------|------|------|
| ਘੋੜਾ | ਕੁਹੜਾ | ਕੋੜਾ | ਧੋਖਾ | ਠੋਖਾ | ਤੋਖਾ |
| ਝੋਟਾ | ਯਹੋਟਾ | ਚੋਟਾ | ਭਾਈ  | ਫਾਈ  | ਪਾਈ  |
| ਢੇਲ  | ਢਹੋਲ  | ਟੈਲ  |      |      |      |

\*प्रायः शब्दों के मध्य में अथवा अंत में ये व्यंजन घोष अल्प-प्राण बन जाते हैं, और प्राण के स्थान पर ऊंची गिरती सुर का प्रयोग होता है :

|     |       |      |    |
|-----|-------|------|----|
| ਬਾਘ | ਬਾਹਿ  | ਦੁੱਧ | ਦੁ |
| ਕੁਝ | ਕੁਜ਼ਿ | ਮਭ   | ਮ  |
| ਮਭ  | ਮਬਿ   |      |    |

/-ह-/      /-ह/

- 5.3 शब्दों के मध्य अथवा अंत में आने वाला हर व्यंजन पंजाबी में ढीले स्वर-तन्त्र के साथ उच्चारित होता है। हवा का प्रवाह कुछ तीव्र होता है, नासिका में से श्वास नहीं निकलता, मुंह का आकार आने वाले स्वरों के अनुरूप होता है, इसी लिए ऐसे /ह/ का उच्चारण पंजाबी में क्षीण सा होता है :

|       |      |
|-------|------|
| उगमील | उमील |
| भगमूल | भमूल |

इसी लिए ऐसे /ह/ का स्थान ऊंची गिरती सुर /<sup>॰</sup>/ ले लेती है :

|                          |                        |
|--------------------------|------------------------|
| ਗਹੀ = ਗ <sup>॰</sup> ਈ   | ਨਹੀ = ਨ <sup>॰</sup> ਈ |
| ਬਾਹਰ = ਬਾ <sup>॰</sup> ਰ | ਦਹੀ = ਦ <sup>॰</sup> ਈ |

- 5.4 अन्तिम /-ह/ ध्वनि पंजाबी में व्यंजन रूप में नहीं रही, यह सुर और स्वर में परिवर्तित हो चुकी है। जो क्रिया-पद स्वरांत नहीं है उन के साथ /-दा/ जोड़ कर वर्तमान काल के रूप बनते हैं, यथा डरदा, करदा, नठदा, दौडदा आदि। स्वरांत क्रिया पदों के साथ /-दा/ जोड़ा जाता है, यथा आँदा, जाँदा, सौँदा, रौँदा सूँदी आदि।

बह, उठ, घघ, मठ यदि व्यंजनांत हों तो इन के रूप होते हैं—कहंदा,

\* विस्तार के लिए देखिए पंजाबी भाषा दा व्याकरण : दुनीचंद्र, पृ. 21  
पंजाबी अवाज़ों : डा. बनारसी दास जैन; पंजाबी दुनिया, पटियाला, अगस्त 1951;  
पृ. 37-38

रहंदा, वहंदा, सहंदा किन्तु प्रचलित उच्चारण के अनुसार पंजाबी लिपि में प्रायः /-ह/ की क्षीणता है और उसकी सुर को /इ/ मात्रा से व्यक्त किया जाता है—

वरिंदा, ठरिंदा, घरिंदा, मरिंदा  
कहिंदा, रहिंदा, बहिंदा, सहिंदा

पंजाबी की नई वर्तनी में इन्हें यों लिखने का प्रयास हो रहा है

वरिंदा, ठरिंदा, घरिंदा, मरिंदा

6. पंजाबी के कुछ शब्दों के साथ सुर-प्रयोग से अर्थों में अन्तर आ जाता है। इस लिए इन के सीखने में सावधानी की आवश्यकता है :

सिल—ईंट, सिल्ड सिल A —नमी  
गल—बात, गल A गल्ह—गाल  
मना—बात मना ले, मन A आ मन्हा—वर्जित  
वरना—वर प्राप्त करना, वर A ना वरहना—बरसना

- 7.0 निम्नलिखित शब्दों में अंतिम अक्षर पर बल होने के कारण अर्थों में अंतर पड़ गया है :

दबा तू दबा दे दबाअ = दबाव  
हरा सबज हराअ = हरा दे  
अटका तू अटका दे अटकाअ = अड़चन  
तला तलवा तलाअ = तालाब

अंत में अ केवल उच्चारण की सुविधा के लिए लिखा गया है। प्रायः /उ/ /उि/ लिख कर भी यही अर्थ प्रकट करने का प्रयत्न होता है।

बल एवं सुरों का अभ्यास पंजाबी बोलने वालों द्वारा अथवा रेडियो पर पंजाबी सुन कर हो सकता है।

/अ/ /उ/

- 7.1 बलाघात वाले अक्षरों से पूर्व प्रायः /अ/ ध्वनि पूरे रूप में आती है शेष में यह क्षीण हो जाती है :

घनाठ बज़ार ब अ ज् आ र  
मठवाठ सरकार स अ र् क् आ र  
थठाठा घराणा घ अ र् आ ण् आ

8. /ऐ/

कुछ पंजाबी शब्दों में जब /ए/ के पश्चात दीर्घ स्वर आते हैं तो इस

की ध्वनि कुछ निर्बल पड़ जाती है—

सेव      सूँ औ

उच्चारण सिओ के निकट है, जहाँ 'से' की /ए/ को सुरक्षित रखने का प्रयत्न हुआ है उच्चारण हो गया है—से-अऊ। हिन्दी 'ले आ' पंजाबी में 'लै आ' है किन्तु प्रचलित रूप प्रायः लि-आ हो गया है। 'दे आ' द् ऐ आ जल्दी में 'दि आ' जैसा रह जाता है।

शायद 'घेई' (घी का व्यापारी) बिगड़ कर 'घई' बन गया है। चेऊ (पोटोहारी उप-भाषा में लकड़ी फाड़ने की कील) का उच्चारण च् ऐ अ, ऊ चे अ ऊ अथवा चेऊ जैसा है। कुछ शब्दों में /ए/ ध्वनि /य/ की छाया के कारण आ हो गई है—

'छेआ नित देखहु जगि हंढि'—औअंकार; गुरु नानक। छेआ < क्षय = छअ, छै।

#### 9. पंजाबी में संयुक्त व्यंजनों का समीकरण :

|       |      |          |      |
|-------|------|----------|------|
| अग्नि | अँग  | शब्द     | मँद  |
| अक्षा | अँध  | अदय      | अँत  |
| दुग्ध | दुँप | पुस्तक्य | पेची |
| चक्र  | चँव  | मक्षिका  | मँधी |
| चर्म  | चँम  | सप्त     | मँउ  |
| कर्म  | कँम  | सत्य     | मँच  |
| पृष्ठ | पिँठ | आम       | अँघ  |
| हस्त  | हँध  | ऊर्ण     | उँठ  |
| कर्ण  | कँन  | अष्ट     | अँठ  |
| रक्त  | रँउ  |          |      |

इन शब्दों के पंजाबी रूप वास्तव में हिन्दी रूपों के पूर्वज हैं, किन्तु आज वे जीर्ण क्षीर्ण और ग्रामीण से दीखते हैं।

#### 10.0 हिन्दी और पंजाबी के कुछ शब्दों में अनुनासिकता के कारण अंतर मौजूद है :

|        |      |      |      |
|--------|------|------|------|
| रोठ    | होंट | मुँह | मूँछ |
| पधा    | पंखा | घैउ  | बैत  |
| ह्रिक् | छींक | दाच  | बाँघ |
| ह्रीट  | छींट | हूँक | फूँक |



|       |         |        |         |
|-------|---------|--------|---------|
| छिँका | छीँका   | जट्टा  | जंबाई   |
| नेव   | जोंक    | पमेती  | पंसेरी  |
| ਘੁਟ   | घूँट    | भास    | माँस    |
| दाज़ी | द्राँती | मेवठा  | सैंकना  |
| ਜਾਚ   | जाँच    | मटारठा | संवारना |
| ਤੁਰਤ  | तुरंत   |        |         |

10.1 पंजाबी के कुछ शब्दों में अतिरिक्त अनुनासिक ध्वनियाँ भी प्रयुक्त हैं जो हिन्दी वालों को विचित्र लगती हैं :

|       |        |       |                 |
|-------|--------|-------|-----------------|
| ਹੋਸਲਾ | हौसला  | ਪਾਂਧਾ | पाधा (उपाध्याय) |
| ਮੁੱਲਾ | मुल्ला | ਤੂੰ   | तू              |
| ਚੌਕ   | चौक    | ਕਾ    | काक, कब्बा      |
| ਰੁੜ   | रुई    |       |                 |

पंजाबी में ण, न, म के साथ आने वाले स्वर प्रायः अनुस्वार रखते हैं, यद्यपि लिखने में इसे अंकित नहीं किया जाता, पुरानी पाण्डुलिपियों में बिन्दु /॰/ का चिह्न लिखा मिलता है :

|       |       |      |        |
|-------|-------|------|--------|
| ਰਾਮ   | राम   | ਪਾਣੀ | पाणी   |
| ਸ਼ਾਮ  | शाम   | ਨਾਨਾ | नांना  |
| ਸੁਫਨਾ | सुफना | ਮਾਮਾ | माँमाँ |
| ਜਾਣਾ  | जाणा  |      |        |

11.0 राजस्थानी की भान्ति पंजाबी में /ण/ ध्वनि काफी प्रिय ध्वनि है। इसी लिए हिन्दी और पंजाबी के कुछ शब्दों में अन्तर पड़ गया है :

|       |       |       |       |
|-------|-------|-------|-------|
| ਅਨਜਾਨ | अनजान | ਕੌਨ   | बैठ   |
| ਕਨਕ   | कनक   | ਘਨਾ   | घना   |
| ਕਹਾਨੀ | कहानी | ਘਾਟਨਾ | घंटना |

11.1 ब्रज और हिन्दी में /ण/ एवं /न/ परस्पर बदल जाते हैं और उन के अर्थों में कोई अंतर नहीं आता, किन्तु पंजाबी में अर्थों में भी कई बार अंतर पड़ जाता है :

|      |        |      |            |
|------|--------|------|------------|
| ਪਠ   | बीडा   | ਸੀਨਾ | छाती       |
| ਪਾਣ  | मावा   | ਸੀਣਾ | कपड़े सीना |
| ਕਾਨਾ | सरकंडा | ਮਨ   | मन         |
| ਕਾਣਾ | एकाक्ष | ਮਣ   | 40 सेर     |

12.0 /ਧ/ ਧੁਨਿ ਕੇਵਲ ਆਰੰਭ ਮੇਂ ਪੂਰੀ तरह ਬੋਲੀ ਜਾਤੀ ਹੈ, ਜੈਸੇ /ਧਾਰ/ ਧਾਰ /ਧਕਕਾ/ ਜੱਕਾ /ਧਕੀਨ/ ਯਕੀਨ; ਕਿੰਨ੍ਹੁ ਏਸੇ ਸ਼ਬਦ ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਬਹੁਤ ਕਮ ਹੈ। ਪ੍ਰਾਕ੍ਰਿਤ ਆਰ ਅਪਭ੍ਰਾਂਸ਼ ਕਾਲ ਮੇਂ /ਧ/ ਦੀ ਧੁਨਿ /ਯ/ ਜੈਸੀ ਹੋ ਗਈ ਥੀ ਜੁਗਤੀ ਜੁਗਤੀ ਯੁਕਿਤ; ਜਤਨ, ਜਤਨ ਯਤਨ; ਜੰਦਾ ਜੰਦਾ ਯੰਤ੍ਰ; ਬੀਜ ਬੀਜ ਯੀਰਯ; ਧੀਰਜ ਧੀਰਜ ਯੈਰਯ; ਕਾਰਜ ਕਾਰਜ ਯਾਰਯ; ਜਸ ਜਸ ਯਸ; ਅੱਜ ਅੱਜ ਯਯ; ਜਾਂ ਜਾ ਯਾ

12.1 ਸ਼ਬਦਾਂ ਕੇ ਮਧ੍ਯ ਮੇਂ ਅਥਵਾ ਅੰਤ ਮੇਂ /ਧ/ ਧੁਨਿ ਪ੍ਰਾਯ: /ੜ/, /ਏ/ ਅਥਵਾ /ਏ/ ਕਾ ਸਥਾਨ ਲੇ ਲੇਤੀ ਹੈ ਅਨ੍ਯਥਾ ਸੂਕ ਹੋ ਜਾਤੀ ਹੈ :

|           |        |         |        |
|-----------|--------|---------|--------|
| ਨ੍ਯਾਯ     | ਨਿਆਂ   | ਅਧ੍ਯਾਯ  | ਅਧਿਆਇ  |
| ਮਾਧ੍ਯਵਾਨ  | ਭਾਗਵਾਨ | ਅਵਧ੍ਯ   | ਅਵਸ਼   |
| ਅਧ੍ਯਾਪਕ   | ਅਧਿਆਪਕ | ਸਮਧ     | ਸਮਾਂ   |
| ਕਨ੍ਯਾ     | ਕਨਿਆ   | ਵ੍ਯਾਕਰਣ | ਵਿਆਕਰਣ |
| ਵ੍ਯੰਜਨ    | ਵਿਅੰਜਨ | ਸਮ੍ਧਤਾ  | ਸਭਿਅਤਾ |
| ਅਮ੍ਧਾਸ    | ਅਭਿਆਸ  | ਵਾਕਧ    | ਵਾਕ    |
| ਕ੍ਰਿਯਾ    | ਕ੍ਰਿਆ  | ਕਧੋਂ    | ਕਿਉਂ   |
| ਵਿਧਧ      | ਵਿਸ਼ਾ  | ਨਿਸ਼ਚਧ  | ਨਿਸ਼ਚਾ |
| ਨਿਤ੍ਧਨਿਧਸ | ਨਿਤਨੇਮ | ਸਹਾਧਤਾ  | ਸਹਾਇਤਾ |
| ਨਧਨ       | ਨੈਣ    | ਜਧ      | ਜੈ     |
| ਧਰਿਚਧ     | ਧਰਿਚੈ  | ਧਾਨੀਧ   | ਧਾਣੀ   |
| ਮਾਰਤੀਧ    | ਭਾਰਤੀ  | ਦੇਸ਼ੀਧ  | ਦੇਸੀ   |

12.2 /ਧ/ ਅਰਥਾਤ ਧ ਦੀ ਸੰਧੁਨਿ ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਸੁਨਾਈ ਦੇਤੀ ਹੈ। ਸੰਯੁਕਤ ਧ ਵਿਰਲੇ ਹੀ ਬਚ ਰਹਾ ਹੈ। ਕਹਿਧਾ ਮੇਂ (ਧਾ) ਜੈਸੀ ਧੁਨਿ ਹੈ ਵਰਨ੍ ਪ੍ਧਾਰ ਤੋ ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਪਿਆਰ ਲਿਖਾ ਜਾਤਾ ਹੈ। ਅਨ੍ਧ ਉਦਾਹਰਣ ਦੇਖਿਧੇ :

|         |         |            |            |
|---------|---------|------------|------------|
| ਲੁਧਿਆਣਾ | ਲੁਧਿਆਨਾ | ਹੋਸ਼ਿਆਰਪੁਰ | ਹੋਸ਼ਿਆਰਪੁਰ |
| ਹਥਿਆਨਾ  | ਹਥਿਆਨਾ  | ਅਤੀਅਲ      | ਅਤਿਅਲ      |
| ਭਾਕੀਆ   | ਭਾਕਿਆ   | ਧਨੀਆ       | ਧਨਿਆ       |
| ਮੁਖੀਆ   | ਮੁਖਿਆ   | ਕਵੀਓ       | ਕਵਿਧੋ      |
| ਲੜਕੀਓ   | ਲੜਕਿਧੋ  | ਨਾਇਕ       | ਨਾਧਕ       |
| ਸਹਾਇਕ   | ਸਹਾਧਕ   | ਧਿਆਨ       | ਧਧਾਨ       |
| ਵਿਅੰਜਨ  | ਵ੍ਯੰਜਨ  | ਵਿਅਰਧ      | ਵ੍ਧਰਥ      |
| ਤਿਆਗ    | ਤ੍ਧਾਗ   | ਵਿਆਕਰਣ     | ਵ੍ਧਾਕਰਣ    |

|        |          |         |         |
|--------|----------|---------|---------|
| ਵਪਾਰ   | ਵਪਾਰ     | ਸੁਵਾਸੁਬ | ਸੁਵਾਸੁਥ |
| ਪਿਆਰ   | ਪਿਆਰ     | ਵਿਅਕਤੀ  | ਵਿਅਕਿਤ  |
| ਗੱਦ    | ਗਢ       | ਪੱਦ     | ਪਢ      |
| ਪੰਨ    | ਧਨ੍ਧ     | ਮੁੱਲ    | ਮੂਲ੍ਧ   |
| ਕਰਤੱਵ  | ਕਰਤਵ੍ਧ   | ਕਾਵਿ    | ਕਾਵ੍ਧ   |
| ਦ੍ਰਿਸ਼ | ਦ੍ਰਿਸ਼੍ਧ | ਮੱਧ     | ਮਧ੍ਧ    |
| ਪੁੱਨ   | ਪੁਨ੍ਧ    | ਉੱਦਮ    | ਉਢਮ     |
| ਤੋਲੀਆ  | ਤੋਲਿਧਾ   | ਦਲੀਆ    | ਦਲਿਧਾ   |
| ਭਾਗ    | ਭਾਗ੍ਧ    | ਸਾਹਿਤ   | ਸਾਹਿਧ੍ਧ |
| ਛਾਇਆ   | ਛਾਧਾ     | ਮਾਇਆ    | ਮਾਧਾ    |
| ਕਾਇਆ   | ਕਾਧਾ     |         |         |

13.0 ਕਿਸੀ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਆਰੰਭ ਮੇਂ ਦੋਨੋਂ ਅੱਖਰ ਜਬ ਦੀਰ੍ਧ ਸੁਵਰ ਵਾਲੇ ਹੋਂ ਔਰ ਅੰਤਿਮ ਅੱਖਰ ਪ੍ਰਤਿਬੱਧ ਹੋਂ ਤੋ ਪੰਜਾਬੀ ਉਚਾਰਣ ਪ੍ਰਥਮ ਅੱਖਰ ਕਾ ਸੁਵਰ ਹਸੁਵ ਕਰ ਦੇਤਾ ਹੈ :

|         |       |       |       |
|---------|-------|-------|-------|
| ਆਕਾਸ਼   | ਅਕਾਸ਼ | ਸਾਮਾਨ | ਸਮਾਨ  |
| ਆਸਮਾਨ   | ਅਸਮਾਨ | ਰੁਮਾਲ | ਰੁਮਾਲ |
| ਨਾਰਾਜ਼  | ਨਰਾਜ਼ | ईरान  | ਇਰਾਨ  |
| ਪਾਧਜਾਮਾ | ਪਜਾਮਾ |       |       |

13.1 ਪੰਜਾਬ ਮੇਂ ਪਾਲਿ ਆਦਿ ਪ੍ਰਾਕ੍ਰਿਤੋਂ ਕਾ ਵਹ ਉਚਾਰਣ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਰਹਾ ਜਿਸ ਮੇਂ ਦ੍ਵਿਤ੍ਧ ਵ੍ਧ੍ਯਨ (ਦੀਰ੍ਧ ਵ੍ਧ੍ਯਨ) ਅਧਿਕ ਪ੍ਰਯੁਕਤ ਹੋਤੇ ਥੇ। ਇਸ ਕਾਰਣ ਸੇ ਭੀ ਦੀਰ੍ਧ ਸੁਵਰ ਹਸੁਵ ਹੋ ਗਏ ਹੈਂ :

ਤਿਕ੍ਖਾ, ਤੀਕ੍ਖਾ; ਥਪ੍ਧਣਾ, ਥਾਪਨਾ; ਟਿਕ੍ਕਾ, ਟੀਕਾ; ਆਦਿ

14.1 ਪੰਜਾਬੀ ਦੇ ਕੁਝ ਸ਼ਬਦ ਵਾਸਤਵ ਮੇਂ ਬਹੁਤ ਪੁਰਾਨੇ ਹੈਂ। ਬ੍ਰਜ ਭਾਸ਼ਾ ਨੇ ਅਨ੍ਹੇਂ ਦੀਰ੍ਧ ਸੁਵਰੋਂ ਸੇ ਜੋ ਨਏ ਰੂਪ ਦਿਏ ਵੇ ਹਿੰਦੀ ਮੇਂ ਅਧਿਕ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਹੋ ਗਏ ਹੈਂ ਕਿੰਨ੍ਹੇ ਅਨ੍ਹੇਂ ਦੇ ਪੁਰਾਨੇ ਰੂਪ ਹਰਿਧਾਨਵੀ, ਰਾਜਸੁਥਾਨੀ, ਲਹੰਦੀ ਔਰ ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਸੁਰੱਖਿਤ ਰਹੇ ਹੈਂ :

|       |      |        |        |
|-------|------|--------|--------|
| ਅੱਗੇ  | ਆਗੇ  | ਅੱਧ    | ਆਧ     |
| ਉੱਚਾ  | ਉੱਚਾ | ਤਿੱਖਾ  | ਤੀਕ੍ਖਾ |
| ਮਿੱਠਾ | ਮੀਠਾ | ਫਿੱਕਾ  | ਫੀਕਾ   |
| ਖੁੱਛਾ | ਖੂਛਾ | ਭੁੱਖਾ  | ਭੂਖਾ   |
| ਮੱਥਾ  | ਮਾਥਾ | ਮੁੱਠਣਾ | ਮੂਠਣਾ  |

|        |       |        |       |
|--------|-------|--------|-------|
| ਸਿੱਖਣਾ | ਸੀਖਣਾ | ਸੁੱਕਣਾ | ਸੂਰਣਾ |
| ਰੁੱਖਾ  | ਰੁੱਖਾ | ਕੁੱਖਾ  | ਕੂਬਡਾ |

14.2 इसी प्रवृत्ति के कारण हिन्दी पंजाबी के कई और शब्द भी विभिन्न हो गए हैं :

|        |       |        |            |
|--------|-------|--------|------------|
| ਘੁੱਮਣਾ | घूमना | ਚੱਟਣਾ  | चाटना      |
| ਛਿੱਲਣਾ | छीलना | ਛੁੱਟਣਾ | छूटना      |
| ਟੁੱਟਣਾ | टूटना | ਥੱਪਣਾ  | थापना      |
| ਪੁੱਛਣਾ | पूछना | ਲੁੱਟਣਾ | लूटना      |
| ਲਿੱਪਣਾ | लीपना | ਸੁੱਘਣਾ | सूघना, आदि |

|      |        |        |       |       |       |
|------|--------|--------|-------|-------|-------|
| 14.3 | ਅ > ਆ; | ੲ > ਈ; | ੳ > ਊ |       |       |
| ਅੱਕ  | आक     | ਕਿੱਕਰ  | ਕੀਕਰ  | ਗਜਰ   | गूजर  |
| ਕੱਮ  | काम    | ਤਿੱਤਰ  | तीतर  | ਗੁੱਦੜ | गूदड़ |
| ਖੱਡ  | खाँड़  | ਪਿੱਠ   | पीठ   | ਬੁੱਕ  | थूक   |
| ਖੱਲ  | खाल    | ਚਿੱਕੜ  | चीकड़ | ਧੁੱਪ  | धूप   |
| ਛੱਜ  | छाज    | ਨਿੱਮ   | नीम   | ਮੁੱਲ  | मूल   |
| ਜੱਟ  | जाट    | ਰਿੱਛ   | रीछ   | ਮੁੱਜ  | मूज   |
| ਝੱਗ  | झाग    | ਸਿੱਗ   | सींग  | ਮੁੱਗ  | मूंग  |
| ਪੱਗ  | पाग    | ਗਿੱਦੜ  | गीदड़ |       |       |

|        |         |  |
|--------|---------|--|
| 14.4   | ਆ ੲ > ਏ |  |
| ਨਾੲਨ   | नैठ     |  |
| ਵਿਲਾੲਤ | वलैउ    |  |
| ਲਾੲਕ   | लैक     |  |
| ਡਾੲਨ   | डैठ     |  |
| ਰਾੲਤਾ  | रैउा    |  |
| ਸੌਦਾੲਨ | मुदैठ   |  |
| ਕਸਾੲਨ  | कमैठ    |  |

15.0 /ਯ/ ध्वनि पंजाबी शब्दों के मध्य और अंत में क्षीण पड़ गई है इस लिए इसे /उ/ द्वारा अधिक लिखा जाता है यद्यपि उच्च पंजाबी में तत्सम रूप भी प्रचलित है :

|       |            |        |      |
|-------|------------|--------|------|
| स्वाद | स् उ अ । द | = सुआद | सुआद |
| स्वास | स् उ अ । स | = सुआस | सुआस |

|       |           |   |       |       |
|-------|-----------|---|-------|-------|
| ਸੁਰਗ  | ਸ੍ਰ ਚ ਰ ਗ | = | ਸੁਰਗ  | ਸੁਰਗ  |
| ਅਵਗੁਣ | ਅ ਚ ਗੁ ਣ  | = | ਐਗੁਣ  | ਐਗੁਣ  |
| ਅਵਸਰ  | ਅ ਚ ਸ ਰ   | = | ਅਚਸਰ  | ਅਉਸਰ  |
| ਅਵਤਾਰ | ਅ ਚ ਤ ਾ ਰ | = | ਅਚਤਾਰ | ਅਉਤਾਰ |
| ਧਨ    | ਧ ਚ ਨ     | = | ਧਚਨ   | ਪਉਨ   |

### 15.1 ਨਵੇਂ ਰੂਪ :

|      |         |     |      |
|------|---------|-----|------|
| ਬਹਾਵ | ਬ ਹ ਾ ਓ | ਬਹਾ | ਬਹਾਉ |
| ਪਛਾਵ | ਪ ਛ ਾ ਓ | ਪਛਾ | ਪਛਾਉ |

### 15.2 ਅੰਤਿਮ /ਚ/ ਸੁਰ ਧਾ ਤੋਂ ਦੀਰਘ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ ਅਥਵਾ ਲੁਪਤ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ :

|         |         |          |
|---------|---------|----------|
| ਦਧਾਲੂ   | ਦਿਆਲ    | ਦਿਆਲੂ    |
| ਕੁਪਾਲੂ  | ਕ੍ਰਿਪਾਲ | ਕ੍ਰਿਪਾਲੂ |
| ਪ੍ਰਮੁ   | ਪ੍ਰਭ    | ਪ੍ਰਭੂ    |
| ਸਾਧੂ    | ਸਾਧ     | ਸਾਧੂ     |
| ਗੁਰੂ    | ਗੁਰ     | ਗੁਰੂ     |
| ਸ਼ਰਫਾਲੂ | —       | ਸ਼ਰਫਾਲੂ  |
| ਵਸਤੂ    | ਵਸਤ     | ਵਸਤੂ     |

/ਵ/

16.0 ਪੰਜਾਬੀ ਦੇ ਕਈ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿੱਚ ਪੁਰਾਤਨ /ਵ/ ਧੁਨੀ ਦਾ ਉਚਾਰਣ ਆਰੰਭ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਹੈ ਜਦੋਂ ਕਿ ਹਿੰਦੀ ਵਿੱਚ ਇਹ ਧੁਨੀ /ਬ/ ਹੋ ਚੁਕੀ ਹੈ। ਇਸਨੂੰ ਦੇਖਣ ਲਈ :

|        |        |      |      |        |        |
|--------|--------|------|------|--------|--------|
| ਵਾਲ    | ਬਾਲ    | ਵਿਸ  | ਬਿਸ  | ਵਿਕਾਉ  | ਬਿਕਾਊ  |
| ਵੇਚਣਾ  | ਬੇਚਣਾ  | ਵਟੀ  | ਬਟੀ  | ਵੇਸਣ   | ਬੇਸਣ   |
| ਵਸਣਾ   | ਬਸਣਾ   | ਵਰਾ  | ਬਰਸ  | ਵੱਡਾ   | ਬੱਡਾ   |
| ਵੰਡਣਾ  | ਬਾਂਡਣਾ | ਵਸਣਾ | ਬਸਣਾ | ਵੈਰੀ   | ਬੈਰੀ   |
| ਵਹਾਉਣਾ | ਬਹਾਣਾ  | ਵਲ   | ਬਲ   | ਵਡਿਆਈ  | ਬਡਾਈ   |
| ਵਣਜਾਰਾ | ਬਨਜਾਰਾ | ਵਾਟ  | ਬਾਟ  | ਵਾਲੀਆਂ | ਬਾਲੀਆਂ |
| ਵਛੇਰਾ  | ਬਛੇਰਾ  | ਵਾੜ  | ਬਾੜ  | ਵਰਤਾਵਾ | ਬਰਤਾਵਾ |
| ਵਾਚਣਾ  | ਬਾਂਚਣਾ | ਵਾੜੀ | ਬਾੜੀ | ਵਧਣਾ   | ਬਧਣਾ   |
| ਵਿਗਾਰ  | ਬੇਗਾਰ  | ਵਾਣ  | ਬਾਣ  | ਵਰਤ    | ਬਰਤ    |
| ਵਿਛੜਣਾ | ਬਿਛੜਣਾ | ਵੇਲ  | ਬੇਲ  | ਵਿਸਰਣਾ | ਬਿਸਰਣਾ |
| ਵਿਆਹ   | ਬਿਆਹ   | ਵਾਗ  | ਬਾਗ  | ਵਿਚ    | ਬੀਚ    |

|       |        |        |        |       |       |
|-------|--------|--------|--------|-------|-------|
| ਵੇਲਣਾ | ਬੇਲਨਾ  | ਵਿਚਾਰਾ | ਬਿਚਾਰਾ | ਵੱਟਾ  | ਬਟਾ   |
| ਵਪਾਰ  | ਬਧੋਪਾਰ | ਵਾਰੀ   | ਬਾਰੀ   | ਵਿਆਜ  | ਬਿਆਜ  |
| ਵਧਾਈ  | ਬਧਾਈ   | ਵਦਾਮ   | ਬਾਦਾਮ  | ਵਿਸਾਖ | ਬਿਸਾਖ |

16.1 ਹਿੰਦੀ ਦੀ ਅਨੁਸ਼ਿਸ਼ਟ /-ਵ/ ਧੁਨਿ ਪ੍ਰਾਧ: ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਸੁਰਿਥਰ ਨਹੀਂ ਰਹੀ। ਵਹ  
ਤ, ਆ, ਓ, ਔ ਧੁਨਿਯੋਂ ਮੇਂ ਬਦਲ ਗਏ ਹੈ :

|      |       |          |       |       |       |
|------|-------|----------|-------|-------|-------|
| ਬਚਾਅ | ਬਚਾਵ  | ਖੁਕਾਅ    | ਖੁਕਾਵ | ਬਹਾ   | ਬਹਾਵ  |
| ਦਬਾਅ | ਦਬਾਵ  | ਭਾਅ      | ਭਾਵ   | ਸੁਭਾਉ | ਸੁਭਾਵ |
| ਪੜਾਅ | ਪੜਾਵ  | ਪਾ, ਪਾਈਆ | ਪਾਵ   | ਪੁਲਾਉ | ਪੁਲਾਵ |
| ਐਗੁਣ | ਅਵਗੁਣ |          |       |       |       |

16.2 ਪੰਜਾਬੀ ਸ਼ਬਦਾਂ ਕੇ ਸਧਧ ਮੇਂ ਭੀ ਕਹੀਂ ਕਹੀਂ /ਵ/ ਕਾ ਰੂਪ /ਔ/ ਅਥਵਾ  
/ਔ/ ਹੋ ਗਯਾ ਹੈ :

|         |                  |       |        |
|---------|------------------|-------|--------|
| ਪੇਵੰਦ   | ਪਿਓਂਦ            | ਕੇਵਡਾ | ਕਿਓਂਡਾ |
| ਦੇਵਰਾਨੀ | ਦਿਓਂਰਾਨੀ, ਦਿਰਾਣੀ | ਕੜਵਾ  | ਕੋੜਾ   |
| ਬਾਵਲਾ   | ਬੋਰਾ             | ਰੇਕੜੀ | ਰਿਓਂੜੀ |

16.3 /ਵ/ ਕੀ ਸੰਧੁਨਿ ਭੀ ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਮਿਲਤੀ ਹੈ :

ਜੁਆਰ (ਜਵਾਰ) ਦੁਆਰ (ਦਵਾਰ) ਜੁਆਨ (ਜਵਾਨ, ਜਵਾਨ), ਕੁਆਰਟਰ (ਕੁਵਾਰਟਰ)

17.0 ਸ < ਹ\*

|      |       |       |        |
|------|-------|-------|--------|
| ਕੈਸਾ | ਕੋਹਾ  | ਪਲਾਸ  | ਪਲਾਹ   |
| ਕੋਸ  | ਕੋਹ   | ਪੀਸਨਾ | ਪੀਹਣਾ  |
| ਸਸੁਰ | ਸੋਹਰਾ | ਬੀਸ   | ਵੀਹ    |
| ਜੈਸਾ | ਜੋਹਾ  | ਪਚਾਸ  | ਪੰਜਾਹ  |
| ਬਰਸ  | ਵਰ੍ਹਾ | ਦਸ    | ਦਾਹ    |
| ਤੀਸ  | ਤੀਹ   | ਰੋਸ   | ਰੋਹ    |
| ਘਾਸ  | ਘਾਹ   | ਸਰਸੌਂ | ਸਰ੍ਹੋਂ |

17.1 ਸ, ਹ ਕੇ ਨਿਸ਼ਚਿਤ ਦੋਨੋਂ ਰੂਪ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਹੈ :

|        |        |       |
|--------|--------|-------|
| ਵਿਥ    | ਵਿਸ    | ਵਿਹੁ  |
| ਪਾਸ਼   | ਫ਼ਾਂਸੀ | ਫਾਹੀ  |
| ਨਿਸ਼ਚਧ | ਨਿਸਚਾ  | ਨਿਹਚਾ |
|        | ਉਸਦਾ   | ਉਹਦਾ  |

\* ਹ ਧੁਨਿ ਇਸ ਪਰਿਸਥਿਤਿ ਮੇਂ ਪ੍ਰਾਧ: ਸੁਰ ਕਾ ਰੂਪ ਧਾਰਣ ਕਰ ਗਏ ਹੈ।  
ਇੱਕੀ (ਫ਼ੀਕੀਸ), ਥਾਈ (ਥਾਈਸ), ਚੱਟੀ (ਚੈਂਥੀਸ) ਮੇਂ ਸੁਰ ਭੀ ਲੁਪਤ ਹੈ।

|        |        |
|--------|--------|
| ਇਸਦਾ   | ਇਹਦਾ   |
| ਕਿਸਦਾ  | ਕਿਹਦਾ* |
| ਤੁਸਾਡਾ | ਤੁਹਾਡਾ |
| ਕਾਸਨੂੰ | ਕਾਹਨੂੰ |
| ਦਿਸਦਾ  | ਦੀਹਦਾ  |

कुछ अन्य हिन्दी शब्दों के पंजाबी रूप :

|     |       |       |        |        |
|-----|-------|-------|--------|--------|
| 18. | तागा  | ਧਾਗਾ  | बुआ    | ਭੂਆ    |
|     | पहचान | ਪਛਾਣ  | मथानी  | ਮਧਾਣੀ  |
|     | कड़वा | ਕੜਾ   | सरहम   | ਮਲੂਮ   |
|     | बहन   | ਭੈਣ   | मुआ    | ਮੋਇਆ   |
|     | कीचड़ | ਚਿੱਕੜ | मुहताज | ਮੁਬਾਜ਼ |
|     | और    | ਹੋਰ   | तू     | ਤੂੰ    |
|     | बटलोई | ਵਲਟੋਈ | लेन    | ਲੈਣਾ   |

19. /र/ का अतिरिक्त प्रयोग :

|        |       |        |         |
|--------|-------|--------|---------|
| चाड़ूक | चातक  | उरमँली | तसल्ली  |
| सूप    | शाप   | ढरनैल  | *ਫੀਨਾਇਲ |
| उकला   | तकला  | सरनाटा | सन्नाटा |
| कलघुउर | कबूतर | ਕੋਰੜਾ  | ਕੌਡਾ    |
| ਤ੍ਰਿਖਾ | तीखा  | ਕਰੜਾ   | ਕੜਾ     |

20. मध्य में अतिरिक्त (—इ—) का प्रयोग :

|        |        |          |         |
|--------|--------|----------|---------|
| बुरिआਈ | बुराई  | मुनिआर   | सुनार   |
| ਇੱਛਿਆ  | इच्छा  | ਚਮਿਆਰ    | ਚਮਾਰ    |
| ਭਿਖਿਆ  | भिक्षा | ਨਿੰਦਿਆ   | ਨਿੰਦਾ   |
| ਮਿਠਿਆਈ | मिठाई  | ਖਟਿਆਈ    | ਖਟਾई    |
| ਸਿਖਿਆ  | शिक्षा | ਚੰਗਿਆਈ   | ਮਲਾई    |
| ਭਲਿਆਈ  | भलाई   | ਚਿੰਗਿਆੜੀ | ਬਿੰਗਾਰੀ |

21.0 ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ /ई + आ/ को /इया/ रूप में लिखा नहीं जाता इस लिए

\* ਕਾਹਦਾ

\* Phonyl, इसी प्रकार Dozen डज़न से बना 'दर्जन' शब्द जो अनेक भारतीय भाषाओं में प्रचलित है इस में भी अतिरिक्त /र/ प्रयुक्त

ਵਰਤਨੀ ਮੈਂ ਅੰਤਰ ਹੈ :

|         |         |         |             |
|---------|---------|---------|-------------|
| ਲੜਕੀ    | ਲੜਕੀ    | ਬਚਿਧੀਆਂ | ਬੱਚੀਆਂ      |
| ਲੜਕੀਆਂ  | ਲੜਕੀਆਂ  | ਬਸਿਧੀਆਂ | ਬਸਤੀਆਂ, ਆਦਿ |
| ਖਿੜਕੀਆਂ | ਖਿੜਕੀਆਂ |         |             |

21.1 ਬਹੁਵਚਨ ਕੇ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦ ਭੀ ਉਸੀ ਸ਼ੈਲੀ ਮੈਂ ਲਿਖੇ ਜਾਣੇ ਹਨ :

|        |         |            |
|--------|---------|------------|
| ਕਰਦੀਆਂ | ਜਾਂਦੀਆਂ | ਚਲਦੀਆਂ ਆਦਿ |
|--------|---------|------------|

21.2 ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਭੀ ਬਹੁਵਚਨ ਮੈਂ ਵੀ ਰੂਪ ਰਖਣੇ ਹਨ :

|        |            |         |
|--------|------------|---------|
| ਪ੍ਰਾਸਾ | ਪਿਆਸਾ      | ਪਿਆਸੀਆਂ |
| ਪ੍ਰਾਰਾ | ਪਿਆਰਾ      | ਪਿਆਰੀਆਂ |
| ਗਯਾ    | ਗਿਆ, ਗਇਆ   | ਗਈਆਂ    |
| ਰਹਾ    | ਰਹਿਆ, ਰਿਹਾ | ਰਹੀਆਂ   |
| ਆਯਾ    | ਆਇਆ        | ਆਈਆਂ    |

22. ਗੁਰਮੁਖੀ ਲਿਪਿ ਮੈਂ ਸੰਯੁਕਤ ਵਰਣਾਂ ਨੂੰ ਲਿਖਣੇ ਦੀ ਪਰਿਪਾਟੀ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਹੀਂ ਚਲੀ। ਕੁਝ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੂੰ ਉਚਾਰਣ ਹਿੰਦੀ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ ਇਕੋ ਜਿਹਾ ਹੈ ਕਿੰਨ੍ਹੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਲਿਖਾਓ ਮੈਂ ਅੰਤਰ ਹੈ :

|         |         |         |         |
|---------|---------|---------|---------|
| ਅਵਸਥਾ   | ਅਵਸਥਾ   | ਆਗਿਆ    | ਆਭਾ     |
| ਪਰਮਾਤਮਾ | ਪਰਮਾਤਮਾ | ਗਿਆਨ    | ਗਿਆਨ    |
| ਵਿਸ਼ਵਾਸ | ਵਿਸ਼ਵਾਸ | ਗਇਆ     | ਗਇਆ     |
| ਵਿਦਵਾਨ  | ਵਿਦਵਾਨ  | ਸਮਝੂ*   | ਸਮਝੂ    |
| ਕੁਸਤੀ   | ਕੁਸਤੀ   | ਸਨਿਆਸੀ  | ਸਨਿਆਸੀ  |
| ਕਿਆਰੀ   | ਕਿਆਰੀ   | ਸਮਝੂ    | ਸਮਝੂ    |
| ਚਰਬੀ    | ਚਰਬੀ    | ਸਪਸ਼ਟ   | ਸਪਸ਼ਟ   |
| ਕੁਰਸੀ   | ਕੁਰਸੀ   | ਜਿਉਂ    | ਜਿਉਂ    |
| ਦਰਜੀ    | ਦਰਜੀ    | ਕ੍ਰਿਪਾਣ | ਕ੍ਰਿਪਾਣ |
| ਦਰਜਨ    | ਦਰਜਨ    | ਮਰਿਅਲ   | ਮਰਿਅਲ   |
| ਹਲਦੀ    | ਹਲਦੀ    | ਬਕਸ਼ੁਆ  | ਬਕਸ਼ੁਆ  |
| ਜਲਦੀ    | ਜਲਦੀ    | ਮੋਤੀਆ   | ਮੋਤੀਆ   |
| ਵਰਦੀ    | ਵਰਦੀ    | ਸਰਵੱਗ   | ਸਰਵੱਗ   |
| ਆਰਥਿਕ   | ਆਰਥਿਕ   |         |         |

\* ਫਲਨ / / ਚਿੰਨ੍ਹ ਦੁਆਰਾ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੂੰ ਸੁਧਾਰ ਰੂਪ ਭੀ ਦਿੱਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਯਥਾ—ਸਪਸ਼ਟ, ਸਮਝੂ, ਵਿਸ਼ਵਾਸ, ਪਰਮਾਤਮਾ ਆਦਿ



### द्वित्व व्यंजन

23. (i) महाप्राण ध्वनियों के द्वित्व रूप पंजाबी में केवल दीर्घ दिखाए जाते हैं अधिक चिह्न ( ~ ) द्वारा; किन्तु हिन्दी में वैज्ञानिक उच्चारण के अनुसार वर्तनी विभिन्न है :

|       |        |       |         |
|-------|--------|-------|---------|
| अँढा  | अच्छा  | घँधी  | बग्घी   |
| चिँठी | चिट्ठी | घुँचा | बुड़्ढा |
| झँझर  | झज्झर  | घुँपु | बुदधू   |
| पँघर  | पत्थर  |       |         |

- (ii) हिन्दी में प्रायः शब्दों का अन्त द्वित्व व्यंजनों के साथ नहीं होता, पंजाबी में द्वित्व व्यंजन राजस्थानी की भांति प्रचलित हैं और वे शब्दों के अन्त में भी आते हैं :

सच्च, सत्त, अट्ठ, गप्प, इट्ट, अग्ग, पुत्त  
मँच, मँउ, अँठ, गँप, छिट्ट, अँग, पँउ, आदि

- (iii) कुछ शब्दों में अतिरिक्त द्वित्व भी वर्तमान हैं :

पीता, पीत्ता (पिया), सीता, सीत्ता (सिया),  
कीता, कीत्ता (किया), गूठा, गूट्ठा (अगूठा),  
पोथा, पोत्था (पुस्तक), आदि

‘लम्बा, सच्चा, बिच्छू, पक्का, कच्चा, कप्पड़, कुप्पा, गुड्डा, चद्दर’ जैसे अनेक पंजाबी शब्द हिन्दी में प्रचलित हो चुके हैं।

24. अरबी फ़ारसी द्वारा उर्दू में प्रचलित अक्षर-विचार बताता है कि प्रत्येक अक्षर व्यंजन से आरंभ होता है, किन्तु बड़ा (बड़-आ), लिखाई (लिख-आ-ई) आदि में कई अक्षर स्वर से आरंभ होते हैं। इसी प्रकार पंजाबी में लिखिआ का उच्चारण ‘लिख-ए-आ’ अक्षरों का सा है।

### अक्षर-खण्ड

25. अक्षर (syllable) की बांट हिन्दी के समान पंजाबी में भी स्वर के अनुसार निश्चित हो सकती है किन्तु पंजाबी के बहुत से शब्द जो अकारांत लिखे जाते हैं वास्तव में व्यंजनांत हैं :

राम = राम्

घ + टट् = घटट

पीर = पीर्

घर् + कउ = घरकउ

ਭੈਣ = ਭੈਣ

ਕੀ + ਮਤ੍ = ਕੀਮਤ

ਗਲ = ਗਲ

ਤੀ + ਰਥ = ਤੀਰਥ

ਬਾਲਟੀ = ਬਾਲਟੀ

ਕਰ੍ + ਦਾ ਦੇ ਅੱਖਰ ਹਨ, ਤਿੰਨ (ਕ + ਰ + ਦਾ) ਨਹੀਂ

**ਬਲ ਪ੍ਰਯੋਗ**

26.0 ਪਾਏ: ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਪ੍ਰੇਰਣਾਰਥਕ ਧਾਤੁ ਕੇ ਅੰਤਿਮ ਅਖਰ ਪਰ ਬਲ ਪਾਯਾ ਜਾਤਾ ਹੈ :

ਹਟਾ ਹਟਾ ਬਧਾ ਬਣਾ ਮਰਾ ਭਰਾ  
ਭਿਠਾਲ ਭਿਠਾਲ ਸਿਖਾਲ ਸਿਖਾਲ

26.1 ਕੁਝ ਸੰਜ਼ਾਅੋਂ ਕੇ ਅੰਤਿਮ ਅਖਰ ਪਰ ਮੀ ਬਲ ਆਤਾ ਹੈ :

ਸਜਾ ਸ'ਜਾ ਸਰਾਂ ਸ'ਰਾਂ ਤਲਾ ਤ'ਲਾ ਬਲਾ ਬ'ਲਾ

26.2 ਚਪਾਂਤ ਅਖਰੀਂ ਪਰ ਬਲ :

ਲੇਖਾ 'ਲੇ-ਖਾ ਦੁਚਿਤਾ ਦੁ'ਚਿੱਤਾ ਕੜਾ 'ਕ-ੜਾ  
ਸੌਦਾ 'ਸੋ-ਦਾ ਪਤਾਸਾ ਪ-'ਤਾਸਾ ਪੁਰਾਣਾ ਪੁ-'ਰਾ-ਣਾ  
ਬਟੇਰਾ ਬ'ਟੇ-ਰਾ ਝੋਲੀ 'ਝੋ-ਲੀ ਤਮਾਸ਼ਾ ਤਮਾ'ਸ਼ਾ

26.3 ਜਬ ਬਲਾਧਾਤ ਵਾਲਾ ਸਵਰ ਪਹਲੇ ਆਤਾ ਹੈ ਔਰ ਬਲਾਧਾਤ-ਵਿਹੀਨ ਸਵਰ ਬਾਦ ਮੇਂ ਆਤਾ ਹੈ ਤੋ ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਣ, ਲ, ਙ ਏਵੰ ਰ ਘੰਯਜਨੋਂ ਕੇ ਅਤਿਰਿਕਤ ਪਾਏ: ਅਨਯ ਘੰਯਜਨ ਫ਼ਿਤਵ ਹੋ ਜਾਤੇ ਹੈਂ, ਧਥਾ :

ਮਾਲਲੀ, ਮਾਲੀ, ਤੁਹਾਨ੍ਹੂ, ਤੁਹਾਨ੍ਹੂ, ਬਲਲਨਾ, ਬਲਨਾ

ਕਿਸੀ ਸ਼ਬਦ ਕੇ ਅਖਰ ਪਰ ਜੋ ਬਲਾਧਾਤ ਹੋਤਾ ਹੈ ਵਹ ਪਾਏ: ਸਮੀ ਵਿਕਾਰੀਂ ਔਰ ਪ੍ਰਯੋਗੀਂ ਮੇਂ ਸੁਰਖਿਤ ਰਹਤਾ ਹੈ ਜੈਸੇ—

ਦਰਸ (ਬਤਾ) ਦਰਸੇਗਾ, ਦਰਸਿਓ, ਦਰਸਦੀਆਂ ਹਨ (ਬਤਾਤੀ ਹੈ), ਆਦਿ

27. ਚਚ੍ਹਾਰਣ ਮੇਂ ਕੁਝ ਨਿਰਬਲ ਧੁਨਿਯੋਂ ਕਾ ਲੋਪ :

|       |      |        |       |
|-------|------|--------|-------|
| ਅਵਾਜ  | ਵਾਜ  | ਅਤੇ    | ਤੇ    |
| ਅਕਾਲ  | ਕਾਲ  | ਅਸਾਨੂੰ | ਸਾਨੂੰ |
| ਇਕੱਲਾ | ਕੱਲਾ | ਅਸਾਡਾ  | ਸਾਡਾ  |
| ਇਕੱਠਾ | ਕੱਠਾ |        |       |

**ਵਿਵ੍ਰਿਤਿ**

28. ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਮੀ ਵਿਵ੍ਰਿਤਿ ਕੇ ਕਾਰਣ ਅਥੀਂ ਮੇਂ ਅਨ੍ਤਰ ਪੜ ਜਾਤਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਿਓ ਚਚ੍ਹਾਰਣ ਕੇ ਸਮਧ ਇਸ ਔਰ ਮੀ ਧਯਾਨ ਰਖਨਾ ਚਾਹਿਓ :

1. ਫੁਲ ਦੀ ਕਲੀ; ਫੁਲਦੀ ਕਲੀ
2. ਖਾ ਕੇ ਆਏ; ਖਾਕੇ ਆਏ
3. ਰੇਕੇ ਮਤ, ਜਾਣ ਦਿਓ; ਰੇਕੇ, ਮਤ ਜਾਣ ਦਿਓ

29. ਖੜੀ बोली का जो रूप घग्घर नदी एवं यमुना के बीच प्रचलित है उस का उच्चारण दूर तक पंजाबी उच्चारण से समानता रखता है, यद्यपि लिखित रूप विभिन्न है :

बड़ड़ा, मठाई, कट्ठा, अपणा, केहा, सुणना, खोवण, बलद, बाप्पू

30. आज की हिन्दी बहुत दूर तक तत्सम शब्दावली से आक्रांत दीखती है किन्तु पंजाबी में तद्भव शब्दों\* को पुरानी परम्परा अपने स्वाभाविक रूप में विद्यमान है और पंजाबी भाषा को जन-भाषा के अधिक निकट रखे हुए है, यथा :

|      |        |       |          |
|------|--------|-------|----------|
| मनुख | मनुष्य | अदुती | अद्वितीत |
| अकखर | अक्षर  | उडीक  | उत्-ईक्ष |

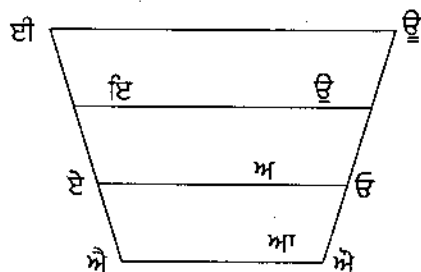
31. अंग्रेजी आदि कई भाषाओं में बाह्य (होंठ द्वारा) और आन्तरिक (कोमल तालु तथा जिह्वा द्वारा) दोनों प्रकार की गोलाई बनती है। इस लिए उन की स्वर ध्वनियों में कुछ न कुछ अन्तर होता है। पंजाबी की विशेषता है कि उस में केवल आन्तरिक गोलाई होती है :

|         |    |               |
|---------|----|---------------|
| College | कॉ | बाह्य गोलाई   |
| कोस     | को | आन्तरिक गोलाई |

\* हिन्दी को तत्सम के मोह के कारण संयुक्त क्रियाएं अधिक अपनाती पड़ी हैं, जबकि पंजाबी में वे साधारण हैं।

| संयुक्त रूप          | सामान्य रूप | संयुक्त रूप   | सामान्य रूप   |
|----------------------|-------------|---------------|---------------|
| प्रतीक्षा करना       | छिड़ीकਣਾ    | श्रृंगार करना | मिंਗਾਰਨਾ      |
| समाप्त होना          | ਮੁਕਣਾ       | बीज बोना      | ਬੀਜਣਾ         |
| आरम्भ होना (करना)    | ਅਰੰਭਣਾ      | नशे में आना   | ਨਸ਼ਿਆਉਣਾ      |
| बध करना, कत्ल करना   | ਵਢਣਾ        | स्थापित करना  | ਥਾਪਣਾ         |
| दाखिल होना           | ਵੜਨਾ        | त्रास करना    | ਤ੍ਰਹਣਾ, ਤੁਠਣਾ |
| आंगन में प्रवेश करना | ਵੇਹੜੇ ਵੜਨਾ  |               |               |

अतः : पंजाबी का स्वर त्रिकोण यह है :



पंजाबी में ऐ और औ संयुक्त स्वर (diphthongs) हैं, अर्थात् अ-ए, अ-औ। पंजाबी 'तैर' में संयुक्त स्वर कुछ धीमा सा है। हिन्दी के तैर में लम्बी (ऐ) ध्वनि है 'त ए र' की भान्ति उच्चरित होती है।

हिन्दी में पैसा प्रायः 'प ए सा' की भान्ति सुनाई देता है, पंजाबी में 'प अ सा' की भान्ति।

### 32. वाक्य सुर-लहरी :

पंजाबी वाक्य सुर का केन्द्र आगे की ओर है और इस की गति प्रायः सम और विराम सहित है।\* यदि अंग्रेजी लहजे में पंजाबी का वाक्य पढ़ा जाए तो उस के समझने में अड़चन पड़ सकती है।

बलाघात, स्वर भक्ति, सुर और विशेष चढ़ाव उतार के कारण पंजाबी लहजा हिन्दी से विभिन्न प्रतीत होता है किन्तु प्रश्न, विस्मय आदि भावों के प्रकट करने में लहजा समान है।

व्यंजनों के स्थान और वाक्य की लय के कारण उच्चारण का अन्तर देखिए :

किन्ने पैसे?

'सत्त'

किन्तु 'सत्त वजे आइआ'

दो कि इक्क?

'इक्क'

किन्तु 'इक्क वेले आइआ'

\* 'The Punjabi intonation is characterized by a level and staccato movement and the front focus of tone.'—Cummings; *Punjabi Manual and Grammar*, p. 22.

# ਪੰਜਾਬੀ ਲਹਜ਼ਾ

ਅਰ ਜਨ ਦਾਸ ! ਆ ਕੇ ਮਿ ਲੋ ਜੀ

ਇਹ ਨੇ ਮੇ ਰੇ ਮਿਤ੍ਰ ਤਰ ਹਰੀ ਸ ਚੰ ਦਰ

ਇ ਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲ ਕੇ ਬ ਹੁ ਤ ਖੁ ਸ਼ੀ ਹੋ ਈ

ਏਹ ਪ ਹ ਲੀ ਵੇ ਰ ਇ ਥੇ ਆ ਦੇ ਨੇ ?

ਨਹੀਂ ਸਤ ਸਾਲ ਪ ਹ ਲਾਂ ਵੀ ਇ ਥੇ ਆਇਆ ਸਾਂ

ਪਰ ਹੁਣ ਤਾਂ ਸ ਹਰ ਬਦ ਲ ਚੁ ਕਾ ਹਾਂ

ਹਾਂ ਜੀ ਤੁ ਹਾ ਡਾ ਘਰ ਕਿ ਥੇ ਹੀ ?

ਮੇ ਰਾ ਘਰ ਜ ਲੋ ਧਰ ਹੈ

ਕੀ ਤੁ ਸੀ ਬ ਦੇ ਉ ਥੇ ਕਦੇ ਓ ?

ਹਾਂ ਜੀ ਮੁ ਦ ਤਾਂ ਹੋ ਈ ਆ ਜ ਦੋ ਕ ਦਿ ਆ ਸਾਂ

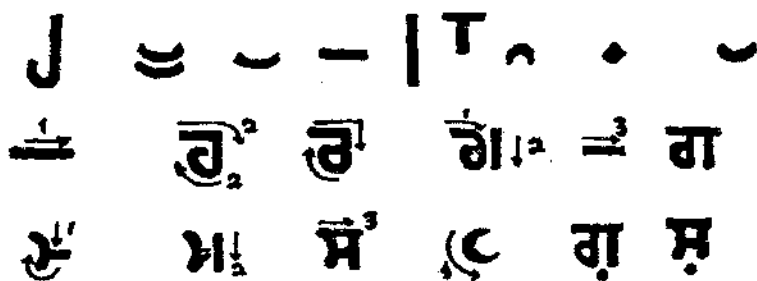
### खण्ड 3

## पंजाबी लिखना सीखिए

सुन्दर और स्पष्ट लिखाई रचना को रोचक और सुगम बनाती है। सीधी, आड़ी, वक्र, गोल और मिश्रित रेखाओं के आधार पर वर्ण लिखने का अभ्यास करना आवश्यक है। इसी लिए इस भाग के सात पाठों में गुरुमुखी वर्णमाला सीखने के लिए वैज्ञानिक विधि का प्रयोग किया गया है।

1. सीधी, आड़ी और मृदुवक्र रेखाओं पर आधारित वर्ण।
2. ढलती वक्र रेखाओं पर आधारित वर्ण।
3. संपूर्ण ढलती वक्र रेखाओं पर आधारित वर्ण।
4. मिश्र वक्र रेखाओं पर आधारित वर्ण।
5. आगे पीछे दोनों ओर वक्र रेखाओं पर आधारित वर्ण।
6. गोल वक्र रेखाओं पर आधारित वर्ण।
7. गोल वक्र मिश्रित रेखाओं पर आधारित वर्ण।

### पाठ 1



लिखिएगा :

ਰੀਰਾ ਰਾਮ । ਹਸ ਹਸ ਗਾ ।

ਸਾਗਰ ਸਾਹ । ਰਾਗ ਗਾ ।

ਸਾਰਾ ਸਾਰਾ ਮੰਗਾ ।

ਗਰਮ ਗਰਮ; ਰਗ ਰਗ; ਹਸ ਰਸ;

ਸਾਗ; ਸਾਗਰ । ਹਰ ਹਰ । \*ਰਾਮ ਰਾਮ

ਹਸ ਹਸ    ਹੰਸ ਹੰਸ ਕਰ                      ਹਸ ਰਸ                      ਪ੍ਰਸੰਨਤਾ ਸੇ

**इन वाक्यों को गुरमुखी लिपि में लिखिए :**

ਗੰਗਾ ਰਾਮ ! ਗਾਗਰ ਮੰਗਾ !

ਸਾਗਰ ਸਾਹ ! ਰਾਮ ਰਾਮ ਗਾ !

ਸਾਗ ਗਰਮ ਗਰਮ ਮੰਗਾ !

ਹਰ ਹਰ ਗਾ, ਰਾਮ ਰਾਮ ਗਾ !

ਹਾਂ, ਹਾਂ । ਹਸ ਹਸ ਗਾ !

ਪਾਠ 2



ਲਿਖਿਏਗਾ :

ਹੱਥ ਪੈਰ ਮਾਰ ! ਖੈਰ ਖੈਰ ਮੰਗਾ !

ਖੇਸ ਹਰਾ ਹਰਾ ਰੰਗਾ ! ਹਰਾ ਧਾਗਾ ਮੰਗਾ !

ਰਾਮ ਆਸਰਾ ! ਹਰ ਹਰ ਆਖ !

ਸਾਗਰ ਸਾਗਰ ! ਸਾਥ ਸਾਥ ਆ !

ਅੱਗ ਹੈ, ਪੱਖਾ ਮਾਰ !

|     |      |      |      |      |      |
|-----|------|------|------|------|------|
| ਹੱਥ | ਫਾਥ  | ਮੰਗਾ | ਸੰਗਾ | ਅੱਗ  | ਆਗ   |
| ਮੰਗ | ਸਾਂਗ | ਆਖ   | ਕਹ   | ਪੱਖਾ | ਪੱਖਾ |

**गुरमुखी लिपि में लिखिए :**

ਅਸਾਂ ! ਹਾਰ ਪਾ !

ਧਾਰੀ ਰਾਮ ! ਸਗਰ ਸਗਰ ਆ !

ਪੈਰ ਪਸਾਰ, ਸੌਖਾ ਸੌਂ !

ਰਾਮ ਰਖਾ ! ਸਾਗ ਰਖਾ !

ਸਾਰਾ ਧਾਗਾ ਹਰਾ ਹਰਾ ਰੰਗਾ !

\* 'ਗ' ਲਿਖਦੇ ਹੁਣੇ ਸਾਵਧਾਨੀ ਦੀ ਆਵਸ਼ਯਕਤਾ ਹੈ। ਧਰਿ ਪਾਝੀ ਕੀ ਲਖਾਝੀ ਕਸ ਰਹ ਗਝੀ ਔਰ ਕੂਛ ਅੰਤਰ ਪਰ ਲਿਖੀ ਗਝੀ ਤੋ ਧਹ 'ਗ' ਅਥਾਝੀ 'ਗ' ਪਝਾ ਜਾਏਗਾ।

ਪਿਛਲੇ ਪਾਠ ਕੋ ਧੀਂ ਲਿਖਨਾ ਚਾਹਿਏ ਥਾ :

ਰੰਗਾ ਰਾਮ ! ਗਾਗਰ ਮੰਗਾ !  
ਸਾਗਰ ਸਾਹ ! ਰਾਮ ਰਾਮ ਗਾ !  
ਸਾਗ ਗਰਮ ਗਰਮ ਮੰਗਾ !  
ਹਰ ਹਰ ਗਾ, ਰਾਮ ਰਾਮ ਗਾ !  
ਹਾਂ ਹਾਂ ! ਹਸ ਹਸ ਗਾ !

ਪਾਠ 3

ਕੋ ਭੇ 3 ਕੋ<sub>2</sub> ਕੇ<sub>1</sub> ਕੋ<sub>2</sub> ਡ  
- - ਕੇ - (ਉ) ਉ<sub>2</sub> ਉ<sub>3</sub>

|         |           |         |           |
|---------|-----------|---------|-----------|
| ਰੂਪ ਰੰਗ | ਰਗੜਾ ਝਗੜਾ | ਮੋੜ ਤੋੜ | ਡਰ ਖਤਰਾ   |
| ਰੂਪ ਰੰਗ | ਰਗੜਾ ਝਗੜਾ | ਮੋੜ ਤੋੜ | ਡਰ ਖਤਰਾ   |
| ਹੱਡ ਪੈਰ | ਸੁਖ ਸਾਂਤ  | ਮਾਰ ਧਾੜ | ਮੂੰਹ ਮੱਥਾ |
| ਹੱਡ ਪੈਰ | ਸੁਖ ਸਾਂਤ  | ਮਾਰ ਧਾੜ | ਮੂੰਹ ਮੱਥਾ |

ਲਿਖਿਏਗਾ :

ਸੁਆਹ ਮਤ ਉਡਾ ! ਸੱਪ ਹੈ, ਤੁਰਤ ਡੰਡਾ ਮਾਰ !  
ਸੁਖ ਸਾਂਤ ਰਖ ! ਝੱਗੜਾ ਰਗੜਾ ਰੋਗ ਹੈ !  
ਝੰਗੂ ਰਾਮ ! ਹੋਰ ਗੁੜ ਮਤ ਖਾ ! ਧੂੜ ਝਾੜ, ਮੂੰਹ ਹੱਥ ਧੋ !  
ਰੁੱਖਾ ਖਾ, ਮਾੜਾ ਪਾ, ਧਰਮ ਮਤ ਹਾਰ !

|      |        |      |         |       |      |
|------|--------|------|---------|-------|------|
| ਹੱਡ  | ਹੱਡੀ   | ਸੱਪ  | ਸਾਂਪ    | ਧੂੜ   | ਧੂਲ  |
| ਸਾਂਤ | ਸ਼ਾਂਤਿ | ਤੁਰਤ | ਤੁਰੰਤ   | ਮੂੰਹ  | ਮੂੰਹ |
| ਮੱਥਾ | ਮਾਥਾ   | ਸਾੜ  | ਜਲਾ ਦੇ  | ਹੱਥ   | ਹਾਥ  |
| ਸੁਆਹ | ਰਾਖ    | ਮਾੜਾ | ਸਾਮ੍ਹਲੀ | ਰੁੱਖਾ | ਰੁਖਾ |
| ਉਡਾ  | ਚੜਾ    | ਹੋਰ  | ਐਰ      |       |      |

ਗੁਰਮੁਖੀ ਲਿਪਿ ਮੈਂ ਲਿਖਿਏ :

1. ਝੜਾ ਅਕਖਰ ਐਕਾ ਹੈ, ਹੋਰ ਪਾ !
2. ਚੜ ਐਕਤ ਅਸ਼ਾਂਤ ਹੈ।



3. ਰੂਪੂ ! ਹੋਰ ਧੂੰ ਸਤ ਪਾ, ਝੁਗਾ ਸਤ ਸਾਡੁ !
4. ਗੁਥਸ ਗੁਥਾ ਸਤ ਹੋ, ਸਾਂਤ ਹੋ !
5. ਗੁਡ ਖੰਡ ਹੋਰ ਸਤ ਖਾ, ਤਾਪ ਹੋਯਗਾ !
6. ਸੋਸਾਂ, ਭੰਡ ਸਤ ਪਾ, ਸਰਸ ਖਾ !
7. ਸਰਗੁਰ ਤੋਂ ਸੁਖ ਸਾਂਤ ਸੰਗ !

ਪਿਛਲੀ ਲਿਖਾਈ ਯੋਂ ਹੋਨੀ ਚਾਹਿਏ ਥੀ। ਅਬੁਧਿਯਾਂ ਦੂਰ ਕਰ ਲੀਜਿਏ :

1. ਅੱਮਾਂ ! ਹਾਰ ਪਾ !
2. ਧਾਰੀ ਰਾਮ ! ਮਗਰ ਮਗਰ ਆ !
3. ਪੈਰ ਪਸਾਰ, ਸੋਖਾ ਸੋਂ !
4. ਰਾਮ ਰਖਾ ! ਸਾਗ ਖਾ !
5. ਸਾਰਾ ਧਾਗਾ ਹਰਾ ਹਰਾ ਰੰਗ !

ਮਗਰ ਮਗਰ ਪੀਛੇ ਪੀਛੇ, ਸੋਖਾ ਸਰਲ, ਆਸਾਨ ਸੋਣਾ ਸੋਨਾ

#### ਪਾਠ 4

⇒ ਏ ਟ ਫ ਫ ਫ  
 1 = 'ਏ' ਏ = 'ਕ' ਕ  
 1 = 'ਵ' ਵ = 'ਭ' ਭ = 'ਭ' ਭ  
 ਇ ਈ ਐ

|                          |                 |                     |
|--------------------------|-----------------|---------------------|
| ਰਖ ਸਾਂਈ                  | ਈਸਾ ਮਸੀਹ        | ਇਕੋ ਇਕ              |
| ਰਖ ਸਾਈ (ਭੈਰਵਰ ਦੀ ਰਕਾ ਹੋ) | ਭੈਰਵਰ ਮਸੀਹ      | ਭੈਰਵਰ ਭੈਰਵਰ (ਭੈਰਵਰ) |
| ਇਟ ਖੜਿਕਾ                 | ਕਟ ਵਟ           | ਫੇਰ ਫਾਰ             |
| ਭੈਰਵਰ ਖੜਿਕਾ (ਭੈਰਵਰ)      | ਕਟ ਵਟ (ਕਾਟ ਚਾਟ) | ਫੇਰ ਫਾਰ             |

ਲਿਖਿਏਗਾ :

ਸਾਡਾ ਇਕਾਂਤ ਵਾਸਾ, ਕੀ ਭਗਤਾ, ਕੀ ਹਾਸਾ।

ਹੰਕਾਰਿਆ, ਸੋ ਮਾਰਿਆ। ਹਰੀ ਹਰੀ ਆਖ !

ਕਟ ਵਟ ਮਤ ਕਰ ! ਅਖਰ ਸਾਫ਼ ਸਾਫ਼ ਪਾ !

ਧਰ ਕਹਾਨੀ ਗੁਰਮੁਖੀ ਲਿਪਿ ਮੈਂ ਰੂਪਾਂਤਰਿਤ ਕੀਜੀਏ :

ਇਕ ਸੀ ਕਾਂ, ਤਿਹਾੜਾ ਚਡ ਰਹਿਆ ਸੀ। ਧਰਤੀ ਤੇ ਇਕ ਥਾਂ ਸਟਕਾ ਵੇਖ  
ਕੇ ਉਹ ਚੁੱਤਰ ਆਇਆ, ਪਰ ਸਟਕਾ ਤਾਂ ਖਾਲੀ ਸੀ। ਸਟਕੇ ਆਖਿਆ—‘ਕਾਂ ! ਆਓ  
ਕਾਂ !! ਤੇਰੀ ਕਿਸਮਤ ਖੋਟੀ ਹੈ, ਅਸੀਂ ਤਾਂ ਤੇਰਾ ਰਾਹ ਵੇਖ ਵੇਖ ਕੇ ਥਕ ਗਏ ਹਾਂ।  
ਇਸ ਵਕਤ ਤਾਂ ਇਕ ਕਤਰਾ ਵੀ ਮੇਰੇ ਪਾਸ ਕਿਥੇ ਰਹਿਆ ਹੈ !’

ਕਾਂ ਇਹੀ ਆਖ ਕੇ ਉਥੋਂ ਚਡ ਗਿਆ—ਤੂੰ ਵੀ ਖੈਰਾਤ ਕਰੇਂਗਾ। ਤੇਰੇ ਪਾਸ ਕੁਝ  
ਹੋਵੇਗਾ ਤਾਂ ਗੁਮ ਸੁਮ ਪੜਿਆ ਰਹੇਂਗਾ। ਥੋਥਾ ਸ਼ਾਹ ਮੁਫਤ ਗੱਪਾਂ ਮਾਰ ਰਹਿਆ ਹੈ।

ਪਿਛਲੇ ਅਭਿਆਸ ਕਾ ਪੰਜਾਬੀ ਰੂਪਾਂਤਰ :

1. ਉੜਾ ਅੱਖਰ ਔਖਾ ਹੈ, ਹੋਰ ਪਾ।
2. ਉਹ ਔਰਤ ਅਸ਼ਾਂਤ ਹੈ।
3. ਰੂਪੁ ! ਹੋਰ ਪੁੰ ਮਤ ਪਾ, ਝੁੱਗਾ ਮਤ ਸਾੜ।
4. ਗੁੱਬਮ ਗੁੱਬਾ ਮਤ ਹੋ, ਸ਼ਾਂਤ ਹੋ।
5. ਗੁੜ ਖੰਡ ਹੋਰ ਮਤ ਪਾ, ਤਾਪ ਹੋਊਗਾ।
6. ਸੋਮਾਂ ! ਡੰਡ ਮਤ ਪਾ, ਸ਼ਰਮ ਪਾ।
7. ਸਤਗੁਰ ਤੋਂ ਸੁਖ ਸ਼ਾਂਤ ਮੰਗ।

|      |      |       |             |           |             |
|------|------|-------|-------------|-----------|-------------|
| ਔਖਾ  | ਕਠਿਨ | ਪਾ    | ਡਾਲ         | ਡੰਡ ਮਤ ਪਾ | ਸ਼ੋਰ ਸਤ ਸਚਾ |
| ਹੋਰ  | ਔਰ   | ਝੁੱਗਾ | ਝੌਂਪੜੀ (ਘਰ) | ਸਤ ਗੁਰ    | ਸਦ ਗੁਰੂ     |
| ਬੋਝਾ | ਪੋਝ  | ਸਾੜ   | ਜਲਾ         | ਸ਼ਾਂਤ     | ਸ਼ਾਂਤਿ      |
| ਪੁੰ  | ਧੁਆਂ | ਹੋਊਗਾ | ਤੁਝੇ ਹੋਗਾ   | ਮੰਗ       | ਸਾਂਗ        |

ਪਾਠ 5

= ਖੁ ਦ - ਖੁ ਫ - ਦੁ ਰ

= ੭<sup>੨</sup> , ਸ , ਸ = ੭, ਜ

|            |            |           |
|------------|------------|-----------|
| ਦੁਖ ਦਰਦ    | ਚੋਰੀ ਚਕਾਰੀ | ਆਪਾ ਧਾਪੀ  |
| ਦੁਖ ਦਰਦ    | ਚੋਰੀ ਚਕਾਰੀ | ਆਪਾ ਧਾਪੀ  |
| ਦੋਸਤੀ ਯਾਰੀ | ਯਕਕਾ ਦੁਕਕੀ | ਯਕਕਡ ਫਕਕਡ |

|          |            |           |
|----------|------------|-----------|
| ਵਿਦਿਆਰਥੀ | ਆਸ਼ਾਵਾਦੀ   | ਜ਼ੋਰ ਜ਼ੋਰ |
| ਵਿਦਿਆਰਥੀ | ਆਸ਼ਾਵਾਦੀ   | ਜ਼ੋਰ ਜ਼ੋਰ |
| ਛੰਦੋਰਾ   | ਫ਼ਿਰੋਜ਼ਪੁਰ | ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰ |
| ਫਫ਼ੋਰਾ   | ਫ਼ਿਰੋਜ਼ਪੁਰ | ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰ |

**ਲਿਖਿਏਗਾ :**

ਤੇਰੇ ਖੇਤ ਕਿਉਂ ਉਜੜੇ-ਪੁਜੜੇ ਦਿਸਦੇ।

ਤੇਰੇ ਪੈਰ ਕਿਉਂ ਥਕੇ ਟੁਟੇ ਤੇ ਫਟੜੇ ਦਿਸਦੇ।

ਮਿੱਟੀ ਵਿਚ ਕਿਉਂ ਮਿੱਟੇ ਮੁੱਟੇ।

ਕਿਉਂ ਉਦਾਸ ਤੂੰ ਦਿਸਦਾ ਹਰ ਦਮ।

ਆਪਾ-ਧਾਪੀ ਸਵਾਰਥ ਸਿਫ਼ਿ ਉਜੜੇ ਪੁਜੜੇ ਵੀਰਾਨ ਫਟੜ ਘਾਧਲ  
ਯਕੜ ਫਕੜ ਗਾਲਿਆਂ ਦਿਸਦੇ ਦੀਖਣੇ ਮਿੱਟੇ ਬਾਲਿਆਂ

**ਨਿਮਨਲਿਖਿਤ ਕਹਾਨੀ ਨੂੰ ਗੁਰਮੁਖੀ ਲਿਪਿ ਮੇਂ ਲਿਖਿਏ :**

ਭੁਕ ਸੀ ਸ਼ਿਕਾਰੀ। ਉਸ ਭੁਕ ਸੂਰ ਵੇਖਿਆ। ਉਸ ਤੀਰ ਮਾਰਿਆ। ਤੀਰ ਜਾ  
ਸੂਰ ਦੇ ਸਿਰ ਵਿਚ ਵਜਿਆ। ਉਹ ਫਟੜ ਹੋ ਗਿਆ, ਪਰ ਟਪਿਆ ਤੇ ਸ਼ਿਕਾਰੀ ਉਪਰ  
ਘਰ ਕਰਕੇ ਡਿਗ ਪਿਆ। ਸ਼ਿਕਾਰੀ ਵੀ ਮਰ ਗਿਆ ਤੇ ਸੂਰ ਵੀ।

ਉਧਰੋਂ ਭੁਕ ਗਿਦੜ ਆ ਪੁੱਜਾ। ਦੋਵੇਂ ਮਰੇ ਵੇਖ ਕੇ ਗਿਦੜ ਖੁਸ਼ ਹੋਇਆ ਪੜ੍ਹ  
ਕੜ੍ਹ ਦਿਹਾੜਿਆਂ ਦੀ ਖੁਸ਼ਾਕ ਹੱਥ ਆ ਗਈ ਹੈ, ਪਰ ਅੱਜ ਤਾਂ ਧਨਖ ਦੀ ਤਦ ਹੀ  
ਖਾਓਂਦਾ ਹਾਂ। ਭੁਕ ਭੁਕਾ ਕਰ ਕੇ ਉਸ ਜਿਉਂ ਤਦ ਤੇ ਦੰਦ ਮਾਰਿਆ, ਧਨਖ ਦੀ ਕਾਸ  
ਉਸ ਦੇ ਮੂੰਹ ਵਿਚ ਜੋਰ ਦੀ ਵੱਜੀ ਤੇ ਫਸ ਗਈ। ਉਹ ਗਿਦੜ ਵੀ ਤੜਫ ਤੜਫ  
ਕੇ ਉਥੇ ਹੀ ਮਰ ਗਿਆ।

**ਧਿਠਲੀ ਕਹਾਨੀ ਨੂੰ ਸੁਰੂ ਰੂਪ ਧਰ ਹੈ, ਅਪਣੀ ਲਿਖਾਈ ਨੂੰ ਜੁਲਨਾ ਕੀਜਿਏ :**

ਇਕ ਸੀ ਕਾਂ, ਤਿਹਾਇਆ ਉਡ ਰਹਿਆ ਸੀ। ਧਰਤੀ ਤੇ ਇਕ ਥਾਂ ਮਟਕਾ ਵੇਖ ਕੇ  
ਉਹ ਉਤਰ ਆਇਆ, ਪਰ ਮਟਕਾ ਤਾਂ ਖਾਲੀ ਸੀ। ਮਟਕੇ ਆਖਿਆ—“ਕਾਂ! ਓਏ  
ਕਾਂ!! ਤੇਰੀ ਕਿਸਮਤ ਖੋਟੀ ਹੈ, ਅਸੀਂ ਤਾਂ ਤੇਰਾ ਰਾਹ ਵੇਖ ਵੇਖ ਕੇ ਥੱਕ ਗਏ ਹਾਂ। ਇਸ  
ਵਕਤ ਤਾਂ ਇਕ ਕਤਰਾ ਵੀ ਮੇਰੇ ਪਾਸ ਕਿਥੇ ਰਹਿਆ ਹੈ।”

ਕਾਂ ਇਹ ਆਖ ਕੇ ਉਥੋਂ ਉਡ ਗਇਆ—“ਤੂੰ ਕੀ ਪੈਰਾਤ ਕਰੇਂਗਾ। ਤੇਰੇ ਪਾਸ  
ਕੁਝ ਹੋਵੇਗਾ ਤਾਂ ਗੁਮ ਸੁਮ ਪਾਇਆ ਰਹੇਂਗਾ। ਬੈਠਾ ਸ਼ਾਹ ਮੁਹਤ ਰੱਖਾਂ ਮਾਰ ਰਹਿਆ  
ਹੈ।”

ਕਾਂ ਕਕਾ ਆਇਆ ਆਯਾ ਆਖਕੇ ਕਹਕਰ  
ਤਿਹਾਇਆ ਪਾਸਾ, ਰੁਥਿਤ ਆਖਿਆ ਕਹਾ ਗਇਆ ਗਯਾ



|           |                 |             |                  |
|-----------|-----------------|-------------|------------------|
| ਬਣ ਠਣ     | ਬਨ ਠਨ           | ਮਤਿਨਾਮ      | ਸਤ੍ਯ ਨਾਮ         |
| ਲੁੱਟ ਪੁੱਟ | ਲੂਟ ਖਸੂਟ        | ਜਾਣ ਬੁੱਝ ਕੇ | ਜਾਨ ਬੂਝ ਕਰ       |
| ਲੂਣ ਸਬੂਣ  | ਲਵਣ (ਨਮਕ) ਸਾਬੁਨ | ਮਿਠ ਬੋਲੜਾ   | ਮੀਠਾ ਬੋਲਨੇ ਵਾਲਾ  |
| ਆਲਾ ਦੁਆਲਾ | ਪਰਿਵੇਸ਼         | ਹਉ ਸੀਮਲਿ    | ਮੈਂ ਯਾਦ ਕਰ ਕਰ ਕੇ |
| ਪਉਣ ਪਾਣੀ  | ਪਵਨ ਪਾਨੀ        | ਥਕੀ         | ਥਕ ਗਈ            |
| ਲਾਰਾ ਲੱਪਾ | ਟਾਲ ਮਟੋਲ        | ਕਦੇ ਨਾ      | ਕਦਾਚਿਤ ਨਹੀਂ      |
| ਨਗਾੜਾ     | ਨਕਕਾਰਾ          | ਕਉਰਾ        | ਕਝਵਾ             |

**ਸ਼ਾਬਾਰਥ :**

2. ਕਾਲ ਕੇ ਕਾਰਣ ਪਰਿਵਰਤਿਤ ਹੋਨੇ ਵਾਲੀ ਸੁਕੁਮਾਰ ਕਾਯਾ ਖਿੱਥਾ (ਫਕੀਰੀ) ਕੀ ਗੁਦਭੀ) ਕੇ ਸਮਾਨ ਹੈ। ਆਦਿ ਪੰਥ ਵਾਲੇ ਸੰਪ੍ਰਦਾਯੋਂ ਸੇ ਅਸੰਬੰਧ (ਵਿਅਕਿਤਗਤ) ਹੋਤੇ ਹੈਂ, ਤਨਕਾ ਧ੍ਯੇਯ ਹੈ ਮਨ ਕਾ ਜੀਤਨਾ ਔਰ ਯਹ ਸਾਧਨਾ ਵਿਸ਼ਵ-ਵਿਜਯ ਕੇ ਸਮਾਨ ਹੈ। ਪ੍ਰਣਾਮ ਤਸੀ ਏਕ ਪ੍ਰਭੂ ਕੋ ਹੈ। ਵਹ ਆਦਿ ਕਾਲ ਸੇ ਹੈ, ਅਸੀਸ ਹੈ ਔਰ ਅਨਾਦਿ ਹੈ। ਤਸ ਕਾ ਸੰਗੀਤ ਅਨਾਹਤ ਹੈ ਔਰ ਤਸ ਕਾ ਸਵਰੂਪ ਯੁਗ ਯੁਗਾਂਤਰ ਮੇਂ ਏਕ ਸਾ ਹੈ।
3. ਹੇ ਪੀਪਲ ਕੇ ਪਤਰ ! ਤੁਮ ਨੇ ਕੈਸੀ ਖੜ-ਖੜ ਲਗਾ ਰਖੀ ਹੈ। ਹੇ ਪੁਰਾਨੇ (ਪਤਰ) ਤੂ ਫਹ ਜਾ, ਅਬ ਤੋ ਨਯੇ (ਪਤਰ) ਕੀ ਬਾਰੀ ਆਈ ਹੈ।

**ਗੁਰਮੁਖੀ ਮੇਂ ਲਿਖਿਏ :**

ਏਕ ਸਾਹੂਕਾਰ ਦੀ ਸਾਰੀ ਨਕਦੀ ਚੋਰ ਲੈ ਗਏ। ਜਦੋਂ ਤਸ ਨੂੰ ਪਤਾ ਲਗਿਆ ਤਾਂ ਲਗਾ ਰੀਲਾ ਪਾਤਣ, “ਮੈਂ ਲੁਟਿਆ ਗਏ। ਓਏ ਪੁਟਿਆ ਗਏ। ਮੇਰਾ ਸਾਰਾ ਕੁਝ ਚੋਰ ਲੈ ਗਏ। ਮੈਂ ਤਕਕਾ ਲੁਟਿਆ ਗਏ। ਮੇਰੀ ਸਾਰੀ ਤਮਰ ਦੀ ਕਮਾਈ ਚੋਰ ਲੈ ਗਏ। ਛਾਏ ਚੋਰ ਪੈ ਗਏ।”

ਤਸ ਵੇਲੇ ਤਸ ਦਾ ਨੌਕਰ ਕੋਲ ਖਲੋਤਾ ਸੀ। ਸਾਹੂਕਾਰ ਦੀ ਹਾਲ-ਹਾਲ ਸੁਣ ਕੇ ਆਖਣ ਲਗਾ—“ਹਥ ਤਾਂ ਤਨ੍ਹਾਂ ਦੇਰੀ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਆਤਣਾ।”

ਸਾਹੂਕਾਰ ਨੇ ਚੇਤੀ ਸੁਆਲ ਕੀਤਾ—“ਕਿਸ ਤਰਹੋਂ ਤਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਹਥ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਆਤਣਾ?” ਨੌਕਰ ਨੇ ਆਖਿਆ—“ਕੁੰਜੀਓਂ ਤਾਂ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਹੀ ਹਨ।”

**ਪਿਛਲੀ ਲਿਖਾਈ ਕਾ ਸੁਫ਼ ਰੂਪ ਯਹ ਹੈ :**

ਇਕ ਸੀ ਸ਼ਿਕਾਰੀ, ਉਸ ਇਕ ਸੂਰ ਵੇਖਿਆ। ਉਸ ਤੀਰ ਮਾਰਿਆ। ਤੀਰ ਜਾ ਸੂਰ ਦੇ ਸਿਰ ਵਿਚ ਵੱਜਿਆ। ਉਹ ਫਟੜ ਹੋ ਗਇਆ, ਪਰ ਟਪਿਆ ਤੇ ਸ਼ਿਕਾਰੀ ਉਪਰ ਵਾਰ ਕਰਕੇ ਡਿਗ ਪਇਆ। ਸ਼ਿਕਾਰੀ ਵੀ ਮਰ ਗਇਆ ਤੇ ਸੂਰ ਵੀ।

ਉਧਰੋਂ ਇਕ ਗਿੱਦੜ ਆ ਪੁਜਾ। ਦੋਵੇਂ ਮਰੇ ਵੇਖ ਕੇ ਗਿੱਦੜ ਖੁਸ਼ ਹੋਇਆ ਪਈ ਕਈ ਦਿਹਾੜਿਆਂ ਦੀ ਖੁਰਾਕ ਹਥ ਆ ਗਈ ਹੈ, ਪਰ ਅੱਜ ਤਾਂ ਧਨਖ ਦੀ ਤੰਦ ਹੀ ਖਾਉਂਦਾ ਹਾਂ। ਇਹ ਇਰਾਦਾ ਕਰ ਕੇ ਉਸ ਜਿਉਂ ਤੰਦ ਤੇ ਦੰਦ ਮਾਰਿਆ ਧਨਖ ਦੀ ਕਾਮ ਉਸ ਦੇ ਮੂੰਹ ਵਿਚ ਜੋਰ ਦੀ ਵੱਜੀ ਤੇ ਫਸ ਗਈ। ਉਹ ਗਿੱਦੜ ਵੀ ਤੜਫ ਤੜਫ ਕੇ ਉਥੇ ਹੀ ਮਰ ਗਇਆ।

|             |           |                  |                                             |
|-------------|-----------|------------------|---------------------------------------------|
| ਸੀ          | ਥਾ        | ਉਧਰੋਂ            | ਤਖਰ ਸੇ                                      |
| ਉਸ ਵੇਖਿਆ    | ਤਸਨੇ ਦੇਖਾ | ਗਿੱਦੜ            | ਗੀਦਭ                                        |
| ਹੱਥ         | ਹਾਥ       | ਸੂਰ ਦੇ           | ਸੂਅਰ ਕੇ                                     |
| ਪੁਜਾ        | ਪਹੁੰਚਾ    | ਖਾਉਂਦਾ ਹਾਂ       | ਖਾਤਾ ਹੂੰ                                    |
| ਉਸ ਮਾਰਿਆ    | ਤਸਨੇ ਮਾਰਾ | ਦੋਵੇਂ            | ਦੋਨਾਂ                                       |
| ਜਿਉਂ        | ਜਯੋਂ ਹੀ   | ਵਜਿਆ             | ਲਗਾ                                         |
| ਹੋਇਆ        | ਹੁਆ       | ਤੰਦ ਤੇ ਦੰਦ ਮਾਰਿਆ | ਤਾਂਤ ਪਰ ਦਾਂਤ ਮਾਰਾ<br>(ਦਾਂਤ ਸੇ ਤਾਂਤ ਕੋ ਕਾਟਾ) |
| ਫਟੜ         | ਥਾਧਲ      | ਪਈ               | ਕਿ                                          |
| ਕਾਮ         | ਕਮਾਨੀ     | ਟਪਿਆ             | ਤਛਲਾ                                        |
| ਦਿਹਾੜਿਆਂ ਦੀ | ਦਿਨੋਂ ਕੀ  | ਮੂੰਹ ਵਿਚ         | ਮੂੰਹ ਮੈਂ                                    |
| ਡਿਗ ਪਇਆ     | ਗਿਰ ਪਛਾ   | ਖੁਰਾਕ            | ਖਰਾਕ, ਖਾਦਧ                                  |
| ਵੱਜੀ        | ਲਗੀ       | ਵੀ               | ਮੀ                                          |
| ਅੱਜ ਤਾਂ     | ਆਜ ਤੋ     | ਫਸ ਗਈ            | ਫੱਸ ਗਏ                                      |
| ਗਇਆ         | ਗਯਾ       | ਧਨਖ ਦੀ ਤੰਦ       | ਧਨੁਖ ਕੀ ਤਾਂਤ                                |
| ਉਥੇ ਹੀ      | ਥਹੀਂ      |                  |                                             |

ਪਾਠ 7

⇒ ਭੁ - ਭੁ ਭੁ ਭੁ ਭੁ ਭੁ ਭੁ ਭੁ  
- ਕ ਕ ਕ - 'ਕੁ', ਕੁ

|                 |       |                 |        |
|-----------------|-------|-----------------|--------|
| ਛਣਕਣਾ           | ਉਘੜਨਾ | ਪਛਾਣਨਾ          | ਭਬੀਰੀ  |
| ਚਾਕਾ (ਚੁੱਤਚੁੱਤ) | ਚਢਨਾ  | ਪਛਾਣਨਾ (ਪਛਾਣਨਾ) | ਮੰਬੀਰੀ |

|             |          |               |                  |
|-------------|----------|---------------|------------------|
| ਸੁਰੰਗਾ ਵਾਂਭ | ਭਗਤ ਸਿੰਘ | ਭਾਂਬੜ         | ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ |
| ਸੁਰੰਗ ਗਾਂਗ  | ਭਗਤ ਸਿੰਘ | ਭਾਂਬੜ (ਭੰਬਰੀ) | ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ |
| (ਕੀ ਤਰਹ)    |          |               | (ਸਿੰਘ)           |

ਲਿਖਿਏਗਾ :

\* ਕਿਸਮਤ ਨੂੰ ਨਾ ਕੋਸ  
ਕਿ ਉਹ ਹੈ ਹਿੱਸਤ ਦੀ ਅਰਪੰਗੀ  
ਪੁਰਸਾਰਥ ਦਾ ਹੜ੍ਹ  
ਜਦ ਆਏ, ਰੋੜ੍ਹ ਖੜੇ ਸਭ ਤੰਗੀ

ਗੁਰਮੁਖੀ ਦੇ ਅੱਕ ਹਿੰਦੀ ਦੇ ਸੇ ਹੀ ਹੈਂ। ਬਹੁਤ ਥੋੜਾ ਅੰਤਰ ਹੈ :

੧ ੨ ੩ ੪ ੫ ੬ ੭ ੮ ੯ ੧੦

੧ ਏਕ ਆੱਕਾਰ ੧ ਓ (ਓ) ਦੇ ਲਿਏ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਪ੍ਰਯੁਕਤ ਹੋਤਾ ਹੈ। ਕਿਸੀ ਸ਼ਬਦ  
ਕੀ ਪੁਨਰਾਵ੍ਰਤਿ ਕੇ ਲਿਏ '੨' ਪ੍ਰਯੁਕਤ ਹੋਤਾ ਹੈ, ਧਰ੍ਥਾ : ਰੱਬ ਰੱਬ ਆਖ = ਰੱਬ ੨ ਆਖ।

ਸ਼ਾਹੂਕਾਰ ਦੀ ਪਿਛਲੀ ਕਹਾਣੀ :

ਇਕ ਸ਼ਾਹੂਕਾਰ ਦੀ ਸਾਰੀ ਨਕਦੀ ਚੋਰ ਲੈ ਗਏ। ਜਦੋਂ ਉਸ ਨੂੰ ਪਤਾ ਲਗਿਆ ਤਾਂ  
ਲਗਾ ਰੋਲਾ ਪਾਉਣ—“ਮੈਂ ਲੁਟਿਆ ਗਇਆ। ਓਏ ਪੁਟਿਆ ਗਇਆ ਜੇ। ਮੇਰਾ ਸਾਰਾ  
ਕੁਝ ਚੋਰ ਲੈ ਗਏ ਨੇ। ਮੈਂ ਉੱਕਾ ਲੁਟਿਆ ਗਇਆ ਜੇ। ਮੇਰੀ ਸਾਰੀ ਉਮਰ ਦੀ ਕਮਾਈ  
ਚੋਰ ਲੈ ਗਏ ਨੇ, ਹਾਏ ਚੋਰ ਪੈ ਗਏ।”

ਉਸ ਵੇਲੇ ਉਸ ਦਾ ਨੌਕਰ ਕੋਲ ਖਲੋਤਾ ਸੀ। ਸ਼ਾਹੂਕਾਰ ਦੀ ਹਾਲ ਹਾਲ ਸੁਣ ਕੇ  
ਆਖਣ ਲਗਾ—“ਹੱਥ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵੀ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਆਉਣਾ।”

ਸ਼ਾਹੂਕਾਰ ਨੇ ਛੇਤੀ ਸੁਆਲ ਕੀਤਾ ‘ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਹੱਥ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਆਉਣਾ?’  
ਨੌਕਰ ਨੇ ਆਖਿਆ—“ਕੁੰਜੀਆਂ ਤਾਂ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਹੀ ਹਨ।”

|                |                  |          |         |
|----------------|------------------|----------|---------|
| ਜਦੋਂ           | ਜਬ               | ਵੇਲੇ     | ਸਮਧ     |
| ਉਸ ਨੂੰ         | ਦਸ ਕੀ            | ਕੋਲ      | ਪਾਸ     |
| ਪਤਾ ਲਗਿਆ       | ਪਤਾ ਲਗਾ          | ਖਲੋਤਾ ਸੀ | ਖੜਾ ਥਾ  |
| ਰੋਲਾ ਪਾਉਣ ਲਗਿਆ | ਸ਼ੌਰ ਸਚਾਨੇ ਲਗਾ   | ਹਾਲ ਹਾਲ  | ਹਾਹਾਕਾਰ |
| ਲੈ ਗਏ ਨੇ       | ਅਜੀ ਧੇ ਲੇ ਗਏ ਹੈਂ | ਸੁਣ ਕੇ   | ਸੁਨ ਕਰ  |
| ਚੋਰ ਪੈ ਗਏ      | ਚੋਰ ਆ ਪਏ         | ਹਥ ਤਾਂ   | ਹਾਥ ਤੋ  |

\* ਸ਼ਾਬਾਰਥ :- ਕਿਸਮਤ (ਭਾਗਧ) ਕੀ ਨ ਕੋਸ ਕਿ ਕਹ ਹੈ ਹਿਸਮਤ ਕੀ ਅਬਾੰਗੀ ਪੁਰੁਸਾਰਥ ਕੀ  
ਕਾਫ਼ ਜਬ ਆਏ, ਕਹਾ ਲੇ ਯਾਏ ਤੰਗੀ ॥

|                 |                |              |          |
|-----------------|----------------|--------------|----------|
| ਮੈਂ ਲੁਟਿਆ ਪੁਟਿਆ | ਮੈਂ ਕੂਟਾ ਖਸੂਟਾ | ਹੱਥ ਤਾਂ      | ਹਾਥ ਜੋ   |
| ਗਇਆ             | ਗਯਾ            | ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵੀ | ਉਨ ਕੇ ਭੀ |
| ਕੀਤਾ            | ਕਿਯਾ           | ਬੁੱਝ         | ਕੁਝ      |
| ਤਾਂ             | ਜੋ             | ਆਉਣਾ         | ਆਨਾ      |
| ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਹਨ     | ਮੇਰੇ ਧਾਸ ਹੈਂ   | ਛੇਤੀ         | ਜਲਦੀ     |

ਇਕੋ ਵਾਕ ਵਿਚ ਸਾਰੀਆਂ ਲਗਾਂ ਮਾਤ੍ਰਾਂ ਤੇ ਅਖਰਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ :

ਸੱਚੇ ਪ੍ਰਭ ਨੇ ਮਨੁਖ ਲਈ ਗੁਣਾਂ ਦੇ ਯਥੇਸ਼ਟ ਮੋਕੇ ਨਜਿਠੇ, ਫਿਰ ਵੀ ਅਪਰਾਧ-ਬ੍ਰਿਤੀ  
ਡਾਢੇ ਪਸ਼ੂ ਵਾਂਗ ਉਵੇਂ ਹੀ ਛੇਟਿਆਂ ਨੂੰ ਝਾੜਦੀ ਘਾਲਦੀ ਹੈ।

**ਸੂਚਨਾ :** ਪੰਜਾਬੀ ਹਸਤ-ਲੇਖੀਂ ਕੌ ਪੜ੍ਹਨੇ ਕੇ ਅਧਿਆਸ ਕੇ ਲਿਏ ਦੇਖਿਏ ਪਰਿਸ਼ਿਟ।

SIKHBOOKCLUB.COM



## खण्ड 4

### पंजाबी संरचना

#### पाठ 1

#### ਪ੍ਰਮੁਖਵਾਚੀ ਸ਼ਬਦ (प्रश्नवाची शब्द)

|                   |           |
|-------------------|-----------|
| ਕੀ ?              | क्या ?    |
| ਕਿਸ ਪੁਰ ?         | किस पर ?  |
| ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ?      | किस तरह ? |
| ਕਿਹੋ ਜਿਹਾ ?       | कैसा ?    |
| ਕਿਵੇਂ ? (ਕੀਕਣ) ?  | कैसे ?    |
| ਕੌਣ ?             | कौन ?     |
| ਕਿਸਦਾ ?           | किस का ?  |
| ਕਿਸ ਨੂੰ ?         | किस को ?  |
| ਕਦੇ ?             | कब ?      |
| ਕਦੇ ਤਕ ?          | कब तक ?   |
| ਕਿੰਨਾ ? (ਕਿਤਨਾ ?) | कितना ?   |
| ਕਿੱਧਰ ?           | किधर ?    |
| ਕਿੱਥੇ ?           | कहाँ ?    |
| ਕਿਉਂ ?            | क्यों ?   |

#### विशेष वाक्य

- |                    |                 |
|--------------------|-----------------|
| 1. ਕਿੰਨੇ ਚਿਰ ਵਿਚ ? | कितनी देर में ? |
| 2. ਕਿੰਨੀ ਦੇਰ ਵਿਚ ? | कितनी देर में ? |
| 3. *ਕਿੰਨਾ ਵੱਡਾ ?   | कितना बड़ा ?    |
| 4. ਕਿੰਨੀ ਦੂਰ ?     | कितनी दूर ?     |

---

\* ਕਿੰਨਾ=ਕਿੰਨਾ

ਪੰਜਾਬੀ ਸੰਖੇਪ ਸ਼ੈਲੀ में कई दृष्टियों से हिन्दी की अपेक्षा अधिक सुविधा है :

- |                        |             |                  |           |
|------------------------|-------------|------------------|-----------|
| 1. उस के पास           | ਉਸ ਕੋਲ      | 5. उस के बीच में | ਉਸ ਵਿਚ    |
| 2. शाम को              | ਸ਼ਾਮੀਂ      | 6. किस के आगे    | ਕਿਸ ਅੱਗੇ  |
| 3. पानी भरने के लिए आई | ਪਾਣੀ ਭਰਨ ਆਈ | 7. इस के बाद     | ਇਸ ਪਿੱਛੋਂ |
| 4. उसके लिए            | ਉਸ ਲਈ       |                  |           |

## ਪਾਠ 2

### ਪ੍ਰਸ਼ਨਵਾਚੀ ਵਾਕ (प्रश्नवाची वाक्य)

- |                                           |                                  |
|-------------------------------------------|----------------------------------|
| ਇਹ ਕੀ ਹੈ ?                                | यह क्या है ?                     |
| ਇਹ ਹੁੱਖ ਹੈ।                               | यह वृक्ष है।                     |
| ਉਹ ਕੀ ਹੈ ?                                | वह क्या है ?                     |
| ਉਹ ਫੁਲ ਹੈ।                                | वह फूल है।                       |
| ਉਹ ਕੋਣ ਹੈ ?                               | वह कौन है ?                      |
| ਉਹ ਕੁੜੀ ਹੈ।                               | वह लड़की है।                     |
| ਕੁੜੀ ਹੈ ਕਿ ਮੁੰਡਾ ਹੈ ?                     | लड़की है कि लड़का ?              |
| ਨਹੀਂ ਜੀ, ਕੁੜੀ ਹੈ।                         | जी नहीं, लड़की है।               |
| ਉੱਥੇ ਕੀ ਹੈ ?                              | वहाँ क्या है ?                   |
| ਉੱਥੇ ਇਕ ਬਗੀਚਾ ਹੈ।                         | वहाँ एक बगीचा है।                |
| ਬਗੀਚੇ ਵਿਚ ਕਿਹੋ ਜਿਹੇ ਫੁੱਲ ਹਨ ?             | बगीचे में किस तरह के फूल हैं ?   |
| ਗੋਦਾ, ਗੁਲਾਬ, ਚੰਬੇਲੀ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਫੁੱਲ ਹਨ। | गेंदा, गुलाब, चंबेली कई फूल हैं। |
| ਗੁਲਾਬ ਦੇ ਫੁੱਲ ਦਾ* ਰੰਗ ਕੀ ਹੈ ?             | गुलाब के फूल का रंग क्या है ?    |
| ਇਸ ਦਾ ਰੰਗ ਲਾਲ ਹੈ।                         | इस का रंग लाल है।                |
| ਬਗੀਚਾ ਕਿਸ ਦਾ ਹੈ ?                         | बगीचा किस का है ?                |
| ਇਸ ਦਾ ਮਾਲਿਕ ਕੋਣ ਹੈ ?                      | इस बगीचे का मालिक कौन है ?       |
| ਇਸ ਬਗੀਚੇ ਦਾ ਮਾਲਿਕ ਇਕ ਸੇਠ ਹੈ।              | इसका मालिक एक सेठ है।            |
| ਸੇਠ ਦਾ ਨਾਂ ਕੀ ਹੈ ?                        | सेठ का नाम क्या है ?             |
| ਸੇਠ ਦਾ ਨਾਂ ਹੈ ਮਦਨ ਲਾਲ।                    | सेठ का नाम है मदन लाल।           |
| ਕੀ ਉਹ ਇਸ ਬਗੀਚੇ ਦਾ ਮਾਲਿਕ ਹੈ ?              | क्या वह इस बगीचे का मालिक है ?   |

\* ਦਾ, ਦੇ, ਦੀ = ਕਾ, ਕੇ, ਕੀ

|                             |                            |
|-----------------------------|----------------------------|
| ਹਾਂ ਜੀ, ਉਹੋ ਇਸ ਦਾ ਮਾਲਿਕ ਹੈ। | ਜੀ ਹਾਂ, ਵਹੀ ਇਸਕਾ ਮਾਲਿਕ ਹੈ। |
| ਇਹ ਵੱਡੀ ਪੈਲੀ ਕਿਸ ਦੀ ਹੈ ?    | ਧਹ ਬਡਾ ਖੇਤ ਕਿਸ ਕਾ ਹੈ ?     |
| ਇਹ ਵੱਡੀ ਪੈਲੀ ਵੀ ਉਸੇ ਦੀ ਹੈ।  | ਧਹ ਬਡਾ ਖੇਤ ਭੀ ਚਸੀ ਕਾ ਹੈ।   |
| ਕੀ ਉਹ ਅਮੀਰ ਹੈ ?             | ਕਧਾ ਵਹ ਅਮੀਰ ਹੈ ?           |
| ਜੀ, ਗਰੀਬ ਤਾਂ ਨਹੀਂ।          | ਜੀ, ਗਰੀਬ ਤੋ ਨਹੀਂ।          |

### ਪਾਠ 3

#### ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ (ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ)

|                                      |                                  |
|--------------------------------------|----------------------------------|
| ਫੁੱਲ ਸੋਹਣਾ ਹੈ।                       | ਫੂਲ ਸੁਨਦਰ ਹੈ।                    |
| ਰੁੱਖ ਉੱਚਾ ਹੈ।                        | ਵ੍ਰੁਖ ਊਂਚਾ ਹੈ।                   |
| ਉਹ ਰੁੱਖ ਉੱਚਾ ਹੈ।                     | ਵਹ ਵ੍ਰੁਖ ਊਂਚਾ ਹੈ।                |
| ਇਹ ਨੀਵਾਂ ਹੈ।                         | ਧਹ ਨੀਚਾ ਹੈ।                      |
| ਕੁੜੀ ਬਿਮਾਰ ਹੈ।                       | ਲੜਕੀ ਕੀਮਾਰ ਹੈ।                   |
| ਕੁੜੀ ਦੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਖਰਾਬ ਹਨ।             | ਲੜਕੀ ਕੀ ਆਂਖੇਂ ਖਰਾਬ ਹੈਂ।          |
| ਉਸ ਦੇ ਕਪੜੇ ਮੈਲੇ ਹਨ।                  | ਓਸ ਕੇ ਕਪੜੇ ਮੈਲੇ ਹੈਂ।             |
| ਉਸ ਦੀਆਂ ਜੁੱਤੀਆਂ ਮੈਲੀਆਂ ਹਨ।           | ਓਸ ਕੀ ਜੂਤੀਯਾਂ ਮੈਲੀ ਹੈਂ।          |
| ਬਿਮਾਰ ਕੁੜੀ ਬਗੀਚੇ ਵਿਚ ਹੈ।             | ਕੀਮਾਰ ਲੜਕੀ ਬਗੀਚੇ ਮੇਂ ਹੈ।         |
| ਬਗੀਚਾ ਸੋਹਣਾ ਹੈ।                      | ਬਾਗੀਚਾ ਸੁਨਦਰ ਹੈ।                 |
| ਹਰਾ ਹਰਾ ਘਾਹ ਚੰਗਾ ਹੈ।                 | ਹਰੀ ਹਰੀ ਘਾਸ ਅਚਲੀ ਹੈ।             |
| ਹਵਾ ਗਰਮ ਨਹੀਂ ਹੈ।                     | ਹਵਾ ਗਰਮ ਨਹੀਂ ਹੈ।                 |
| ਠੰਢੀ ਠੰਢੀ ਹੈ।                        | ਠੰਡੀ ਠੰਡੀ ਹੈ।                    |
| ਵੱਡੀਆਂ ਵੱਡੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਇਥੇ ਹਨ।         | ਬਡੀ ਬਡੀ ਲੜਕੀਯਾਂ ਧਹਾਂ ਹੈਂ।        |
| ਨਿੱਕੇ ਨਿੱਕੇ ਮੁੰਡੇ ਉਥੇ ਹਨ।            | ਛੋਟੇ ਛੋਟੇ ਲੜਕੇ ਵਹਾਂ ਹੈਂ।         |
| ਮੋਟੀਆਂ ਮੋਟੀਆਂ ਪੁਸਤਕਾਂ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਹਨ।   | ਮੋਟੀ ਮੋਟੀ ਪੁਸਤਕੇਂ ਸਕੂਲ ਮੇਂ ਹੈਂ।  |
| ਚੰਗੀਆਂ ਮੁੰਡਿਆਂ ਦੀਆਂ ਪੁਸਤਕਾਂ ਸਾਫ਼ ਹਨ। | ਅਚਲੇ ਲੜਕੇਂ ਕੀ ਪੁਸਤਕੇਂ ਸਾਫ਼ ਹੈਂ।  |
| ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਨਿੱਕੀਆਂ ਵੱਡੀਆਂ ਪੁਸਤਕਾਂ   | ਓਨਕੀ ਛੋਟੀ ਬਡੀ ਪੁਸਤਕੇਂ ਸਬ ਸੁਨਦਰ   |
| ਸਭ ਸੁੰਦਰ ਹਨ।                         | ਹੈਂ।                             |
| ਕਿਤਾਬਾਂ ਕਿਸ ਦੇ ਕੋਲ ਹਨ ?              | ਕਿਤਾਬੇਂ ਕਿਸ ਕੇ ਪਾਸ ਹੈਂ ?         |
| ਸਾਰੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਮੁੰਡਿਆਂ ਕੁੜੀਆਂ        | ਸਮੀ ਕਿਤਾਬੇਂ ਲੜਕੇਂ ਲੜਕੀਯੇਂ ਕੇ ਪਾਸ |
| ਕੋਲ ਹਨ।                              | ਹੈਂ।                             |
| ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਕੋਈ ਕਿਤਾਬ ਨਹੀਂ ਹੈ।          | ਮੇਰੇ ਪਾਸ ਕੋਈ ਕਿਤਾਬ ਨਹੀਂ ਹੈ।      |

ਤੇਰੇ ਕੋਲ ਕਾਗਜ਼ ਤਾਂ ਹੈ, ਕਲਮ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਤੇਰੇ ਪਾਸ ਕਾਗਜ਼ तो है, कलम नहीं है।  
 ਕਲਮ ਕਿੱਥੇ ਹੈ ? ਕਲਮ कहाँ है ?  
 ਕਲਮ ਬਸਤੇ ਵਿਚ ਹੈ। ਕਲਮ बस्ते में है।  
 ਤੂੰ ਚੰਗਾ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਹੈਂ। ਤੂੰ अच्छा विद्यार्थी हैं।

## ਪਾਠ 4

ਸਰਲ ਸਾਧਾਰਣ ਵਾਕ (सरल साधारण वाक्य)

ਇਹ ਕੀ ਹੈ ?  
 ਇਹ ਫੁੱਲ ਹੈ।  
 ਉਹ ਕੁੰਡਾ ਹੈ।  
 ਉਹ ਲੱਤ ਹੈ।  
 ਇਹ ਹੱਥ ਹੈ।  
 ਇਹ ਇੱਟ ਹੈ।  
 ਉਹ ਪੱਥਰ ਹੈ।  
 ਪੱਥਰ ਕਾਲਾ ਹੈ।  
 ਇੱਟ ਲਾਲ ਹੈ।  
 ਕੀ ਇੱਟ ਕਾਲੀ ਹੈ ?  
 ਨਹੀਂ ਜੀ, ਇੱਟ ਲਾਲ ਹੈ।  
 ਉਥੇ ਫੁੱਲ ਚਿੱਟਾ ਹੈ।  
 ਇਥੇ ਫੁਲ ਲਾਲ ਹੈ।  
 ਇਥੇ ਗੁੱਪ ਹੈ, ਉਥੇ ਛਾਂ ਹੈ।  
 ਉਥੇ ਕੀ ਹੈ ?  
 ਉਥੇ ਫੁੱਲ ਹੈ।  
 ਫੁੱਲ ਹੈ ਜਾਂ ਪੱਥਰ ਹੈ ?  
 ਜੀ ਫੁੱਲ ਹੈ।

|       |       |         |         |
|-------|-------|---------|---------|
| ਉਹ    | वह    | ਇੱਟ     | ईट      |
| ਇਹ    | यह    | ਪੱਥਰ    | पत्थर   |
| ਕੀ    | क्या  | ਕੀ      | क्या    |
| ਫੁੱਲ  | फूल   | ਨਹੀਂ ਜੀ | जी नहीं |
| ਕੁੰਡਾ | काँटा | ਉਥੇ     | वहाँ    |
| ਲੱਤ   | लात   | ਇਥੇ     | यहाँ    |
| ਹੱਥ   | हाथ   | ਗੁੱਪ    | धूप     |

ਪਾਠ 5

ਹੈ, ਇਕ-ਵਚਨ; ਹਨ, ਬਹੁ-ਵਚਨ  
(ਹੈ, ਏਕ-ਵਚਨ ; ਹੈਂ, ਬਹੁ-ਵਚਨ)

ਇਹ ਕੌਣ ਹੈ ?  
ਇਹ ਮੁੰਡਾ ਹੈ।  
ਇਹ ਮੁੰਡਾ ਚੰਗਾ ਹੈ।  
ਇਹ ਮੁੰਡੇ ਚੰਗੇ ਹਨ।  
ਉਹ ਫੁੱਲ ਚਿੱਟੇ ਹਨ।  
ਚਿੱਟੇ ਫੁੱਲ ਕਿੱਥੇ ਹਨ ?  
ਚਿੱਟੇ ਫੁੱਲ ਉੱਥੇ ਹਨ।  
ਉਹ ਇੱਟ ਪਿੱਲੀ ਹੈ।  
ਉਹ ਸਾਰੀਆਂ ਇੱਟਾਂ ਪਿੱਲੀਆਂ ਹਨ।  
ਇਕ ਇੱਟ ਲਾਲ ਹੈ।  
ਪਿੱਲੀਆਂ ਇੱਟਾਂ ਕਿੱਥੇ ਹਨ ?  
ਪਿੱਲੀਆਂ ਇੱਟਾਂ ਉੱਥੇ ਹਨ।  
ਲਾਲ ਇੱਟਾਂ ਇਥੇ ਹਨ।  
ਧੁੱਪ ਚਿੱਟੀ ਹੈ।  
ਛਾਂ ਕਾਲੀ ਹੈ।  
ਕਾਲੀਆਂ ਛਾਵਾਂ ਠੰਢੀਆਂ ਹਨ।  
ਠੰਢੀਆਂ ਠੰਢੀਆਂ ਛਾਵਾਂ ਕਿੱਥੇ ਹਨ ?  
ਜਿੱਥੇ ਚਿੱਟੇ ਅਤੇ ਲਾਲ ਲਾਲ ਫੁੱਲ ਹਨ।  
ਸਾਰੇ ਬੰਦੇ ਚੰਗੇ ਹਨ।  
ਸਾਰੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਚੰਗੀਆਂ ਹਨ।

|       |       |       |        |        |         |
|-------|-------|-------|--------|--------|---------|
| ਮੁੰਡਾ | ਲੜਕਾ  | ਕਿੱਥੇ | ਕहाँ   | ਕੁੜੀ   | ਲੜਕੀ    |
| ਚੰਗਾ  | ਅच्छा | ਪਿੱਲੀ | कच्ची  | ਕੁੜੀਆਂ | ਲੜਕਿਯਾਂ |
| ਹਨ    | हैं   | ਜਿੱਥੇ | जहाँ   |        |         |
| ਚਿੱਟੇ | श्वेत | ਬੰਦੇ  | मनुष्य |        |         |

## ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ ਵਯਕਤ ਕੀਜ਼ਿਓ :

1. ਛੋਟੀ ਲੜਕੀ ਬੀਮਾਰ ਥੀ।
2. ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਬ ਕਹਾਂ ਥੇ ?
3. ਅਨਦਰ ਕੌਨ ਥਾ ?
4. ਅਨਦਰ ਤੋ ਨੌਕਰ ਥਾ।
5. ਨੌਕਰ ਹੋਸ਼ਿਯਾਰ ਹੈ।
6. ਬਾਹਰ ਗਰਮੀ ਹੈ।
7. ਧੂਪ ਤੇਜ ਹੈ।
8. ਕਮਰਾ ਭੀ ਠੰਡਾ ਨਹੀਂ।
9. ਠੰਡਾ ਪਾਨੀ ਕਹਾਂ ਹੈ ?
10. ਕਯਾ ਚਾਯ ਗਰਮ ਹੈ ?
11. ਵਹਾਂ ਛੋਟੀ ਲੜਕਿਯਾਂ ਨਹੀਂ ਥੀਂ।
12. ਵਡੇ ਵਡੇ ਲੜਕੇ ਥੇ।

|             |             |             |                |
|-------------|-------------|-------------|----------------|
| 1. ਛੋਟੀ     | ਛੋਟੀ, ਨਿੱਕੀ | 8. ਭੀ       | ਵੀ             |
| ਬੀਮਾਰ       | ਬਿਮਾਰ       | 10. ਚਾਯ     | ਚਾਹ            |
| 2. ਸਾਹਬ     | ਸਾਹਿਬ       | 11. ਛੋਟੀ    | ਨਿੱਕੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ |
| 4. ਤੋ       | ਤਾਂ         | ਲੜਕਿਯਾਂ ਥੀਂ | ਸਨ             |
| 5. ਹੋਸ਼ਿਯਾਰ | ਹੁਸ਼ਿਆਰ     | 12. ਵਡੇ ਵਡੇ | ਵੱਡੇ ਵੱਡੇ      |
| 6. ਗਰਮੀ     | ਗਰਮੀ        | ਥੀ, ਥਾ      | ਸੀ             |
| ਹੈ          | ਹਨ          | ਥੇ          | ਸਨ             |
| 7. ਧੂਪ      | ਧੁੱਪ        |             |                |

ਉਚਚਾਰਣ : ਚਾਹ-ਚਾ^; ਨਹੀਂ-ਨ^ਈ; ਬਾ^ਰ; ਸਾ^ਬ

^ = ਉਚਚ ਗਿਰਤੀ ਸੁਰ

ਪਾਠ 6

ਹੈ, ਹਨ; ਸੀ, ਸਨ ਦੀ ਵਰਤੋਂ

(ਹੈ, हैं; था, थे, थी का प्रयोग)

ਇਕ ਮੁੰਡਾ ਇਥੇ ਹੈ।  
 ਦੂਜਾ ਕਿੱਥੇ ਹੈ ?  
 ਇਥੇ ਦੇ ਮੁੰਡੇ ਹਨ।  
 ਕੋਈ ਹੋਰ ਬੰਦਾ ਹੈ ?  
 ਹਾਂ ਜੀ, ਬਹੁਤ ਬੰਦੇ ਹਨ।  
 ਇਹ ਪੁਰਾਣੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਹਨ।  
 ਨਵੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਕਿੱਥੇ ਹਨ ?  
 ਸਾਰੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਕਿੰਨੀਆਂ ਹਨ ?  
 ਸਾਰੀਆਂ ਇੱਕੀ ਹਨ।  
 ਭੈਣਾਂ! ਚੰਗੀਆਂ ਚੰਗੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਇਹ ਹਨ।  
 ਵਪਾਰੀ ਅਮੀਰ ਸੀ।  
 ਨੌਕਰ ਗਰੀਬ ਸੀ।  
 ਮੁੰਡੇ ਬਿਮਾਰ ਸਨ।  
 ਸਾਰੇ ਬੰਦੇ ਬਿਮਾਰ ਨਹੀਂ ਸਨ।  
 ਰਾਤ ਤਾਂ ਬਹੁਤ ਠੰਢੀ ਹੈ।  
 ਹੁਣ ਧੁੱਪ ਚੰਗੀ ਹੈ।

|         |          |         |          |          |          |
|---------|----------|---------|----------|----------|----------|
| ਹੋਰ     | ਔਰ       | ਸਾਰੀਆਂ  | ਸਾਰ      | ਪੁਰਾਣੀਆਂ | ਪੁਰਾਣੀ   |
| ਕਿਥੇ ਹਨ | कहाँ हैं | ਕਿਤਾਬਾਂ | किताबें  | ਕਿੰਨੀ    | कितनी    |
| ਕਿੰਨੀਆਂ | कितनी    | ਇੱਕੀ    | इक्कीस   | ਭੈਣਾਂ !  | हे बहन ! |
| ਸੀ      | था, थी   | ਬਿਮਾਰ   | बीमार    | ਹੁਣ      | अब       |
| ਧੁੱਪ    | धूप      | ਵਪਾਰੀ   | व्यापारी | ਸਨ       | थे       |
| ਹਾਂ ਜੀ  | जी हां   | ਦੀਆਂ    | की       |          |          |

ਏ ਵਾਕਯ ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ ਵਯਕਤ ਕੀਜਿਏ :

1. ਵਹ ਲੜਕਾ ਕਹੈਂ ਹੈ ?
2. ਵਹ ਲੜਕੀ ਅਚਛੀ ਹੈ।
3. ਯਹ ਕੌਨ ਹੈ ?
4. ਯਹ ਗਰੀਬ ਆਦਮੀ ਹੈ।
5. ਏ ਪੁਸਤਕੈਂ ਸੁਨਦਰ ਹੈਂ।
6. ਚਾਯ ਟੰਡੀ ਹੈ, ਦੂਧ ਗਰਮ ਹੈ।
7. ਝੰਟੇਂ ਲਾਲ ਹੈਂ, ਏ ਕਾਲੀ ਹੈਂ।
8. ਪਾਨੀ ਗਰਮ ਹੈ, ਪਥਰ ਟੰਡਾ ਹੈ।
9. ਕਯਾ ਵਹੈਂ ਲਾਲ ਫੂਲ ਹੈਂ ?
10. ਜੀ ਨਹੀਂ, ਵਹੈਂ ਲਾਲ ਫੂਲ ਨਹੀਂ, ਸਫੇਦ ਹੈਂ।
11. ਏਕ ਹਾਥ ਸਾਫ਼ ਹੈ, ਦੂਸਰਾ ਮੈਲਾ ਹੈ।
12. ਏ ਲੜਕਿਯੈਂ ਅਚਛੀ ਹੈਂ।

|         |             |              |             |
|---------|-------------|--------------|-------------|
| 1. ਲੜਕਾ | ਲੜਕਾ, ਮੁੰਡਾ | 8. ਪਾਨੀ      | ਪਾਣੀ        |
| 2. ਅਚਛੀ | ਹੱਛੀ, ਚੰਗੀ  | ਪਥਰ          | ਪੱਥਰ        |
| 3. ਕੌਨ  | ਕੋਣ         | 10. ਜੀ ਨਹੀਂ  | ਨਹੀਂ ਜੀ     |
| ਪੁਸਤਕੈਂ | ਪੁਸਤਕਾਂ     | ਸਫੇਦ         | ਸਫੇਦ, ਚਿੱਟੇ |
| 6. ਚਾਯ  | ਚਾਹ         | 11. ਏਕ ਹਾਥ   | ਇੱਕ ਹੱਥ     |
| ਦੂਧ     | ਦੁੱਧ        | ਦੂਸਰਾ        | ਦੂਜਾ        |
| ਗਰਮ     | ਗਰਮ         | 12. ਅਚਛੀ ਹੈਂ | ਚੰਗੀਆਂ ਹਨ   |



ਪਾਠ 7

ਦਾ, ਦੇ, ਦੀ, ਦੀਆਂ

(ਕਾ, ਕੇ, ਕੀ ਕਾ ਪ੍ਰਯੋਗ)

ਉਸ ਦਾ ਨਾਂ ਕੀ ਹੈ ?  
 ਉਸ ਦਾ ਨਾਂ ਅਣਖ ਸਿੰਘ ਹੈ।  
 ਉਸ ਦਾ ਕੰਮ ਕੀ ਹੈ ?  
 ਉਸ ਦਾ ਕੰਮ ਖੇਤੀ-ਬਾੜੀ ਹੈ।  
 ਪਿੰਡ ਦੇ ਬੰਦੇ ਤਕੜੇ ਹਨ।  
 ਪਿੰਡ ਦੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਵੀ ਤਕੜੀਆਂ ਹਨ।  
 ਇਸ ਕੰਧ ਦੀਆਂ ਇੱਟਾਂ ਕਾਲੀਆਂ ਹਨ।  
 ਉਸ ਕੰਧ ਦੇ ਪੱਥਰ ਕਾਲੇ ਹਨ।  
 ਦੁੱਧ ਦਾ ਰੰਗ ਚਿੱਟਾ ਹੈ।  
 ਅਕਾਸ਼ ਦਾ ਰੰਗ ਨੀਲਾ ਹੈ।  
 ਨੀਲੇ ਪਾਣੀ ਦੀ ਝੀਲ ਕਿੱਥੇ ਸੀ ?  
 ਪੀਲੇ ਫੁੱਲਾਂ ਦੀ ਫੁੱਲਵਾੜੀ ਕਿੱਥੇ ਸੀ ?  
 ਪਿੰਡ ਦੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਫੁੱਲਵਾੜੀਆਂ ਵਿਚ ਸਨ।  
 ਪਿੰਡ ਦੇ ਮੁੰਡੇ ਖੇਤਾਂ ਵਿਚ ਸਨ।  
 ਇਸ ਵੱਡੇ ਘਰ ਵਿਚ ਕੋਣ ਕੋਣ ਹਨ  
 ਇਸ ਘਰ ਵਿਚ ਤਿੰਨ ਮੁੰਡੇ ਤੇ ਦੋ ਕੁੜੀਆਂ ਹਨ।  
 ਕੁੜੀਆਂ ਮੁੰਡਿਆਂ ਤੋਂ ਛੋਟੀਆਂ ਹਨ।

|          |            |        |             |           |             |
|----------|------------|--------|-------------|-----------|-------------|
| ਦਾ       | ਕਾ         | ਕੁੜੀਆਂ | ਲੜਕਿਆਂ      | ਖੇਤਾਂ ਵਿਚ | ਖੇਤਾਂ ਮੇਂ   |
| ਦੀ       | ਕੀ         | ਤਕੜੀਆਂ | ਸਜ਼ਬੂਤ      | ਵੱਡੇ      | ਬਡੇ         |
| ਦੇ       | ਕੇ         | ਕੰਧ    | ਦੀਵਾਰ       | ਕੋਣ       | ਕੌਨ         |
| ਦੀਆਂ     | ਕੀ         | ਦੁੱਧ   | ਦੂਧ         | ਕਿਸ ਦਾ    | ਕਿਸ ਕਾ      |
| ਨਾਂ      | ਨਾਮ        | ਅਕਾਸ਼  | ਆਕਾਸ਼       | ਕਾਹਦਾ     | ਕਿਸ ਚੀਜ਼ ਕਾ |
| ਕੰਮ, ਕੰਮ | ਕਾਮ        | ਪਾਣੀ   | ਪਾਨੀ        |           |             |
| ਵਾੜੀ     | ਬਾੜੀ       | ਫੁੱਲਾਂ | ਫੂਲਾਂ       |           |             |
| ਪਿੰਡ     | ਗਾਵ        | ਕਿੱਥੇ  | ਕहाँ        |           |             |
| ਤਕੜੇ     | ਸ਼ਕਤੀਸ਼ਾਲੀ | ਵਿਚ    | ਕੇ ਥੀਚ, ਮੇਂ |           |             |

## ਪੰਜਾਬੀ ਸੇ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀਜੀਏ :

1. ਯਹ ਪੁਸਤਕ ਤੋ ਉਸ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਕੀ ਹੈ।
2. ਵੇ ਪੁਸਤਕੋਂ ਲੜਕੀਯੋਂ ਕੀ ਥੀਂ।
3. ਯਹ ਕਿਸੀ ਬਡੇ ਵਪਾਰੀ ਕਾ ਘਰ ਹੈ।
4. ਵਹ ਕਿਸੀ ਗਰੀਬ ਕੀ ਕੁਟਿਆ ਹੈ।
5. ਇਸ ਤਾਲੇ ਕੀ ਕੁੰਜੀ ਕਹਾ ਹੈ ?
6. ਸਿਪਾਹੀਯੋਂ ਕੀ ਬੰਦੂਕੋਂ ਕਹਾ ਥੀਂ ?
7. ਉਸ ਬਡੇ ਸਕਾਨ ਕੇ ਸਾਮਨੇ ਦੋ ਦੁਕਾਨੇਂ ਹੈਂ।
8. ਸੜਕ ਕੇ ਮੋੜ ਪਰ ਕਯਾ ਥਾ ?
9. ਸਕਾਨ ਕੀ ਦੀਵਾਰ ਕੇ ਪੀਛੇ ਕੌਨ ਥਾ ?
10. ਸੜਕ ਕੇ ਕਿਨਾਰੇ ਕਿਨਾਰੇ ਕੜ੍ਹੇ ਵੁਖ਼।

- |           |          |            |              |            |         |
|-----------|----------|------------|--------------|------------|---------|
| 1. ਤੋ     | ਤਾਂ      | 4. ਕਿਸੀ    | ਕਿਸੇ         | 7. ਸਾਮਨੇ   | ਸਾਮ੍ਹਣੇ |
| ਵਿਦਿਆਰਥੀ  | ਵਿਦਿਆਰਥੀ | ਕੁਟਿਆ      | ਕੁਟਿਆ, ਝੁੱਗੀ | ਕਯਾ        | ਕੀ      |
| 2. ਵੇ, ਵਹ | ਉਹ       | 6. ਥੇ, ਥੀਂ | ਸਨ           | 9. ਦੀਵਾਰ   | ਕੰਧ     |
| ਲੜਕੀਯੋਂ   | ਲੜਕੀਆਂ   | ਸਿਪਾਹੀਯੋਂ  | ਸਿਪਾਹੀਆਂ     | ਪੀਛੇ       | ਪਿੱਛੇ   |
| ਕੀ        | ਦੀਆਂ     | ਕੀ ਬੰਦੂਕੋਂ | ਦੀਆਂ ਬੰਦੂਕਾਂ | 10. ਕਿਨਾਰੇ | ਕੰਢੇ    |
| 3. ਬਡੇ    | ਵੱਡੇ     |            |              | ਵੁਖ਼       | ਰੁੱਖ    |
| ਵਪਾਰੀ     | ਵਪਾਰੀ    |            |              |            |         |

ਪਾਠ 8

ਆਗਿਆਰਥ ਕ੍ਰਿਆਪਦ

(ਅਭਿਆਸ ਕ੍ਰਿਆਪਦ)

ਇਹ ਗਿਲਾਸ ਇਥੇ ਹੀ ਰਖ, ਦੂਜਾ ਲਿਆ।

ਬੋੜਾ ਕੁ ਪਾਣੀ ਲਿਆ, ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਾਫ਼ ਕਰ।

\*ਇਧਰ ਵੇਖ, ਠੀਕ ਠੀਕ ਦਸ।

ਦੇਰ ਮਤ ਕਰ, ਜਲਦੀ ਜਲਦੀ ਤਿਆਰੀ ਕਰ।

ਠੰਢਾ ਪਾਣੀ ਪਰੇ ਰੱਖ, ਗਰਮ ਗਰਮ ਚਾਹ ਲਿਆ।

ਜਰਾ ਬਾਹਰ ਨਹਰ, ਫਾਟਕ ਕੋਲ ਖਲੋ।

ਫਾਟਕ ਬੰਦ ਰਖ, ਮਤ ਖੋਲ।

ਬੱਚਿਆ। ਸੱਚੇ ਖੰਬੇ ਧਿਆਨ ਰਖ।

ਬੋਲੇ ਮਤ, ਹੋਲੀ ਹੋਲੀ ਉਪਰ ਚਲੋ।

ਖੰਬੇ ਮੁੜੇ, ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਕਪੜੇ ਬਦਲੋ।

ਪੰਜ ਵਜੇ ਤਕ ਤੁਸੀਂ ਬਜ਼ਾਰ ਹੋ ਆਓ।

ਦੇਰ ਮਤ ਕਰੋ, ਸਾਰਾ ਕੰਮ ਸੰਭਾਲੋ।

ਮਾਲੀ ਨੂੰ ਬੁਲਾਓ।

ਸੜਕ ਦੇ ਕੰਢੇ ਕੰਢੇ ਰੁੱਖ ਲਾਓ।

ਬਚਿਓ। ਫਸਲਾਂ ਵਿਚੋਂ ਨਾ ਲੰਘੋ।

ਸੜਕ ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ ਨਾ ਦੇੜੋ।

ਸੁਣਾਓ ਜੀ, ਕੀ ਹਾਲ ਹੈ ?

ਚੰਗਾ ਹੈ, ਤੁਸੀਂ ਦਸੋ ਸਭ ਠੀਕ ਹੈ ਨਾ ?

ਜੀ ਮਿਹਰਬਾਨੀ ਹੈ, ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੀ ਮਿਹਰ ਹੈ।

|             |         |       |         |             |              |
|-------------|---------|-------|---------|-------------|--------------|
| ਲਿਆ         | ਲੇ ਆ    | ਖੋਲ੍ਹ | ਖੋਲ     | ਰੁੱਖ        | ਰੁੱਖ         |
| ਬੋੜਾ ਕੁ     | ਥੋੜਾ ਸਾ | ਬੱਚਿਆ | ਹੇ ਬਚੇ  | ਲਾਓ         | ਲਗਾਓ         |
| ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ | ਅਥੀ ਜਰਵ | ਖੰਬੇ  | ਬਾਏਂ    | ਫਸਲਾਂ ਵਿਚੋਂ | ਫਸਲਾਂ ਮੇਂ ਸੇ |
| ਵੇਖ         | ਦੇਖ     | ਸੱਜੇ  | ਦਾਏਂ    | ਲੰਘੋ        | ਗੁਜ਼ਰੋ       |
| ਦਸ          | ਬਤਾ     | ਉਪਰ   | ਊਪਰ     | ਬਚਿਓ        | ਹੇ ਬਚਕੋ      |
| ਤਿਆਰੀ       | ਤੈਧਾਰੀ  | ਵਿਚ   | ਮੇਂ     | ਵਿਚਕਾਰ      | ਬੀਚ ਮੇਂ      |
| ਚਾਹ         | ਚਾਏ     | ਤੁਸੀਂ | ਆਪ, ਰੁਸ | ਸੁਣਾਓ       | ਚੁਨਾਓ        |
| ਕੋਲ         | ਕੇ ਪਾਸ  | ਬਜ਼ਾਰ | ਬਾਜ਼ਾਰ  | ਕੀ          | ਕਯਾ          |
| ਖਲੋ         | ਖੜਾ ਹੋ  | ਨੂੰ   | ਕੋ      | ਦਸੋ         | ਬਤਾਓ         |

\* ਵੇਖੋ ਵੇਖੋ ਤੁਸੀਂ ਵੇਖੋ ਤੁਸੀਂ ਵੇਖੀਓ

## ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਅਨੁਵਾਦ ਲਿਖਿਏ :

1. ਅਬ ਤੂ ਜਲ੍ਹਦੀ ਕਰ, ਘਰ ਜਾ !
2. ਤਾਲਾ ਖੋਲ, ਕਮਰਾ ਸਾਫ਼ ਕਰ !
3. ਕੇਲਾ ਖਾ ਐਰ ਦੂਧ ਪੀ !
4. ਆਪ ਪੰਜਾਬੀ ਸੀਖਿਏ !
5. ਚਿਟ੍ਰੀ ਪੜ੍ਹਿਏ ਐਰ ਉਤਰ ਲਿਖਿਏ !
6. ਉਘਰ ਪਥਰ ਮਤ ਮਾਰੋ !
7. ਲਾਲ ਝੰਟੇ ਧਹਾਓ ਰਖੋ !
8. ਗਰਮ ਗਰਮ ਚਾਏ ਲਾਓ !
9. ਅਪਨੇ ਮੈਲੇ ਹਾਥ ਸਾਫ਼ ਕਰੋ !
10. ਦਾਏਂ ਬਾਏਂ ਅਚਲੀ ਤਰਹ ਦੇਖੋ !
11. ਤੁਝੇ ਪੀਛੇ ਨਹੀਂ ਮੁੜਨਾ !

- |           |       |         |        |                   |             |
|-----------|-------|---------|--------|-------------------|-------------|
| 1. ਅਬ     | ਹੁਣ   | ਪੜ੍ਹਿਏ  | ਪੜ੍ਹੋ  |                   |             |
| 3. ਦੂਧ    | ਦੁੱਧ  | ਲਿਖਿਏ   | ਲਿਖੋ   | 9. ਅਪਨੇ           | ਆਪਣੇ        |
| 4. ਆਪ     | ਤੁਸੀਂ | 6. ਪਥਰ  | ਪੱਥਰ   | 10. ਦਾਏਂ          | ਸੱਜੇ        |
| ਸੀਖਿਏ     | ਸਿਖੋ  | 7. ਝੰਟੇ | ਝਿੰਟਾਂ | ਬਾਏਂ              | ਖੱਬੇ        |
| ਬੋਲਿਏ     | ਬੋਲੋ  | ਧਹਾਓ    | ਧਿੱਥੇ  | ਅਚਲੀ ਤਰਹ          | ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ |
| 5. ਚਿਟ੍ਰੀ | ਚਿੱਠੀ | 8. ਚਾਏ  | ਚਾਹ    | ਦੇਖੋ              | ਵੇਖੋ        |
|           |       | ਲਾਓ     | ਲਿਆਓ   | 11. ਤੂੰ ਪਿਛੇ ਨਹੀਂ | ਮੁੜਨਾ       |

ਪਾਠ 9

ਕੁਝ ਨਵੇਂ ਵਾਕ

(ਕੁਝ ਨਵੇਂ ਗਾਕਧ)

ਖਿਮਾ ਕਰਨਾ ਜੀ, ਤਬੀਅਤ ਠੀਕ ਨਹੀਂ।

ਕੀ ਹਾਲ ਹੈ?

ਜੀ, ਬੁਖਾਰ ਹੈ, ਸਿਰ ਪੀੜ ਵੀ ਹੈ।

ਪਿੰਡਾ ਗਰਮ ਹੈ।

ਚੰਗਾ, ਹੁਣ ਛੁੱਟੀ ਕਰੋ, ਘਰ ਚਲੇ ਜਾਓ।

ਤਿੰਨ ਵਜੇ ਪਰਤ ਆਓ।

ਇਥੇ ਡਾਕਟਰ ਦੀ ਉਡੀਕ ਕਰੋ।

ਦਵਾਈ ਦੇ ਕਿੰਨੇ ਪੈਸੇ ?

ਸਾਢੇ ਤਿੰਨ ਰੁਪਏ।

ਆਉਣ ਜਾਣ ਦਾ ਭਾੜਾ ਕਿੰਨਾ ?

ਉੱਨੀ ਰੁਪਏ।

ਬਹੁਤ ਅੱਛਾ, ਗੱਡੀ ਤਿਆਰ ਕਰੋ।

ਸਟੇਸ਼ਨ ਕਿੰਨੀ ਦੂਰ ਹੈ ?

ਪੋਣੇ ਪੰਜ ਮੀਲ ਦੂਰ ਹੈ।

ਛੇਤੀ ਕਰੋ !

|       |       |            |             |
|-------|-------|------------|-------------|
| ਖਿਮਾ  | ਖਸਮਾ  | ਪਰਤ ਆਓ     | ਗਾਪਸ ਆਓ     |
| ਤਬੀਅਤ | ਤਬੀਧਤ | ਇਥੇ        | ਧਛਾ         |
| ਗਲ    | ਗਤ    | ਉਡੀਕ       | ਭੰਤਯਾਰ      |
| ਪੀੜ   | ਪੀੜਾ  | ਕਿੰਨੇ      | ਕਿਤਨੇ       |
| ਵੀ    | ਮੀ    | ਸਾਢੇ ਤਿੰਨ  | ਸਾਢੇ ਤੀਨ    |
| ਪਿੰਡਾ | ਸ਼ਰੀਰ | ਆਉਣ ਜਾਣ ਦਾ | ਆਨੇ ਜਾਨੇ ਕਾ |
| ਚੰਗਾ  | ਅਚਲਾ  | ਉੱਨੀ       | ਚੁਨੀਲ       |
| ਹੁਣ   | ਅਭ    | ਗੱਡੀ       | ਗਾਡੀ        |
| ਛੁੱਟੀ | ਛੁਟੀ  | ਤਿਆਰ       | ਤੈਧਾਰ       |
| ਤਿੰਨ  | ਤੀਨ   | ਪੋਣੇ ਪੰਜ   | ਪੌਨੇ ਪਾੱਧ   |
| ਵਜੇ   | ਬਜੇ   | ਛੇਤੀ       | ਜਲਦੀ        |

## ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀਜ਼ਿਓ :

1. ਗਾਵ-ਭਰ ਮੈਂ ਤੁਮ ਅਛੀ ਲੜਕਿਯਾਂ ਹੋ !
2. ਸੇਵਾ ਕੇ ਕਾਮ ਕਰੋ ਔਰ ਚਰਖਾ ਚਲਾਓ !
3. ਕਲ ਤਕ ਯਹਾँ ਆ ਜਾਨਾ !
4. ਰਾਹ ਮੈਂ ਰੁਕਨਾ ਸਤ !
5. ਲਾਲ ਈਟੋਂ ਪਰ ਸਤ ਬੈਠ !
6. ਦੂਧ ਪੀ, ਕੇਲੇ ਖਾ !
7. ਝੰਢੇ ਬਨੋ, ਆਗੇ ਬਢੋ !
8. ਅਛੀ ਪੁਸਤਕੋਂ ਪੜ੍ਹੋ, ਸਾਫ਼ ਲਿਖੋ !
9. ਤੇਜ ਧੂਪ ਮੈਂ ਸਤ ਚਲੋ !
10. ਝਾੱਵ ਮੈਂ ਬੈਠੋ, ਠੰਡਾ ਪਾਨੀ ਪਿਯੋ !
11. ਪਸ਼ੁਔੋਂ ਕੋ ਵ੍ਰਖ ਕੇ ਨੀਚੇ ਰਹਨੇ ਦੋ !

- |            |           |              |         |                |            |
|------------|-----------|--------------|---------|----------------|------------|
| 1. ਮੈਂ     | ਵਿਚ       | 7. ਝੰਢੇ      | ਉਚੇ     | ਪਾਨੀ           | ਪਾਨੀ       |
| ਤੁਮ, ਆਪ    | ਤੁਸੀਂ     | ਬਨੋ          | ਬਣੋ     | ਪਿਯੋ           | ਪੀਓ        |
| ਅਛੀ        | ਚੰਗੀਆਂ    | ਆਗੇ          | ਅੱਗੇ    | 11. ਪਸ਼ੁਔੋਂ ਕੋ | ਪਸ਼ੁਆਂ     |
| ਲੜਕਿਯਾਂ    | ਲੜਕੀਆਂ    | ਬਢੋ          | ਵਧੋ     |                | ਡੰਗਰਾਂ ਨੂੰ |
| 2. ਔਰ      | ਅਤੇ       | ਅਛੀ          | ਚੰਗੀਆਂ  | ਵ੍ਰਖ           | ਰੁੱਖ       |
| 3. ਯਹਾँ    | ਇੱਥੇ      | 8. ਪੁਸਤਕੋਂ   | ਕਿਤਾਬਾਂ | ਨੀਚੇ           | ਥੱਲੇ       |
| ਆ ਜਾਨਾ     | ਆ ਜਾਣਾ    | 9. ਧੂਪ       | ਧੁੱਪ    |                |            |
| 5. ਈਟੋਂ ਪਰ | ਇੱਟਾਂ ਪੁਰ | 10. ਝਾੱਵ ਮੈਂ | ਛਾਂ ਵਿਚ |                |            |
| 6. ਦੂਧ     | ਦੁੱਧ      |              |         |                |            |

ਪਾਠ 10

‘ਹੋਣਾ’ ਦੇ ਰੂਪ : ਵਰਤਮਾਨ ਅਤੇ ਭੂਤ ਕਾਲ

‘ਹੋਨਾ’ ਦੇ ਰੂਪ : ਵਰਤਮਾਨ ਅਤੇ ਭੂਤ ਕਾਲ

ਹੁਣ ਮੈਂ ਤਕੜਾ ਹਾਂ।

ਅਸੀਂ ਸਾਰੇ ਗਰੀਬ ਹਾਂ।

ਕੀ ਤੂੰ ਇਥੇ ਨੌਕਰ ਹੈਂ ?

ਹਾਂ ਜੀ, ਮੈਂ ਇਥੇ ਚਪੜਾਸੀ ਹਾਂ।

ਕੀ ਤੁਸੀਂ ਹੁਣ ਵੈਲ ਹੋ ?

ਨਹੀਂ ਜੀ, ਮੈਂ ਹਾਲੀ ਬੀਮਾਰ ਹਾਂ।

ਭਰਾਓ! ਕੋਣ ਸਭ ਤੋਂ ਤਕੜਾ ਹੈ ?

ਰਾਮ ਸਭ ਤੋਂ ਤਕੜਾ ਹੈ।

ਉਹ ਮੁੰਡੇ ਸਭ ਤੋਂ ਚਲਾਕ ਹਨ।

ਮੈਂ ਕਲ ਬਿਮਾਰ ਸਾਂ।

ਅਸੀਂ ਸਭ ਬਿਮਾਰ ਸਾਂ।

ਤੂੰ ਕੱਦ ਬਿਮਾਰ ਸੈਂ ?

ਮੈਂ ਤਾਂ ਕਲੁ ਬਿਮਾਰ ਸੀ।

ਤੁਸੀਂ ਕਦ ਬਿਮਾਰ ਸਓ ?

ਅਸੀਂ ਪਰਸੋ ਬਿਮਾਰ ਸਾਂ।

ਉਹ ਐਤਵਾਰ ਨੂੰ ਬਿਮਾਰ ਸੀ।

ਉਸ ਦੇ ਮੁੰਡੇ ਵੀ ਬਿਮਾਰ ਸਨ।

ਹਸਪਤਾਲਾਂ ਵਿਚ ਕਈ ਡਾਕਟਰ ਸਨ।

ਕਾਲੇ ਪੱਥਰ ਪੁਰ ਦੇ ਚਿੱਟੀਆਂ ਚਿੜੀਆਂ ਸਨ।

ਲਾਲ ਫੁੱਲ ਪੁਰ ਕਈ ਤਿਤਲੀਆਂ ਸਨ।

ਉਸ ਗੁੱਖ ਤੋਂ ਤਲਾ (ਤਲਾਅ) ਇਕ ਮੀਲ ਦੂਰ ਹੈ।

ਕੀ ਤਲਾ ਵਿਚ ਨਿਰਮਲ ਪਾਣੀ ਹੋਵੇਗਾ ?

ਆਹੋ ਜੀ! ਉਸ ਦਾ ਪਾਣੀ ਨਿਰਮਲ ਤੇ ਮਿੱਠਾ ਹੈ।

|             |        |              |       |                |          |
|-------------|--------|--------------|-------|----------------|----------|
| ਹੁਣ         | ਅਬ     | ਬਿਮਾਰ        | ਬੀਮਾਰ | ਸਓ, ਸਾਂ, ਸਨ ਥੇ |          |
| ਤਕੜਾ        | ਸੁਰਖ   | ਭਰਾਓ         | ਮਾਝਾਓ | ਐਤਵਾਰ ਨੂੰ      | ਭਰਵਾਰ ਕੋ |
| ਅਸੀਂ, ਤੁਸੀਂ | ਹਸ     | ਸਭ ਤੋਂ       | ਸਭ ਸੇ | ਆਹੋਜੀ          | ਜੀ ਹਾਂ   |
| ਕੀ          | ਕਧਾ    | ਮੁੰਡੇ        | ਲੜਕੇ  | ਵੀ             | ਮੀ       |
| ਹਾਂ ਜੀ      | ਜੀ ਹਾਂ | ਚਲਾਕ         | ਚਾਲਾਕ | ਪੁਰ            | ਯੁਪਰ     |
| ਵਲ          | ਠੀਕ    | ਤੁਸੀਂ (ਤੁਸੀ) | ਆਪ    | ਤੋਂ            | ਸੇ       |
| ਹਾਲ         | ਅਮੀ    | ਸਾਂ, ਸੈਂ, ਸੀ | ਥਾ    | ਤਲਾ            | ਤਾਲਾਬ    |

## ਪੰਜਾਬੀ में अनुवाद कीजिये :

1. हम तीन भाई हैं।
2. एक दुकानदार है दूसरा अध्यापक।
3. दोनों ग़रीब आदमी हैं।
4. आप तो अमीर आदमी हैं।
5. इस लड़के को नौकर रख लें।
6. गाँव में कोई पढ़ा लिख नहीं था।
7. सब अनपढ़ किसान थे।
8. उसकी लड़कियाँ भी अनपढ़ थीं।
9. अरी शीला ! कल तू कहाँ थी ?
10. हम तो खेत में थीं, बहुत काम था।

- |            |        |             |          |        |       |
|------------|--------|-------------|----------|--------|-------|
| 1. तीन     | ਤਿੰਨ   | को          | ਨੂੰ      | भी     | ਵੀ    |
| हैं        | ਹਨ     | लें         | ਲੇ       | काम    | ਕੰਮ   |
| 2. अध्यापक | ਅਧਿਆਪਕ | 6. गाँव में | ਪਿੰਡ ਵਿਚ | में    | ਵਿਚ   |
| 4. तो      | ਤਾਂ    | 7. अनपढ़    | ਅਣਪੜ੍ਹ   | थीं    | ਸਨ    |
| आप         | ਤੁਸੀਂ  | 8. उस की    | ਉਸ ਦੀਆਂ  | 9. अरी | ਨੀ    |
|            |        | लड़कियाँ    | ਲੜਕੀਆਂ   | कहाँ   | ਕਿੱਥੇ |



ਪਾਠ 11

‘ਹੋਣਾ’ ਤੋਂ ਭਵਿਖਤ ਕਾਲ

(ਹੋਣਾ ਦੇ ਰੂਪ : ਅਵਿਧਿਯਤ ਕਾਲ)

ਮੈਂ ਉਥੇ ਹੋਵਾਂਗਾ।  
 ਅਸੀਂ ਸਭ ਉਥੇ ਹੋਵਾਂਗੇ।  
 ਤੂੰ ਕਿੱਥੇ ਹੋਵੇਂਗਾ ?  
 ਮੈਂ ਬਗੀਚੇ ਦੇ ਨੇੜੇ ਹੋਵਾਂਗਾ।  
 ਐਤਵਾਰ ਨੂੰ ਤੁਸੀਂ ਕਿੱਥੇ ਹੋਵੋਗੇ ?  
 ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਘਰ ਹੋਵਾਂਗੇ।  
 ਮਾਤਾ ਜੀ ਕਿੱਥੇ ਹੋਣਗੇ ?  
 ਉਹ ਵੀ ਘਰ ਹੋਣਗੇ।  
 ਨੌਕਰ ਵੀ ਉਥੇ ਹੋਵੇਗਾ।  
 ਅਗਲੇ ਹਫਤੇ ਰਾਤਾਂ ਚਾਨਣੀਆਂ ਹੋਣਗੀਆਂ।  
 ਮੁੰਡੇ ਖੁਸ਼ ਹੋਣਗੇ, ਕੁੜੀਆਂ ਖੁਸ਼ ਹੋਣਗੀਆਂ।  
 ਸ਼ੀਲਾ ਲੀਲਾ! ਕਿੱਥੇ ਹੋਵੇਗੀਆਂ ?  
 ਅਸੀਂ ਤਾਂ ਆਪਣੇ ਸਕੂਲ ਕੋਲ ਹੋਵਾਂਗੀਆਂ।

|             |         |                |                        |
|-------------|---------|----------------|------------------------|
| ਉਥੇ         | ਵहाँ    | ਮਾਤਾ ਜੀ ਹੋਣਗੇ  | ਮਾਤਾ ਜੀ ਹोंगे* (ਹोंगी) |
| ਹੋਵਾਂਗਾ     | हूँगा   | ਰਾਤਾਂ ਚਾਨਣੀਆਂ  | ਰਾਤਾਂ ਚਾਂਦਨੀ ਹोंगी     |
| ਹੋਵਾਂਗੇ     | होंगे   | ਹੋਣਗੀਆਂ        |                        |
| ਤੂੰ ਹੋਵੇਂਗਾ | तू होगा | ਹੋਣਗੇ          | ਹोंगे                  |
| ਦੇ ਨੇੜੇ     | के निकट | ਕੁੜੀਆਂ ਹੋਣਗੀਆਂ | लड़कियां होंगी         |
| ਤੁਸੀਂ       | आप      | ਕੋਲ            | के पास                 |
| ਆਪਣੇ        | अपने    | ਹੋਵਾਂਗੀਆਂ      | होंगी                  |

\* आदर की अभिव्यक्ति के ऐतु एक-वचन स्त्रीलिंग के लिए भी बहुवचन पुल्लिङ्ग का प्रयोग पंजाबी की विशेषता है।

## ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀਜ਼ਿਓ :

1. ਵਹ ਵੁਖ਼ ਧਹਾੱ ਸੇ ਕਿਤਨੀ ਦੂਰ ਹੈ ?
2. ਕੋਝੋਂ ਦੋ ਸੌ ਗਜ਼ ਹੋਗਾ।
3. ਹਮ ਵੁਖ਼ ਕੇ ਪਾਸ ਹੋਂਗੇ।
4. ਤੁਮ ਵਹਾੱ ਆ ਜਾਨਾ।
5. ਕਧਾ ਤੁਮ ਵੁਖ਼ ਕੇ ਪਾਸ ਹੋਗੇ ?
6. ਜੀ ਹਾੱ, ਮੈਂ ਵਹੀਂ ਹੂੰਗਾ।
7. ਕਾਲੀ ਘੋਡੀ ਭੀ ਵਹੀਂ ਹੋਗੀ।
8. ਜਬ ਰਾਤ ਹੋਗੀ, ਹਮ ਗਾਂਵ ਕੇ ਨਿਕਟ ਹੋਂਗੇ।
9. ਰਾਤ ਘਾੱਦਨੀ ਹੋਗੀ, ਅਂਧੇਰਾ ਨਹੀਂ ਹੋਗਾ।
10. ਗਾਏਂ ਬਛਡੋਂ ਕੇ ਲਿਓਂ ਵਧਾਕੁਲ ਹੋਂਗੀ।
11. ਬਛਡੇ ਭੀ ਵਧਾਕੁਲ ਹੋਂਗੇ।

- |           |               |            |         |          |         |
|-----------|---------------|------------|---------|----------|---------|
| 1. ਵੁਖ਼   | ਰੁੱਖ          | 5. ਕਧਾ     | ਕੀ      | 10. ਗਾਏਂ | ਗਾਵਾਂ   |
| ਧਹਾੱ ਸੇ   | ਇਥੋਂ, ਇਥੇ ਤੋਂ | 6. ਜੀ ਹਾੱ  | ਹਾਂ ਜੀ; |          |         |
| ਹੋਗਾ      | ਹੋਏਗਾ,        |            | ਆਹੇ ਜੀ  | ਬਛਡੋਂ ਕੇ | ਵਛਿਆਂ   |
|           | ਹੋਵੇਗਾ        | 7. ਵਹੀਂ    | ਉਥੇ ਹੀ  | ਲਿਓਂ     | ਲਈ      |
| 3. ਕੇ ਪਾਸ | ਕੋਲ           |            |         | ਹੋਂਗੀ    | ਹੋਣਗੀਆਂ |
|           |               | 8. ਕੇ ਨਿਕਟ | ਦੇ ਨੇੜੇ | 11. ਭੀ   | ਵੀ      |
| 4. ਵਹਾੱ   | ਉਥੇ           | 9. ਘਾੱਦਨੀ  | ਚਾਨਣੀ   |          |         |
| ਆ ਜਾਨਾ    | ਆ ਜਾਣਾ        | ਅਂਧੇਰਾ     | ਹਨੇਰਾ   |          |         |

ਪਾਠ 12

ਕੁਝ ਨਵੇਂ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ  
(ਕੁਝ ਨਵੇਂ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗ)

ਮੈਨੂੰ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਸੀ।  
ਇਹ ਗੱਲ ਸਾਨੂੰ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਸੀ।  
ਕੀ ਤੈਨੂੰ ਪਤਾ ਸੀ ?  
ਨਹੀਂ ਜੀ, ਮੈਂ ਤਾਂ ਹਾਜ਼ਰ ਨਹੀਂ ਸਾਂ।  
ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਾਰੀ ਗੱਲ ਦੱਸੋ।  
ਰਾਮ ਨੂੰ ਉਥੇ ਭੇਜੋ।  
ਉਸ ਨੂੰ ਪੁੱਛੋ, ਕਿੰਨੇ ਵਜੇ ਜਾਣਾ ਹੈ।  
ਤੁਹਾਨੂੰ ਦੇਰ ਨ ਹੋ ਜਾਵੇ।  
ਇਸ ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਕੋਣ ਹੈ ?  
ਨੋਕਰ ਤੋਂ ਪੁੱਛੋ।  
ਸਾਨੂੰ ਤਾਂ ਪਤਾ ਨਹੀਂ।  
ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਕੁਝ ਵੀ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਤੈਥੋਂ ਬਹੁਤ ਆਸ ਹੈ।  
ਉਸ ਕੋਲ ਬਹੁਤ ਪੈਸਾ ਹੈ।  
ਉਸ ਦੇ ਭਰਾ ਅਮੀਰ ਹਨ।  
ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੋਲ ਪੈਸਾ ਮੰਗੋ।  
ਤੁਹਾਡੇ ਕੋਲ ਕਿੰਨੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਹਨ ?  
ਕਿਤਾਬਾਂ ਦਾ ਗਿਆਨ ਪੇਂਡੂ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਦਿਓ।  
ਇਸ ਤੋਂ ਹੋਰ ਚੰਗਾ ਕੰਮ ਕੀ ਹੈ।

|          |              |             |           |         |           |
|----------|--------------|-------------|-----------|---------|-----------|
| ਮੈਨੂੰ    | ਸੁਝੇ         | ਕਿੰਨੇ ਵਜੇ   | ਕਿਤਨੇ ਬਜੇ | ਕਿੰਨੀਆਂ | ਕਿਤਨੀ     |
| ਗੱਲ      | ਬਾਤ          | ਤੁਹਾਨੂੰ     | ਤੁਝੇ      | ਚੰਵੀ    | ਚੌਥੀਸ     |
| ਸਾਨੂੰ    | ਹਮੇਂ         | (ਤੁਸਾਂ ਨੂੰ) | ਤੁਝ ਕੋ    | ਸਾਡੇ    | ਹਮਾਰੇ ਪਾਸ |
| ਤੈਨੂੰ    | ਤੁਝੇ, ਤੁਝ ਕੋ | ਤੈਥੋਂ       | ਤੁਝ ਸੇ    | (ਅਸਾਡੇ  |           |
| ਤਾਂ      | ਤੋ           | ਕੋਲ         | ਪਾਸ       | ਕੋਲ)    |           |
| ਗੱਲ ਦੱਸੋ | ਬਾਤ ਬਤਾਓ     | ਤੁਹਾਡੇ ਕੋਲ  | ਆਪ ਕੇ ਪਾਸ |         |           |
| ਪੁੱਛੋ    | ਪੁੱਛੋ        |             |           |         |           |

## ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀਜ਼ਿਓ :

1. ਵਹ ਪੁਸਤਕ ਤਸ ਤੇ ਲੋ ਲੋ ਔਰ ਮੁਝੇ ਦੇ ਦੋ !
2. ਤਨ੍ਹੇਂ ਬਤਾ ਦੋ ਕਿ ਹਮ ਇਸ ਕਮਰੇ ਮੇਂ ਹੋਂਗੇ।
3. ਹਮ ਕੋ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਵੇ ਘਰ ਮੇਂ ਹੋਂਗੇ ਯਾ ਨਹੀਂ।
4. ਮੁਝੇ ਸਮਝਾਓ ਕਿ ਅਸਲੀ ਬਾਤ ਕਯਾ ਹੈ ?
5. ਕਯਾ ਇਨ ਖੇਤੋਂ ਮੇਂ ਫੁਲੇਂ ਹਰੀ ਭਰੀ ਹੈਂ ?
6. ਤਨ ਕੋ ਕਹੋ ਮੇਰਾ ਨੌਕਰ ਯਹੀਂ ਹੋਗਾ।
7. ਤਸ ਕੇ ਸਾਮਨੇ ਸਬ ਕਾਪਿਯਾ ਰਖ ਦੋ !
8. ਤਧਰ ਤੇ ਹਮ ਕੋ ਚਿਟ੍ਰੀ ਜ਼ਰੂਰ ਭੇਜੋ।
9. ਸੜਕ ਕੇ ਕਿਨਾਰੇ ਕੇ ਸਾਥ ਸਾਥ ਚਲੋ !
10. ਆਜ ਤਨ ਕੇ ਗਾਵ ਮੇਂ ਮੇਲਾ ਹੈ।
11. ਵਹੀਂ ਬੜੀ ਭੀੜ ਹੋਗੀ, ਆਜ ਸਤ ਜਾਓ !

- |                       |                  |                      |
|-----------------------|------------------|----------------------|
| 1. ਲੇ ਲੋ ਲੈ ਲੋ        | 4. ਬਾਤ ਗੱਲ       | 8. ਤਧਰ ਤੇ ਉਧਰੋ       |
| ਔਰ ਹੋਰ                | 5. ਫੁਲੇਂ ਫੁਲਾ    | 9. ਸੜਕ ਕੇ ਸੜਕ ਦੇ     |
| ਮੁਝੇ ਮੈਨੂੰ            | ਹਰੀ ਹਰੀਆਂ        | ਕਿਨਾਰੇ ਕੰਢੇ          |
| 2. ਤਨ੍ਹੇਂ ਉਨ੍ਹਾ ਨੂੰ   | ਭਰੀ ਹੈਂ ਭਰੀਆਂ ਹਨ | ਕੇ ਸਾਥ ਦੇ ਨਾਲ        |
| ਹਮ ਹੋਂਗੇ ਅਸੀਂ ਹੋਵਾਂਗੇ | 6. ਯਹੀਂ ਇਥੇ ਹੀ   | ਸਾਥ ਨਾਲ              |
| 3. ਹਮ ਕੋ ਸਾਨੂੰ        | ਹੋਗਾ ਹੋਵੇਗਾ      | 10. ਆਜ ਅੱਜ           |
| ਵੇ ਉਹ                 | 7. ਸਬ ਸਭ         | 11. ਗਾਵ ਮੇਂ ਪਿੰਡ ਵਿਚ |
| ਹੋਂਗੇ ਹੋਣਗੇ           | ਕਾਪਿਯਾ ਕਾਪੀਆਂ    | ਹੋਗੀ ਹੋਵੇਗੀ,         |
|                       |                  | ਹੋਵੇਗੀ               |

ਪਾਠ 13

ਕੁਝ ਪ੍ਰਸ਼ਨਵਾਚੀ ਵਾਕ (ਕੁਝ ਪ੍ਰਸ਼ਨਵਾਚੀ ਵਾਕ)

ਕੀ ਮੇਰਾ ਨੌਕਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਦਫਤਰ ਵਿਚ ਹੈ ?  
 ਹਾਂ ਜੀ, ਉਸ ਦਾ ਕੰਮ ਅੱਜ ਉਥੇ ਹੈ।  
 ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਘਰ ਮੇਰੇ ਘਰ ਤੋਂ ਕਿੰਨੀ ਦੂਰ ਹੈ ?  
 ਮੇਰੇ ਖਿਆਲ ਵਿਚ, ਤੁਹਾਡਾ ਘਰ ਉਥੇ ਅਧਾ ਮੀਲ ਹੋਵੇਗਾ।  
 ਰਾਹ ਵਿਚ ਪੀਲੇ ਪੀਲੇ ਮਕਾਨ ਕਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਹਨ ?  
 ਉਹ ਤਾਂ ਸਾਡੇ ਆਪਣੇ ਮਕਾਨ ਹਨ।  
 ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਿਛੇ ਡਾਕਖਾਨਾ ਹੈ।  
 ਤੂੰ ਆਪਣੇ ਭਰਾ ਤੋਂ ਸਾਰੇ ਕਾਗਜ਼ ਲੈ ਆ।  
 ਤੇਰਾ ਭਰਾ ਅੱਜ ਕਿਥੇ ਹੈ ?  
 ਮੇਰਾ ਭਰਾ ਤਾਂ ਅੱਜ ਪਿੰਡ ਵਿਚ ਹੋਵੇਗਾ।  
 ਸਾਡੇ ਬੰਦੇ ਸੁਸਤ ਕਿਉਂ ਹਨ ?  
 ਦਫਤਰ ਦੇ ਨਵੇਂ ਬੰਦੇ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਕਾਗਜ਼ ਵਿਖਾਓ।  
 ਜੀ। ਮੇਰੇ ਕਾਗਜ਼ ਤਾਂ ਉਸ ਦੇ ਮੇਜ਼ ਪੁਰ ਹਨ।  
 ਕੀ ਪਤਾ, ਉਸ ਕੋਲ ਹਨ, ਜਾਂ ਉਸ ਦੇ ਸਾਥੀ ਕੋਲ  
 ਆਪਣੇ ਵਲੋਂ ਪੂਰੀ ਵਾਹ ਲਾਓ।  
 ਕੁਝ ਨ ਪੁੱਛੋ, ਕਿੰਨਾ ਔਖਾ ਕੰਮ ਹੈ।  
 ਇਸ ਕੰਮ ਤੇ ਕੌਣ ਕੌਣ ਹੈ ?  
 ਕੀ ਪਤਾ।

|           |      |                |            |         |            |
|-----------|------|----------------|------------|---------|------------|
| ਕੀ        | ਕਥਾ  | ਕਿੰਨੀ, ਕਿੰਨੀ   | ਕਿਤਨੀ      | ਤਾਂ     | ਤੋ         |
| ਕੰਮ, ਕੰਮ  | ਕਾਸ  | ਤੁਹਾਡਾ ਘਰ      | ਆਪਕਾ ਘਰ    | ਪੁਰ     | ਧਰ         |
| ਚੰਮ       | ਥਾਸ  | ਉਥੋਂ           | ਥਾਂ ਸੇ     | ਕੀ ਪਤਾ  | ਕਥਾ ਪਤਾ    |
| ਅੱਜ       | ਆਜ   | ਆਇਆ            | ਆਯਾ        | ਉਸ ਕੋਲ  | ਚਸ ਕੇ ਪਾਸ  |
| ਉਸ ਦਾ     | ਚਸਕਾ | ਕਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ     | ਕਿਨ ਕੇ     | ਜਾਂ     | ਅਥਵਾ       |
| ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ | ਚਨਕਾ | ਸਾਡੇ ਆਪਣੇ      | ਹਮਾਰੇ ਅਪਨੇ | ਵਲੋਂ    | ਔਰ ਸੇ      |
| ਤੋਂ       | ਸੇ   | ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਿਛੇ | ਚਨਕੇ ਪੀਛੇ  | ਵਾਹ ਲਾਓ | ਪ੍ਰਯਤਨ ਕਰੋ |
| ਤਾਂ       | ਤੋ   | ਵਿਖਾਓ          | ਦਿਖਾਓ      | ਔਖਾ     | ਕਠਿਨ       |

## ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀਜ਼ਿਏ :

1. ਲੜਕੀਆਂ ਦੀ ਮਾਂ ਆਜ਼ ਬਹੁਤ ਬੀਮਾਰ ਥੀ।
2. ਆਪ ਕੇ ਗਾਂਵ ਵਾਲੇ ਗਰੀਬ ਤੋ ਨਹੀਂ ?
3. ਉਨਕੇ ਗਾਂਵ ਸੇ ਸ਼ਹਰ ਕਿਤਨੀ ਦੂਰ ਹੈ ?
4. ਕੋਈ ਸਾਢੇ ਚਾਰ ਮੀਲ ਦੂਰ ਹੋਗਾ।
5. ਮੇਰੀ ਪਗੜੀ ਮੇਰੇ ਅਪਨੇ ਸਿਰ ਪਰ ਹੈ।
6. ਸਮੀ ਅੰਗੁਲਿਆਂ ਬਰਾਬਰ ਨਹੀਂ, ਅੰਗੂਠਾ ਸੋਟਾ ਹੈ।
7. ਅਪਨੇ ਨੌਕਰ ਕੋ ਧਨਾਂ ਪੈਨੇ ਆਠ ਬਜੇ ਭੇਜਨਾ !
8. ਬਹੁਤ ਅਛਾ, ਮੇਰਾ ਨੌਕਰ ਸਾਢੇ ਸਾਤ ਬਜੇ ਜ਼ਰੂਰ ਧਨਾਂ ਹੋਗਾ।
9. ਧਿਤਾ ਸਤ ਕਰੋ, ਵੇ ਸਮੀ ਠੀਕ ਹੋਂਗੇ !
10. ਆਪ ਕਾ ਧੰਨਯਵਾਦ !

- |              |              |                |        |
|--------------|--------------|----------------|--------|
| 1. ਲੜਕੀਆਂ ਦੀ | 4. ਸਾਢੇ ਸਾਢੇ | 7. ਧਨਾਂ        | ਇਥੇ    |
| ਥੀ           | ਮੀ           | ਹੋਗਾ           | ਪੈਨੇ   |
| 2. ਆਪ ਕੇ     | ਤੁਹਾਡੇ       | ਪਗੜੀ ਪਗੜੀ, ਪੱਗ | ਆਠ     |
| ਗਾਂਵ ਵਾਲੇ    | ਪਿੰਡ ਵਾਲੇ    | 5. ਪਰ          | ਪੁਰ    |
| ਤੋ           | ਤਾਂ          | 6. ਸਮੀ         | ਸਭੇ    |
| 3. ਉਨਕੋ      | ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ   | ਸਾਰੀਆਂ ਸਭ      | ਹੋਂਗੇ  |
| ਸੇ           | ਤੋਂ          | 10. ਆਪ ਕਾ      | ਤੁਹਾਡਾ |
| ਕਿਤਨੀ        | ਕਿੰਨੀ        | ਧੰਨਯਵਾਦ        | ਧੰਨਵਾਦ |

ਪਾਠ 14

ਸਾਧਾਰਣ ਭਵਿਖਤ (ਸਾਮਾਨ੍ਯ ਅਭਿਘ੍ਯਤ)

ਕੀ ਪਤਾ, ਉਹ ਹੁਣ ਆਏ ਕਿ ਕੱਲ ਆਏ ?  
 ਸ਼ਾਇਦ ਉਹ ਰਾਤੀ ਆਉਣ।  
 ਤੂੰ ਕਰੋ ਕਿ ਨ ਕਰੋ, ਕੀ ਪਤਾ!  
 ਤੁਸੀਂ ਇਥੇ ਰਹੋ ਤਾਂ ਚੰਗਾ।  
 ਤੁਸੀਂ ਪੁੱਛੋ, ਕਿਉਂ ਬਿਮਾਰ ਹਾਂ।  
 ਜੇ ਮੈਂ ਨ ਆਵਾਂ, ਤੂੰ ਉਥੇ ਨਾ ਜਾਵੀਂ।  
 ਤੇਰੀ ਕਿਤਾਬ ਮੇਜ਼ ਉਤੇ ਰੱਖਾਂ ਕਿ ਅਲਮਾਰੀ ਵਿਚ ?  
 ਜੇ ਚਿੱਠੀ ਹੁਣ ਲਿਖੇ ਤਾਂ ਚੰਗਾ ਹੈ।  
 ਜੀ! ਅਸੀਂ ਅੰਦਰ ਆ ਜਾਵੀਏ ?  
 ਹਾਂ! ਆਓ, ਕੀ ਗੱਲ ਹੈ ?  
 ਸੁਣਾਓ ਜੀ! ਕੀ ਹਾਲ ਚਾਲ ਹੈ ? ਕਦੇ ਸਾਡੇ ਘਰ ਵੀ ਪੈਰ ਪਾਓ।  
 ਕੀ ਆਖਾਂ, ਬਹੁਤ ਕੰਮ ਹੈ, ਵਿਹਲ ਮਿਲੇ ਤਾਂ ਆਵਾਂ।  
 ਸੇਠ ਸਾਹਿਬ ਵੇਖਣ ਤਾਂ ਕੀ ਅਖਣ।  
 ਛੇਤ ਸਾਰੀ ਥਾਂ ਸਾਫ਼ ਕਰੋ।  
 ਸੇਠ ਹੋਰਾਂ ਨੂੰ ਨਾ ਦੱਸੀਂ।  
 ਬਹੁਤ ਗੁਸੀਲ ਹਨ, ਮੈਨੂੰ ਕਿਤੇ ਨੌਕਰੀ ਤੋਂ ਨ ਕਢਣ।

|           |           |              |            |           |           |
|-----------|-----------|--------------|------------|-----------|-----------|
| ਕੀ        | ਕਧਾ       | ਆਵਾਂ         | ਆਯਾਂ       | ਵੀ        | ਮੀ        |
| ਹੁਣ       | ਅਭ        | ਉਥੇ          | ਵਹਾਂ       | ਪੈਰ ਪਾਓ   | ਪਧਾਰਿਓ    |
| ਰਾਤੀ      | ਰਾਤ ਕੀ    | ਤੂੰ ਨਾ ਜਾਵੀਂ | ਤੂੰ ਨ ਜਾਨਾ | ਕੀ ਆਖਾਂ   | ਕਧਾ ਕਹੂੰ  |
| ਤੂੰ ਕਰੋ   | ਤੂੰ ਕਰੇ   | ਮੇਜ਼ ਉਤੇ     | ਮੇਜ਼ ਪਰ    | ਵਿਹਲ      | ਫੁਰਸਤ     |
| ਤੁਸੀਂ     | ਤੁਸ       | ਰੱਖਾਂ        | ਮੈਂ ਰਖੂੰ   | ਵੇਖਣ      | ਦੇਖੋ      |
| ਤਾਂ ਚੰਗਾ  | ਤੀ ਅਚਛਾ   | ਆ ਜਾਵੀਏ      | ਹਮ ਆ ਜਾਏ   | ਨ ਦੱਸੀਂ   | ਨ ਬਤਾਨਾ   |
| ਪੁੱਛੋ     | ਪੁੱਛੋ     | ਗੱਲ          | ਬਾਤ        | ਕਿਤੇ      | ਕਹੀਂ      |
| ਬਿਮਾਰ ਹਾਂ | ਬੀਮਾਰ ਹੂੰ | ਕਦੇ          | ਕਦੀ        | ਕਢਣ       | ਨਿਕਾਲੋ    |
| ਜੇ        | ਧਦਿ       | ਸਾਡੇ         | ਹਮਾਰੇ      | ਸੇਠ ਹੋਰਾਂ | ਸੇਠ ਮਹੋਦਧ |

## ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀਜिए :

1. आज बादल हैं, शायद बरखा हो।
2. क्या पता ओले पड़ें !
3. किस को अपना कहें, सभी तमाशा देखने वाले हैं।
4. हम शायद देर से आएँ। दरवाज़ा बन्द न करना।
5. हम तुम किस गिनती में हैं, यहाँ तो कोई अफ़सर भी आ जाए तो उसकी दाल न गले।
6. लड़ो नहीं, फल आधा आधा बाँट लो।
7. वे यहाँ पहुँचें न पहुँचें, तुम प्रतीक्षा न करना।
8. अंधा भिखारी कहीं कुएं में न गिर जाए।
9. उसको कौन कहे कि तेरा कसूर है।
10. मैं भी न जाऊँ, वह भी न आए, काम कैसे बने।

- |            |           |            |              |          |         |
|------------|-----------|------------|--------------|----------|---------|
| 1. आज      | ਅੱਜ       | 4. ਦੇਰ ਸੇ  | ਦੇਰ ਨਾਲ      | ਕਹੀ      | ਕਿਤੇ    |
| बादल       | ਬੱਦਲ      | आएं        | आਵੀਏ         | कुएं में | ਖੂਹ ਵਿਚ |
| 2. ओले     | ਗੜੇ       | 5. हम तुम  | ਅਸੀਂ ਤੁਸੀਂ,  | गिर जाए  | ਡਿਗ ਜਾਏ |
|            |           |            | ਹਮਾਤੜ ਤੁਮਾਤੜ |          |         |
|            | ਪੜੇ       | 6. आधा आधा | ਅੱਧਾ ਅੱਧਾ    | 9. कौन   | ਕੌਣ     |
|            | ਪੈਣ       | बांट लो    | ਵੰਡ ਲੋ       | 10. भी   | ਵੀ      |
| 3. को      | ਨੂੰ       | 7. पहुँचें | ਪਹੁੰਚਣ,      | काम      | ਕੰਮ     |
| अपना कहें  | ਆਪਣਾ      |            | ਪੁੱਜਣ        |          |         |
|            | ਆਖੀਏ      |            |              |          |         |
| सभी        | ਸਭੇ       | 8. अंधा    | ਅੰਨ੍ਹਾ       | कैसे     | ਕਿਵੇਂ   |
| देखने वाले | ਦੇਖਣ ਵਾਲੇ | भिखारी     | ਮੰਗਤਾ        |          |         |



ਪਾਠ 15

ਸਾਧਾਰਣ ਭਵਿਖਤ : ਕੁਝ ਨਵੇਂ ਵਾਕ (ਸਾਧਾਰਣ ਅਧਿਐਤ : ਕੁਝ ਨਵੇਂ ਵਾਕ)

ਉਹ ਅੱਜ ਆਏਗਾ ਕਿ ਕੱਲ ਆਏਗਾ ?

ਉਸ ਦੇ ਪੁੱਤ ਤਾਂ ਰਾਤ ਨੂੰ ਆਉਣਗੇ।

ਉਹ ਸ਼ਾਇਦ ਸਵੇਰ ਨੂੰ ਅਪੜੇਗਾ।

ਕੀ ਤੂੰ ਸਾਰਾ ਕੰਮ ਸ਼ਾਮ ਤਕ ਮੁਕਾਏਗਾ ?

ਜੇ ਕੁਝ ਪੁਛੇਗੇ, ਠੀਕ ਠੀਕ ਦੱਸਾਂਗੀ।

ਹੁਣ ਤੁਸੀਂ ਕਿਥੇ ਜਾਓਗੇ, ਰਾਤ ਪੈ ਜਾਏਗੀ।

ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਰਹੋ ਤਾਂ ਚੰਗਾ।

ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਤੁਹਾਡੇ ਕੋਲ ਆਵਾਂਗਾ,

ਕੁਝ ਦਿਨ ਜ਼ਰੂਰ ਠਹਰਾਂਗਾ।

ਅਸੀਂ ਪੁਛਾਂਗੀਆਂ ਤੂੰ ਚੁੱਪ ਹੋ ਜਾਏਗਾ।

ਸ਼ਾਹ ਹੋਰੀ ਸਾਡੇ ਘਰ ਪੈਰ ਪਾਉਣਗੇ, ਵੱਡੇ ਭਾਗ।

ਵਿਹਲ ਮਿਲੇਗੀ ਤਾਂ ਤੁਹਾਡਾ ਕੰਮ ਜ਼ਰੂਰ ਕਰਾਂਗਾ।

ਸਾਹਿਬ ਵੇਖੇਗਾ ਤਾਂ ਕੀ ਆਖੇਗਾ।

ਨੌਕਰੀ ਤੋਂ ਕਢੇਗਾ ਤਾਂ ਵੀ ਚੰਗਾ।

ਕਿਸੇ ਨਵੀਂ ਥਾਂ ਜਾਵਾਂਗੇ।

ਮਰਣ ਵਾਲੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਦੀਆਂ ਮਾਵਾਂ ਰੋਣਗੀਆਂ।

|         |           |            |           |          |          |
|---------|-----------|------------|-----------|----------|----------|
| ਅੱਜ     | ਆਜ        | ਪੈ ਜਾਏਗੀ   | ਪੜ ਜਾਏਗੀ  | ਵੇਖੇਗਾ   | ਦੇਖੇਗਾ   |
| ਪੁੱਤ    | ਪੁੱਤ      | ਕੋਲ        | ਧਾਸ       | ਤਾਂ      | ਤੋ       |
| ਨੂੰ     | ਕੋ        | ਜਦੋਂ       | ਜਬ        | ਆਖੇਗਾ    | ਕਹੇਗਾ    |
| ਆਉਣਗੇ   | ਆਏਗੇ      | ਤੁਹਾਡੇ ਕੋਲ | ਆਪ ਕੇ ਧਾਸ |          |          |
| ਅਪੜੇਗਾ  | ਪੁੱਛੇਗਾ   | ਆਵਾਂਗਾ     | ਆਉਂਗਾ     | ਤੋਂ      | ਸੇ       |
| ਕੀ      | ਕਥਾ       | ਅਸੀਂ       | ਹਮ        | ਕਢੇਗਾ    | ਨਿਕਾਲੇਗਾ |
| ਕੰਮ     | ਕਾਮ       | ਪੁਛਾਂਗੀਆਂ  | ਪੁੱਛੇਗੀ   | ਤਾਂ ਵੀ   | ਤੋਂ ਭੀ   |
| ਮੁਕਾਏਗਾ | ਤੂੰ ਸਮਾਪਤ | ਤੂੰ ਜਾਏਗਾ  | ਤੂੰ ਜਾਏਗਾ | ਨਵੀਂ ਥਾਂ | ਨਵੀਂ ਜਗਹ |
|         | ਕਰੇਗਾ     |            |           |          |          |
| ਕੁਝ     | ਕੁਝ       | ਸਾਡੇ       | ਹਮਾਰੇ     | ਜਾਵਾਂਗੇ  | ਜਾਏਗੇ    |
| ਪੁਛੇਗੇ  | ਪੁੱਛੇਗੇ   | ਪੈਰ ਪਾਉਣਗੇ | ਪਧਾਰੇਗੇ   | ਕੁੜੀਆਂ   | ਲੜਕਿਆਂ   |
| ਦੱਸਾਂਗੀ | ਬਤਾਓਂਗੀ   | ਵੱਡੇ ਭਾਗ   | ਬੜੇ ਭਾਗ   | ਰੋਣਗੀਆਂ  | ਰੋਏਗੀ    |
| ਹੁਣ     | ਅਬ        | ਵਿਹਲ       | ਫੁਰਸਤ     | ਤੁਸੀਂ    | ਆਪ       |
| ਕੰਮ     | ਕਾਮ       | ਕਿਥੇ       | ਕਹਾਂ      | ਕਰਾਂਗਾ   | ਕਰਾਂਗਾ   |

## ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀਜिए :

1. ਬਾਦਲ ਬਰਸੇਗਾ, ਖੇਤ ਹਰੇ-ਭਰੇ ਹੋ ਜਾਏਗੇ।
2. ਸਹਾਯਤਾ ਕੋਈ ਨਹੀਂ ਕਰੇਗਾ, ਸਮੀ ਤਮਾਸ਼ਾ ਦੇਖੇਗੇ।
3. ਤੁਮ ਕਿਸ ਕੋ ਅਪਨਾ ਕਹੋਗੇ, ਜਬ ਧੋਖਾ ਹੀ ਧੋਖਾ ਹੈ।
4. ਰਾਤ ਅੰਧੇਰੀ ਹੋਗੀ, ਤੋ ਕੈਸੇ ਗਾਵ ਪਹੁੰਚੋਗੀ ?
5. ਮੁੜ ਕੋ ਤੋ ਰਾਤ-ਭਰ ਨੀਂਦ ਨਹੀਂ ਆਏਗੀ।
6. ਜੋ ਚੋਰੀ ਕਰੇਗਾ ਜ਼ਰੂਰ ਪਕੜਾ ਜਾਏਗਾ।
7. ਜਬ ਲੜਕੀਯੋਂ ਰੋਏਗੀ, ਮੈਂ ਕੈਸੇ ਸ਼ਾਂਤ ਰਹੂੰਗਾ।
8. ਤੁਮ ਸ਼ੋਰ ਮਚਾਓਗੀ ਤੋ ਹਮ ਪਛਾੜੀ ਕੈਸੇ ਕਰੇਂਗੇ ?
9. ਹਮ ਤੋ ਮੁੰਹ ਪਰ ਸਾਰੀ ਬਾਤ ਕਹ ਦੇਂਗੀ, ਤੁਮ ਮਤ ਡਰੋ।
10. ਕੜ ਕਹੇਂਗੇ ਕਿ ਧਹ ਸਬ ਝੂਠ ਹੈ।
11. ਜਬ ਤਾਰ ਆਏਗਾ, ਹਮ ਦੋਨੋਂ ਕੋ ਜਾਨਾ ਪਛੇਗਾ।

- |               |            |           |           |            |         |
|---------------|------------|-----------|-----------|------------|---------|
| 1. ਬਾਦਲ       | ਬੱਦਲ       | 4. ਅੰਧੇਰੀ | ਹਨੇਰੀ     | ਰੋਏਗੀ      | ਰੋਣਗੀਆਂ |
| ਬਰਸੇਗਾ        | ਵਸੇਗਾ      | ਕੈਸੇ      | ਕਿਵੇਂ     | ਕੈਸੇ       | ਕਿਵੇਂ   |
| ਹੋ ਜਾਏਗੇ      | ਹੋ ਜਾਣਗੇ   | ਪਹੁੰਚੋਗੀ  | ਪੁੱਜੇਗੀਆਂ | 8. ਤੁਮ     | ਤੁਸੀਂ   |
| 2. ਸਮੀ ਤਮਾਸ਼ਾ | ਸਭੇ ਤਮਾਸ਼ਾ | 5. ਮੁੜ ਕੋ | ਮੈਨੂੰ     | ਹਮ         | ਅਸੀਂ    |
| ਦੇਖੇਂਗੇ       | ਵੇਖਣਗੇ     | ਰਾਤ-ਭਰ    | ਰਾਤਭਰ     | ਕਰੇਂਗੇ     | ਕਰਾਂਗੇ  |
| 3. ਤੁਮ        | ਤੁਸੀਂ      | 6. ਪਕੜਾ   | ਫੜਿਆ      | 9. ਮੁੰਹ ਪਰ | ਮੂੰਹ ਤੇ |
| ਕਿਸ ਕੋ        | ਕਿਸ ਨੂੰ    | ਜਾਏਗਾ     | ਜਾਏਗਾ     | ਧਹ ਸਬ      | ਇਹ ਸਭ   |
| ਅਪਨਾ          | ਆਪਣਾ       | 7. ਜਬ     | ਜਦੋਂ      | ਕਹ ਦੇਂਗੀ   | ਆਖਦਿਆਂ  |
| ਜਬ            | ਜਦੋਂ       | ਲੜਕੀਯੋਂ   | ਭੜੀਆਂ     |            | ਗੀਆਂ    |
|               |            |           |           | 11. ਜਾਨਾ   | ਜਾਣਾ    |
|               |            |           |           | ਪਛੇਗਾ      | ਪਛੇਗਾ   |

ਪਾਠ 16

ਵਰਤਮਾਨ ਕ੍ਰਿਦੰਤ ਦੀ ਵਰਤੋਂ (ਬਰਤਮਾਨ ਕ੍ਰਿਦੰਤ ਕੇ ਪ੍ਰਯੋਗ)

\*ਮੈਂ ਹੁਣ ਘਰ ਨੂੰ ਜਾਂਦਾ ਹਾਂ।

ਕੀ, ਤੁਸੀਂ ਵੀ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਚਲਦੇ ਹੋ ?

ਨਹੀਂ ਜੀ ਮੈਂ ਤਾਂ ਹਾਲੀ ਕੰਮ ਕਰਦਾ ਹਾਂ।

ਉਹ ਪੰਜਾਬੀ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਬੋਲਦੀ ਹੈ।

ਉਸ ਦੀਆਂ ਭੈਣਾਂ ਵੀ ਪੰਜਾਬੀ ਜਾਣਦੀਆਂ ਹਨ।

ਅਸੀਂ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਨਹੀਂ ਜਾਣਦੇ।

ਉਹ ਪੁਛਦਾ ਹੈ ਪਈ ਇਹ ਸੜਕ ਕਿਧਰ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਮੈਂ ਦਫਤਰ ਨੂੰ ਦਸ ਵਜੇ ਜਾਂਦਾ ਸਾਂ।

ਤੁਹਾਡੇ ਦੋਵੇਂ ਭਰਾ ਵੀ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਜਾਂਦੇ ਸਨ।

ਜਦੋਂ ਗਰਮੀਆਂ ਆਉਂਦੀਆਂ ਸਨ ਅਸੀਂ ਸੱਤ ਵਜੇ ਦਫਤਰ ਅਪੜਦੇ ਸਾਂ।

ਜੇਕਰ ਤੁਸੀਂ ਆਖਦੇ ਤਾਂ ਮੇਰਾ ਨੌਕਰ ਇਥੇ ਆ ਜਾਂਦਾ।

ਜੇਕਰ ਬਾਰਸ਼ ਨ ਹੁੰਦੀ ਤਾਂ ਕਣਕ ਹੋਰ ਮਹੰਗੀ ਹੁੰਦੀ।

ਜੇਕਰ ਤੂੰ ਪਹਲਾਂ ਦਸਦਾ ਤਾਂ ਮੈਂ ਚਿੱਠੀ ਲਿਖ ਭੇਜਦਾ।

ਉਹ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਹੋਣ ਤਾਂ ਰੁਕ ਜਾਵੀਂ।

ਜੇ ਤੁਸੀਂ ਮਿਹਨਤ ਕਰਦੇ ਹੋ ਤਾਂ ਸਫਲ ਹੋਵੋਗੇ।

|             |            |              |             |               |            |
|-------------|------------|--------------|-------------|---------------|------------|
| ਜਾਂਦਾ ਹਾਂ   | ਜਾਗਾ ਹੂੰ   | ਪਈ           | ਕਿ          | ਅਪੜਦੇ ਸਾਂ     | ਪਹੁੰਚਦੇ ਥੇ |
| ਮੇਰੇ ਨਾਲ    | ਸੇਰੇ ਸਾਥ   | ਜਾਂਦੀ ਹੈ     | ਜਾਗੀ ਹੈ     | ਤੁਸੀਂ ਆਖਦੇ    | ਆਪ ਕਹਿੰਦੇ  |
| ਤੁਸੀਂ ਚਲਦੇ  | ਆਪ ਚਲਦੇ    | ਜਾਂਦਾ ਸਾਂ    | ਜਾਗਾ ਥਾ     | ਜੇਕਰ          | ਧੀ         |
| ਹੋ          | ਹੈ         |              |             |               |            |
| ਹਾਲੀ        | ਅਮੀ        | ਤੁਹਾਡੇ ਦੋਵੇਂ | ਆਪ ਕੇ ਦੋਨੋਂ | ਹੁੰਦੀ (ਹੋਂਦੀ) | ਹੋਤੀ       |
|             |            | ਭਰਾ          | ਮਾਝ         |               |            |
| ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ | ਅਲੀ ਪ੍ਰਕਾਰ | ਜਾਂਦੇ ਸਨ     | ਜਾਗੇ ਥੇ     | ਕਣਕ           | ਗੇਹੂੰ      |
| ਉਹ ਬੋਲਦੀ    | ਵਹ ਬੋਲਦੀ   | ਜਦੋਂ         | ਜਬ          | ਹੋਰ           | ਐਰ         |
| ਹੈ          | ਹੈ         |              |             |               |            |
| ਵੀ          | ਮੀ         | ਗਰਮੀਆਂ       | ਗ੍ਰੀਸ਼ਮ ਰੁਤ | ਪਹਲਾਂ         | ਪਹਲੇ       |
| ਜਾਣਦੀਆਂ     | ਜਾਨਦੀ ਹੈਂ  | ਆਉਂਦੀਆਂ      | ਆਤੀ ਥੀਂ     | ਕੰਮ ਕਰਦੇ      | ਕਾਮ ਕਰਦੇ   |
| ਹਨ          |            | ਸਨ           |             | ਹੋਣ           | ਹੋ         |
| ਪੁਛਦਾ ਹੈ    | ਪੁੱਛਤਾ ਹੈ  | ਸੱਤ          | ਸਾਤ         | ਰੁਕ ਜਾਵੀਂ     | ਰੁਕ ਜਾਨਾ   |

\* ਮੈਂ ਜਾਂਦਾ ਹਾਂ (ਆਂ, ਵਾਂ), ਮੈਂ ਜਾਨਾਂ

## ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀਜੀਏ :

1. ਬਡੀ ਬਹਨ ਖਾਨਾ ਪਕਾਤੀ ਹੈ, ਛੋਟੀ ਪਾਨੀ ਭਰਤੀ ਹੈ।
2. ਵੇ ਬਾਲਕ ਗਲੀ ਮੈਂ ਕਯਾ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ?
3. ਵੇ ਆਪਸ ਮੈਂ ਬਾਤੋਂ ਕਰਤੇ ਹੈਂ।
4. ਕਯਾ ਆਪ ਪੰਜਾਬੀ ਨਹੀਂ ਬੋਲਤੇ ?
5. ਹਮ ਪੰਜਾਬੀ ਸਮਝ ਲੇਤੇ ਹੈਂ, ਪਰ ਅਛੀ ਟਰਹ ਬੋਲ ਨਹੀਂ ਸਕਤੇ।
6. ਯਦਿ ਵੇ ਸਵੇਰੇ ਸੇ ਕਾਮ ਕਰਤੇ ਤੋ ਅਬ ਤਕ ਸਮਾਪਤ ਕਰ ਲੇਤੇ।
7. ਕਯਾ ਆਪ ਓਸੀ ਗਲੀ ਮੈਂ ਰਹਤੇ ਥੇ, ਜਹਾਂ ਛੋਟਾ ਸਾ ਮੰਦਿਰ ਹੈ ?
8. ਹਮ ਤੋ ਪੰਜਾਬੀ ਸੀਖਤੀ ਹੈਂ, ਆਪ ਕਯਾ ਸੀਖਤੀ ਹੈਂ ?
9. ਤੁਮ ਹਰ ਰੋਜ਼ ਕਿਤਨੇ ਬਯੇ ਓਠਤੇ ਹੋ ?
10. ਪਹਲੇ ਤੋ ਮੈਂ ਚਾਰ ਬਯੇ ਓਠਤਾ ਥਾ, ਅਬ ਸਦੀਂ ਮੈਂ ਪਾਂਚ ਬਯੇ ਜਾਗਤਾ ਹੂੰ।
11. ਵਹ ਜਬ ਮਿਲਤਾ ਹੈ, ਹੰਸਤਾ ਹੰਸਤਾ ਦੀਖਤਾ ਹੈ।

- |                     |                     |                      |             |
|---------------------|---------------------|----------------------|-------------|
| 1. ਬਡੀ ਬਹਨ ਵੱਡੀ ਭੈਣ | ਅਛੀ ਟਰਹ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ | ਮੰਦਿਰ                | ਮੰਦਰ        |
| ਪਕਾਤੀ               | ਪਕਾਉਂਦੀ ਹੈ          | 6. ਅਬ ਤਕ             | ਹੁਣ ਤਕ      |
|                     |                     | 8. ਹਮ                | ਅਸੀਂ        |
|                     |                     | ਸੀਖਤੀ                | ਸਿਖਦੀਆਂ     |
|                     |                     | ਹੈਂ                  | ਹਾਂ         |
| ਭਰਤੀ ਹੈ             | ਭਰਦੀ ਹੈ             | ਸਮਾਪਤ ਕਰ ਮੁਕਾਂ ਦੇਂਦੇ | ਆਪ          |
|                     |                     | ਲੇਤੇ                 | ਤੁਸੀਂ       |
|                     |                     | ਸੀਖਤੀ                | ਸਿਖਦੀਆਂ     |
|                     |                     | ਹੈਂ                  | ਹੋ          |
| 2. ਕਯਾ ਕਰਤੇ ਕੀ ਕਰਦੇ | 7. ਓਸੀ              | ਉਸੇ                  | 9. ਕਿਤਨੇ    |
| ਹੈਂ                 | ਹਨ                  |                      | ਬਯੇ         |
| 3. ਆਪਸ ਮੈਂ ਆਪੋ ਵਿਚ  | ਆਪ ਰਹਤੇ             | ਤੁਸੀਂ ਰਹਿੰਦੇ         | 10. ਪਹਲੇ ਤੋ |
|                     | ਥੇ                  | ਸਓ                   | ਪਹਲਾਂ ਤਾਂ   |
| ਬਾਤੋਂ               | ਗੱਲਾਂ               | ਜਹਾਂ                 | ਜਿਥੇ        |
| ਕਰਤੇ                | ਕਰਦੇ ਹਨ             |                      | ਮੈਂ ਓਠਤਾ    |
|                     |                     |                      | ਮੈਂ ਉਠਦਾ    |
| 5. ਸਮਝ ਲੇਤੇ         | ਸਮਝ ਲੈਂਦੇ           | ਛੋਟਾ ਸਾ              | ਛੋਟਾ ਜੇਹਾ   |
| ਹੈਂ                 | ਹਾਂ                 |                      |             |

# ਪਾਠ 17

## ਵਾਧੂ ਵਾਕ (ਅਧਿਕਾਰਕ ਵਾਕ)

ਚਲਦੀ ਗੱਡੀ ਤੋਂ ਮਤ ਉਤਰੋ ।  
 ਵਗਦਾ ਪਾਣੀ ਵੇਖ ਕੇ ਅਸੀਂ ਖੁਸ਼ ਹੁੰਦੇ ਹਾਂ ।  
 ਸ਼ਾਇਦ ਤੂੰ ਭੁਲਦੀ ਹੋਵੇਂ ।  
 ਉਹ ਦੋੜਦਾ ਭਜਦਾ ਕਿਧਰ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ?  
 ਉਹ ਸਾਰੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਘਰ ਜਾ ਕੇ ਦਸਦਾ ਹੋਵੇਗਾ ।  
 ਕੀ ਪਤਾ, ਕਿਸ ਕਿਸ ਅੱਗੇ ਗੱਲਾਂ ਕਰਦਾ ਹੋਵੇਗਾ ?  
 ਗਾਈਆਂ ਪਿੰਡ ਦੇ ਬਾਹਰ ਘਾਹ ਚਰਦੀਆਂ ਹੋਣਗੀਆਂ ।  
 ਜੇ ਸੂਰਜ ਨ ਹੁੰਦਾ, ਜੀਵਨ ਦਾ ਵਿਕਾਸ ਨ ਹੁੰਦਾ ।  
 ਉਹ ਆਖਦੇ ਸਨ 'ਕਰ ਸੇਵਾ, ਖਾ ਮੇਵਾ' ।  
 ਮੈਂ ਆਖਦਾ ਹਾਂ, ਫਿਰ ਵੀ ਦਇਆ ਚੰਗੀ ਹੈ ।  
 ਟੁਰਦਿਆਂ ਟੁਰਦਿਆਂ ਅਸੀਂ ਅਗਲੇ ਪਿੰਡ ਜਾ ਪੁਜਾਂਗੇ ।  
 ਮੈਂ ਤਾਂ ਤੁਹਾਡੀ ਭੈਣ ਨੂੰ ਜਾਣਦੀ ਹਾਂ ।  
 ਅਸੀਂ ਇਕੋ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਦੀਆਂ ਸਾਂ ।

SIKHBOOKCLUB.COM

|           |           |            |             |              |            |
|-----------|-----------|------------|-------------|--------------|------------|
| ਚਲਦੀ      | ਚਲਦੀ      | ਸਾਰੀਆਂ     | ਸਭ ਥਾਵਾਂ    | ਆਖਦੇ ਸਨ      | ਕਹਿੰਦੇ ਥੇ  |
| ਗੱਡੀ      | ਗਾਡੀ      | ਗੱਲਾਂ      |             |              |            |
| ਵਗਦਾ      | ਬਹਿਤਾ     | ਪਾਣੀ       | ਦਸਦਾ ਹੋਵੇਗਾ | ਬਤਾਵੇਂ       | ਹੋਗਾ       |
| ਪਾਣੀ      |           |            |             | ਆਖਦਾ ਹੈ      | ਕਹਿੰਦਾ ਹੈ  |
| ਵੇਖ ਕੇ    | ਦੇਖ ਕੇ    | ਕਿਸ ਅੱਗੇ   | ਕਿਸ ਕੇ      | ਆਗੇ          | ਟੁਰਦਿਆਂ ੨  |
| ਅਸੀਂ      | ਹਮ        | ਗੱਲਾਂ ਕਰਦਾ | ਥਾਵਾਂ ਕਰਦਾ  | ਅਸੀਂ ਪੁਜਾਂਗੇ | ਹਮ         |
|           |           | ਹੋਵੇਗਾ     | ਹੋਗਾ        |              | ਪਹੁੰਚੇਂਗੇ  |
| ਹੁੰਦੇ ਹਾਂ | ਹੋਦੇ ਹਾਂ  | ਘਾਹ        | ਘਾਸ         | ਤੁਹਾਡੀ ਭੈਣ   | ਆਪਕੀ       |
|           |           |            |             | ਨੂੰ          | ਬਹਨ ਕੀ     |
| ਤੂੰ ਭੁਲਦੀ | ਤੂੰ ਭੁਲਦੀ | ਹੋ         | ਗਾਈਆਂ       | ਜਾਣਦੀ ਹਾਂ    | ਜਾਨਦੀ ਹੂੰ  |
| ਹੋਵੇਂ     |           | ਚਰਦੀਆਂ     | ਹੋਂਗੀ       |              |            |
|           |           | ਹੋਣੀਆਂ     |             |              |            |
| ਭਜਦਾ      | ਭਾਗਦਾ     | ਨ ਹੁੰਦਾ    | ਨ ਹੋਂਦਾ     | ਪੜ੍ਹਦੀਆਂ     | ਪੜ੍ਹਦੀ ਥੀਂ |
| ਜਾਂਦਾ ਹੈ  | ਜਾਂਦਾ ਹੈ  |            |             | ਸਾਂ          |            |

ਉਹ ਆਪਣੇ ਨਿੱਕੇ ਭਰਾ ਨੂੰ ਝਿੜਕਦਾ ਹੈ।  
 ਨਿੱਕਾ ਭਰਾ ਦੁਖੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।  
 ਦੁਖ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਉਦਾਸ ਕਰਦਾ ਹੈ।  
 ਕੀ ਛਕੜਾ ਪਿੰਡ ਨੂੰ ਚਲਦਾ ਹੈ।  
 ਛਕੜੇ ਵਿਚ ਕੋਣ ਕੋਣ ਬੈਠਦੇ ਹਨ ?  
 ਮੇਰੀਆਂ ਭੈਣਾਂ ਸ਼ਹਰ ਤੋਂ ਰੋਜ਼ ਪਿੰਡ ਨੂੰ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ।  
 ਗਵਾਂਢਣ ਦੀ ਕੁੜੀ ਵੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਟੁਰ ਪੈਂਦੀ ਹੈ।  
 ਕਿਸਾਨ ਬਲਦਾਂ ਨੂੰ ਕੁਟਦਾ ਹੈ।  
 ਬਲਦ ਦੋੜਦੇ ਦੋੜਦੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।  
 ਧੂੜ ਉਡਦੀ ਹੈ, ਕੁਝ ਵੀ ਦਿਸਦਾ ਨਹੀਂ।  
 ਜਦੋਂ ਭੇਡਾਂ ਬਕਰੀਆਂ ਵਾਪਸ ਆਉਂਦੀਆਂ ਸਨ, ਬੱਚੇ ਖੁਸ਼ ਹੁੰਦੇ ਸਨ।  
 ਉਹ ਮੇਮਣਿਆਂ ਨਾਲ ਖੇਡਦੇ ਸਨ।  
 ਕਾਲੇ ਚਿਟੇ ਸੋਹਣੇ ਸੋਹਣੇ ਮੇਮਣੇ ਮੈਨੂੰ ਚੰਗੇ ਲਗਦੇ ਹਨ।  
 ਕਿਸਾਨ ਪਸ਼ੂ ਪਾਲਦੇ ਹਨ, ਸ਼ਹਿਦ ਦੀਆਂ ਮੱਖੀਆਂ ਵੀ ਪਾਲਦੇ ਹਨ।  
 ਜੇਕਰ ਉਹ ਚੰਗੀ ਵਾਹੀ ਕਰਦਾ, ਉਸਨੂੰ ਚੰਗਾ ਝਾੜ ਲਭਦਾ।  
 ਆਟਾ ਪੀਸਦਿਆਂ ਪੀਸਦਿਆਂ ਵੀ ਬੁੱਢੀ ਸੌਂ ਜਾਂਦੀ ਸੀ।  
 ਉਹ ਧਨ ਕਮਾਉਂਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਜੂਏ ਵਿਚ ਹਾਰ ਆਉਂਦਾ ਹੈ।  
 ਕੀ ਕਰੀਏ ਵਖਤ ਕਢਣਾ ਵੀ ਔਖਾ ਜਾਪਦਾ ਹੈ।  
 ਹੁਣ ਤਾਂ ਅੰਬ ਜਾਂਦੀ ਰੁਤ ਦਾ ਮੇਵਾ ਹੈ।  
 ਰਾਹੇ ਰਾਹੇ ਜਾਂਦਿਆਂ। ਸਿਪਾਹੀਆ, ਇਹ ਪੰਡ ਚੁਕਾਈ।

|            |           |           |           |              |              |
|------------|-----------|-----------|-----------|--------------|--------------|
| ਨਿੱਕੇ      | ਛੋਟੇ      | ਕੁੜੀ      | ਲੜਕੀ      | ਸੋਹਣੇ        | ਸੁੰਦਰ        |
| ਭਰਾ ਨੂੰ    | ਮਾਝੇਂ ਕੋ  | ਦੇ ਨਾਲ    | ਕੇ ਸਾਥ    | ਚੰਗੇ ਲਗਦੇ    | ਅਥੇ ਲਗਦੇ ਹੈਂ |
| ਹੁੰਦਾ ਹੈ   | ਹੋਗਾ ਹੈ   | ਟੁਰ ਪੈਂਦੀ | ਚਲ ਪੜ੍ਹਤੀ | ਜੇਕਰ         | ਧਰਿ          |
| ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ  | ਸਨੁਖ ਕੋ   | ਬਲਦਾਂ ਨੂੰ | ਬੈਲੋਂ ਕੋ  | ਵਾਹੀ         | ਹਲ ਚਲਾਨਾ     |
| ਕੋਣ        | ਕੌਨ       | ਕੁਟਦਾ     | ਧੀਟਗ      | ਝਾੜ          | ਫਸਲ, ਚਪੜ     |
| ਬੈਠਦੇ ਹਨ   | ਬੈਠਦੇ ਹੈਂ | ਧੂੜ       | ਧੂਲ       | ਲਭਦਾ         | ਚਪਲਬਾ ਹੋਗਾ   |
| ਪਿੰਡ ਨੂੰ   | ਗਾਓਂ ਕੋ   | ਉਡਦੀ      | ਚੜ੍ਹਤੀ    | ਪੀਸਦਿਆਂ      | ਪੀਸਦੇ        |
| ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ | ਜਾਤੀ ਹੈਂ  | ਕੁਝ ਵੀ    | ਕੁਝ ਭੀ    | ਸੌਂ ਜਾਂਦੀ ਸੀ | ਸੌਂ ਜਾਤੀ ਥੀ  |
| ਗਵਾਂਢਣ     | ਪਛੋਸਨ     | ਦਿਸਦਾ     | ਦੀਖਤਾ     | ਕਮਾਉਂਦਾ ਹੈ   | ਕਮਾਤਾ ਹੈ     |
| ਅੰਬ        | ਆਸ        | ਜਦੋਂ      | ਜਬ        | ਵਖਤ ਕਢਣਾ     | ਸਮਧ ਕਾਟਨਾ    |

|           |             |          |           |            |                |
|-----------|-------------|----------|-----------|------------|----------------|
| ਰਾਹੇ ਰਾਹੇ | ਹੇ ਰਾਸਤੇ ਪਰ | ਭੇਡਾਂ    | ਘੇਡੇਂ     | ਐਥਾ        | ਕਹਿਨ           |
| ਜਾਂਦਿਆਂ!  | ਜਾਨੇ ਵਾਲੇ   | ਆਉਂਦੀਆਂ  | ਆਤੀ ਥੀਂ   | ਜਾਪਦਾ ਹੈ   | ਪ੍ਰਤੀਤ ਹੋਗਾ ਹੈ |
|           |             | ਸਨ       |           | ਹੁਣ ਤਾਂ    | ਅਬ ਤੋ          |
|           |             | ਮੋਮਣਿਆਂ  | ਮੇਸਨੀਂ ਕੇ | ਜਾਂਦੀ ਹੁੰਤ | ਜਾਤੀ ਘਰੁ       |
|           |             | ਨਾਲ      | ਸਾਥ       | ਪਿੰਡ       | ਗਠੜੀ           |
|           |             | ਖੇਡਦੇ ਸਨ | ਖੇਲਦੇ ਥੇ  | ਚੁਕਾਈ      | ਤਠਵਾਨਾ         |

### ਪਾਠ 18

#### ਭੂਤ ਕ੍ਰਿਦੰਤ ਕੇ ਪ੍ਰਯੋਗ (ਭੂਤ ਕ੍ਰਿਦੰਤ ਕੇ ਪ੍ਰਯੋਗ)

ਕੱਲ ਉਹ ਜਲੰਧਰੋਂ ਆਇਆ ।  
 ਉਥੇ ਚੰਗਾ ਮੀਂਹ ਪਇਆ ।  
 ਸ਼ਾਮੀ ਕੁੜੀਆਂ ਅੰਦਰ ਨੂੰ ਗਈਆਂ ।  
 ਮੈਂ ਆਪ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਜਾਂਦਿਆਂ ਵੇਖਿਆ ।  
 ਅਸੀਂ ਦਰਿਆ ਦੇ ਕੰਢੇ ਪਹੁੰਚੇ ।  
 ਪਰ ਉਥੇ ਕੋਈ-ਬੇੜੀ ਨਹੀਂ ਸੀ ਲਭੀ ।  
 ਤੁਸੀਂ ਉਸ ਬਿਚਾਰੀ ਦਾ ਹਾਲ ਨਹੀਂ ਸਮਝ ਸਕੇ ।  
 ਕੀ ਤੁਸੀਂ ਉਸਦੀ ਬੋਲੀ ਨਹੀਂ ਸਮਝੀ ?  
 ਜਦੋਂ ਉਹ ਸ਼ੇਰ ਕੋਲੋਂ ਲੰਘੇ ਉਹ ਘਬਰਾ ਗਏ ।  
 ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਬੰਦੂਕ ਕਿਥੇ ਡਿਗੀ ।  
 ਅਸੀਂ ਪਿੰਡ ਵਿਚ ਆ ਕੇ ਬਹੁਤ ਪਛਤਾਏ ।  
 ਸਾਥੀ ਵਿਛੜ ਗਏ, ਘੋੜੇ ਗਵਾਹ ਗਏ ।  
 ਨੌਕਰ ਸਵੇਰੇ ਸੁਨੇਹਾ ਲੈ ਆਇਆ ਪਈ ਸਾਰੇ ਬੰਦੇ ਰਾਹ ਭੁੱਲ ਕੇ ਹੋਰ ਪਿੰਡ ਵਿਚ  
 ਜਾਂ ਅਪੜੇ ।  
 ਬਿਚਾਰੇ ਬਹੁਤ ਖੱਜਲ ਖੁਆਰ ਹੋਏ ।  
 ਸਾਰੀ ਰਾਤ ਨਹੀਂ ਸੁੱਤੇ\* ।

|         |           |            |          |         |           |
|---------|-----------|------------|----------|---------|-----------|
| ਜਲੰਧਰੋਂ | ਜਾਲੰਧਰ ਸੇ | ਉਥੇ        | ਵਹਾਂ     | ਵਿਛੜ ਗਏ | ਬਿਛੜ ਗਏ   |
| ਉਥੇ     | ਵਹਾਂ      | ਲਭੀ ਸੀ     | ਮਿਲਦੀ ਥੀ | ਗਵਾਹ ਗਏ | ਗੁਸ ਹੋ ਗਏ |
| ਪਇਆ     | ਪਝਾ       | ਗੱਲ        | ਬਾਤ      | ਪਈ      | ਕਿ        |
| ਸ਼ਾਮੀ   | ਸ਼ਾਮ ਕੋ   | ਜਦੋਂ       | ਜਬ       | ਭੁੱਲ ਕੇ | ਭੁੱਲਕਰ    |
| ਕੁੜੀਆਂ  | ਲੜਕਿਆਂ    | ਕੋਲੋਂ ਲੰਘੇ | ਕੇ ਪਾਸ   | ਅਪੜੇ    | ਪਹੁੰਚੇ    |

\* ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਕੇ ਲਿਓਂ ਦੇਖਿਓਂ ਅੰਤਿਕਾ

|       |        |          |          |        |         |  |
|-------|--------|----------|----------|--------|---------|--|
| ਗਈਆਂ  | ਗई     |          | ਸੇ       | ਗੁਜ਼ਰੇ |         |  |
| ਮੈਂ   | ਮੈਂ ਨੇ | ਡਿਗੀ     | ਗਿਰੀ     | ਖਜਲ    | ਪਰੇਸ਼ਾਨ |  |
| ਵੇਖਿਆ | ਦੇखा   | ਪਿੰਡ ਵਿਚ | ਗਾਂਭ ਮੇਂ | ਸੁੱਤੇ  | ਸੋਏ     |  |
| ਕੰਢੇ  | ਕਿਨਾਰੇ |          |          |        |         |  |

### ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀਜिए :

1. ਕਧਾ ਪਤਾ ਮੇਰਾ ਤੋਤਾ ਕਹਾਓਂ ਉਡ ਗਯਾ ?
2. ਸ਼ਾਮ ਕੋ ਲੜਕਿਆਂ ਕੁਏਂ ਪਰ ਪਾਨੀ ਭਰਨੇ ਆਈ।
3. ਰਸਸੀ ਟੂਟ ਗਈ ਤੋ ਬਾਲਟੀ ਕੁਏਂ ਮੇਂ ਗਿਰ ਗਈ।
4. ਮਾਲੀ ਕੁਏਂ ਮੇਂ ਉਤਰਾ ਆਰ ਬਾਲਟੀ ਨਿਕਾਲ ਲਾਯਾ।
5. ਕਿਸਾਨ ਬੋਲਾ ਬਾਫ਼ ਸੇ ਮੇਰੀ ਸਾਰੀ ਫਸਲ ਖਰਾਬ ਹੋ ਗਈ।
6. ਮੈਂ ਸਵੇਰੇ ਚਾਰ ਬਜੇ ਉਠਾ, ਬਾਹਰ ਨਿਕਲਾ ਤੋ ਆਂਗਨ ਮੇਂ ਏਕ ਬੱਚੇ ਕੋ ਧਰਤੀ ਪਰ ਸੋਧਾ ਪਾਯਾ।
7. ਕਧਾ ਆਪ ਕੇ ਗਾਓਂ ਮੇਂ ਭੀ ਬਾਰਿਸ਼ ਨਹੀਂ ਹੁਈ ?
8. ਹਮੇਂ ਪੈਥੇ ਲਗਾਨੇ ਕਾ ਕੋਈ ਲਾਭ ਨਹੀਂ ਹੁਆ।
9. ਜਬ ਹਮ ਉਸੇ ਦਫ਼ਤਰ ਮੇਂ ਮਿਲੇ ਤੋ ਵਹ ਬੋਲਾ, ਮੈਂ ਤੋ ਤੁਮ੍ਹੇ ਪਹਚਾਨਤਾ ਨਹੀਂ।
10. ਰਾਤ ਪਡ ਗਈ, ਪਰ ਉਨ ਕੀ ਮੈਂਸੇਂ ਵਾਪਸ ਨਹੀਂ ਆਈ।
11. ਆਪ ਕਾ ਕਾਗਜ਼ ਕਹਾਂ ਗੁਮ ਹੋ ਗਯਾ। ਮੁਝੇ ਕੁਝ ਭੀ ਪਤਾ ਨਹੀਂ।

- |            |          |            |           |            |         |
|------------|----------|------------|-----------|------------|---------|
| 1. ਕਧਾ     | ਕੀ       | 4. ਉਤਰਾ    | ਉਤਰਿਆ     | 7. ਭੀ      | ਵੀ      |
| ਕਹਾਂ       | ਕਿਥੇ     | ਆਰ         | ਅਤੇ       | 8. ਪੈਥੇ    | ਬੂਟੇ    |
| ਉਡ ਗਯਾ     | ਊਡ ਗਇਆ   | ਨਿਕਾਲ      | ਕਢ        | ਲਗਾਨੇ ਕਾ   | ਲਾਉਣ ਦਾ |
| 2. ਸ਼ਾਮ ਕੋ | ਸ਼ਾਮੀ    | ਲਾਯਾ       | ਲਿਆਇਆ     | ਹੁਆ        | ਹੋਇਆ    |
| ਕੁਏਂ ਪਰ    | ਖੂਹ ਤੇ   | 5. ਬੋਲਾ    | ਬੋਲਿਆ     | 9. ਜਬ      | ਜਦੋਂ    |
| ਪਾਨੀ       | ਪਾਣੀ ਭਰਨ | ਬਾਫ਼ ਸੇ    | ਹੜ੍ਹ ਨਾਲ  | ਉਸੇ        | ਉਸ ਨੂੰ  |
| ਭਰਨੇ ਆਈ    | ਆਈਆਂ     | 6. ਮੈਂ ਉਠਾ | ਮੈਂ ਉਠਿਆ  | ਪਹਚਾਨਤਾ    | ਪਛਾਣਦਾ  |
| 3. ਟੂਟ ਗਈ  | ਟੁੱਟ ਗਈ  | ਨਿਕਲਾ      | ਨਿਕਲਿਆ    | 10. ਪਡ ਗਈ  | ਪੈ ਗਈ   |
| ਗਿਰਨਾ      | ਡਿਗਣਾ    | ਆਂਗਨ ਮੇਂ   | ਵਿਹੜੇ ਵਿਚ | ਮੈਂਸੇਂ     | ਮਝਾਂ    |
|            |          | ਸੋਧਾ       | ਸੁੱਤਾ     | 11. ਗੁਮ ਹੋ | ਗੁਆਚ    |
|            |          | ਪਾਯਾ       | ਵੇਖਿਆ     | ਗਯਾ        | ਗਇਆ     |
|            |          |            |           | ਕੁਝ ਭੀ     | ਕੁਝ ਵੀ  |



ਪਾਠ 19

ਭੂਤ ਕਾਲ ਦੇ ਰੂਪ

(ਭੂਤ ਕਾਲ ਦੇ ਰੂਪ)

ਮੈਂ ਹਾਲੀ ਇਕ ਮੀਲ ਗਇਆ ਸਾਂ ਕਿ ਬਾਰਿਸ਼ ਹੋਣ ਲੱਗੀ।  
 ਅਸੀਂ ਸਾਰਾ ਰਾਹ ਚਿੱਕੜ ਵਿਚ ਲੰਘਦੇ ਗਏ ਸਾਂ।  
 ਖਵਰੇ ਤੂੰ ਕਿਥੇ ਗਇਆ ਸੈਂ, ਮੈਂ ਉਡੀਕਦਾ ਰਹਿਆ, ਅਧੀ ਰਾਤ ਪੈ ਗਈ ਸੀ।  
 ਸਾਰਾ ਪਿੰਡ ਸੌ ਗਇਆ ਸੀ, ਮੇਰੀ ਵਾਜ ਕੋਣ ਸੁਣਦਾ।  
 ਇਹ ਬਚਾ ਕਿਉਂ ਉਦਾਸ ਹੋ ਗਇਆ ਹੈ ?  
 ਸ਼ਾਇਦ ਰਾਹ ਭੁੱਲ ਗਇਆ ਹੈ।  
 ਪਤਾ ਕਰੋ ਇਹ ਕਿਹੜੇ ਪਿੰਡ ਤੋਂ ਆਇਆ ਹੈ।  
 ਮੇਰੇ ਘਰ ਕੋਲ ਕੁਝ ਕੁੜੀਆਂ ਵਿਆਹ ਤੇ ਆਈਆਂ ਹਨ।  
 ਇਹ ਮੁੰਡਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਹੋਣਾ ਹੈ।  
 ਕੀ ਤੂੰ ਪਤਾ ਕਰ ਆਇਆ ਹੈ ?  
 ਹਾਂ ਜੀ, ਮੈਂ ਸਭ ਥਾਂਈ ਹੋ ਆਇਆ ਹਾਂ।  
 ਉਹ ਸੜਕ ਮੇਰੇ ਪਿੰਡ ਤਕ ਗਈ ਹੈ।  
 ਮੈਂ ਪਿੰਡ ਤੋਂ ਨਵੀਂ ਖਬਰ ਲਿਆਇਆ ਹਾਂ,  
 ਪਈ ਰਾਤ ਨੂੰ ਸਰਪੰਚ ਦੀ ਗਾਂ ਗੁਆਚ ਗਈ ਹੈ।  
 ਤੁਸੀਂ ਇਥੇ ਕਿੰਨੇ ਵਜੇ ਅਪੜੇ ਹੋ ?

|          |           |          |                |             |             |
|----------|-----------|----------|----------------|-------------|-------------|
| ਹਾਲੀ     | ਅਸੀਂ      | ਉਡੀਕਦਾ   | ਪ੍ਰਤੀਕਸ਼ਾ ਕਰਦਾ | ਹੋਣਾ ਹੈ     | ਹੋਗਾ        |
| ਗਇਆ ਸਾਂ  | ਗਏ ਸਾਂ    | ਰਹਿਆ     | ਰਹਾ            | ਤੂੰ ਆਇਆ ਹੈਂ | ਤੂੰ ਆਇਆ ਹੈਂ |
| ਹੋਣ ਲੱਗੀ | ਹੋਣੇ ਲੱਗੀ | ਪੈ ਗਈ    | ਪਛ ਗਈ          | ਹਾਂ ਜੀ      | ਜੀ ਹਾਂ      |
| ਚਿੱਕੜ    | ਕੀਚੜ      | ਸੌ ਗਇਆ   | ਸੌ ਗਏ          | ਸਭ ਥਾਂਈ     | ਸਭ ਥਾਂਈ     |
| ਲੰਘ ਕੇ   | ਗੁਜਰ ਕੇ   | ਵਾਜ      | ਆਵਾਜ਼          | ਲਿਆਇਆ       | ਲਿਆਇਆ       |
| ਗਏ ਸਾਂ   | ਗਏ ਸਾਂ    | ਭੁੱਲ ਗਇਆ | ਭੁੱਲ ਗਏ        | ਹਾਂ         | ਹਾਂ         |
| ਖਵਰੇ     | ਨ ਜਾਨੇ    | ਕਿਹੜੇ    | ਕੌਨਸੇ          | ਪਈ          | ਕਿ          |
| ਕਿਥੇ     | ਕਹਾਂ      | ਕੋਲ      | ਕੇ ਪਾਸ         | ਗਾਂ         | ਗਾਏ         |
| ਤੂੰ ਗਇਆ  | ਤੂੰ ਗਏ    | ਮੁੰਡਾ    | ਲਛਕਾ           | ਗੁਆਚ ਗਈ     | ਗੁਆਚ ਗਈ     |
| ਸੈਂ      |           |          |                | ਕਿੰਨੇ ਵਜੇ   | ਕਿੰਨੇ ਵਜੇ   |
|          |           |          |                | ਅਪੜੇ ਹੋ     | ਅਪੜੇ ਹੋ     |

**ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀਜ਼ਿਏ :**

ਹਮ ਅਪਨੇ ਘਰ ਸੇ ਅਮੀ ਏਕ ਮੀਲ ਹੀ ਗਏ ਥੇ ਕਿ ਬਾਰਿਸ਼ ਹੋਨੇ ਲਗੀ। ਹਮ ਕੀਘੜ ਮੈਂ ਸੇ ਗਏ ਥੇ। ਨ ਜਾਨੇ ਤੁਮ ਕਹਾਂ ਗਏ ਥੇ। ਗੋਲ ਮਾਰਕੀਟ ਕੇ ਪਾਸ ਹਮ ਤੁਮਹਾਰੀ ਪ੍ਰਤੀਕਸ਼ਾ ਕਰਤੇ ਰਹੇ।

ਜਬ ਮੈਂ ਵਾਪਸ ਆਯਾ ਸੂਰਜ ਡੂਬ ਚੁਕਾ ਥਾ। ਰਾਤ ਪੜ ਗਈ ਥੀ, ਸਾਰਾ ਗਾਂਥ ਸੋ ਗਯਾ ਥਾ। ਮੈਂ ਦੇਰ ਤਕ ਅਪਨੇ ਮਿਤ੍ਰ ਕੋ ਆਵਾਜ਼ ਦੇਤਾ ਰਹਾ। ਕੋਈ ਨਹੀਂ ਬੋਲਾ। ਥਕ ਕਰ ਮੈਂ ਧਰਮਸ਼ਾਲਾ ਮੈਂ ਚਲਾ ਗਯਾ। ਵਹੀਂ ਮੈਂਨੇ ਰਾਤ ਕਾਟੀ।

|             |             |           |              |           |            |
|-------------|-------------|-----------|--------------|-----------|------------|
| ਅਮੀ         | ਹਾਲੀ        | ਕੇ ਪਾਸ    | ਦੇ ਕੋਲ       | ਗਾਂਥ      | ਪਿੰਡ       |
| ਹਮ ਗਏ ਥੇ    | ਅਸੀਂ ਗਏ ਸਾਂ | ਤੁਮਹਾਰੀ   | ਤੁਹਾਡੀ       | ਸੋ ਗਯਾ ਥਾ | ਮੈਂ ਗਇਆ ਸੀ |
| ਹੋਨੇ ਲਗੀ    | ਹੋਣ ਲਗੀ     | ਪ੍ਰਤੀਕਸ਼ਾ | ਉਡੀਕ         | ਦੇਤਾ ਰਹਾ  | ਦੇਂਦਾ ਰਹਿਆ |
| ਕੀਘੜ ਮੈਂ ਸੇ | ਚਿੱਕੜ ਵਿਚ   | ਜਬ        | ਜਦੋਂ         | ਕਾਟੀ ਥੀ   | ਕੱਟੀ ਸੀ    |
| ਨ ਜਾਨੇ      | ਖਵਰੇ        | ਡੂਬ ਚੁਕਾ  | ਡੁੱਬ ਚੁਕਾ ਸੀ |           |            |
|             |             | ਥਾ        |              |           |            |
| ਕਹਾਂ        | ਕਿਥੇ        | ਪੜ ਗਈ     | ਥੀ ਪੈ ਗਈ     | ਸੀ        |            |

ਪਾਠ 20

ਭੂਤ ਕਾਲ ਦੇ ਹੋਰ ਰੂਪ

(ਭੂਤ ਕਾਲ ਦੇ ਔਰ ਰੂਪ)

ਉਸ ਨੇ ਤਾਂ ਹਾਲੀ ਮੈਨੂੰ ਕੋਈ ਚਿੰਨੀ ਨਹੀਂ ਲਿਖੀ।  
ਮੈਂ ਪੰਜ ਚਿੰਨੀਆਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਲਿਖੀਆਂ ਸਨ।  
ਮੈਨੂੰ ਨੌਕਰ ਨੇ ਦਸਿਆ ਪਈ ਤੁਸੀਂ ਸਵੇਰੇ ਵੀ ਆਏ ਸਓ।  
ਖਾਣਾ ਬਣਿਆ ਪਇਆ ਹੈ, ਖਾ ਕੇ ਜਾਣਾ ਜੀ।  
ਬਾਰੀਆਂ ਕਿਉਂ ਬੰਦ ਕੀਤੀਆਂ ਨੇ, ਹਨੇਰਾ ਵਧ ਗਇਆ ਹੈ।  
ਅਸਾਂ ਅਖ਼ਬਾਰ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਿਆ ਸੀ, ਤੁਹਾਨੂੰ ਇਨਾਮ ਮਿਲਿਆ ਹੈ।  
ਸਾਡੇ ਫੌਜੀਆਂ ਨੇ ਦੁਸ਼ਮਨ ਦੇ ਕਈ ਹਵਾਈ ਜਹਾਜ਼ ਡੇਗੇ ਹਨ।  
ਦੇਰ ਨਾਲ ਖ਼ਬਰ ਮਿਲੀ, ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਪਹਲਾਂ ਹੀ ਅਪੜ ਜਾਂਦੇ।  
ਸਿਪਾਹੀ ਨੇ ਵੇਖਿਆ ਕਿ ਕੰਧ ਦੇ ਉਹਲੇ ਇਕ ਡਾਕੂ ਖਲੋਤਾ ਹੈ।  
ਉਹ ਬਹੁਤ ਘਬਰਾਇਆ, ਉਸ ਕੋਲ ਕੋਈ ਹਥਿਆਰ ਨਹੀਂ ਸੀ।  
ਸਾਡੇ ਬੰਦਿਆਂ ਨੇ ਕਹਿਆ—ਡਰਨ ਦੀ ਕੋਈ ਗੱਲ ਨਹੀਂ, ਇਸ ਡਾਕੂ ਦਾ  
ਪਿਸਤੌਲ ਤਾਂ ਛੱਤ ਤੇ ਪਇਆ ਹੈ।

SIKHBOOKCLUB.COM

|           |          |           |           |             |            |
|-----------|----------|-----------|-----------|-------------|------------|
| ਤਾਂ       | ਗੋ       | ਅਸਾਂ      | ਹਸ ਨੇ     | ਵੇਖਿਆ       | ਦੇਖਾ       |
| ਹਾਲੀ      | ਅਮੀ      | ਤੁਹਾਨੂੰ   | ਆਪ ਕੋ     | ਕੰਧ ਦੇ ਉਹਲੇ | ਦੀਵਾਰ ਦੀ   |
| ਮੈਨੂੰ     | ਸੁਝੇ     | ਮਿਲਿਆ     | ਸਿਲਾ      |             | ਓਟ ਮੈਂ     |
| ਲਿਖੀਆਂ ਸਨ | ਲਿਖੀ ਥੀਂ | ਸਾਡੇ      | ਹਮਾਰੇ     | ਖਲੋਤਾ ਹੈ    | ਖੜਾ ਹੈ     |
| ਦਸਿਆ      | ਬਤਾਯਾ    | ਡੇਗੇ ਹਨ   | ਗਿਰਾਏ ਹਨ  | ਸਾਡੇ        | ਹਮਾਰੇ      |
| ਪਈ        | ਕਿ       | ਦੇਰ ਨਾਲ   | ਦੇਰ ਸੇ    | ਬੰਦਿਆਂ ਨੇ   | ਆਦਮਿਯੋਂ ਨੇ |
| ਤੁਸੀਂ ਆਏ  | ਆਪ ਆਏ    | ਪਹਲਾਂ     | ਪਹਲੇ ਹੀ   | ਕਹਿਆ        | ਕਹਾ        |
| ਸਓ        | ਥੇ       | ਅਪੜ ਜਾਂਦੇ | ਪਹੁੰਚ ਜਾਏ | ਗੱਲ         | ਬਾਤ        |
| ਜਾਣਾ ਜੀ   | ਅਜੀ ਜਾਨਾ |           |           | ਪਇਆ ਹੈ      | ਪੜਾ ਹੈ     |
| ਕੀਤੀਆਂ ਨੇ | ਕੀ ਹੈਂ   |           |           |             |            |
| (ਹਨ)      |          |           |           |             |            |
| ਵਧ ਗਇਆ    | ਬਢ ਗਯਾ   |           |           |             |            |

## ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀਜ਼ਿਏ :

1. ਤੁਮ ਕਬ ਆਏ ਮੁਝੇ ਤੋ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਚਲਾ।
2. ਮੇਰੇ ਆਮ ਕਿਸ ਨੇ ਖਾਏ ਹਨ ?
3. ਤੁਨਹੋਂਨੇ ਕਿਤਾਬੋਂ ਲੀਂ ਆਰ ਘਰ ਕੋ ਚਲੇ ਗਏ।
4. ਮੈਂਨੇ ਗਲਤੀਆਂ ਤੋ ਕੜੀ ਕੀਂ ਪਰ ਏ ਉਦਾਰ ਰਹੇ।
5. ਜਬ ਹਮ ਪਹਾੜ ਪਰ ਰਹੇ ਥੇ, ਹਮ ਸਵੇਰੇ ਚ: ਬਝੇ ਉਠਤੇ ਥੇ।
6. ਇਸ ਵਿਸ਼ਯ ਮੈਂ ਮੈਂਨੇ ਬਹੁਤ ਸੋਚਾ, ਪਰ ਕੁਝ ਕਰ ਨ ਸਕੀ।
7. ਤੁਮਹਾਰੇ ਬਚਘੋਂ ਨੇ ਬਹੁਤ ਸ਼ੌਰ ਮਚਾਯਾ, ਫਿਰ ਭੀ ਮੈਂਨੇ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਕਹਾ।
8. ਸਕਾਨ ਪਰ ਕਿਨ ਕਾ ਨਾਮ ਲਿਖਾ ਹੈ ?
9. ਅਭੀ ਅਭੀ ਖਬਰ ਆਈ ਹੈ ਕਿ ਕਾਸ਼ਮੀਰ ਮੈਂ ਦੋ ਦੋ ਫੂਟ ਬਰਫ ਪੜੀ ਹੈ, ਰਾਸ਼ਤੇ ਰੁਕ ਗਏ ਹਨ।
10. ਨੌਕਰ ਨੇ ਸਾਰੀ ਪੁਸਤਕੋਂ ਅਲਮਾਰੀ ਮੈਂ ਰਖ ਦੀ ਥੀਂ।

- |            |         |              |            |            |            |
|------------|---------|--------------|------------|------------|------------|
| 1. ਕਬ      | ਕਦੋਂ    | 5. ਰਹੇ ਥੇ    | ਰਹੇ ਸਾਂ    | 9. ਅਭੀ ਅਭੀ | ਹੁਣੇ-ਹੁਣੇ  |
| ਮੁਝੇ       | ਮੈਨੂੰ   | 6. ਵਿਸ਼ਯ ਮੈਂ | ਬਾਰੇ       | ਪੜੀ ਹੈ     | ਪਈ ਹੈ      |
| 2. ਆਮ      | ਅੰਬ     | 7. ਮਚਾਯਾ     | ਮਚਾਇਆ      | 10. ਸਾਰੀ   | ਸਾਰੀਆਂ     |
| ਖਾਏ        | ਖਾਏ     | ਫਿਰ ਭੀ       | ਫਿਰ ਵੀ     | ਪੁਸਤਕੋਂ    | ਕਿਤਾਬਾਂ    |
| 3. ਕਿਤਾਬੋਂ | ਕਿਤਾਬਾਂ | ਕੁਝ          | ਕੁਝ        | ਰਖ ਦੀ ਥੀਂ  | ਰਖ ਦਿੱਤੀਆਂ |
| ਲੀਂ        | ਲਈਆਂ    | 8. ਕਿਨ ਕਾ    | ਕਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ |            | ਸਨ         |
| 4. ਕੀਂ     | ਕੀਤੀਆਂ  |              |            |            |            |

## ਪਾਠ 21

### ਦੁਹਰਾਈ (ਦੁਹਰਾਈ)

1. ਤੁਸੀਂ ਛੁਟੀ ਤੋਂ ਕਦੋਂ ਵਾਪਸ ਆਓਗੇ ?
2. ਕੀ ਪਤਾ ਪਿੰਡ ਵਿਚ ਹੀ ਰਹਣਾ ਪਵੇ।
3. ਪਿੰਡ ਵਿਚ ਕਿਵੇਂ ਰਹੋਗੇ; ਨ ਉੱਥੇ ਅਖਬਾਰਾਂ ਆਉਂਦੀਆਂ ਹਨ ਨ ਫਿਲਮਾਂ।
4. ਉਨ੍ਹਾਂ ਸਾਡੇ ਨਾਲ ਚੰਗਾ ਸਲੂਕ ਕੀਤਾ।
5. ਉਹ ਸਭ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪ੍ਰਸੰਨ ਸਨ।
6. ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕੋਈ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਨਹੀਂ ਸੀ।
7. ਤੁਸੀਂ ਖਵਰੇ ਕਿਉਂ ਨਾਰਾਜ਼ ਹੋ ਗਏ ?
8. ਮੈਂ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਮਝਾਂ ਕਿ ਨੌਕਰ ਨੇ ਚਾਹ ਵਿਚ ਬਰਫ ਪਾ ਦਿੱਤੀ ਹੈ ?
9. ਕਿਹੋ ਜੇਹਾ ਕਪੜਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ?
10. ਮੈਂ ਕੀ ਦੱਸਾਂ, ਇਥੇ ਭਲਾ ਕੋਈ ਕੰਮ ਦਾ ਟੋਟਾ ਹੈ ?
11. ਜੇ ਕੰਮ ਦਾ ਕਪੜਾ ਨ ਹੁੰਦਾ ਤਾਂ ਕਿਉਂ ਛੋਟੀ ਵਿਕ ਜਾਂਦਾ ?
12. ਫੇਰੀ ਵਾਲਾ ਕਿਹੜੇ ਪਾਸੇ ਗਇਆ ਹੈ ?
13. ਜ਼ਰਾ ਧਿਆਨ ਨਾਲ ਭਾਲ ਕੇ ਦੱਸੋ, ਕਿਥੇ ਹੈ।
14. ਕੀ ਉਸ ਕੋਲ ਰੇਸ਼ਮੀ ਕਪੜੇ ਵੀ ਹਨ ?
15. ਕਿੰਨੇ ਪੈਸੇ ਗਜ਼ ਦਏਗਾ ?
16. ਪਿੰਡ ਦੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਤਾਂ ਛੀਟ ਦੇ ਕਪੜੇ ਖਰੀਦਦੀਆਂ ਹਨ।

- |               |          |              |            |                |           |
|---------------|----------|--------------|------------|----------------|-----------|
| 1. ਕਦੋਂ       | ਕਦੇ      | 7. ਤੁਸੀਂ     | ਰੁਸ        | ਵਿਕ ਜਾਂਦਾ      | ਬਿਕ ਜਾਤਾ  |
| 2. ਕੀ ਪਤਾ     | ਕਧਾ ਪਤਾ  | ਖਵਰੇ         | ਨ ਜਾਨੇ     | 12. ਕਿਹੜੇ ਪਾਸੇ | ਕਿਸ ਤਰਫ਼  |
| ਪਿੰਡ ਵਿਚ      | ਗਾਂਥ ਮੈਂ | 8. ਮੈਂ ਸਮਝਾਂ | ਮੈਂ ਸਮਝੂੰ  | 13. ਭਾਲ ਕੇ     | ਫੁੰਫ਼ ਕਰ  |
| ਰਹਣਾ ਪਵੇ      | ਰਹਨਾ ਪਛੇ | ਪਾ ਦਿੱਤੀ     | ਡਾਲ ਕੀ     | ਦੱਸੋ           | ਬਤਾਓ      |
| 3. ਕਿਵੇਂ      | ਕੌਸੇ     | ਹੈ           | ਹੈ         | ਕਿਥੇ           | ਕਹਾਂ      |
| ਉਥੇ           | ਥਹਾਂ     | 9. ਕਿਹੋ      | ਕਿਸ ਤਰਹ    | 14. ਉਸ ਕੋਲ     | ਤਸ ਕੇ ਪਾਸ |
| ਆਉਂਦੀਆਂ       | ਆਤੀ ਹੈਂ  | ਜੇਹਾ         | ਕਾ         | 15. ਕਿੰਨੇ      | ਕਿਤਨੇ     |
| ਹਨ            |          | ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ    | ਚਾਹਿਏ      | ਦਏਗਾ           | ਦੇਗਾ      |
| 4. ਸਾਡੇ ਨਾਲ   | ਹਸ ਸੇ    | 10. ਕੀ ਦੱਸਾਂ | ਕਧਾ ਬਤਾਲਾਂ | 16. ਪਿੰਡ ਦੀਆਂ  | ਗਾਂਥ ਕੀ   |
| ਕੀਤਾ          | ਕਿਧਾ     | ਟੋਟਾ         | ਕਮੀ        | ਕੁੜੀਆਂ         | ਲਝਕਿਧਾਂ   |
| 5. ਸਭ ਤਰ੍ਹਾਂ  | ਸਭ ਤਰਹ   | 11. ਜੇ       | ਧਦਿ        | ਖਰੀਦਦੀਆਂ       | ਖਰੀਦਤੀ    |
| ਸੇ            |          | ਛੋਟੀ         | ਰੁਰੰਤ      | ਹਨ             | ਹੈਂ       |
| 6. ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ | ਤਨਕੋ     |              |            |                |           |

## ਪਾਠ 22

## ਗੁਣਵਾਚਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ (गुणवाचक विशेषण)

ਆਪਣਿਆਂ ਬੰਦਿਆਂ ਨਾਲੋਂ ਕੋਈ ਵਧੇਰੇ ਹਮਦਰਦੀ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ।  
 ਸ਼ੇਰ ਨਾਲੋਂ ਬਿੱਲੀ ਛੋਟੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।  
 ਪ੍ਰਾਣਾਂ ਨਾਲੋਂ ਪਤ ਵਧੇਰੇ ਪਿਆਰੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।  
 ਸਖੀ ਨਾਲੋਂ ਸ਼ੂਮ ਭਲਾ, ਜਿਹੜਾ ਤੁਰਤ ਦਏ ਜਵਾਬ।  
 ਸੋਨੇ ਤੋਂ ਚਾਂਦੀ ਸਸਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।  
 ਇਹ ਘੜਾ ਉਸ ਤੋਂ ਘਟ ਪਕਿਆ ਹੈ।  
 ਅਰਬੀ ਘੋੜਾ ਦੇਸੀ ਘੋੜੇ ਕੋਲੋਂ ਤੇਜ਼ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।  
 ਮੂਰਖ ਮਿਤ੍ਰਾਂ ਨਾਲੋਂ ਸਿਆਣੇ ਦੁਸ਼ਮਣ ਚੰਗੇ।  
 ਗੁਲਾਬ ਦਾ ਫੁੱਲ ਗੋਦੇ ਨਾਲੋਂ ਵਧੇਰੇ ਸੁੰਦਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।  
 ਸਾਡਾ ਮਕਾਨ ਸ਼ਹਰ ਦੇ ਸਾਰਿਆਂ ਮਕਾਨਾਂ ਨਾਲੋਂ ਉੱਚਾ ਹੈ।  
 ਦੱਸੋ, ਕਿਹੜੀ ਤਸਵੀਰ ਸਾਰਿਆਂ ਤੋਂ ਸੋਹਣੀ ਹੈ ?  
 ਤੇਰੇ ਕੋਲੋਂ ਹੋਰ ਕਿਹੜਾ ਬੰਦਾ ਮੇਰੇ ਨੇੜੇ ਹੈ ?  
 ਮੇਰੀ ਪੰਡ ਸਭ ਤੋਂ ਭਾਰੀ ਸੀ, ਇਸੇ ਲਈ ਮੈਂ ਦੇਰ ਨਾਲ ਪਹੁੰਚਿਆ ਸਾਂ।  
 ਆਪਣਾ ਘਰ ਹੋਰ ਸਾਫ਼ ਕਰੋ, ਹੋਰ ਸੁੰਦਰ ਬਣਾਓ।  
 ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਗੱਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਕ੍ਰਿਤਘਣ ਨਿਕਲਿਆ।

|              |         |              |       |              |       |       |
|--------------|---------|--------------|-------|--------------|-------|-------|
| ਆਪਣਿਆਂ       | ਅਪਨੇ    | ਲੋਗੋਂ        | ਸ਼ੂਮ  | ਕੰਜੂਸ        | ਸਾਡਾ  | ਹਮਾਰਾ |
| ਬੰਦਿਆਂ ਨਾਲੋਂ | ਸੇ      | ਜਿਹੜਾ        | ਜੋ    | ਸਾਰਿਆਂ ਨਾਲੋਂ | ਸਭ    | ਸੇ    |
| ਸ਼ੇਰ ਨਾਲੋਂ   | ਸ਼ੇਰ     | ਸੇ           | ਦਏ    | ਦੇ           | ਉੱਚਾ  | ਝੰਚਾ  |
| ਹੁੰਦੀ ਹੈ     | ਹੋਤੀ ਹੈ | ਤੋਂ          | ਸੇ    | ਕਿਹੜੀ        | ਕੌਨਸੀ |       |
| ਪਤ           | ਪ੍ਰਤਿਭਾ | ਨਾਲੋਂ, ਕੋਲੋਂ | ਕੀ    | ਅਪੇਖਾ        | ਸੋਹਣੀ | ਸੁੰਦਰ |
| ਵਧੇਰੇ        | ਅਥਿਕ    | ਸਿਆਣੇ        | ਸਧਾਨੇ | ਨੇੜੇ         | ਨਿਕਟ  |       |
| ਸਖੀ          | ਸਖੀ     | ਫੁੱਲ         | ਫੂਲ   | ਪੰਡ (ਗੰਢ)    | ਗਠੜੀ  |       |

### ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀਜ਼ਿਏ :

1. ਅਪਨੀ ਆਨ ਸੇ ਬਫ਼ ਕਰ ਕਿਸੀ ਚੀਜ਼ ਕੋ ਕੀਮਤੀ ਮਤ ਸਮਝੋ !
2. ਉਪਦੇਸ਼ ਦੇਨੇ ਸੇ ਬਫ਼ਕਰ ਔਰ ਕੋਓਂ ਕਾਮ ਸਰਲ ਨਹੀਂ।
3. ਅਰਬੀ ਧੋਡਾ ਦੁਬਲਾ ਪਤਲਾ ਥਾ, ਪਰੰਤੂ ਦੌੜ ਮੇਂ ਸਬ ਸੇ ਆਗੇ ਨਿਕਲ ਗਯਾ।
4. ਮੁਝੇਂ ਤੋ ਚਮੇਲੀ ਸੇ ਗੁਲਾਬ ਅਧਿਕ ਸੁਨਦਰ ਲਗਤਾ ਹੈ।
5. ਮੇਰਾ ਭਾਓਂ ਅਪਨੇ ਸਕੂਲ ਮੇਂ ਸਬ ਸੇ ਤੇਜ਼ ਦੌੜਤਾ ਹੈ।
6. ਯਹ ਕਪੜਾ ਤੋ ਸਬ ਸੇ ਘਟਿਆ ਹੈ, ਕੋਓਂ ਬਫ਼ਿਆ ਸਾ ਦਿਖਾਓ।
7. ਕੁੱਤਾ ਗੀਦੜ ਸੇ ਤੇਜ਼ ਭਾਗਤਾ ਹੈ।
8. ਇਸ ਸੇ ਤੋ ਯਹੀ ਅਚਾ ਥਾ ਕਿ ਤੁਮ ਮਾਂ ਕੇ ਪਾਸ ਰਹਤੇ !
9. ਬੱਤੀ ਔਰ ਝੁੰਚੀ ਕਰੋ, ਰੋਸ਼ਨੀ ਅਧਿਕ ਹੋ।
10. ਬਿਲੀ ਸ਼ੇਰ ਸੇ ਛੋਟੀ ਹੋਤੀ ਹੈ ਕਿੰਨੁ ਅਧਿਕ ਚਾਲਾਕ ਹੋਤੀ ਹੈ।

- |                  |                   |                 |                     |
|------------------|-------------------|-----------------|---------------------|
| 1. ਆਨ            | ਅਲਖ               | 7. ਗੀਦੜ ਸੇ ਤੇਜ਼ | ਗਿੱਦੜ ਨਾਲੋਂ ਤੇਜ਼    |
| ਸੇ ਬਫ਼ ਕਰ        | ਤੋਂ ਵਧੇਰੇ         | ਭਾਗਤਾ ਹੈ        | ਭੱਜਦਾ ਹੈ            |
| ਕਿਸੀ             | ਕਿਸੇ              | 8. ਅਚਾ ਥਾ       | ਚੰਗਾ ਸੀ             |
| 2. ਕਾਮ           | ਕੰਮ               | ਕੇ ਪਾਸ          | ਦੇ ਕੋਲ              |
| ਸਰਲ              | ਸੋਖਾ              | ਰਹਤੇ            | ਰਹੰਦੇ               |
| 3. ਸਬ ਸੇ ਆਗੇ     | ਸਭ ਤੋਂ ਅੱਗੇ       | 9. ਔਰ ਝੁੰਚੀ     | ਹੋਰ ਉਚੇਰੀ           |
| 4. ਚਮੇਲੀ ਸੇ ਅਧਿਕ | ਚਮੇਲੀ ਨਾਲੋਂ ਵਧੇਰੇ | 10. ਹੋਤੀ ਹੈ     | ਹੋਂਦੀ ਹੈ (ਹੁੰਦੀ ਹੈ) |
| 6. ਸਬ ਸੇ ਘਟਿਆ    | ਸਭ ਤੋਂ ਘਟੀਆ       |                 |                     |
| ਬਫ਼ਿਆ ਸਾ         | ਵਧੀਆ ਜੇਹਾ         |                 |                     |

## ਪਾਠ 23

ਵਿਸਮੇ ਆਦਿ ਬੋਧਕ ਸ਼ਬਦ

(ਵਿਸਮਧਾਦਿ ਬੋਧਕ)

ਵੇਖ ਖਾਂ, ਕਿੰਨਾ ਰੋਅਬ ਪਾਉਂਦਾ ਏ।  
 ਹਲਾ! ਉਸ ਇੰਝ ਕੀਤਾ।  
 ਆ ਹਾਂ! ਉਥੇ ਨਾ ਜਾਈ।  
 ਆਹੋ! ਮੈਂ ਵੀ ਉਥੇ ਸਾਂ।  
 ਉਸ ਮੈਨੂੰ ਮੋਢਾ ਮਾਰਿਆ ਅਖੇ, ਇੰਝ ਨ ਬੋਲ।  
 ਮਜ਼ਾਲ ਏ! ਵੇਲੇ ਸਿਰ ਨਾ ਪਹੁੰਚਾਂ।  
 ਜਮ ਜਮ ਆਓ, ਸਿਰ ਮੱਥੇ! ਜੀ ਸਦਕੇ।  
 ਅਸਕੇ ਓਏ ਮੁੰਡਿਆ! ਇੰਨਾ ਭਾਰਾ ਪੱਥਰ ਚੁਕ ਲਇਆ ਈ।  
 ਸ਼ਾਬਾ! ਸਾਰੀ ਗਲੀ ਸਾਫ ਕਰ ਦਿੱਤੀ ਆ।  
 ਸ਼ੁਕਰੇ! ਉਸ ਆਪ ਗੱਲ ਕਰ ਦਿੱਤੀ, ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਮੇਰਾ ਨਾਂ ਲਗਦਾ।  
 ਜੀਵੋ ਤੂੰ! ਲਖ ਮੈ ਵਰ੍ਹੇ ਉਮਰਾਂ।  
 ਭਲਿਆ ਲੋਕਾ! ਪੰਡ ਚੁਕਾਈ ਜਾਈ।

SIKHBOOKCLUB.COM

|          |                 |           |                  |
|----------|-----------------|-----------|------------------|
| ਵੇਖ ਖਾਂ  | ਦੇਖੋ ਤੋ         | ਸਿਰ ਮੱਥੇ  | ਸਿਰ ਮਾਥੇ ਪਰ      |
| ਪਾਉਂਦਾ ਏ | ਭਾਲਤਾ ਹੈ        | ਜੀ ਸਦਕੇ   | ਗ਼ਰੀ ਜਾਨਾਂ       |
| ਹਲਾ!     | ਅਛਾ!            | ਅਸਕੇ ਓਏ   | ਗਾਹ ਚੜ੍ਹ         |
| ਆ ਹਾਂ    | ਨਾ ਜੀ           | ਸ਼ਾਬਾ     | ਸ਼ਾਬਾਸ਼          |
| ਆਹੋ      | ਜੀ ਹਾਂ          | ਸ਼ੁਕਰੇ    | ਭੁੱਖਰ ਕਾ ਧੰਨਯਵਾਦ |
| ਅਖੇ      | ਅਥਾਤ            | ਨਾਂ ਲਗਦਾ  | ਨਾਮ ਲਿਆ ਜਾਤਾ     |
| ਇੰਝ      | ਯਾਂ             | ਭਲਿਆ ਲੋਕਾ | ਹੇ ਮਲੇ ਸਾਨਸ      |
| ਜਮ ਜਮ ਆਓ | ਬੜੀ ਖੁਸ਼ੀ ਸੇ ਆਓ | ਚੁਕਾਈ ਜਾਈ | ਚਠਕਾਏ ਜਾਨਾ       |
|          | ਨਿਤ             |           |                  |



ਪਾਠ 24

ਰਹਣਾ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗ (ਰਹਨਾ ਕੇ ਪ੍ਰਯੋਗ)

ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਬਜ਼ਾਰ ਤੋਂ ਆ ਰਹਿਆ ਸਾਂ ਤੁਸੀਂ ਤਾਂ ਦਿੱਸੇ ਨਹੀਂ।  
 ਦਰਜੀ ਪੁਛ ਰਹਿਆ ਸੀ, ਕੋਟ ਕਿੰਨਾ ਲੰਮਾ ਰਹੇ ?  
 ਧੋਬਣ ਕਪੜੇ ਧੋ ਰਹੀ ਸੀ, ਉਸ ਦੇ ਬੱਚੇ ਪਾਣੀ ਵਿਚ ਖੇਡ ਰਹੇ ਸਨ।  
 ਅਸੀਂ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲ ਰਹੇ ਸਾਂ, ਸਾਹਬ ਨੂੰ ਕੁਝ ਵੀ ਸਮਝ ਨਹੀਂ ਆਈ।  
 ਜਦੋਂ ਮੁੰਡਾ ਚਿਕੜ ਵਿਚ ਡਿਗ ਪਇਆ, ਸਭ ਕੁੜੀਆਂ ਹੱਸ ਰਹੀਆਂ ਸਨ।  
 ਵਪਾਰੀ ਸੰਕਟ ਕਾਲ ਵਿਚ ਵੀ ਪੈਸਾ ਕਮਾ ਰਹਿਆ ਹੈ।  
 ਗਰੀਬ ਬੱਚੇ ਰੋਟੀ ਲਈ ਤਰਸ ਰਹੇ ਹਨ।  
 ਅਸੀਂ ਪੰਜਾਬੀ ਸਿਖ ਰਹੇ ਹਾਂ, ਤੁਸੀਂ ਵੀ ਸਿਖੋ।  
 ਹਾਲੀ ਬਾਰਸ਼ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ, ਗੜੇ ਵੀ ਪੈ ਰਹੇ ਹਨ।  
 ਤੁਸੀਂ ਥੋੜੀ ਦੇਰ ਇਥੇ ਹੀ ਰੁਕੋ ਰਹੋ।  
 ਅਸੀਂ ਸ਼ਿਮਲੇ ਕੇਵਲ ਇਕ ਮਹੀਨਾ ਰਹੇ, ਪਿਤਾ ਜੀ ਦੀ ਬਿਮਾਰੀ ਦੀਆਂ ਚਿੱਠੀਆਂ  
 ਆ ਰਹੀਆਂ ਸਨ।  
 ਕਿਤੇ ਫੁਲਾਂ ਦੇ ਬੂਟੇ ਹੋਣੇ ਨੇ, ਸੁਰੰਧ ਆ ਰਹੀ ਹੈ।  
 ਅੱਗ ਵਧ ਰਹੀ ਸੀ, ਧਾਂ ਧਾਂ ਦੀ ਅਵਾਜ਼ ਆ ਰਹੀ ਸੀ।  
 ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਘਰ ਅਪੜਾਂਗਾ ਉਹ ਸੌ ਰਹੇ ਹੋਣਗੇ।

|            |          |             |         |             |            |
|------------|----------|-------------|---------|-------------|------------|
| ਜਦੋਂ       | ਜਕ       | ਅਸੀਂ        | ਹਸ      | ਪੈ ਰਹੇ ਹਨ   | ਧੜ ਰਹੇ ਹਨ  |
| ਬਜ਼ਾਰ ਤੋਂ  | ਬਾਜ਼ਾਰ   | ਸੇ          | ਕੁਝ ਵੀ  | ਇਥੇ ਹੀ      | ਧੀਂ        |
| ਆ ਰਹਿਆ     | ਆ ਰਹਾ    | ਥਾ          | ਮੁੰਡਾ   | ਬਿਮਾਰੀ ਦੀਆਂ | ਬੀਮਾਰੀ ਦੀ  |
| ਸਾਂ        |          | ਚਿੱਕੜ ਵਿਚ   | ਕੀਚੜ ਸੇ | ਚਿੱਠੀਆਂ     | ਚਿਟ੍ਰਿਠੀਆਂ |
| ਤੁਸੀਂ ਤਾਂ  | ਆਪ       | ਤੋ          | ਡਿਗ ਪਇਆ | ਗਿਰ ਧੜਾ     | ਕਿਤੇ       |
| ਦਿੱਸੇ ਨਹੀਂ | ਦਿਖਾਓ    | ਨਹੀਂ        | ਕੁੜੀਆਂ  | ਲੜਕਿਆਂ      | ਫੁੱਲਾਂ ਦੇ  |
|            | ਦਿਓ      | ਹੱਸ ਰਹੀਆਂ   | ਹੱਸ ਰਹੀ | ਵਧ ਰਹੀ ਸੀ   | ਬਫ਼ ਰਹੀ ਥੀ |
| ਪੁੱਛ ਰਹਿਆ  | ਪੁੱਛ ਰਹਾ | ਸਨ          | ਥੀਂ     | ਜਦੋਂ        | ਜਕ         |
| ਸੀ         | ਥਾ       | ਤਰਸ ਰਹੇ ਸਨ  | ਤਰਸ ਰਹੇ | ਥੇ          | ਅਪੜਾਂਗਾ    |
| ਕਿੰਨਾ      | ਕਿਤਨਾ    | ਸਿਖ ਰਹੇ ਹਾਂ | ਸੀਖ ਰਹੇ | ਹੈਂ ਮੈਂ ਰਹੇ | ਸੋ ਰਹੇ     |
| ਲੰਮਾ       | ਲੰਮਾ     | ਹਾਲੀ        | ਅਸੀਂ    | ਹੋਣਗੇ       | ਹੋਂਗੇ      |
| ਖੇਡ ਰਹੇ ਸਨ | ਖੇਲ ਰਹੇ  | ਥੇ          | ਗੜੇ     | ਓਲੇ         |            |

## ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀਜ਼ਿਏ :

1. ਵਹ ਦੇਰ ਤਕ ਪੁਕਾਰਤੀ ਰਹੀ, ਬੇਟਾ ਨਦੀ ਚੜ੍ਹ ਰਹੀ ਹੈ ਸਤ ਜਾਓ।
2. ਜਬ ਵਹ ਗਾ ਰਹਾ ਥਾ ਮੁਝੇ ਨੀਂਦ ਆ ਰਹੀ ਥੀ।
3. ਏਸਾ ਅਨ੍ਧਾਧ ਦੇਖ ਕਰ ਮੁਝ ਸੇ ਤੋ ਰਹਾ ਨਹੀਂ ਜਾਤਾ।
4. ਉਨ੍ਹੇਂ ਏਕ ਤੰਗ ਔਰ ਅੰਧੇਰੇ ਕਮਰੇ ਮੇਂ ਰਹਨਾ ਪੜਾ।
5. ਲੜਕਿਆਂ ਹੰਸ ਰਹੀ ਥੀਂ ਕਿ ਇਤਨਾ ਬਡਾ ਪਹਲਵਾਨ ਹੋ ਕਰ ਭੀ ਵਹ ਚਿਪਕਲੀ ਸੇ ਡਰ ਰਹਾ ਹੈ।
6. ਅਭੀ ਧੀਂ ਰੁਕੇ ਰਹੋ, ਬਾਰਿਸ਼ ਥਸ ਗਈ ਤੋ ਚਲੇ ਜਾਨਾ।
7. ਪਰੀਖਾ ਮੇਂ ਕੇਵਲ ਏਕ ਸਹੀਨਾ ਰਹ ਗਯਾ ਹੈ।
8. ਵੇ ਦੇਰ ਸੇ ਪਹੁੰਚੇ ਥੇ, ਗਾਡੀ ਸੇ ਰਹ ਗਏ।
9. ਉਸ ਕੀ ਚਾਲਾਕੀ ਦੇਖ ਕਰ ਮੈਂ ਹੈਰਾਨ ਰਹ ਗਯਾ।
10. ਚਾਧ ਵਾਧ ਰਹਨੇ ਦੋ, ਮੁਝੇ ਦੇਰ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ।

- |                        |                     |                 |
|------------------------|---------------------|-----------------|
| 1. ਪੁਕਾਰਤੀ ਆਵਾਜ਼ ਦੋਂਦੀ | 5. ਹੰਸ ਰਹੀ ਹਮ ਰਹੀਆਂ | 9. ਚਾਲਾਕੀ ਚਲਾਕੀ |
| ਰਹੀ ਰਹੀ                | ਥੀਂ ਸਨ              | 10. ਚਾਧ ਚਾਹ ਚੂਹ |
| 2. ਜਬ ਜਦੋਂ             | ਇਤਨਾ ਇੰਨਾ ਵੱਡਾ      | ਵਾਧ             |
| ਗਾ ਰਹਾ ਗਾ ਰਹਿਆ         | ਬਡਾ                 | ਰਹਨੇ ਦੋ ਰਹਣ ਦਿਓ |
| ਥਾ ਸੀ                  | ਚਿਪਕਲੀ ਕਿਰਲੀ        | ਮੁਝ ਮੈਨੂੰ       |
| 3. ਅਨ੍ਧਾਧ ਅਨਿਆਂ        | 6. ਅਭੀ ਹਾਲੀ         |                 |
| ਮੁਝ ਸੇ ਮੈਤੋਂ, ਮੈਥੋਂ    | 7. ਪਰੀਖਾ ਪਰੀਖਿਆ     |                 |
| 4. ਰਹਨਾ ਰਹਣਾ           | 8. ਦੇਰ ਸੇ ਦੇਰ ਨਾਲ   |                 |
| ਪੜਾ ਪਇਆ                | ਪਹੁੰਚੇ ਥੇ ਪੁੱਜੇ ਸਨ  |                 |

ਪਾਠ 25

ਸੰਯੁਕਤ ਕ੍ਰਿਆਵਾਂ : ਸਕਣਾ ਚੁਕਣਾ

(ਸੰਯੁਕਤ ਕ੍ਰਿਆਵਾਂ : ਸਕਣਾ ਆਰੰਭ ਚੁਕਣਾ)

ਦੋ ਮਹੀਨੇ ਹੋਏ ਉਹ ਪੰਜਾਬੀ ਨਹੀਂ ਸਨ ਬੋਲ ਸਕਦੇ, ਹੁਣ ਤਾਂ ਉਹ ਪੰਜਾਬੀ ਲਿਖ ਵੀ ਸਕਦੇ ਹਨ।

ਉਸ ਬੁੱਢੇ ਬੰਦੇ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਕੋਈ ਉਰਦੂ ਲਿਖ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ।

ਖਵਰੇ ਉਹ ਵੇਲੇ ਸਿਰ ਗੱਡੀ ਫੜ ਸਕੇਗਾ ਜਾਂ ਨਹੀਂ।

ਅਸੀਂ ਬਾਬੂ ਅੱਗੇ ਬੋਲ ਨਹੀਂ ਸਕਦੀਆਂ ਸਾਂ।

ਮੈਂ ਉਸ ਦਾ ਮਕਾਨ ਖਾਲੀ ਕਰ ਚੁਕਿਆ ਹਾਂ।

ਧੋਬੀ ਤਾਂ ਘਾਟ ਤੇ ਜਾ ਚੁਕਿਆ ਸੀ, ਕਪੜੇ ਨਹੀਂ ਲਿਆ ਸਕਿਆ।

ਡਾਕਟਰ ਦੇ ਪੁੱਜਣ ਤੋਂ ਪਹਲਾਂ ਰੋਗੀ ਮਰ ਚੁਕਿਆ ਸੀ।

ਸਾਡੇ ਆਉਣ ਤੋਂ ਇਕ ਘੰਟਾ ਪਹਲਾਂ ਉਹ ਰੋਟੀਆਂ ਪਕਾ ਚੁਕੀਆਂ ਸਨ।

ਸੂਰਜ ਡੁਬਣ ਤਕ ਉਹ ਕੰਮ ਕਰ ਚੁਕਣਗੇ।

ਛੁੱਟੀ ਹੋਣ ਤਕ ਪੜ੍ਹਾਉਣ ਵਾਲੀਆਂ ਉਸਤਾਦੀਆਂ ਕਾਪੀਆਂ ਵੇਖ ਚੁਕਣਗੀਆਂ।

ਮੈਂ ਕੀ ਆਖ ਸਕਦਾ ਹਾਂ, ਗੱਡੀ ਕਿਸ ਵੇਲੇ ਪੁੱਜੇਗੀ।

ਅਸੀਂ ਹਰ ਰੋਜ਼ ਨਹੀਂ ਮਿਲ ਸਕਦੇ।

ਮਿਲ ਜੁਲ ਕੇ ਕੰਮ ਕਰਨ ਨਾਲ ਸੋਖ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

|             |          |            |              |              |             |
|-------------|----------|------------|--------------|--------------|-------------|
| ਹੋਏ         | ਹੁਣ      | ਬਾਬੂ ਅੱਗੇ  | ਬਾਪ ਕੇ ਸਾਮਨੇ | ਡੁੱਬਣ ਤਕ     | ਡੁੱਬਣੇ ਤਕ   |
| ਨਹੀਂ ਬੋਲ    | ਨਹੀਂ ਬੋਲ | ਬੋਲ ਨਹੀਂ   | ਬੋਲ ਨਹੀਂ     | ਕਰ ਚੁਕਣਗੇ    | ਕਰ ਚੁਕੇਗੇ   |
| ਸਕਦੇ ਸਨ     | ਸਕਦੇ ਥੇ  | ਸਕਦੀਆਂ ਸਾਂ | ਸਕਦੀ ਥੀਂ     | ਵੇਖ ਚੁਕਣਗੀਆਂ | ਵੇਖ ਚੁਕੇਂਗੀ |
| (ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲ | ਕਰ ਚੁਕਿਆ | ਕਰ ਚੁਕਾ    | ਹੂੰ          | ਕੀ ਆਖ ਸਕਦਾ   | ਕਹਾ ਕਹ      |
| ਨਹੀਂ ਸਕਦੇ   | ਹਾਂ      | ਹਾਂ        | (ਕੀ ਆਖ       | ਸਕਦਾ         | ਹੂੰ         |
| ਸਨ)         | ਨਹੀਂ ਲਿਆ | ਨਹੀਂ ਲਾ    | ਸਕਦਾ)        |              |             |
| ਹੁਣ ਤਾਂ     | ਅਬ ਤੋ    | ਸਕਿਆ       | ਸਕਾ          | ਵੱਡੀ         | ਬਡੀ         |
| ਬੁੱਢੇ       | ਬੂਢੇ     | ਪੁੱਜਣ ਤੋਂ  | ਪਹੁੰਚਣੇ ਸੇ   | ਕੰਮ ਕਰਨ      | ਕਾਮ ਕਰਨੇ    |
| ਖਵਰੇ        | ਕਹਾ      | ਖਬਰ ਪਹਲਾਂ  | ਪਹਲੇ         | ਨਾਲ          | ਸੇ          |
| ਵੇਲੇ ਸਿਰ    | ਸਮਧ ਪਰ   | ਪਕਾ ਚੁਕੀਆਂ | ਪਕਾ ਚੁਕੀ     | ਸੋਖ          | ਸੌਖਘ,       |
| ਗੱਡੀ        | ਗਾਡੀ     | ਸਨ         | ਥੀਂ          |              | ਸੁਗਮਤਾ      |
| ਫੜ          | ਧਕਫ਼     |            |              |              |             |

ਟਿੱਪਣੀ : ਚੁਕਿਆ ਦੀ ਥਾਂ 'ਚੁਕਾ', ਸਕਿਆ ਦੀ ਥਾਂ 'ਸਕਾ', ਰੂਪ ਵੀ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਹਨ।

## ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀਜ਼ਿਓ :

1. ਸੂਰਜ ਡੁੱਬ ਭੀ ਚੁਕਾ ਥਾ ਪਰ ਵਹ ਸਾਰਾ ਕਾਮ ਸਮਾਪਤ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਾ।
2. ਜਬ ਤੁਮ੍ਹਾਰਾ ਮਾਲਿਕ ਨਹੀਂ ਮਾਨਤਾ ਤੋ ਮੈਂ ਕਯਾ ਕਰ ਸਕਤਾ ਹੂੰ।
3. ਠੀਕ ਠੀਕ ਬਤਾ ਨਹੀਂ ਸਕਤੀ, ਪਿਤਾ ਜੀ ਕਬ ਆਏਗੇ।
4. ਕਯਾ ਆਪ ਰੇਸ਼ਮੀ ਕਪੜੇ ਪਰ ਏਸਾ ਚਿਤਰ ਬਨਾ ਸਕਤੇ ਹੈਂ ?
5. ਇਸ ਰੰਗ ਸੇ ਕਿਸੀ ਕਪੜੇ ਪਰ ਸੁਨਦਰ ਚਿਤਰ ਨਹੀਂ ਬਨ ਸਕਤਾ।
6. ਕਯਾ ਤੂ ਇਤਨਾ ਭੀ ਨਹੀਂ ਬਤਾ ਸਕਤਾ ਕਿ ਲੜਕਾ ਨਦੀ ਸੇ ਵਾਪਸ ਆ ਚੁਕਾ ਹੈ ਯਾ ਨਹੀਂ ?
7. ਰੋਨੇ ਧੋਨੇ ਸੇ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕੇਗਾ ਧੀਰਜ ਸੇ ਕਾਮ ਲੇਨੇ ਵਾਲੇ ਸੰਕਟ ਸੇ ਬਚ ਸਕਤੇ ਹੈਂ।
8. ਬਿਲੀ ਵ੍ਰਖ ਪਰ ਚੜ ਸਕਤੀ ਹੈ, ਸ਼ੇਰ ਨਹੀਂ।
9. ਮੇਰੀ ਮਤੀਜੀ ਪੰਜਾਬੀ ਭੀ ਬੋਲ ਸਕਤੀ ਹੈ, ਅੰਗ੍ਰੇਜੀ ਭੀ।
10. ਲੜਕਿਆਂ ਇਤਨੀ ਲੰਬੀ ਦੌੜ ਮੈਂ ਭਾਗ ਨਹੀਂ ਲੇ ਸਕਤੀਂ।

- |                    |                          |                    |
|--------------------|--------------------------|--------------------|
| 1. ਡੁੱਬ ਡੁੱਬ       | 4. ਏਸਾ ਅਜੇਹਾ             | 8. ਵ੍ਰਖ ਰੁਖ        |
| ਭੀ ਵੀ              | ਆਪ ਬਨਾ ਤੁਸੀਂ ਬਣਾ         | 9. ਨਹੀਂ ਲੇ ਨਹੀਂ ਲੈ |
| ਸਮਾਪਤ ਮੁਕਾ ਨਹੀਂ    | ਸਕਤੇ ਹੈਂ ਸਕਦੇ ਹੋ         | ਸਕਤੀ ਸਕਦੀਆਂ        |
| ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਿਆ       | 5. ਕਿਸੀ ਕਿਸੇ ਕਪੜੇ        |                    |
| ਸਕਾ                | ਕਪੜੇ ਪਰ ਪੁਰ              |                    |
| 2. ਤੁਮ੍ਹਾਰਾ ਤੁਹਾਡਾ | 6. ਇਤਨਾ ਭੀ ਇੰਨਾ ਵੀ       |                    |
| ਮਾਨਤਾ ਮੰਨਦਾ        | ਯਾ ਜਾਂ                   |                    |
| 3. ਬਤਾ ਦੱਸ         | 7. ਰੋਨੇ ਧੋਨੇ ਰੋਣ ਪੋਣ ਨਾਲ |                    |
| ਕਬ ਕਦ              | ਸੇ                       |                    |
| ਆਏਗੇ ਆਉਣਗੇ         | ਕਾਮ ਲੇਨੇ ਕੰਮ ਲੈਣ ਵਾਲੇ    |                    |

ਪਾਠ 26

‘ਪੈਣਾ’ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ  
(‘ਧੜਨਾ’ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ)

ਤੂੰ ਕਿਥੇ ਜਾਣਾ ਹੈ ? ਦਫ਼ਤਰ ਕਿ ਬਜ਼ਾਰ ।  
ਮੈਨੂੰ ਤਾਂ ਹੁਣ ਪਿੰਡ ਜਾਣਾ ਪਏਗਾ ।  
ਉਥੋਂ ਚਿੱਠੀਆਂ ਲਿਆਉਣੀਆਂ ਪੈਣਗੀਆਂ ।  
ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਨਕਲਾਂ ਬਣਵਾਉਣੀਆਂ ਪੈਣਗੀਆਂ ।  
ਜਦੋਂ ਹਵਾਈ ਹੱਲਾ ਹੋਇਆ ਸੀ, ਸਾਨੂੰ ਖਾਈਆਂ ਪੁਟਣੀਆਂ ਪਈਆਂ ਸਨ ।  
ਕੁਝ ਦਿਨਾਂ ਮਗਰੋਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਮਕਾਨ ਬਦਲਨਾ ਪਏਗਾ ।  
ਜੇਕਰ ਪਰੀਖਿਆ ਵਿਚ ਪਾਸ ਹੋਣਾ ਹੈ ਤਾਂ ਸਖਤ ਕੰਮ ਕਰਨਾ ਪਏਗਾ ।  
ਜੇਕਰ ਗੱਡੀ ਫੜਨੀ ਹੈ ਤਾਂ ਵੇਲੇ ਸਿਰ ਪੁਜਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ।  
ਚਾਹੀਦਾ ਤਾਂ ਇਹੋ ਸੀ ਕਿ ਉਹ ਆਪ ਡਾਕਟਰ ਕੋਲ ਜਾ ਕੇ ਨਵੀਂ ਦਵਾਈ ਪੁੱਛ  
ਆਉਂਦਾ ।  
ਮੈਂ ਅਜੇਹੀ ਥਾਂ ਜਾਣਾ ਤਾਂ ਨਹੀਂ ਚਾਹੁੰਦਾ ਪਰ ਮੈਨੂੰ ਜਾਣਾ ਪਏਗਾ, ਸਰਕਾਰੀ ਹੁਕਮ  
ਹੈ ।  
ਆਗਿਆ ਬਿਨਾ, ਛਾਵਨੀ ਦੀ ਹਦ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਜਾਣਾ ਨਹੀਂ ਚਾਹੀਦਾ ਸੀ ।  
ਹੁਣ ਤਾਂ ਉਸ ਨੂੰ ਜੁਰਮਾਨਾ ਦੇਣਾ ਪਏਗਾ ।  
ਇਕਨਾਂ ਨੂੰ ਇਨਾਮ ਮਿਲਦੇ ਹਨ, ਇਕਨਾਂ ਨੂੰ ਜੁਰਮਾਨੇ ਦੇਣੇ ਪੈਂਦੇ ਹਨ ।

|               |            |             |              |            |            |
|---------------|------------|-------------|--------------|------------|------------|
| ਤੂੰ ਕਿਥੇ ਜਾਣਾ | ਜੁਝੇ ਕਹਾਂ  | ਦਿਨਾਂ ਮਗਰੋਂ | ਦਿਨਾਂ ਕੇ ਬਾਦ | ਅਜੇਹੀ      | ਏਸੀ        |
| ਹੈ            | ਜਾਨਾ ਹੈ    | ਤੁਹਾਨੂੰ     | ਆਪ ਕੋ        | ਚਾਹੁੰਦਾ    | ਚਾਹਤਾ      |
| ਮੈਨੂੰ ਤਾਂ     | ਸੁਝੇ ਤੋ    | ਗੱਡੀ        | ਗਾਡੀ         | ਜਾਣਾ ਪਏਗਾ  | ਜਾਨਾ ਪਏਗਾ  |
| ਜਾਣਾ ਪਏਗਾ     | ਜਾਨਾ ਪਏਗਾ  | ਫੜਨੀ        | ਧਕੜਨੀ        | ਜਾਣਾ ਨਹੀਂ  | ਜਾਨਾ ਨਹੀਂ  |
| ਲਿਆਉਣੀਆਂ      | ਲਾਨੀ ਪਏਂਗੀ | ਪੁਜਣਾ       | ਪਹੁੰਚਨਾ      | ਚਾਹੀਦਾ ਸੀ  | ਚਾਹਿਏ ਥਾ   |
| ਪੈਣਗੀਆਂ       | ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ  | ਚਾਹਿਏ       | ਇਕਨਾਂ ਨੂੰ    | ਕੁਝ ਏਕ ਕੋ  |            |
| ਬਣਵਾਉਣੀਆਂ     | ਬਨਵਾਨੀ     | ਚਾਹੀਦਾ ਤਾਂ  | ਚਾਹਿਏ ਤੋ     | ਦੇਣੇ ਪੈਂਦੇ | ਦੇਨੇ ਪਏਂਦੇ |
| ਪੈਣਗੀਆਂ       | ਪਏਂਗੀ      | ਇਹੋ         | ਧਹੀ          | ਹਨ         |            |
| ਪੁਟਣੀਆਂ       | ਖੋਦਨੀ      | ਪਏਂ ਪੁਛ     | ਆਉਂਦਾ        | ਪੂਛ        | ਆਤਾ        |
| ਪਈਆਂ ਸਨ       | ਥੀ         |             |              |            |            |

## ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀਜ਼ਿਏ :

1. ਅਬ ਸੁਰੁਤ ਰਹੀਯੇ ਤੋ ਬਾਦ ਮੈਂ ਪਛਤਾਨਾ ਪਫ਼ੇਗਾ।
2. ਇਸ ਰੋਗ ਕੇ ਲਿਏ ਤੋ ਕਫ਼ਰੀ ਦਵਾਏਂ ਭੀ ਧੀਨੀ ਪਫ਼ੇਗੀ।
3. ਇਤਨੇ ਸਹੀਨੋਂ ਕੇ ਬਾਦ ਬਚ੍ਹੇ ਕੋ ਮਿਲ ਕਰ ਮਾਤਾ ਰੋ ਪਫ਼ੀ।
4. ਜਬ ਪਛਾਫ਼ੀਂ ਪਰ ਬਰਫ਼ ਪਫ਼ਤੀ ਹੈ ਤੋ ਘਾਸ ਮਰ ਜਾਤੀ ਹੈ।
5. ਆਂਖੀਂ ਪਰ ਸੂਰ੍ਯ ਕਾ ਤੇਜ਼ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਪਫ਼ ਜਾਏ ਤੋ ਆਦਮੀ ਅੰਧਾ ਹੋ ਜਾਤਾ ਹੈ।
6. ਗਿਰਤੇ ਪਫ਼ਤੇ ਬਚ੍ਹਾ ਦਰਵਾਜ਼ੇ ਤਕ ਪਹੁੰਚ ਗਯਾ।
7. ਸੁਝੇ ਤਾਰ ਦੇਨਾ ਪਫ਼ਾ ਕਿ ਮੈਂ ਤੋ ਬੀਮਾਰ ਪਫ਼ਾ ਹੂੰ।
8. ਮਾਨਨਾ ਪਫ਼ਤਾ ਹੈ ਕਿ ਵਾਰਿਸ ਸ਼ਾਹ ਨੇ 'ਹੀਰ' ਲਿਖ ਕਰ ਉਤਮ ਕਾਵ੍ਯ ਕਾ ਆਦਰ੍ਸ਼ ਸਥਾਪਿਤ ਕੀਯਾ ਹੈ।
9. ਯਹ ਤੋ ਫ਼ੋਨ ਕਰ ਕੇ ਪੂਛਨਾ ਪਫ਼ੇਗਾ ਕਿ ਗਾਫ਼ੀ ਕਿਤਨੀ ਦੇਰ ਸੇ ਆ ਰਹੀ ਹੈ।

- |          |              |             |          |          |         |
|----------|--------------|-------------|----------|----------|---------|
| 1. ਸੁਰੁਤ | ਸੁਸਤ, ਅਵੇਸਲੇ | 4. ਪਫ਼ਤੀ ਹੈ | ਪੈਦੀ ਹੈ  | ਬੀਮਾਰ    | ਬਿਮਾਰ   |
| ਪਛਤਾਨਾ   | ਪਛਤਾਉਣਾ      | ਘਾਸ         | ਘਾਹ      | ਪਫ਼ਾ ਹੂੰ | ਪਇਆ ਹਾਂ |
| ਪਫ਼ੇਗਾ   | ਪਏਗਾ         | 5. ਆਂਖੀਂ ਪਰ | ਅੱਖਾਂ ਪਰ | 8. ਮਾਨਨਾ | ਮੰਨਣਾ   |
| 2. ਕਫ਼ਰੀ | ਕੋਝੀ         | ਸੂਰ੍ਯ       | ਸੂਰਜ     | ਸਥਾਪਿਤ   | ਬਾਪਿਆ   |
| ਧੀਨੀ     | ਪੀਣੀ         | ਅੰਧਾ        | ਅੰਨ੍ਹਾ   | ਕੀਯਾ ਹੈ  | ਹੈ      |
| ਪਫ਼ੇਗੀ   | ਪਏਗੀ         | 6. ਗਿਰਤੇ    | ਢਹੰਦੇ    | 9. ਪੂਛਨਾ | ਪੁਛਣਾ   |
| 3. ਇਤਨੇ  | ਇੰਨੇ         | ਪਫ਼ਤੇ       | ਰੁਝਦੇ    | ਪਫ਼ੇਗਾ   | ਪਏਗਾ    |
| ਸਹੀਨੋਂ   | ਮਹੀਨਿਆਂ      | ਪਹੁੰਚ ਗਯਾ   | ਪੁੱਜ ਗਇਆ | ਗਾਫ਼ੀ    | ਗੱਡੀ    |
| ਕੇ ਬਾਦ   | ਮਗਰੋਂ        | 7. ਤਾਰ ਦੇਨਾ | ਤਾਰ ਦੇਣੀ |          |         |
| ਰੋ ਪਫ਼ੀ  | ਰੋ ਪਈ        | ਪਫ਼ਾ        | ਪਈ       |          |         |

ਪਾਠ 27

ਕੁਝ ਹੋਰ ਸੰਯੁਕਤ ਕ੍ਰਿਆਵਾਂ  
(ਕੁਝ ਔਰ ਸੰਯੁਕਤ ਕ੍ਰਿਆਵਾਂ)

ਵਿਛੜੀ ਭੈਣ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰਦਿਆਂ ਕਰਦਿਆਂ ਉਹ ਰੋਣ ਲਗ ਪਇਆ।  
ਜਦੋਂ ਬੰਬ ਵਸਣ ਲੱਗੇ ਅਸੀਂ ਖਾਈਆਂ ਵਿਚ ਲੁਕ ਗਏ।  
ਪਿਤਾ ਜੀ ਆਖਣ ਲੱਗੇ ਹੁਣ ਤੂੰ ਜੁਆਨ ਹੈਂ, ਨਿੱਕੀਆਂ ਨਿੱਕੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਦੀ  
ਪਰਵਾਹ ਨ ਕੀਤਾ ਕਰ।  
ਤੁਸੀਂ ਕਿੰਨੇ ਮਹੀਨਿਆਂ ਵਿਚ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲਣ ਲਗ ਪਏ ?  
ਗੁੱਸੇ ਨੂੰ ਜਾਣ ਦਿਓ, ਸਾਂਤੀ ਨਾਲ ਗੱਲ ਕਰੋ।  
ਬੇੜੀ ਦੇਰ ਅਰਾਮ ਕਰਨ ਦਿਓ, ਮੈਂ ਰਾਤੀ ਵੀ ਸੁੱਤਾ ਨਹੀਂ।  
ਉਨ੍ਹਾਂ ਮੈਨੂੰ ਘਰ ਵੀ ਜਾਣ ਨ ਦਿੱਤਾ।  
ਇਹ ਚਿੱਠੀ ਵੀ ਹੁਣ ਲਿਖ ਸੁੱਟੋ।  
ਅਸੀਂ ਗਲਾਂ ਕਰਦੇ ਕਰਦੇ ਦੂਜੇ ਫਾਟਕ ਤੇ ਜਾ ਪੁੱਜੇ।  
ਖਾ ਪੀ ਕੇ, ਹਸ-ਖੇਡ ਕੇ ਦਿਨ ਲੰਘਾ ਦੇਣਾ ਉਤਮ ਕੰਮ ਨਹੀਂ।

|           |            |           |            |           |           |
|-----------|------------|-----------|------------|-----------|-----------|
| ਵਿਛੜੀ     | ਬਿਛੜੀ      | ਹੁਣ       | ਅਬ         | ਸੁੱਤਾ     | ਸੋਧਾ      |
| ਗੱਲ       | ਬਾਤ        | ਤੂੰ ਹੈਂ   | ਤੂੰ ਹੈ     | ਜਾਣ ਨ     | ਜਾਨੇ ਨ    |
| ਕਰਦਿਆਂ    | ਕਰਦੇ ਕਰਦੇ  | ਨਿੱਕੀਆਂ   | ਛੋਟੀ ਬਾਤਾਂ | ਦਿੱਤਾ     | ਦਿਯਾ      |
| ਕਰਦਿਆਂ    |            | ਗੱਲਾਂ     |            | ਲਿਖ ਸੁੱਟੋ | ਲਿਖ ਛੋੜੋ  |
| ਉਹ ਰੋਣ    | ਕਹ ਰੋਨੇ    | ਨ ਕੀਤਾ ਕਰ | ਨ ਕਿਆ ਕਰ   | ਜਾ ਪੁੱਜਾ  | ਜਾ ਪਹੁੰਚੇ |
| ਲਗ ਪਇਆ    | ਲਗ ਪੜਾ     | ਬੋਲਣ ਲਗ   | ਬੋਲਨੇ ਲਗ   | ਲੰਘਾ ਦੇਣਾ | ਬਿਤਾ ਦੇਣਾ |
| ਵਸਣ ਲੱਗੇ  | ਬਰਸਨੇ ਲਗੇ  | ਪਏ        | ਪੜੇ        | ਮੈਥੋਂ     | ਸੁਝ ਸੇ    |
| ਖਾਈਆਂ ਵਿਚ | ਖਾਭਾਏਂ ਮੈਂ | ਜਾਣ ਦਿਓ   | ਜਾਨੇ ਦੋ    |           |           |
| ਲੁਕ ਗਏ    | ਲਿਪ ਗਏ     | ਸਾਂਤੀ ਨਾਲ | ਸਾਂਤਿ ਸੇ   |           |           |
| ਆਖਣ ਲੱਗੇ  | ਕਹਨੇ ਲਗੇ   | ਰਾਤੀ ਵੀ   | ਰਾਤ ਕੀ ਭੀ  |           |           |

ਚੋਰ ਨੂੰ ਬੁਢੇ ਨੇ ਜਾਨੋਂ ਮਾਰ ਸੁੱਟਿਆ।  
 ਖਵਰੇ ਉਸ ਦੇ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਕਿਥੇ ਮਾਰ ਛਡਿਆ।  
 ਖਵਰੇ ਕਿਹੜੇ ਜਨਮ ਦਾ ਬਦਲਾ ਲੈ ਲਿਆ।  
 ਮੇਰੇ ਆਉਣ ਤਕ ਗੁਤਾਵਾ ਕਰ ਛਡੀ।  
 ਮੈਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਸਾਰੀਆਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਸ਼ਹਰੋਂ ਲਿਆ ਦਿਆਂਗਾ।  
 ਤਾਰ ਸੁਣਦਿਆ ਸਾਰ ਉਹ ਤਾਂ ਪੈਰੋਂ ਵਾਹੁਣਾ ਟੁਰ ਪਇਆ।  
 ਉਹ ਤਾਂ ਮਰ ਚਲਿਆ ਸੀ ਜੇ ਮੈਂ ਨ ਅਪੜਦਾ।  
 ਬੱਤੀਆਂ ਪਈਆਂ ਬਲਦੀਆਂ ਨੇ।  
 ਹਲ ਪਏ ਵਗਦੇ ਹੋਣਗੇ।  
 ਉਹ ਕਈ ਵਰ੍ਹੇ ਡੰਗਰ ਚਾਰਦਾ ਰਹਿਆ।  
 ਗੱਡੀ ਤਾਂ ਟੁਰ ਚਲੀ ਸੀ, ਮੈਂ ਮਸਾਂ ਅਪੜਿਆ।  
 ਕੰਮ ਕਰੀ ਚਲ।  
 ਕਿਧਰ ਟੁਰੀ ਜਾਂਦਾ ਸੀ।  
 ਪੜ੍ਹਿਆ ਵੀ ਕਰ ਤੇ ਲਿਖਿਆ ਵੀ ਕਰ।  
 ਮੇਰੀ ਗਲ ਧਿਆਨ ਨਾਲ ਸੁਣਿਆ ਕਰ।  
 ਉਹ ਗੁਰਦੁਆਰੇ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹੁੰਦਾ ਸੀ।  
 ਹੁਣ ਹਲ ਵਾਹੁਣ ਲੱਗਾ।  
 ਦੂਰ ਜਾ ਕੇ ਫਿਰ ਵਿਖਾਲੀ ਨਹੀਂ ਦਿੱਤਾ।  
 ਮੈਂ ਉਸ ਨੂੰ ਇਥੇ ਟੁਰਦਿਆਂ ਫਿਰਦਿਆਂ ਡਿਠਾ।  
 ਮੇਰੇ ਕੋਲੋਂ ਸਿਧਿਆਂ ਨਹੀਂ ਸੀ ਖਲੋਤਾ ਜਾਂਦਾ।  
 ਸੱਪ ਤਾਂ ਮੈਂ ਮਾਰ ਛਡਿਆ ਹੈ।  
 ਨੌਕਰ ਨੂੰ ਮਾਰ ਕੁੱਟ ਕੇ ਘਰੋਂ ਕਢ ਦਿੱਤਾ।  
 ਝਖੜ ਚਲ ਪਇਆ ਏ, ਕਣਕਾਂ ਗਾਹੁਣੀਆਂ ਰਹ ਗਈਆਂ।  
 ਕਪੜੇ ਸੁਕਣੇ ਪਾਏ ਹੋਏ ਸਨ।  
 ਆਖਣ ਲੱਗਾ—ਮੈਂ ਤਾਂ ਗਰੀਬ ਆਂ।  
 ਕੁੜੀ ਰੋਣ ਲੱਗੀ।  
 ਭਲਕੇ ਸਾਰੀ ਗੱਲ ਦਾ ਜਵਾਬ ਦੇਣਾ ਪਏਗਾ।  
 ਛੋਕੜਾਂ ਉਸੇ ਬੰਦੇ ਦੀ ਮਿੰਨਤ ਕਰਨੀ ਪਈ।  
 ਤੁਹਾਨੂੰ ਸਭ ਕੁਝ ਦੱਸਣਾ ਹੋਵੇਗਾ ਪਈ ਕਤਲ ਕਿਵੇਂ ਹੋਇਆ।  
 ਇੰਨੇ ਔਖੇ ਸੁਆਲ ਮੁੰਡੇ ਕੋਲੋਂ ਹੋਣ ਨਹੀਂ ਲੱਗੇ।  
 ਕਿਤਾਬਾਂ ਪੜ੍ਹਨੀਆਂ ਚਾਹੀਦੀਆਂ ਨੇ।



ਚਾਹੀਦਾ ਸੀ ਕਿ ਤੂੰ ਪਹਲਾਂ ਸਾਰਾ ਕੰਮ ਮੁਕਾ ਛਡਦਾ ।  
 ਤੂੰ ਖਲੋ ਜਾ ਮੈਂ ਭੱਜ ਕੇ ਵੇਖ ਆਵਾਂ ।  
 ਬੋੜੀ ਦੇਰ ਸਾਹ ਲੈਣ ਦੇ, ਫਿਰ ਚਲ ਪਵਾਂਗੇ ।  
 ਇਕ ਵੇਰ ਆਖ ਛਡ ਪਈ ਪੈਲੀ ਵਿਚ ਡੰਗਰ ਨ ਵਾੜੇ ।  
 ਕਿਤਾਬ ਤਾਂ ਪੜ੍ਹ ਲਈ ਏ, ਵਾਪਸ ਘਲ ਦਿਓ !  
 ਉਸ ਨੂੰ ਪੁਛੇ ਪਈ ਤੂੰ ਗਾ ਸਕਦਾ ਏਂ ।

ਸੂਚਨਾ : ਅੱਖੇ ਸਬਦਾਂ ਦੇ ਅਰਥਾਂ ਲਈ ਵੇਖੋ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਪੰਜਾਬੀ ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ, ਅੰਤਿਕਾ

SIKHBOOKCLUB.COM

## ਪਾਠ 28

## ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਚ ਕਰਮ ਵਾਚ

## (ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ ਕਰਮ ਗਾਧ)

ਜੇ ਕੁਝ ਹੋਏਗਾ ਵੇਖਿਆ ਜਾਏਗਾ।

ਸਾਰਾ ਕੰਮ ਕੱਲ ਦੱਸ ਦਿੱਤਾ ਜਾਏਗਾ।

ਜਦੋਂ ਚਿੱਠੀ ਆਈ ਸੀ ਸਾਰੀਆਂ ਪੁਸਤਕਾਂ ਭੇਜ ਦਿੱਤੀਆਂ ਗਈਆਂ ਸਨ।

ਸਾਰਾ ਕੰਮ ਵੇਲੇ ਸਿਰ ਕੀਤਾ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਮੇਰੇ ਕੋਲੋਂ ਤਾਂ ਤੁਹਾਡਾ ਖਤ ਪੜ੍ਹਿਆ ਨਹੀਂ ਗਇਆ।

ਚੋਰ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲਨ ਵੇਲੇ ਪਕੜਿਆ ਗਇਆ।

ਕਪੜੇ ਰਖਣ ਲਈ ਵੱਡੀਆਂ ਵੱਡੀਆਂ ਅਲਮਾਰੀਆਂ ਬਣਵਾਈਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ।

ਦਵਾਈ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਹੈ, ਥੋੜੀ ਦੇਰ ਮਗਰੋਂ ਅਸਰ ਹੋਏਗਾ।

ਸਾਰੀਆਂ ਬੇਤਲਾਂ ਮਸ਼ੀਨ ਵਿਚ ਭਰੀਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹੋਣਗੀਆਂ।

ਤਵਾ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਗਰਮ ਨਹੀਂ ਸੀ, ਰੋਟੀਆਂ ਛੇਤੀ ਕਿਵੇਂ ਪਕਾਈਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ।

ਮੱਛੀਆਂ ਜਾਲ ਨਾਲ ਫੜੀਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ।

ਦੇ ਰੁਪਏ ਸਾਈ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਸੀ।

|            |            |            |             |            |          |
|------------|------------|------------|-------------|------------|----------|
| ਵੇਖਿਆ      | ਦੇਖਾ       | ਨਿਕਲਨ ਵੇਲੇ | ਨਿਕਲਦੇ      | ਮਗਰੋਂ      | ਬਾਦ      |
| ਦੱਸ ਦਿੱਤਾ  | ਬਤਾ ਦਿਆ    |            | ਸਮਝ         | ਭਰੀਆਂ      | ਮੁਰੀ     |
| ਜਾਏਗਾ      | ਜਾਏਗਾ      | ਪਕੜਿਆ      | ਧਕੜਾ ਗਏ     | ਜਾਂਦੀਆਂ    | ਜਾਤੀ     |
| ਸਾਰੀਆਂ     | ਸਭ ਪੁਸਤਕਾਂ | ਗਇਆ        |             | ਹੋਣਗੀਆਂ    | ਹੋਂਗੀ    |
| ਪੁਸਤਕਾਂ    |            | ਰੱਖਣ ਲਈ    | ਰਖਣੇ ਕੇ ਲਿਓ | ਮੱਛੀਆਂ     | ਸਭਲੀਆਂ   |
| ਕੀਤਾ ਜਾਣਾ  | ਕਿਯਾ ਜਾਨਾ  | ਵੱਡੀਆਂ     | ਬੜੀ ਬੜੀ     | ਫੜੀਆਂ      | ਧਕੜੀ     |
| ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ  | ਚਾਹਿਓ      | ਵੱਡੀਆਂ     |             | ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ | ਜਾਤੀ ਹੈਂ |
| ਮੇਰੇ ਕੋਲੋਂ | ਮੁਝ ਸੇ     | ਬਣਵਾਈਆਂ    | ਬਨਵਾਓ       | ਸਾਈ        | ਪੇਸ਼ਾਗੀ  |
|            |            | ਗਈਆਂ ਹਨ    | ਗਏ ਹੈਂ      | ਦਿੱਤੀ      | ਦੀ       |
|            |            | ਦਿੱਤੀ ਗਈ   | ਦੀ ਗਈ       |            |          |

ਏ ਗਾਧ ਊਪਰ ਨ ਰਖਣੇ ਯੋਗਯ ਹੈ :

ਮੇਰੇ ਕੋਲੋਂ ਲਿਖਣ ਨਹੀਂ ਹੋਦਾ

ਮੇਰੇ ਕੋਲੋਂ ਲਿਖ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ

ਇੰਞ ਨਹੀਂ ਲਿਖੀਦਾ

ਮੁਝ ਸੇ ਲਿਖਾ ਨਹੀਂ ਜਾਤਾ

ਮੁਝ ਸੇ ਲਿਖਦੇ ਨਹੀਂ ਬਨਤਾ

ਏਸੇ ਨਹੀਂ ਲਿਖਦੇ

# ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀਜिए :

1. ਸੇਠ ਕਾ ਲੜਕਾ ਲੁਟੇਰੋਂ ਕੇ ਹਾਥੋਂ ਮਾਰਾ ਗਯਾ ਥਾ।
2. ਜਹਾਜ਼ ਪਰ ਚੜ੍ਹਨੇ ਸੇ ਪਹਲੇ ਸਾਰੇ ਸਾਮਾਨ ਕੀ ਪੜਤਾਲ ਕਰਵਾਈ ਜਾਤੀ ਹੈ।
3. ਯਦਿ ਆਪ ਜਲ੍ਹਦੀ ਨ ਜਗਾਏ ਜਾਤੇ ਤੋ ਆਜ਼ ਗਾੜੀ ਨ ਪਕੜ ਸਕਤੇ।
4. ਮੇਰੇ ਹਾਥ ਕੋ ਚੋਟ ਲਗੀ ਹੈ, ਸ਼ਾਯਦ ਮੈਂ ਚਿਟ੍ਰੀ ਠੀਕ ਠੀਕ ਨ ਲਿਖ ਸਕੂੰ।
5. ਹਮ ਚਾਹੇ ਸ਼ਤ੍ਰੁ ਕੀ ਗੋਲਾਬਾਰੀ ਸੇ ਮਾਰੇ ਜਾਏਂਗੇ ਪਰ ਹਮ ਪੀਛੇ ਨਹੀਂ ਹਟੇਂਗੇ।
6. ਜਬ ਮਿਖਾਰਿਯੋਂ ਕੋ ਭੋਜਨ ਭਾਂਟਾ ਗਯਾ ਤਨ ਸੇ ਅਪਨੀ ਅਪਨੀ ਬਾਰੀ ਕੀ ਪ੍ਰਤੀਕਸ਼ਾ ਨ ਕੀ ਜਾ ਸਕੀ।
7. ਸੁਝ ਸੇ ਰਹਾ ਨਹੀਂ ਗਯਾ, ਮੈਂਨੇ ਆਗੇ ਬਢ ਕਰ ਤਸ ਕਾ ਬਾਜੂ ਪਕੜ ਲਿਯਾ।
8. ਸਮਯ ਵਿਕਟ ਥਾ, ਗੋਦ ਮੈਂ ਬਚ੍ਹਾ ਥਾ, ਬੇਚਾਰੀ ਸੇ ਭਾਗਾ ਨਹੀਂ ਗਯਾ।
9. ਯਹ ਬਾਜਾ ਝੰਗਲੀ ਸੇ ਬਜਾਯਾ ਜਾਤਾ ਹੈ।

SIKHBOOKCLUB.COM

- |                        |                      |                     |
|------------------------|----------------------|---------------------|
| 1. ਲੂਟੇਰੋਂ ਲੁਟੇਰਿਆਂ    | ਲਿਖ ਸਕ੍ਹ ਲਿਖ ਸਕਾਂ    | ਆਗੇ ਬਢ ਅੱਗੇ ਵਧ      |
| ਕੇ ਹਾਥੋਂ ਦੇ ਹੱਥੋਂ      | 5. ਚਾਹੇ ਭਾਵੇਂ        | ਕਰ ਕੇ               |
| 2. ਚੜ੍ਹਨੇ ਸੇ ਚੜ੍ਹਨ ਤੋਂ | ਸ਼ਤ੍ਰੁ ਸਤ੍ਰੁ, ਦੁਸ਼ਮਣ | ਕਾ ਬਾਜੂ ਦੀ ਬਾਂਹ     |
| ਪਹਲੇ ਪਹਲਾਂ             | ਸੇ ਨਾਲ               | 8. ਵਿਕਟ ਐਥਾ         |
| ਸਾਮਾਨ ਸਮਾਨ             | 6. ਭਾਂਟਾ ਵੰਡਿਆ       | ਗੋਦ ਮੈਂ ਝੋਲੀ ਵਿਚ    |
| ਆਜ ਅੱਜ                 | ਗਯਾ ਗਇਆ              | ਬੇਚਾਰੀ ਵਿਚਾਰੀ       |
| 3. ਯਦਿ ਜੇਕਰ            | 7. ਸੁਝ ਸੇ ਮੈਥੋਂ      | ਭਾਗਾ ਨਹੀਂ ਨਸਿਆ ਨਹੀਂ |
| ਗਾੜੀ ਗੱਡੀ              | ਰਹਾ ਨਹੀਂ ਰਹਿਆ ਨਹੀਂ   | ਗਯਾ ਗਇਆ             |
| 4. ਹਾਥ ਕੋ ਹੱਥ ਨੂੰ      | ਗਯਾ ਗਇਆ              | 9. ਬਾਜਾ ਵਾਜਾ        |
| ਸ਼ਾਯਦ ਸ਼ਾਇਦ            |                      |                     |

## ਪਾਠ 29

## ਵਾਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼

## (ਗਾਥਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼)

1. ਪਿੰਡ ਦੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਜਲਦੀ ਘਬਰਾ ਜਾਇਆ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਗਾਂਥ ਦੀ ਲੜਕੀਆਂ ਜਲਦੀ ਘਬਰਾ ਜਾਯਾ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ।
2. ਚਿਲਕਣੇ ਫਰਸ਼ ਪੁਰ ਜੋ ਕੋਈ ਤੇਜ਼ ਚਿਕਨੇ ਫਰਸ਼ ਪੁਰ ਜੋ ਤੇਜ਼ ਚਲਦਾ ਹੈ ਉਸ ਦਾ ਪੈਰ ਤਿਲਕ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਉਸਦਾ ਪਾਥ ਫਿਸਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।
3. ਇਨ੍ਹੀ ਦਿਨੀਂ ਦੁੱਧ ਮਹੰਗਾ ਵਿਕਿਆ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਨ੍ਹੀ ਦਿਨੀਂ ਦੂਧ ਮਹੰਗਾ ਬਿਕਾ ਕਰਦਾ ਹੈ।
4. ਸਾਰਾ ਦਿਨ ਇਸ ਸੜਕ ਤੇ ਮੋਟਰਾਂ ਚਲਦੀਆਂ ਰਹਿੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਦਿਨ ਭਰ ਇਸ ਸੜਕ ਪਰ ਮੋਟਰਾਂ ਚਲਦੀਆਂ ਰਹਿੰਦੀਆਂ ਹਨ।
5. ਬੂਠੀਆਂ ਕਸਮਾਂ ਨ ਖਾਇਆ ਕਰੋ, ਵਿਸ਼ਾਹ ਉਡ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਬੂਠੀ ਕਸਮਾਂ ਨ ਖਾਧਾ ਕਰੋ, ਵਿਸ਼ਾਹ ਉਡ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।
6. ਚਮਚੇ ਨਾਲ ਦੁੱਧ ਹਿਲਾਉਂਦੇ ਜਾਓ, ਕਿਤੇ ਉਭਰ ਨ ਜਾਏ। ਚਮਚੇ ਨਾਲ ਦੁੱਧ ਹਿਲਾਓ, ਕਿਤੇ ਉਭਰ ਨ ਜਾਏ।
7. ਦੇਵੇਂ ਭਰਾਵਾਂ ਦਾ ਮੁਹਾਂਦਰਾ ਆਪੋ ਵਿਚ ਮਿਲਦਾ-ਜੁਲਦਾ ਹੈ। ਦੋਨੋਂ ਭਰਾਵਾਂ ਦੀ ਸ਼ਕਲ ਆਪਸ ਮੇਂ ਮਿਲਦੀ ਹੈ।
8. ਇਸੇ ਰਾਹ ਤੇ ਆਉਂਦਿਆਂ ਜਾਂਦਿਆਂ ਉਹ ਫਕੀਰ ਮੈਨੂੰ ਮਿਲ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਇਸੇ ਰਾਹ ਪਰ ਆਏ ਜਾਏ ਵਹ ਫਕੀਰ ਮੁੜੇ ਮਿਲ ਜਾਂਦਾ ਸੀ।
9. ਸੇਠਾਂ ਕੋਲ ਰਹਣ ਵਾਲੇ ਨੌਕਰਾਂ ਨੂੰ ਵੱਡੀਆਂ ਵੱਡੀਆਂ ਤਨਖਾਹਾਂ ਮਿਲਦੀਆਂ ਹਨ। ਸੇਠਾਂ ਦੇ ਘਰ ਰਹਿਣ ਵਾਲੇ ਨੌਕਰਾਂ ਨੂੰ ਵੱਡੀ ਵੱਡੀ ਤਨਖਾਹਾਂ ਮਿਲਦੀਆਂ ਹਨ।
10. ਬੈਠਿਆਂ ਬੈਠਿਆਂ ਤਾਂ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਮਿਲਣਾ। ਬੈਠੇ ਬੈਠੇ ਤਾਂ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਮਿਲੇਗਾ।
11. ਉਸ ਨੇ ਕੰਬਦਿਆਂ ਕੰਬਦਿਆਂ ਕਹਿਆ ਮੇਰਾ ਬੱਚਾ ਕਿਥੇ ਹੈ। ਉਸ ਨੇ ਕੰਬਦਿਆਂ ਕੰਬਦਿਆਂ ਕਹਿਆ ਮੇਰਾ ਬੱਚਾ ਕਿਥੇ ਹੈ।
12. ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਮੰਦਰ ਤੋਂ ਪਰਤਦਿਆਂ ਵੇਖਿਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਮੰਦਰ ਤੋਂ ਪਰਤਦਿਆਂ ਵੇਖਿਆ।
13. ਹਸਦਿਆਂ ਹਸਦਿਆਂ ਸਾਡੇ ਪੇਟ ਵਿਚ ਵਲ ਪੈ ਗਏ। ਹਸਦਿਆਂ ਹਸਦਿਆਂ ਸਾਡੇ ਪੇਟ ਵਿਚ ਵਲ ਪੈ ਗਏ।

14. ਪੁੱਤਰ ਦੇ ਮਰਨ ਦੀ ਖਬਰ ਸੁਣਦਿਆਂ    ਬੇਟੇ ਦੇ ਮਰਨੇ ਦੀ ਖਬਰ ਸੁਨਤੇ ਹੀ ਕਹ  
ਸਾਰ ਉਹ ਡਿਗ ਪਈ ਅਤੇ ਬੇਹੋਸ਼ ਹੋ    ਗਿਰ ਪਈ ਔਰ ਬੇਹੋਸ਼ ਹੋ ਗਈ।  
ਗਈ।
15. ਪਰਤਦੀ ਵੇਰ ਸਾਨੂੰ ਮਿਲਦੇ ਜਾਣਾ ਜੀ।    ਅਜੀ ! ਲੈਟਟੀ ਬਾਰ ਹਮੇਂ ਮਿਲਤੇ ਜਾਨਾ।
16. ਜੀਦਿਆਂ ਜਾਗਦਿਆਂ ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਦੇਸ਼    ਜੀਤੇ ਜੀ ਹਮ ਅਪਨੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਸਰਧਾਦਾ  
ਦੀ ਮਰਿਆਦਾ ਖਰਾਬ ਨਹੀਂ ਹੋਣ    ਖਰਾਬ ਨਹੀਂ ਹੋਨੇ ਦੇਂਗੇ।  
ਦਿਆਂਗੇ।
17. ਇਹ ਤਾਂ ਘਾਤਕ ਜਹਰ ਹੈ, ਖਾਧੀ ਤੇ    ਧਹ ਤੋ ਘਾਤਕ ਵਿਧ ਹੈ। ਖਾਧਾ ਔਰ  
ਮਰੇ।    ਮਰੇ।
18. ਜੇਕਰ ਵਚਨ ਦੇਵੇ, ਤਾਂ ਉਸਨੂੰ ਇਸ    ਧਦਿ ਕਥਨ ਦੇ, ਤੋਂ ਤਸੇ ਅਬ ਕੀ ਚੋਡ਼  
ਵੇਰ ਛੱਡ ਦਿਆਂਗਾ।    ਢੂੰਗਾ।
19. ਸੇਉ ਇਓਂ ਝੜਦੇ ਸਨ ਜਿਵੇਂ ਗੜੇ ਪੈਂਦੇ    ਸੇਬ ਏਸੇ ਝੜਤੇ ਥੇ ਜੈਸੇ ਔਲੇ ਪੜਤੇ  
ਹੋਣ।    ਹੋਂ।
20. ਪਿਓਂ ਸਿਰ ਤੇ ਹੁੰਦਾ ਤਾਂ ਮੁੰਡਾ ਅਵਾਰਾ    ਪਿਤਾ ਸਿਰ ਪਰ ਹੋਤਾ ਤੋਂ ਲੜਕਾ  
ਕਿਉਂ ਬਣਦਾ।    ਆਵਾਰਾ ਕਥੋਂ ਬਨਤਾ।
21. ਉਸ ਵਿਚਾਰੀ ਕੋਲ ਕੋਈ ਗਹਣਾ ਨਹੀਂ,    ਤਸ ਬੇਚਾਰੀ ਕੇ ਪਾਸ ਕੋਈ ਗਹਨਾ  
ਨਨਾਣ ਦੇ ਵਿਆਹ ਤੇ ਕਿਵੇਂ ਜਾਏ।    ਨਹੀਂ, ਨਨਦ ਕੇ ਵਿਆਹ ਪਰ ਕੈਸੇ ਜਾਏ !
22. ਚੋਕੀਦਾਰ ਕੋਲ ਨ ਲਾਲਟੈਨ ਸੀ ਨ    ਚੌਕੀਦਾਰ ਕੇ ਪਾਸ ਨ ਲਾਲਟੈਨ ਥੀ ਨ  
ਡਾਂਗ।    ਲਾਟੀ।
23. ਨੰਬਰਦਾਰ ਕੋਲ ਦੋ ਖੂਹ ਤੇ ਦੋ    ਨੰਬਰਦਾਰ ਕੇ ਪਾਸ ਦੋ ਕੂਏਂ ਔਰ ਦੋ  
ਹਵੇਲੀਆਂ ਹਨ।    ਹਵੇਲੀਯਾਂ ਹੋਂ।
24. ਬਲਦ ਨੂੰ ਖੰਘ ਲੱਗੀ ਹੈ, ਕੋਈ ਦਵਾ    ਬੈਲ ਕੋ ਖਾਂਸੀ ਹੋ ਗਈ ਹੈ, ਇਲਾਜ  
ਦਾਰੂ ਕਰੋ।    ਕਰਵਾਔ।
25. ਰੱਬ ਦੀ ਕੁਦਰਤ ਨਿਆਰੀ ਹੈ; ਘੜੀ    ਝੰਬਰ ਕੀ ਕੁਦਰਤ ਨ੍ਧਾਰੀ ਹੈ, ਘੜੀ ਮੇਂ  
ਵਿਚ ਜਲਥਲ ਕਰ ਦਿੰਦਾ ਹੈ।    ਜਲ ਥਲ ਕਰ ਦੇਤਾ ਹੈ।
26. ਤੁਮਾਤੜਾਂ ਲਈ ਕੀ ਔਖ ਏ।    ਆਪ ਜੈਸੇ ਮਹਾਨੁਮਾਵੋਂ ਕੇ ਲਿਏ ਕਥਾ  
ਕਠਿਨ ਹੈ।
27. ਹਮਾਤੜਾਂ ਲਈ ਵਸੀਲਾ ਕਿਥੇ।    ਹਮਾਰੇ ਲਿਏ ਵਸੀਲਾ ਕਹਾਂ।
28. ਆਪਾਧਾਪੀ ਪੈ ਜਾਏ ਤਾਂ ਸਤਿਆ ਉਡ    ਸਵਾਰਥ ਸਿਧਿ ਕੀ ਬਾਨ ਪੜ ਜਾਏ ਤੋਂ  
ਜਾਂਦੀ ਏ।    ਸਾਤਿਕਤਾ ਤੜ ਜਾਤੀ ਹੈ।

29. ਇੱਕੋ ਭਾ ਰਹਣਾ ਏ, ਵਧ ਘੱਟ ਨਹੀਂ      ਏਕ ਹੀ ਆਵ ਰਹੇਗਾ ਅਧਿਕ ਕਮ ਨਹੀਂ  
ਹੋਣਾ।      ਹੋਨੇ ਕਾ।
30. ਤੁਹਾਡੇ ਗੋਚਰਾ ਕੰਮ ਪੈ ਗਇਆ।      ਆਪ ਕੇ ਪ੍ਰਤਿ ਕਾਮ ਧੜ ਗਯਾ।
31. ਬਾਬੇ ਦਾ ਸਦਕਾ ਸਭ ਕੁਝ ਬਹੁਤ ਹੈ।      ਬਾਬਾ ਕੇ ਪ੍ਰਤਾਪ ਸੇ ਸਬ ਕੁਝ ਬਹੁਤ ਹੈ।
32. ਲਾਲੇ ਹੋਰਾਂ ਦੀ ਦੁਕਾਨ ਲੁੱਟੀ ਗਈ।      ਲਾਲਾ ਜੀ ਕੀ ਦੁਕਾਨ ਲੁੱਟੀ ਗਈ।
33. ਭੋਲੇ ਹੋਰਾਂ ਦੀ ਝੋਟੀ ਗੁਆਚ ਗਈ।      ਭੋਲਾ ਜੀ ਕੀ ਖੈਸ ਗੁਮ ਹੋ ਗਈ।
34. ਮਣ ਦੇ ਕਿੰਨੇ ਰੁਪਏ ਬੈਠੇ ?      ਸਨ ਕੇ ਕਿਤਨੇ ਰੁਪਏ ਬਨੇ ?
35. ਰੋਟੀ ਖਾਧੀ ਆ ਕਿ ਨਹੀਂ ?      ਤੂ ਨੇ ਰੋਟੀ ਖਾਈ ਹੈ ਕਿ ਨਹੀਂ ?
36. ਕੀ ਆਖਿਆ ਸੂ ?      ਉਸ ਨੇ ਸੁਝੇ ਕਯਾ ਕਹਾ ਹੈ ?
37. ਅਜੇ ਰੋਟੀ ਵੀ ਖਾਣੀ ਜੇ।      ਅਮੀ ਰੋਟੀ ਭੀ ਖਾਨੀ ਹੈ।

SIKHBOOKCLUB.COM

## खण्ड 5

### पंजाबी बात चीत

वार्तालाप के इन प्रकरणों में प्रायः बोल चाल का उच्चारण सुरक्षित रखने के प्रयत्न किये गये हैं, यथा :

|         |            |            |
|---------|------------|------------|
| करदा ए  | (करदा है)  | = करता है  |
| करदे ओ  | (करदे हो)  | = करते हो  |
| करदे ने | (करदे हन)  | = करते हैं |
| करदां   | (करदा हों) | = करता हूँ |
|         |            | आदि आदि    |

कुछ मुहावरे अभी साहित्यिक भाषा में स्थान नहीं पा सके, किन्तु बोल चाल में प्रचलित हैं। इस लिए कहीं कहीं इन्हें भी अपने प्रचलित रूप में लिखा गया है।

यहां व्याकरण की व्याख्या देना उपयुक्त नहीं समझा गया। कठिन शब्दों के अर्थ सरल पंजाबी में दिए गए हैं। हिन्दी रूपांतर परिशिष्ट में संकलित है।

## ਪ੍ਰਸੰਗ 1

## ਜਾਣ-ਪਛਾਣ

ਤੁਹਾਡਾ ਨਾਂ ਕੀ ਏ ?  
 ਮੇਰਾ ਨਾਂ ਏ ਰਣਜੀਤ ਸਿੰਘ ।  
 ਤੁਸੀਂ ਇਥੇ ਕਦੋਂ ਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਓ ?  
 ਕੋਈ ਦੇ ਵਰ੍ਹੇ ਹੋਏ ਨੇ ।  
 ਤੁਹਾਡਾ ਵੱਡਾ ਭਰਾ ਕੀ ਕੰਮ ਕਰਦਾ ਏ ?  
 ਉਹ ਤਾਂ ਬਜ਼ਾਜ਼ੀ ਦੀ ਦੁਕਾਨ ਕਰਦੇ ਨੇ ।  
 ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਘਰ ਕਿੱਥੇ ਏ ?  
 ਉਹ ਤਾਂ ਛਾਵਣੀ ਵਿਚ ਰਹਿੰਦੇ ਨੇ ।  
 ਛਾਵਣੀ ਇੱਥੋਂ ਕਿੰਨੀ ਦੂਰ ਏ ?  
 ਕੋਈ ਪੋਣੇ ਤਿੰਨ ਮੀਲ ਦੂਰ ਏ ।  
 ਕੀ ਤੁਸੀਂ ਵੀ ਉਥੋਂ ਹੀ ਆਉਂਦੇ ਓ ?  
 ਹਾਂ ਜੀ, ਉਥੋਂ ਬਸ ਵਿਚ ਆਉਂਦਾ ਹਾਂ ।  
 ਤੁਸੀਂ ਕੱਲ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਆ ਸਕੋਗੇ ?  
 ਹਾਂ ਜੀ, ਮੈਂ ਸਾਢੇ ਅੱਠ ਵਜੇ ਆ ਜਾਵਾਂਗਾ ।  
 ਆਪਣੀ ਬੱਚੀ ਨੂੰ ਵੀ ਲੈਂਦੇ ਆਉਣਾ, ਉਹ ਬੜੀ ਪਿਆਰੀ ਬੱਚੀ ਏ ।  
 ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ, ਉਹ ਵੀ ਆ ਜਾਏਗੀ ।  
 ਸਾਢੇ ਅੱਠ ਵਜੇ ਠੀਕ ਏ ਨਾ ?  
 ਹਾਂ ਜੀ, ਬਹੁਤ ਠੀਕ ਏ, ਧੰਨਵਾਦ ।\*

---

ਜਾਣ ਪਛਾਣ = ਪਰਿਚੈ

ਕਦੋਂ ਦੇ = ਕਦ ਤੋਂ

ਏ = ਹੈ

ਹੋਏ ਨੇ = ਹੋਏ ਹਨ

ਕਿੰਨੀ = ਕਿਤਨੀ

ਪੋਣੇ ਤਿੰਨ = 2¼

ਆਉਂਦੇ ਓ = ਆਉਂਦੇ ਹੋ

ਸਾਢੇ ਅੱਠ = 8½

\* ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਾਕਾਂ ਦੇ ਹਿੰਦੀ ਰੂਪਾਂਤਰ ਲਈ ਵੇਖੋ ਪਰਿਸ਼ਿਸ਼ਟ ।



ਤੁਹਾਡਾ ਪਤਾ ਕੀ ਏ ?  
 ਦੇ ਸੇ ਬਵੰਜਾ ਵਾਣਵੱਟਾਂ ਦੀ ਗਲੀ, ਬਾਂਸ ਮੰਡੀ।  
 ਫਿਰ ਦਸਿਆ ਜੇ, ਮੈਂ ਲਿਖ ਲਵਾਂ।  
 ਅੱਛਾ ਜੀ।  
 ਹਾਂ ਜੀ ਦੇ ਸੇ ਕਿੰਨਾ ਨੰਬਰ ?  
 ਦੇ ਸੇ ਬਵੰਜਾ।  
 ਜੀ, ਤੇ ਕਿਹੜੀ ਗਲੀ ?  
 ਗਲੀ ਵਾਣਵੱਟਾਂ ਦੀ।  
 ਛਾਵਣੀ ਵਿਚ ਬਾਂਸ ਮੰਡੀ ਹੈ ਨਾ ?  
 ਹਾਂ ਜੀ।  
 ਬਸ ਉਸ ਦੇ ਲਾਗੇ।  
 ਚੰਗਾ ਜੀ।  
 ਤੁਸੀਂ ਆਪੇ ਪੁੱਜ ਜਾਣਾ ਜੀ।  
 ਬਹੁਤ ਅੱਛਾ।  
 ਧੰਨਵਾਦ।

SIKHBOOKCLUB.COM

---

ਬਵੰਜਾ = 52

ਦਸਿਆ ਜੇ = ਦੱਸਣਾ ਜੀ

ਲਾਗੇ = ਨੇੜੇ

ਪੁੱਜ ਜਾਣਾ = ਪਹੁੰਚ ਜਾਣਾ

## ਅਭਿਆਸ

ਮੇਰੇ ਘਰ ਵੀ ਆਉਣਾ ।  
 ਤੁਸੀਂ ਵੀ ਮੇਰੇ ਘਰ ਆਉਣਾ ।  
 ਆਪਣੇ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਵੀ ਲਿਆਉਣਾ ।  
 ਅਗਲੇ ਹਫ਼ਤੇ ਵੀ ਜ਼ਰੂਰ ਆਉਣਾ ।  
 ਅਸੀਂ ਕੱਲ ਮਿਲਾਂਗੇ ।  
 ਬੱਚੀਆਂ ਵੀ ਕੱਲ ਮਿਲਣਗੀਆਂ ।  
 ਅਸੀਂ ਕੱਲ ਕਿੱਥੇ ਮਿਲਾਂਗੇ ?  
 ਚਲੋ, ਬਾਗ ਵਿਚ ਮਿਲਾਂਗੇ ।  
 ਤੁਸੀਂ ਕਿੰਨੇ ਵਜੇ ਮਿਲੋਗੇ ?  
 ਮੈਂ ਸ਼ਾਮੀ ਛੇ ਵਜੇ ਉੱਥੇ ਪੁੱਜ ਕੇ ਆਣ ਮਿਲਾਂਗਾ ।

SIKHBOOKCLUB.COM

---

ਕਿੰਨੇ = ਕਿਤਨੇ

ਸ਼ਾਮੀ = ਸ਼ਾਮ ਨੂੰ

ਪੁੱਜ ਕੇ = ਪਹੁੰਚ ਕੇ

## ਪ੍ਰਸੰਗ 2

### ਸਤਕਾਰ

ਆਓ ਜੀ, ਜੀ ਆਇਆ ਨੂੰ।  
 ਧੰਨਵਾਦ।  
 ਅਸੀਂ ਤੁਹਾਡੀ ਉਡੀਕ ਕਰ ਰਹੇ ਸਾਂ।  
 ਮਾਫ਼ ਕਰਨਾ, ਸਾਨੂੰ ਰਾਹ ਵਿਚ ਦੇਰ ਲਗ ਗਈ।  
 ਕੋਈ ਗੱਲ ਨਹੀਂ, ਹਾਲੀ ਤਾਂ ਕੁੱਲ ਪੰਜ ਮਿੰਟ ਹੋਏ ਨੇ।  
 ਫਿਰ ਵੀ ਤੁਹਾਨੂੰ ਕਸ਼ਟ ਹੋਇਆ ਏ।  
 ਇਹ ਤੁਹਾਡੀ ਉਦਾਰਤਾ ਏ। ਧੰਨਵਾਦ।  
 ਕੀ ਪੀਓਗੇ ?, ਚਾਹ ਕਿ ਸ਼ਰਬਤ ?  
 ਮੈਨੂੰ ਤਾਂ ਸ਼ਰਬਤ ਸੁਖਾਉਂਦਾ ਨਹੀਂ।  
 ਚੰਗਾ ਚਾਹ ਹੀ ਬਣੇਗੀ, ਬੱਚੀ ਕੀ ਪੀਏਗੀ ?  
 ਬੱਚੀ ਵੀ ਚਾਹ ਪੀ ਲਏਗੀ।  
 ਤੁਹਾਡੀਆਂ ਬੱਚੀਆਂ ਕਿਹੜੇ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਜਾਂਦੀਆਂ ਨੇ ?  
 ਉਹ ਤਾਂ ਜਨਤਾ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਜਾਂਦੀਆਂ ਨੇ।  
 ਉਥੇ ਪੜ੍ਹਾਈ ਚੰਗੀ ਹੁੰਦੀ ਏ ?  
 ਹਾਂ ਜੀ, ਉਥੇ ਚੰਗਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਏ।

---

ਸਤਕਾਰ = ਸੁਆਗਤ

ਉਡੀਕ = ਇੰਤਜ਼ਾਰ

ਹੋਏ ਨੇ = ਹੋਏ ਹਨ

ਹੋਇਆ ਏ = ਹੋਇਆ ਹੈ

ਸੁਖਾਉਂਦਾ = ਮਾਫ਼ਕ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦਾ

ਕਿਹੜੇ ਵਿਚ = ਕਿਸ ਵਿਚ

ਆਓ ਜੀ, ਚਾਹ ਪੀਵੀਏ। ਕੁਰਸੀ ਤੇ ਬੈਠੋ।  
 ਕੋਈ ਗੱਲ ਨਹੀਂ, ਮੈਨੂੰ ਮੰਜਾ ਈ ਠੀਕ ਏ।  
 ਬੱਚੀ ਕੁਰਸੀ ਤੇ ਬੈਠ ਜਾਏ ?  
 ਬੈਠ ਜਾ ਪੁੱਤਰ।  
 ਬਾਦਸ਼ਾਹੋ! ਕੁਝ ਖਾਓ ਨਾ।  
 ਖਾਂਦੇ ਪਏਆਂ ਜੀ।  
 ਚਾਹ ਹੋਰ ਲਓ, ਠੰਡੀ ਤਾਂ ਨਹੀਂ ?  
 ਨਹੀਂ ਜੀ, ਚੰਗੀ ਗਰਮ ਏ।  
 ਬੱਚੀ ਨੇ ਤਾਂ ਠੰਡੀ ਕਰ ਲਈ ਏ  
 ਹਾਂ ਜੀ, ਇਹ ਗਰਮ ਚਾਹ ਘੱਟ ਈ ਪੀਂਦੀ ਏ।  
 ਮੇਰੀਆਂ ਬੱਚੀਆਂ ਵੀ ਚਾਹ ਠੰਡੀ ਕਰ ਕੇ ਪੀਂਦੀਆਂ ਨੇ।  
 ਹਾਲੀ ਸਕੂਲੋਂ ਆਈਆਂ ਨਹੀਂ ?  
 ਬੱਸ ਆਉਣ ਵਾਲੀਆਂ ਨੇ।  
 ਸਕੂਲ ਦੀ ਬਸ ਛੱਡ ਜਾਂਦੀ ਹੋਣੀ ਏ ?  
 ਹਾਂ ਜੀ ਪਰਲੇ ਚੌਕ ਤੇ ਛੱਡ ਜਾਂਦੀ ਏ, ਫਿਰ ਪੈਦਲ ਆਉਂਦੀਆਂ ਹਨ।  
 ਤੁਹਾਡਾ ਮੁੰਡਾ ਤਾਂ ਸਾਈਕਲ ਤੇ ਜਾਂਦਾ ਏ ?  
 ਹਾਂ ਜੀ, ਉਸ ਪਾਸੇ ਕੋਈ ਬਸ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦੀ।  
 ਬੜਾ ਪਿਆਰਾ ਮੁੰਡਾ ਏ। ਜਿਥੇ ਮਿਲੇ ਪ੍ਰੇਮ ਨਾਲ 'ਸਤਿ ਸ੍ਰੀ ਅਕਾਲ' ਬੋਲਦਾ ਏ।

---

ਮੰਜਾ = ਚਾਰਪਾਈ

ਬਾਦਸ਼ਾਹੋ! = ਮਹਾਰਾਜ!

ਖਾਂਦੇ ਪਏਆਂ = ਖਾ ਰਹੇ ਆਂ

ਬੱਸ = ਬੇੜੀ ਮਾਤ੍ਰਾ ਦਾ ਭਾ

ਉਸ ਪਾਸੇ = ਉਸ ਤਰਫ

ਸਤਿ ਸ੍ਰੀ ਅਕਾਲ = ਸੁਆਗਤ ਅਤੇ ਪ੍ਰਣਾਮ ਦਾ ਵਾਕ

## ਅਭਿਆਸ

ਉਹ ਨਕਲ ਕਰ ਰਹਿਆ ਏ ।  
 ਉਹ ਉਡੀਕ ਕਰ ਰਹੇ ਨੇ ।  
 ਤੁਸੀਂ ਲਿਪਾਈ ਕਰ ਰਹੀਆਂ ਓ ।  
 ਤੂੰ ਜਿੰਦ ਕਰ ਰਹੀ ਏ ।  
 ਮੈਂ ਵਿਚਾਰ ਕਰ ਰਹਿਆਂ ।  
 ਅਸੀਂ ਪਾਠ ਕਰ ਰਹੇ ਆਂ ।

ਮਕਾਨ ਨੂੰ ਅੱਗ ਲਗ ਗਈ ਏ ।  
 ਸਾਨੂੰ ਦੇਰ ਲਗ ਗਈ ਏ ।  
 ਤੁਹਾਨੂੰ ਪਿਆਸ ਲਗ ਰਹੀ ਏ ।  
 ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਧੁੱਪ ਲਗ ਰਹੀ ਏ ।  
 ਮਾਈ ਨੂੰ ਠੰਢ ਲਗ ਗਈ ਏ ।  
 ਕੁੱਤੇ ਨੂੰ ਮਾਜ਼ ਲਗ ਗਈ ਏ ।  
 ਬੂਟਿਆਂ ਨੂੰ ਕੀੜਾ ਲਗ ਗਇਆ ਏ ।  
 ਕੰਧ ਨੂੰ ਕੱਲਰ ਲਗ ਗਇਆ ਏ ।  
 ਕੁੱਕੜਾਂ ਨੂੰ ਛੂਤ ਲਗ ਗਈ ਏ ।  
 ਰਾਹੀ ਨੂੰ ਲੋ ਲਗ ਗਈ ਏ ।

---

ਮੈਂ ਕਰ ਰਹਿਆਂ = ਕਰ ਰਿਹਾ ਹਾਂ  
 ਅਸੀਂ ਕਰ ਰਹੇ ਆਂ = ਅਸੀਂ ਕਰ ਰਹੇ ਹਾਂ  
 ਪਿਆਸ = ਤੇਹ

ਪ੍ਰਸੰਗ 3  
ਛੁੱਟੀ ਲਈ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ

ਬਾਬਾ! ਕੀ ਸਾਹਬ ਘਰ ਨੇ ?

ਹਾਂ ਜੀ, ਅਰਾਮ ਕਰਦੇ ਨੇ, ਦੱਸੋ ਕੀ ਹਾਲ ਏ ?

ਮੇਰਾ ਬੱਚਾ ਸਖਤ ਬਿਮਾਰ ਏ, ਮੈਂ ਛੁੱਟੀ ਲੈ ਕੇ ਹੁਣੇ ਜਾਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ।

ਤੁਹਾਡਾ ਨਾਂ ?

ਗੁਲਜ਼ਾਰ ਸਿੰਘ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਕਲਰਕ।

ਅੱਛਾ ਜੀ, ਚਲੋ ਮੇਰੇ ਨਾਲ।

ਕੀ ਗੱਲ ਏ, ਛੁੱਟੀ ਕੇਵਲ ਇਕ ਦਿਨ ਦੀ ਲਿਖੀ ਜੇ ?

ਹਾਂ ਜੀ, ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਭਾਈ ਨੂੰ ਉੱਥੇ ਠਹਰਾ ਕੇ ਮੁੜ ਆਵਾਂਗਾ।

ਬੱਚਾ ਸਖਤ ਬਿਮਾਰ ਏ, ਤਾਂ ਤਿੰਨ ਦਿਨ ਦੀ ਛੁੱਟੀ ਲੈ ਜਾਓ।

ਬੜੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਏ ਆਪਦੀ, ਸਾਹਬ। ਜੇਕਰ ਬੱਚਾ ਛੇਤੀ ਵਲ ਹੋ ਗਇਆ, ਤਾਂ ਪਰਸੋ  
ਮੁੜ ਆਵਾਂਗਾ।

ਚੰਗਾ।

ਧੰਨਵਾਦ।

ਗੱਲ ਸੁਣ ਗੁਲਜ਼ਾਰ ਸਿੰਘ।

ਜੀ।

ਇਹ ਆਪਣੀ ਦਰਖਾਸਤ ਜਰਾ ਓਸ ਦੇ ਵਿਚ ਪਾ ਦੇ ਤਾਂ ਜੋ ਚਪੜਾਸੀ ਕਲ  
ਦਫਤਰ ਲੈਂਦਾ ਜਾਏ।

ਚੰਗਾ ਜੀ, ਸਤ ਬਚਨ।

---

ਕਰਦੇ ਨੇ = ਕਰਦੇ ਹਨ

ਏ = ਹੈ

ਲਿਖੀ ਜੇ = ਤੁਸਾਂ ਨੇ ਲਿਖੀ ਹੈ (ਜੇ—ਭਾਵ, ਸਾਵਧਾਨ)

ਆਪਦੀ = ਤੁਹਾਡੀ

ਛੇਤੀ = ਜਲਦੀ

ਵਲ = ਠੀਕ

### ਅਭਿਆਸ

ਨੌਕਰ ਛੁੱਟੀ ਲੈ ਗਇਆ।  
 ਆਪਣੀ ਤਨਖਾਹ ਵੀ ਲੈ ਗਇਆ।  
 ਉਹ ਵੱਡੇ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਲੈ ਗਈ।  
 ਉਹ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਲੈ ਗਈਆਂ।  
 ਮੈਂ ਬਿਸਤਰਾ ਵੀ ਲੈ ਗਇਆ।  
 ਅਸੀਂ ਕੁਝ ਵੀ ਨਹੀਂ ਲੈ ਗਏ।  
 ਸੇਵਕ ਜਸ ਲੈ ਗਏ।  
 ਬੁੱਢੇ ਨੂੰ ਬਿਮਾਰੀ ਲੈ ਗਈ।  
 ਚਿੜੀ ਨੂੰ ਬਾਜ਼ ਲੈ ਗਇਆ।  
 ਬਾਜ਼ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਮੋਤ ਲੈ ਗਈ।

SIKHBOOKCLUB.COM

## ਪ੍ਰਸੰਗ 4

## ਓਪਰੇ ਬੰਦੇ ਨਾਲ

ਕੀ, ਤੁਸੀਂ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲ ਲੈਂਦੇ ਓ ?  
 ਹਾਂ ਜੀ, ਹੁਣ ਤਾਂ ਮੈਂ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲ ਲੈਂਦਾ ਹਾਂ।  
 ਤੁਸੀਂ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਵੀ ਜਾਣਦੇ ਓ (ਹੋ) ?  
 ਨਹੀਂ ਜੀ, ਮੈਂ ਤਾਂ ਹਿੰਦੀ ਤੇ ਤਮਿਲ ਜਾਣਦਾ (ਜਾਣਦਾ ਹਾਂ)।  
 ਤਮਿਲ ਤਾਂ ਮੈਂ ਵੀ ਸਿਖੀ ਸੀ, ਪਰ ਹੁਣ ਭੁਲਦੀ ਜਾਂਦੀ ਏ (ਹੈ)।  
 ਰੇਡੀਓ ਦੇ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਸੁਣੋ, ਪਤ੍ਰਿਕਾਵਾਂ ਪੜ੍ਹੋ, ਫਿਰ ਸਾਰੀ ਬੋਲੀ ਤਾਜ਼ਾ ਹੋ ਜਾਏਗੀ।  
 ਤੁਹਾਨੂੰ ਇਹ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਚੰਗਾ ਲੱਗਾ ਏ (ਹੈ) ?  
 ਹਾਂ ਜੀ, ਮੈਨੂੰ ਬਹੁਤ ਚੰਗਾ ਲੱਗਾ ਏ (ਹੈ)।  
 ਤੁਹਾਡੇ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਵੀ ਭੰਗੜਾ ਪਾਉਂਦੇ ਨੇ ?  
 ਨਹੀਂ ਜੀ, ਉੱਥੇ ਹੋਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਚ ਹੁੰਦੇ ਨੇ।  
 ਤੁਸੀਂ ਤਾਂ ਕਰਨਾਟਕ ਸੰਗੀਤ ਜਾਣਦੇ ਹੋਵੋਗੇ ?  
 ਹਾਂ ਜੀ, ਮਾੜਾ-ਮੋਟਾ ਜਾਣਦਾ (ਜਾਣਦਾ ਹਾਂ)।  
 ਕਿਸੇ ਦਿਨ ਸਾਡੇ ਘਰ ਆਉਣਾ ਸੀ।  
 ਬਹੁਤ ਅੱਛਾ ਜੀ, ਮੈਂ ਅਗਲੇ ਐਤਵਾਰ ਆ ਜਾਵਾਂਗਾ।  
 ਜ਼ਰੂਰ ਆਉਣਾ, ਆਪਾਂ ਗੀਤ ਗਾਵਾਂਗੇ।  
 ਚੰਗਾ ਜੀ।  
 ਚੰਗਾ।

---

ਲੈਂਦੇ ਓ = ਲੈਂਦੇ ਹੋ

ਭੰਗੜਾ = ਮਰਦਾਂ ਦਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਨਾਚ

ਭੰਗੜਾ ਪਾਉਣਾ = ਭੰਗੜਾ ਨਾਚ ਕਰਨਾ

ਆਪਾਂ = ਅਸੀਂ (ਵਕਤਾ ਤੇ ਸ਼੍ਰੋਤਾ) ਦੋਵੇਂ



### ਅਭਿਆਸ

ਤੁਸੀਂ ਪੰਜਾਬੀ ਸਮਝ ਲੈਂਦੇ ਓ ?  
 ਹਾਂ ਜੀ ਮੈਂ ਬੋਲ ਵੀ ਲੈਂਦਾ।  
 ਇਹ ਕੁੜੀ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਲਿਖ ਲੈਂਦੀ ਏ।  
 ਸਾਡੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਵਾਢੀਆਂ ਵੀ ਕਰ ਲੈਂਦੀਆਂ ਨੇ।  
 ਛੋਟਾ ਮੁੰਡਾ ਚਿੱਠੀ ਪੜ੍ਹ ਲੈਂਦਾ ਏ।  
 ਮੈਂ ਮੂਰਤ ਵਾਹ ਲੈਨਾਂ।  
 ਓਹ ਹਲ ਵਾਹ ਲੈਂਦਾ ਏ।  
 ਅਸੀਂ ਮਾੜੀ-ਮੋਟੀ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਪੜ੍ਹ ਲੈਂਦੇ ਆਂ।  
 ਤੂੰ ਗਾਣਾ ਗਾ ਲੈਂਦਾ ਏ ?  
 ਨਹੀਂ ਜੀ, ਮੈਂ ਕੇਵਲ ਸੁਣ ਲੈਨਾਂ।  
 ਮੇਰਾ ਮੁੰਡਾ ਚਾਰ ਰੁਪਏ ਦੀ ਮਜ਼ਦੂਰੀ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਏ।  
 ਮੈਂ ਵੀ ਦਿਹਾੜੀ ਪੰਜ ਰੁਪਏ ਦਾ ਵਾਣ ਵਟ ਲੈਂਦਾ।

SIKHBOOKCLUB.COM

---

ਵਾਢੀ = ਫਸਲ ਦੀ ਕਟਾਈ  
 ਮੂਰਤ ਵਾਹੁਣਾ = ਚਿਤ੍ਰ ਬਣਾਉਣਾ  
 ਮੈਂ ਵਾਹ ਲੈਨਾਂ = ਮੈਂ ਵਾਹ ਲੈਂਦਾ ਹਾਂ  
 ਮਾੜੀ ਮੋਟੀ = ਥੋੜੀ ਬਹੁਤ, ਕੁਝ ਕੁ  
 ਤੂੰ ਗਾ ਲੈਂਦਾ ਏ = ਤੂੰ ਗਾ ਲੈਂਦਾ ਹੈਂ

## ਪ੍ਰਸੰਗ 5

## ਰਿਕਸ਼ੇ ਵਾਲੇ ਦੇ ਨਾਲ

ਰਿਕਸ਼ੇ ਵਾਲੇ! ਠਾਹਰ ਜਾ! ਰਿਕਸ਼ਾ ਖਾਲੀ ਏ ?

ਜੀ, ਦੱਸੋ ਕਿਥੇ ਜਾਣਾ ਜੇ ?

ਕਸ਼ਮੀਰ ਹੋਟਲ ਪਤਾ ਈ ? ਕਿੱਥੇ ਏ ?

ਹਾਂ ਜੀ, ਉਹ ਤਾਂ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਹੋਟਲ ਏ।

ਕਿੰਨੀ ਦੂਰ ਹੋਵੇਗਾ ?

ਬੱਸ ਕੋਈ ਢਾਈ ਮੀਲ।

ਮੇਰੀ ਰਿਕਸ਼ਾ ਅੱਧੇ ਘੰਟੇ ਵਿਚ ਪਹੁੰਚਾ ਦੇਵੇਗੀ।

ਕਿੰਨੇ ਪੈਸੇ ?

ਸਾਹਬ! ਪੰਜਾਹ ਨਵੇਂ ਪੈਸੇ।

ਪੰਜਾਹ, ਪੈਸੇ ਹੈਨ ਤਾਂ ਬਹੁਤ, ਪਰ ਮੈਨੂੰ ਜਲਦੀ ਏ, ਚਲ!

ਬਿਸਤਰਾ ਪਿੱਛੇ ਰਖ ਦੇਂਦੇ ਆਂ (ਵਾਂ), ਟ੍ਰੰਕ ਅਗੇ ਠੀਕ ਏ।

ਜਲਦੀ ਚਲੋ।

ਲੋ ਜੀ, ਚਲੀ ਮੇਰੀ 'ਤੁਫਾਨ ਮੇਲ' ਰਿਕਸ਼ਾ!

ਅਗਲੇ ਮੋੜ ਤੇ ਹੌਲੀ ਹੌਲੀ ਚਲਣਾ, ਖਵਰੇ ਮੇਰਾ ਭਰਾ ਉੱਥੇ ਮੈਨੂੰ ਉਡੀਕਦਾ ਹੋਵੇ।

ਬਹੁਤ ਅੱਛਾ ਜੀ, ਉੱਥੇ ਰੁਕ ਜਾਵਾਂਗੇ।

ਧਿਆਨ ਨਾਲ ਵੇਖਾਂਗੇ ਚਿੰਤਾ ਨ ਕਰੇ।

---

ਪਤਾ ਈ ? = ਤੈਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ? ('ਤੈਨੂੰ ਪਤਾ ਏ, ਤੇ ਪਤਾ ਹੋਈ, ਵੀ ਬੋਲਦੇ ਹਨ')

ਪੰਜਾਹ = 50

ਖਵਰੇ = ਸਾਇਦ, ਕੀ ਪਤਾ

ਪ੍ਰਸੰਗ 6

ਫਲ ਵਾਲੇ ਦੇ ਨਾਲ

ਕਿਉਂ ਭਈ! ਏਹ ਸੰਗਤਰੇ ਤਾਜੇ ਨੇ ?  
 ਹਾਂ ਜੀ, ਵੇਖੋ ਤਾਂ ਹੁਣੇ ਲਿਆਂਦੇ ਨੇ।  
 ਮੇਰਾ ਭਰਾ ਹਸਪਤਾਲ ਵਿਚ ਬਿਮਾਰ ਪਇਆ ਏ;  
 ਉਸ ਵਾਸਤੇ ਤਾਜਾ ਫਲ ਚਾਹੀਦਾ ਏ।  
 ਇਸ ਲਈ ਤਾਂ ਅਸੀਂ ਹਸਪਤਾਲ ਕੋਲ ਤਾਜੇ ਫਲਾਂ ਦੀ ਦੁਕਾਨ ਖੋਲ੍ਹੀ ਏ।  
 ਇਹ ਦੇ ਸੰਗਤਰੇ ਦੇ ਦਿਓ।  
 ਬਹੁਤ ਅੱਛਾ ਜੀ।  
 ਪੈਸੇ ?  
 ਸੱਠ ਨਵੇਂ ਪੈਸੇ।  
 ਕੱਲ ਤਾਂ ਪੱਚੀ ਪੱਚੀ ਪੈਸੇ ਸੀ।  
 ਹਾਂ ਜੀ ਕੱਲ ਵਾਲੇ ਭਾਵੇਂ ਵੀਹ ਵੀਹ ਪੈਸੇ ਲੈ ਜਾਓ।  
 ਗਰਮੀਆਂ ਵਿਚ ਫਲ ਛੇਤੀ ਖਰਾਬ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਏ।  
 ਇਸੇ ਲਈ ਤਾਜਾ ਫਲ ਮਹਿੰਗਾ ਹੁੰਦਾ ਜਾਂਦਾ ਏ।  
 ਰੱਲ ਤਾਂ ਠੀਕ ਏ; ਪਰ ਇੰਨਾ ਮਹਿੰਗਾ ਕੋਣ ਕੋਣ ਲਏਗਾ :  
 ਕਦੋਂ ਤਕ ਲਏਗਾ।  
 ਇਹ ਤਾਂ ਪੁੱਜਣ ਦਾ ਸੋਦਾ ਏ।  
 ਚੰਗਾ, ਇਕੋ ਸੰਗਤਰਾ ਲੈ ਜਾਂਦਾਂ।  
 ਤੀਹ ਪੈਸੇ ਜੀ।  
 ਏਹ ਲੈ ਤੀਹ। ਠੀਕ ?  
 ਠੀਕ।

---

ਭਈ = ਪਈ

ਇਸੇ ਲਈ = ਇਸੇ ਕਾਰਨ

ਪੈਸੇ ? = ਭਾਵ, ਕਿੰਨੇ ਪੈਸੇ

ਪੱਚੀ ਪੱਚੀ ਪੈਸੇ = 25 ਪੈਸੇ ਦਾ ਇਕ

ਮਹਿੰਗਾ = ਮਹੰਗਾ

ਪੁੱਜਣ ਦਾ ਸੋਦਾ = ਉਹ ਸੋਦਾ ਜੋ ਵਾਰਾ ਖਾਏ, ਠੀਕ ਲੱਗੇ

ਲੈ = ਤੂੰ ਲੈ

ਤੀਹ = 30

## ਅਭਿਆਸ

ਗੱਡੀ ਟੁਰ ਚੱਲੀ ਜੇ  
 ਗੱਡੀ ਟੁਰਨ ਵਾਲੀ ਏ  
 ਗੱਡੀ ਜਾਣ ਨੂੰ ਤਿਆਰ ਏ  
 ਗੱਡ ਟੁਰੀ ਕਿ ਟੁਰੀ  
 ਗੱਡੀ ਦਾ ਵੇਲਾ ਹੋ ਗਇਆ ਏ  
 ਗੱਡੀ ਹੁਣ ਜਾਏਗੀ  
 ਗੱਡੀ ਨੇ ਹੁਣ ਜਾਣਾ ਏ  
 ਗੱਡੀ ਜਾਣ ਲੱਗੀ ਏ  
 ਗੱਡੀ ਟੁਰੀ ਚਾਹੁੰਦੀ ਏ

ਵੇਲੇ ਸਿਰ ਪਹੁੰਚ ਜਾਈ  
 ਇਸ ਦਾ ਦੋਸ਼ ਮੇਰੇ ਸਿਰ ਨ ਲਾਈ  
 ਸਿਰ ਸਿਰ ਕਰਜਾ ਚੜ੍ਹਿਆ ਪਇਆ ਏ।

SIKHBOOKCLUB.COM

---

ਟੁਰੀ ਕਿ ਟੁਰੀ = ਹੁਣੇ ਟੁਰ ਚਲੀ  
 ਵੇਲੇ ਸਿਰ = ਸਮੇਂ ਅਨੁਸਾਰ  
 ਮੇਰੇ ਸਿਰ = ਮੇਰੇ ਜਿੱਸੇ  
 ਸਿਰ ਸਿਰ ਕਰਜਾ = ਬਹੁਤ ਭਾਰਾ ਕਰਜਾ

## ਪ੍ਰਸੰਗ 7 ਬਜਾਜ਼ ਦੀ ਦੁਕਾਨ ਤੇ

ਸ਼ਾਹ ਜੀ, ਜੈ ਰਾਮ ਜੀ ਦੀ।  
ਜੈ ਰਾਮ ਜੀ! ਆਉ। ਮੁੱਦਤਾਂ ਹੋਈਆਂ ਦਰਸ਼ਨ ਦਿੱਤੇ।  
ਵਾਢੀਆਂ 'ਚ ਲੱਗੇ ਰਹੇ, ਸਾਥੋਂ ਆਉਣ ਨਹੀਂ ਹੋਇਆ।  
ਮੈਂ ਕਿਹਾ, ਛੱਬੀ ਦੀ ਮਲਮਲ ਲਈ ਤਾਂ ਵੀਰ ਭਗਵਾਨ ਅਵੱਸ ਆਏਗਾ।  
ਹੁਣ ਤਾਂ ਆ ਈ ਗਿਆ, ਵੇਖ ਪਿਆਰ ਦੀ ਖਿੱਚ।  
ਸੱਚਾ ਵਖਰ-ਵਪਾਰ ਪਿਆਰ ਈ ਏ।  
ਸੁੱਕੇ ਪ੍ਰੇਮ ਨਾਲ ਪਿੰਡਾ ਤਾਂ ਕਜਿਆ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦਾ, ਨਾ ਪਗੜੀ ਬਣ ਸਕਦੀ ਏ।  
ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ। ਲੈ ਜਾ ਭਗਵਾਨਿਆ ਪਗੜੀ। ਤੈਥੋਂ ਪਗੜੀ ਸਾਨੂੰ ਵਧੇਰੇ ਪਿਆਰੀ  
ਏ ?  
ਨਹੀਂ ਮੈਂ ਹਸਦਾ। ਹੁਣ ਇਹ ਦੱਸੋ, ਕਮੀਜ ਤੇ ਕਿੰਨਾ ਕਪੜਾ ਲਗੇਗਾ, ਜੇ ਬਰ ਹੋਵੇ  
ਪੋਣਾ ਮੀਟਰ ?  
ਸਾਢੇ ਤਿੰਨ ਮੀਟਰ ਕਪੜਾ ਕਮੀਜ ਤੇ ਮੁਕਦਾ ਨਹੀਂ।  
ਮੁਕਦਾ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ ਅਗਲੀ ਵੇਰ ਤਾਂ ਪੋਣੇ ਚਾਰ ਮੀਟਰ ਲਗਿਆ ਸੀ ?  
ਉਸ ਦਾ ਬਰ ਘੱਟ ਸੀ, ਫਿਰ ਉਹ ਸੀ ਸੁੰਗੜਨ ਵਾਲਾ ਕਪੜਾ।  
ਇਹ ਤਾਂ ਮੱਖਣ ਜੇ ਮੱਖਣ।  
ਰਜਾਈਆਂ ਲਈ ਨਵੀਆਂ ਛੀਟਾਂ ਵੀ ਆਈਆਂ ਜੇ।  
ਉਹ ਵੀ ਵਿਖਾਓ, ਤੁਹਾਡੀ ਭਰਜਾਈ ਆਖਦੀ ਸੀ, ਚੰਗੀ ਚੀਜ਼ ਹੋਵੇ, ਕੁੜੀ ਦੇ  
ਦਾਜ਼ ਲਈ।  
ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ, ਆਪਣੀ ਕੁੜੀ ਲਈ ਚੰਗੀ ਚੀਜ਼ ਨਾ ਦਿਆਂਗੇ ਤਾਂ ਕਾਹਦੇ ਲਈ  
ਦੁਕਾਨ ਖੋਲ੍ਹੀ ਏ। ਮਹੂਰਤ ਕੀ ਨਿਕਲਿਆ ਏ ?  
ਕੱਤੇ ਦੀ ਪੁੰਨਿਆਂ।

ਮੁੱਦਤਾਂ = ਮੁੱਦਤ, ਕਾਫੀ ਸਮਾਂ  
ਵਾਢੀਆਂ = ਫਸਲਾਂ  
ਸਾਥੋਂ = ਅਸਾਂ ਤੋਂ  
ਆਉਣ ਨਹੀਂ = ਆ ਨਹੀਂ  
ਹੋਇਆ = ਸਕੇ  
ਛੱਬੀ = ਨੰ. 26  
ਅਵੱਸ = ਜ਼ਰੂਰ  
ਵਖਰ-ਵਪਾਰ = ਸੋਦਾ

ਬਰ = ਚੋੜਾਈ  
ਮੁਕਦਾ ਨਹੀਂ = ਕਾਫੀ ਹੈ  
ਸੁੰਗੜਨ = ਘਣਾ ਹੋ ਕੇ ਘੱਟ ਜਾਣਾ  
ਮੱਖਣ ਜੇ = ਵੇਖੋ ਜੀ ਇਹ ਮੱਖਣ  
ਵਾਂਗ ਮੁਲਾਇਮ ਹੈ  
ਭਰਜਾਈ = ਭਾਬੀ  
ਦਾਜ਼ = ਦਹੇਜ਼  
ਪੁੰਨਿਆਂ = ਪੂਰਨਮਾਸੀ

ਤਾਂ ਹੋਰ ਕਪੜੇ ਵੀ ਲੈ ਜਾਓ, ਉਨ੍ਹੀ ਦਿਨੀਂ ਭੀੜ ਪੈ ਜਾਏਗੀ, ਕਪੜੇ ਦੀ ਥੁੜ ਪੈ ਜਾਏਗੀ।

ਮੇਰਾ ਤਾਂ ਹੱਥ ਤੰਗ ਏ ਕੋਈ ਨਹੀਂ, ਉਧਾਰ ਸੁਧਾਰ ਸਹੀ।

ਕੋਈ ਸੋਹਣਾ ਜਿਹਾ ਚਿਕਨ ਵਿਖਾਓ।

ਲੋ ਜੀ, ਵੰਨ ਸਵੰਨੇ ਚਿਕਨ ਲਖਨਊ ਦੇ।

ਦੂਜੀ ਗਠ ਵੀ ਵਿਖਾਉਂਦੇ ਆਂ।

ਬੜੀ ਪਾਣ ਲਗੀ ਏ, ਖਵਰੇ ਧੋ ਕੇ ਕੀ ਨਿਕਲੇਗਾ।

ਵਹਮ ਨ ਕਰੋ ਜੀ। ਇਹ ਮਾਲ ਸੋਲ੍ਹਾਂ ਆਨੇ ਖਰਾ ਜੇ।

ਖਰਾ ਤਾਂ ਹੋਏਗਾ, ਭਾ ਕੀ ਬਣਾਇਆ ਜੇ ?

ਸਾਢੇ ਤਿੰਨ ਰੁਪਏ ਮੀਟਰ, ਕੁਟ ਕੁਟ ਕੇ ਹੰਢਾਓ।

ਤੋਹਫਾ ਚੀਜ਼ ਜੇ। ਬੂਟੀ ਵੀ ਬਰੀਕ, ਵਧੀਆ।

ਆਪੇ ਸਲਾਹੀ ਜਾਂਦੇ ਓ; ਵੇਖੋ ਦੋ ਥਾਈਂ ਟੁਕਿਆ ਹੋਇਆ ਏ।

ਕੀ ਆਖਾਂ ਭਗਵਾਨਾਂ, ਇਨ੍ਹਾਂ ਚੂਹਿਆਂ ਨੇ ਮੇਰੇ ਨਕ ਵਿਚ ਦਮ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਏ।

ਖਵਰੇ ਕਿੰਨੇ ਟੋਟੇ ਟੁੱਕੇ ਪਏ ਨੇ।

ਦਰਜ਼ੀ ਲੈ ਜਾਂਦੇ ਨੇ, ਕਪ-ਟੁਕ ਕੇ ਕਪੜੇ ਬਣਾ ਲੈਂਦੇ ਨੇ।

ਸਾਡੀ ਤਾਂ ਸਾਰੀ ਮੂੜ੍ਹੀ ਦੁਕਾਨ 'ਚ ਲਗਦੀ ਜਾਂਦੀ ਏ।

ਗਲ ਗਲ ਕੇ ਘਿਓ ਬਣੇਗੀ।

ਮਾਖੀਓਂ ਨ ਸਚੀ ਬਣੇਗੀ ਸੋਨਾ।

ਦੱਸੋ ਕਪੜਾ ਤਿੰਨ ਕਮੀਜਾਂ ਦਾ, ਜਾਂ ਚਾਰ ਦਾ ਛਾੜੀਏ ?

ਚਾਹੀਦੀ ਤਾਂ ਇਕੋ ਸੀ, ਚਲੇ ਦੋ ਦਾ ਛਾੜ ਦਿਓ।

ਇਕ ਪਗੜੀ, ਇਕ ਰਜਾਈ ਦਾ ਉਛਾੜ, ਚਿਕਨ ਅੱਧਾ ਥਾਨ, ਕੁੱਲ ਹੋਏ, ਰਬ

ਤੇਰੀ ਭਲੀ ਵਾਰ ਕਰੇ, ਸਾਢੇ ਪੈਂਠ ਰੁਪਏ, ਅੱਜ ਤਰੀਕ ਏ ਪੰਜ।

ਜੇ ਰਾਮ ਜੀ ਦੀ।

ਕੱਜਣਾ = ਢਕ ਲੈਣਾ

ਤੈਥੋਂ = ਤੇਰੇ ਤੋਂ

ਵੰਨ ਸੁਵੰਨੇ = ਰੰਗ ਬਰੰਗੇ

ਪਾਣ = ਮਾਇਆ, ਮਾਵਾ

ਖਵਰੇ = ਕੀ ਪਤਾ

ਭਾ = ਭਾਉ, ਭਾਵ, ਕੀਮਤ

ਵਧੀਆ = ਸੁੰਦਰ

ਥਾਈਂ = ਥਾਵਾਂ ਤੇ

ਥੁੜ = ਘਾਟ, ਕਮੀ

ਮੂੜ੍ਹੀ = ਮੂਲਧਨ

ਘਿਓ = ਘੀ

ਮਾਖੀਓਂ = ਸ਼ਰਦ

ਉਛਾੜ = ਗਿਲਾਫ਼

ਪੈਂਠ = 65

ਤਰੀਕ = ਮਿਤੀ

### ਅਭਿਆਸ

ਉਹ ਸਾਰਿਆਂ ਨਾਲੋਂ ਮਾੜਾ ਹੈ।  
ਉਹ ਸਾਰਿਆਂ ਤੋਂ ਮਾੜਾ ਹੈ।  
ਉਹ ਸਾਰਿਆਂ ਵਿਚੋਂ ਮਾੜਾ ਹੈ।

ਵੱਡਾ ਸਾਰਾ ਗਡਵਾ ਸੀ।  
ਵੱਡੇ ਸਾਰੇ ਰੁਖ ਸਨ।  
ਵੱਡੀ ਸਾਰੀ ਦੇਗ ਸੀ।  
ਵੱਡੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਕੋਠੀਆਂ ਸਨ।

ਮਤੇ! ਤੂੰ ਗਲਤ ਆਖਦਾ ਹੋਵੇਂ  
ਵੇਖਾਂ! ਸ਼ਾਇਦ ਰਾਹ 'ਚ ਆਉਂਦਾ ਹੋਵੇ।  
ਖਵਰੇ, ਖੂਹ ਤੇ ਰੁਕ ਗਇਆ ਹੋਵੇ।  
ਖਵਰੇ ਮਾਮਿਆਂ ਨੇ ਰੋਕ ਲਇਆ ਹੋਵੇ।

ਇਧਰ ਅਸੀਂ ਉਡੀਕ ਕਰਦੇ ਹੋਵੀਏ,  
ਉਧਰੋਂ ਉਹ ਉਡੀਕ ਕਰਦੇ ਹੋਵਨ,  
ਗੱਲ ਕਿਵੇਂ ਬਣੇਗੀ ?

---

ਮਾੜਾ = ਨਿਰਬਲ  
ਸਾਰਿਆਂ ਨਾਲੋਂ = ਸਭ ਤੋਂ  
ਵੱਡਾ ਸਾਰਾ = ਵੱਡਾ ਜੇਹਾ  
ਖਵਰੇ = ਸ਼ਾਇਦ, ਮਤੇ  
ਉਡੀਕ = ਇੰਤਜ਼ਾਰ  
ਗੱਲ ਬਣੇਗੀ = ਕੰਮ ਹੋਏਗਾ

## ਪ੍ਰਸੰਗ 8

## ਮਾਂ ਪੁਤ

ਦੀਪਿਆ! ਰੋਨਾਂ ਕਿਉਂ ਏ ?

ਬੇਬੇ! ਮੁੰਡੇ ਆਖਦੇ ਨੇ ਮੈਂ ਯਤੀਮਾਂ।

ਉਹ ਤਾਂ ਤੈਨੂੰ ਐਵੇਂ ਛੇੜਦੇ ਨੇ।

ਨਹੀਂ ਉਹ ਆਖਦੇ ਨੇ—ਤੈਨੂੰ ਯਤੀਮ ਖਾਨੇ 'ਚੋਂ ਆਂਦਾ ਸੀ।

ਦੱਸਦੇ ਨੇ, ਜਿਥੇ ਮੈਂ ਮੁੰਡਿਆਂ ਨਾਲ ਰਹਿੰਦਾ ਸਾਂ, ਯਤੀਮਖਾਨਾ ਸੀ।

ਉਹ ਝੂਠ ਬੋਲਦੇ ਨੇ। ਵੇਖੀਂ ਨਾ, ਜਦੋਂ ਤੂੰ ਨਿੱਕਾ ਸੈਂ, ਤੇ ਮੈਂ ਬਿਮਾਰ ਪੈ ਗਈ ਸਾਂ, ਡਾਢੀ ਬਿਮਾਰ ਬਚਣ ਦੀ ਵੀ ਕੋਈ ਆਸ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਮੈਂ ਇਕੱਲੀ ਸਾਂ। ਮੈਂ ਪਈ ਮੇਰੇ ਪੁਤ ਨੂੰ ਰੋਟੀ ਕੋਣ ਪਕਾ ਕੇ ਦਏਗਾ। ਕੁਝ ਚਿਰ ਲਈ ਮੈਂ ਤੈਨੂੰ ਓਥੇ ਘਲ ਦਿੱਤਾ ਸੀ।

ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਠੀਕ ਹੋ ਗਈ, ਮੈਂ ਤੈਨੂੰ ਵਾਪਸ ਲੈ ਆਈ ਸਾਂ।

ਪੁੱਤ! ਤੂੰ ਕਿਉਂ ਯਤੀਮ ਹੋਵੇਂ, ਉਹ ਝੂਠ ਬੋਲਦੇ ਨੇ।

ਝੂਠ ਹੀ ਹੋਵੇਗਾ, ਤਾਂਹੀਓਂ ਹਸਦੇ ਸਨ।

ਹਾਂ, ਸਾਡਾ ਦੀਪਾ ਤਾਂ ਸਾਡਾ ਪੁਤ ਏ।

ਤੇਰਾ ਬਾਪੂ ਜੀਉਂਦਾ ਏ, ਮਾਂ ਜੀਉਂਦੀ ਏ।

ਕੋਈ ਯਤੀਮ ਕਿਵੇਂ ਆਖ ਸਕਦਾ ਏ।

ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦੱਸ ਦਿਆਂਗਾ, ਬੇਬੇ ਜਦੋਂ ਡਾਢੀ ਬਿਮਾਰ ਸੀ ਮੈਂ ਕੁਝ ਦਿਨ ਯਤੀਮਖਾਨੇ ਰਹਿਆ ਸਾਂ, ਫਿਰ ਆਪਣੇ ਘਰ ਆ ਗਇਆ।

ਬੇਬੇ! ਠੀਕ ਏ ਨਾ ਗੱਲ ?

ਹਾਂ ਪੁੱਤ ਨਿਪਟ ਠੀਕ। ਹੁਣ ਮੂੰਹ ਹੱਥ ਪੈ ਕਪੜੇ ਬਦਲ, ਬਾਪੂ ਆਉਣ ਵਾਲਾ ਏ। ਚੰਗਾ।

ਦੀਪਿਆ = ਓਏ ਦੀਪ

ਰੋਨਾ ਏ = ਰੋਂਦਾ ਹੈ

ਆਖਣਾ = ਕਹਣਾ

ਆਂਦਾ ਸੀ = ਲਿਆਂਦਾ ਸੀ

ਵੇਖੀ ਨਾ = ਵਿਚਾਰ ਕਰ

ਨਿੱਕਾ = ਛੋਟਾ

ਡਾਢੀ = ਸਖਤ

ਚਿਰ = ਦੇਰ

ਘੱਲ = ਭੇਜ

ਤਾਂਹੀਓਂ = ਤਦੋਂ



# ਅਭਿਆਸ

ਜੀ, ਤੁਹਾਡਾ ਨਾਂ ਕੀ ਏ ?  
 ਤੁਸੀਂ ਕਿਥੇ ਰਹਿੰਦੇ ਓ ?  
 ਤੁਸੀਂ ਕੀ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਓ ?  
 ਤੁਹਾਡੇ ਕਿਨੇ ਬੱਚੇ ਨੇ ?  
 ਤੁਹਾਡੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਦਾ ਕੀ ਹਾਲ ਏ ?  
 ਤੁਹਾਡੀ ਮਾਤਾ ਜੀ ਦਾ ਕੀ ਹਾਲ ਏ ?  
 ਤੁਸੀਂ ਦਫ਼ਤਰ ਗਏ ਸਓ ?  
 ਤੁਸੀਂ ਕੀ ਪੜ੍ਹਦੇ ਓ ?  
 ਡਾਕਖਾਨਾ ਕਿਥੇ ਏ ?  
 ਹਸਪਤਾਲ ਕਿਹੜੇ ਪਾਸੇ ਏ ?  
 ਫਲ ਕਿਵੇਂ ਲਾਇਆ ਜੇ ?  
 ਅੱਜ ਕੀ ਵਾਰ ਏ ?  
 ਖਾਣਾ ਲਿਆ ਦਿਓਗੇ ਜੀ ?  
 ਮੈਂ ਮਦਦ ਕਰਾਵਾਂ ?  
 ਇਹ ਕੰਮ ਕਿਵੇਂ ਕਰਨਾ ਏ ?  
 ਤੁਸੀਂ ਫਿਰ ਕਦੇ ਆਓਗੇ ?  
 ਅਗਲੀ ਵੇਰ ਭੈਣ ਜੀ ਨੂੰ ਨਾਲ ਲਿਆਓਗੇ ?  
 ਕੀ ਪਤਾ!

ਤੁਹਾਨੂੰ ਮਿਲ ਕੇ ਬੜੀ ਖੁਸ਼ੀ ਹੋਈ।  
 ਤੁਹਾਡੀ ਬੜੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਏ।  
 ਤੁਸੀਂ ਬੜੀ ਖੇਚਲ ਕੀਤੀ।  
 ਮੈਨੂੰ ਭੁੱਖ ਲੱਗੀ ਏ।  
 ਮੈਨੂੰ ਪਿਆਸ ਲੱਗੀ ਏ।  
 ਮੈਂ ਥਕ ਗਇਆ ਹਾਂ।  
 ਹੁਣ ਮੈਂ ਘਰ ਜਾਣਾ ਹੈ।  
 ਤੁਹਾਨੂੰ ਫਿਰ ਮਿਲਣ ਦੀ ਆਸ ਰਖਦਾ ਹਾਂ।  
 ਧੰਨਵਾਦ ਜੀ।  
 ਖਿਆ ਕਰਨਾ, ਮੈਂ ਤੁਹਾਡੀ ਬੋਲੀ ਨਹੀਂ ਜਾਣਦਾ।

ਮੈਂ ਤੁਹਾਡੀ ਬੋਲ ਸਿਖ ਰਹਿਆ ਹਾਂ ।  
 ਉਸ ਦਾ ਨਾਂ ਕੀ ਏ,  
 ਜਰਾ ਫਿਰ ਦੱਸਣਾ ਜੀ ।  
 ਜਰਾ ਹੋਲੀ ਹੋਲੀ ਬੋਲੋ ਜੀ ।  
 ਇਹ ਉਚਾਰਨ ਮੇਰੇ ਲਈ ਐਥਾ ਏ ।  
 ਜੀ, ਮੇਰੀ ਟੁੱਟੀ ਭੱਜੀ ਬੋਲੀ ਵਲ ਧਿਆਨ ਨ ਦੇਣਾ ।  
 ਮੈਂ ਹਾਲੀ ਸਿਖ ਰਹਿਆ ਹਾਂ ।

SIKHBOOKCLUB.COM

### प्रसंग 1

#### \*पंजाबी बात चीत के प्रसंगों का हिन्दी रूपान्तर

आप का नाम क्या है ?  
मेरा नाम है रणजी सिंह।  
आप यहाँ कब से रहते हैं ?  
कोई दो वर्ष हुए।  
आप का बड़ा भाई क्या काम करता है ?  
वह तो बजाजी की दुकान करता है।  
उनका घर कहां है ?  
वह तो छावनी में रहते हैं।  
छावनी यहां से कितनी दूर है ?  
कोई पौने तीन मील दूर है।  
क्या आप भी वहां से आते हैं ?  
जी हां, वहां से बस में आ जाता हूं।  
आप कल मेरे पास आठ बजे आ सकेंगे ?  
जी हां, मैं साढ़े आठ बजे आ जाऊंगा।  
अपनी बच्ची को भी लेते आइए, वह बड़ी प्यारी बच्ची है।  
क्यों नहीं वह भी आ जाएगी।  
साढ़े आठ बजे ठीक है ना।  
जी हाँ बहुत ठीक है।  
आप का पता क्या है ?  
दो सौ बावन बाण बट्टों की गली, बांस मंडी।  
अजी, फिर बताना, मैं लिख लूं।  
अच्छा जी।  
हांजी, दो सौ कितना नम्बर ?  
दो सौ बावन।  
जी, तो कौन सी गली ?  
गली बाण-बट्टों की।

---

\* इन प्रसंगों को फिर पंजाबी में लिखने का अभ्यास कीजिए और अपने वाक्यों को मूल पंजाबी में छपे प्रसंग के वाक्यों के साथ मिला कर देखिए।

छावनी में बाँस मंडी है ना।

हाँ जी।

बस उस के निकट।

अच्छा जी।

आप स्वयं पहुँच जाइएगा जी।

बहुत अच्छा।

धन्यवाद

SIKHBOOKCLUB.COM

## प्रसंग 2

आइए जी, स्वागतम् (आने वालों को हम सत्कार पूर्वक जी कहते हैं)  
धन्यवाद।

हम आप की प्रतीक्षा कर रहे थे।

क्षमा करना, हमें राह में देर हो गई।

कोई बात नहीं, अभी तो कुल पाँच मिनट हुए हैं।

फिर भी आप को कष्ट हुआ है।

कोई कष्ट नहीं हमें तो खुशी है।

यह आपकी उदारता है, धन्यवाद।

क्या पियेंगे ? चाय कि शर्बत।

मुझे तो शर्बत सुखद नहीं (भाता नहीं)

अच्छा चाय ही बनेगी, बच्ची क्या पीएगी ?

बच्ची भी चाय पी लेगी।

आपकी बच्चियाँ कौन से स्कूल में पढ़ती हैं ?

वे तो जनता स्कूल में जाती हैं।

वहां पढ़ाई अच्छी होती है ?

जी हाँ, वहां अच्छा प्रबन्ध है।

आओ जी, चाय पीएं। कुर्सी पर बैठिए।

कोई बात नहीं, मेरे लिए तो चारपाई ही ठीक है।

बच्ची कुर्सी पर बैठ जाए।

बैठ जा बेटा।

महाराज ! कुछ खाइए ना।

जी, खा रहे हैं।

चाय और लीजिए, ठंडी तो नहीं ?

जी नहीं, अच्छी खासी गर्म है।

बच्ची ने तो ठंडी कर ली है।

जी हाँ, यह गर्म चाय (कम) विरले ही पीती है।

मेरी बच्चियाँ भी चाय ठंडी करके पीती हैं।

अभी (वे) स्कूल से आई नहीं ?

बस, आने वाली हैं।

स्कूल की बस छोड़ जाती होगी ?

ਜੀ ਹਾਂ, ਪਹਲੇ ਚੌਕ ਪਰ ਛੋੜ ਜਾਤੀ ਹੈ, ਫਿਰ ਪੈਦਲ ਆਤੀ ਹੈਂ।

ਆਪ ਕਾ ਲੜਕਾ ਤੋ ਸਾਇਕਲ ਪਰ ਜਾਤਾ ਹੈ ?

ਜੀ ਹਾਂ, ਉਸ ਤਰਫ ਕੋਈ ਬਸ ਨਹੀਂ ਜਾਤੀ।

ਬੜਾ ਪਿਆਰਾ ਲੜਕਾ ਹੈ, ਜਹਾਂ ਮਿਲੇ ਪ੍ਰੇਮ ਸੇ ਸਤ ਸ਼੍ਰੀ ਅਕਾਲ ਕਹਤਾ ਹੈ।

SIKHBOOKCLUB.COM

प्रसंग 3

छुट्टी कि लिए प्रार्थना

बाबा : क्या साहब घर हैं ?

जी हाँ, आराम करते हैं, कहो क्या बात है ?

मेरा बच्चा सख्त बीमार है, मैं छुट्टी ले के अभी जाना चाहता हूँ।

आप का नाम ?

गुलज़ार सिंह, उनका कलर्क।

अच्छा जी, चलो मेरे साथ।

क्या बात है, छुट्टी केवल एक दिन की लिखी है (आपने)।

जी हाँ, मैं अपने भाई को वहाँ छोड़ कर लौट आऊंगा।

बच्चा सख्त बीमार है तो तीन दिन की छुट्टी ले जाओ।

बड़ी कृपा है आपकी, साहब। यदि बच्चा जल्दी ठीक हो गया तो परसों लौट आऊंगा।

अच्छा धन्यवाद।

बात सुन गुलज़ार सिंह।

जी।

यह अपनी दरखास्त (निवेदन पत्र) जरा ट्रे में डाल दे ताकि चपड़ासी कल दफ्तर लेता जाए।

अच्छा जी, सत्य वचन (मुझे स्वीकार है)।

## प्रसंग 4

## अजनबी के साथ

क्या आप पंजाबी बोल लेते हैं ?

जी हां, अब तो मैं पंजाबी बोल लेता हूं।

क्या आप अंग्रेजी भी जानते हैं ?

नहीं जी मैं तो हिन्दी और तमिल जानता हूं।

तमिल तो मैं ने भी सीखी थी पर अब भूलती जाती है।

रेडियो के प्रोग्राम सुनो, पत्रिकाएं पढ़ो फिर सारी बोली ताज़ा हो जाएगी।

आप को यह प्रदेश अच्छा लगा है ?

जी हां, मुझे बहुत अच्छा लगा है ?

आप के प्रदेश में भी भंगड़ा (नृत्य विशेष) खेलते हैं ?

अजी नहीं, वहां और तरह के नाच होते हैं ।

आप तो कर्नाटक संगीत जानते होंगे ?

जी हाँ, मामूली सा जानता हूं।

अजी किसी दिन हमारे घर आना।

जी, बहुत अच्छा, मैं अगले इतवार आ जाऊंगा।

जरूर आना, हम (दोनों) गीत गाएंगे।

अच्छा जी !

अच्छा !



## ਪ੍ਰਸੰਗ 5

### ਰਿਕਸ਼ਾ ਵਾਲੇ ਕੇ ਸਾਥ

ਰਿਕਸ਼ਾ ਵਾਲੇ ਠਹਰ ਜਾ, ਰਿਕਸ਼ਾ ਖਾਲੀ ਹੈ ?

ਜੀ ਹਾਂ, ਬਤਾਏ ਕਹੀਂ ਜਾਨਾ ਹੈ ?

ਕਸ਼ਮੀਰ ਹੋਟਲ ਕਾ ਪਤਾ ਹੈ ? ਕਹੀਂ ਹੈ ?

ਜੀ ਹਾਂ, ਵਹ ਤੋ ਸਬ ਸੇ ਬਡਾ ਹੋਟਲ ਹੈ।

ਕਿਤਨੀ ਦੂਰ ਹੋਗਾ ?

ਬਸ, ਕੋਈ ਅਢਾਈ ਮੀਲ, ਮੇਰੀ ਰਿਕਸ਼ਾ ਆਧ ਘੰਟੇ ਮੇਂ ਪਹੁੰਚਾ ਦੇਗੀ।

ਕਿਤਨੇ ਪੈਸੇ ?

ਸਾਹਬ ! ਪਚਾਸ ਪੈਸੇ।

ਪਚਾਸ ਪੈਸੇ ਹੈਂ ਤੋ ਬਹੁਤ ਪਰ ਮੁਝੇ ਜਲਦੀ ਹੈ, ਚਲੋ।

ਬਿਸਤਰ ਪੀਛੇ ਰਖ ਦੇਤੇ ਹੈਂ, ਟਰੰਕ ਆਗੇ, ਠੀਕ ਹੈ ਜਲਦੀ ਚਲੋ।

ਲੋ ਜੀ, ਚਲੀ ਮੇਰੀ ਤੂਫਾਨ ਮੇਲ ਰਿਕਸ਼ਾ।

ਅਗਲੇ ਮੋਡ ਪਰ ਹੌਲੇ ਚਲਨਾ, ਨ ਜਾਨੇ ਮੇਰਾ ਭਾਈ ਵਹੀਂ ਮੇਰੀ ਪ੍ਰਤੀਕਸ਼ਾ ਕਰਤਾ ਹੋ।

ਬਹੁਤ ਅਚਾ, ਅਜੀ ਵਹੀਂ ਰੁਕ ਜਾਊਗਾ।

ਧਿਆਨ ਸੇ ਦੇਖੇਂਗੇ ਚਿੰਨ੍ਹ ਨ ਕੀਜ਼ਿਏ।

## प्रसंग 6

## फल वाले के साथ

क्यों भाई ये संतरे ताजे हैं ?

जी हाँ, देखिए तो अभी लाए गए हैं।

मेरा भाई हस्पताल में बीमार पड़ा है।

उस के वास्ते ताज़ा फल चाहिए।

इसी लिए तो हम ने हस्पताल के पास ताज़ा फलों की दुकान खोली है।

वे दो संतरे दे दीजिए।

बहुत अच्छा जी।

पैसे ?

साठ नए पैसे।

\* कल तो पच्चीस पच्चीस पैसे था।

जी हाँ, कल वाले चाहे बीस बीस पैसे ले जाओ।

गर्मियों में फल जल्दी खराब हो जाता है।

इसी लिए तो ताज़ा फल महंगा होता है।

बात तो ठीक है, पर इतना महंगा ! कौन कौन लेगा, कब तक लेगा !

यह तो (अपनी अपनी) औकात का सौदा है।

अच्छा, एक ही संतरा ले जाता हूँ।

अजी तीस पैसे।

यह लो तीस। ठीक ?

ठीक।

## प्रसंग 7

### बज़ाज की दुकान

शाह जी ! जय राम जी की !

जय राम जी ! आओ !! मुदतें हुई दर्शन दिए।

फसलो को काटने में लगे रहे, हम से आया नहीं गया।

मैं ने कहा 26 की मलमल के लिए तो वीर (भाई) भगवाना अवश्य आएगा।

अब तो आ गया हूँ। देख प्यार की खिचावट। सच्चा सौदा प्यार ही है। क्यों नहीं ! ले जा भगवाना पगड़ी। तुझ से पगड़ी हमें क्या अधिक भनी है ?

नहीं मैं तो हंसता हूँ। अब यह बताइए—कमीज़ पर कितना कपड़ा लगेगा यदि चौड़ाई पौना मीटर हो ?

साढ़े तीन मीटर से अधिक कपड़ा कमीज़ पर लगता नहीं।

लगता क्यों नहीं, पिछली बार तो पौने चार मीटर लगा था।

उस का बर कम था और वह सिकुड़ने वाला कपड़ा था।

यह तो मक्खन है मक्खन।

अजी रजाइओं के लिए नई छींटें भी आई हैं।

वह भी दिखाओ, आपकी भरजाई कहती थी, अच्छी चीज हो, लड़की के दहेज के लिए।

क्यों नहीं, अपनी लड़की के लिए अच्छी चीज न देंगे तो किस लिए दुकान खोली है, महूरत क्या निकला है ?

कार्तिक की पूर्णिमा।

तो और कपड़े भी ले जाओ। उन दिनों भीड़ हो जाएगी, कपड़े की कमी हो जाएगी।

मेरा तो हाथ तंग है।

कोई नहीं, उधार सही।

कोई सुन्दर सा चिकन दिखाइए।

लो जी, रंग बरंगे चिकन लखनऊ के।

दूसरी गांठ भी दिखाते हैं।

बड़ी मांडी (कलफ) लगी है, क्या जाने धोकर क्या निकलेगा।

वहम न करो जी। यह माल सोलह आने खरा है।

ਖਰਾ ਤੋ ਹੋਗਾ, ਭਾਵ ਕਯਾ ਬਨਾਯਾ ਹੈ ?  
 ਸਾਢੇ ਤੀਨ ਰੁਪਏ ਮੀਟਰ, ਕੂਟ ਪੀਟ ਕਰ ਬਰਤੋ, ਟਿਕਾਝ ਹੈ।  
 ਏਕ ਤੋਹਫਾ (ਉਤਮ) ਚੀਜ਼ ਹੈ। ਭੂਟੀ ਭੀ ਬਾਰੀਕ ਬਢਿਆ।  
 ਅਪਨੇ ਆਪ ਹੀ ਸਰਾਹਤੇ ਜਾ ਰਹੇ ਹੋ, ਦੇਖੋ ਦੋ ਜਗਹ ਸੇ ਕਟਾ ਹੁਆ ਹੈ।  
 ਕਯਾ ਕਹੂੰ ਭਗਵਾਨਾ, ਇਨ ਚੂਹੋਂ ਨੇ ਮੇਰੇ ਨਾਕ ਮੇਂ ਦਮ ਕਰ ਦਿਆ ਹੈ।  
 ਕਯਾ ਜਾਨੇ ਕਿਤਨੇ ਟੁਕੜੇ ਕੁਤਰੇ ਪੜੇ ਹੈਂ।  
 ਦਰਜੀ ਲੇ ਜਾਤੇ ਹੈਂ, ਕਾਟ-ਕਟਾ ਕੇ ਕਪੜੇ ਬਨਾ ਲੇਤੇ ਹੈਂ।  
 ਹਮਾਰਾ ਤੋ ਸਾਰਾ ਧਨ ਦੁਕਾਨ ਮੇਂ ਲਗਤਾ ਜਾਤਾ ਹੈ।  
 ਗਲ ਗਲ ਕੇ ਧੀ ਬਨੇਗਾ, ਸ਼ਹਦ, ਸਚ ਪੂਛੋ ਤੋ ਬਨੇਗਾ ਸੋਨਾ।  
 ਬਤਾਓ ਕਪੜਾ ਤੀਨ ਕਮੀਜ਼ ਯਾ ਚਾਰ ਕਾ ਫਾੜੇਂ।  
 ਚਾਹਿਏ ਤੋ ਏਕ ਹੀ ਥਾ, ਚਲੋ ਦੋ ਕਾ ਫਾੜ ਦੋ।  
 ਏਕ ਪਗੜੀ, ਏਕ ਰਜਾਇ ਕਾ ਗਿਲਾਫ, ਚਿਕਨ ਆਧਾ ਥਾਨ, ਕੂਲ ਹੁਏ, ਰਾਮ  
 ਤੇਰਾ ਭਲਾ ਕਰੇ, ਸਾਢੇ ਪੈਂਸਠ ਰੁਪਏ। ਆਜ਼ ਤਾਰੀਖ ਹੈ ਪਾਂਚ।  
 ਜਯ ਰਾਮ ਜੀ ਕੀ।

SIKHBOOKCLUB.COM

## प्रसंग 8

### माँ पुत्र

दीपा ! रोता क्यों है ?

माँ ! लड़के कहते हैं, मैं यतीम हूँ।

वे तो तुझे यों ही छेड़ते हैं।

नहीं, वे कहते हैं : तुझे यतीमखाना से लाया गया था बताते हैं, जहाँ मैं लड़कों के साथ रहता था, यतीमखाना था।

वे झूठ बोलते हैं, देख तो, जब तू छोटा था तब मैं बीमार पड़ गई थी, सख्त बीमार, बचने की आस नहीं थी। मैं अकेली थी, मैं ने सोचा कि मेरे पुत्र को रोटी कौन पका के देगा। कुछ समय के लिए मैं ने तुझे वहाँ भेज दिया था। जब मैं ठीक हो गई, मैं तुझे वापस ले आई थी। पुत्र तू क्यों यतीम होगा, वे झूठ बोलते हैं।

झूठ ही होगा, तभी हंसते थे।

जी हाँ, हमारा दीपा तो हमारा पुत्र है। तेरा बापू जीता है, माँ जीती है।

कोई यतीम कैसे कह सकता है।

मैं उनको बता दूंगा; माँ जब सख्त बीमार थी, मैं कुछ दिन यतीमखाने रहा था, फिर अपने घर आ गया।

माँ ठीक है ना बात ?

हाँ बेटा बिल्कुल ठीक। अब हाथ मुंह धो ले, कपड़े बदल, बापू आने वाले हैं।

अच्छा।

## खण्ड 6

### हिन्दी से भिन्न शब्द निर्माण की विशेषताएं

पुरानी हिन्दी और पंजाबी के शब्द-निर्माण की प्रवृत्तियों में अधिक साम्य था। ध्वनी परिवर्तन और अर्थ परिवर्तन के कारण इन प्रवृत्तियों की दिशाओं में कुछ अंतर आ गया है। यहां केवल विभिन्न रूपों का उल्लेख संक्षेप से किया गया है।

**उपसर्ग :**

|       |           |              |           |
|-------|-----------|--------------|-----------|
| अट—   | अटजाट,    | अटझांटा,     | अटपड़     |
|       | अनजान,    | अनछाना,      | अनपढ़     |
| पड़—  | पड़दादा,  | पड़ नां,     | पड़पेड़ा  |
|       | परदादा,   | उपनाम,       | परपोता    |
| महां— | महां कवी, | महां प्रसाद, | महांघीर   |
|       | महाँ कवि, | महाँ प्रसाद, | महाँवीर   |
| वड—   | वड हंस,   | वड भारी,     | वड मुँला  |
|       | राज हंस,  | बड़ भागी,    | बहु मूल्य |

**\*स्त्री प्रत्यय :**

1. बूँडा, बूँडी ; पुड़ा, पुड़ी ;  
(कुतिया) (पुड़िया)  
बंदर, बंदरी ; माह, माहली ;  
(बंदरिया) (साहुकारिन)
2. देर, देरुर (देवर) ; दिराही
3. पहाड़न, पेघन, पापन, मिरासन  
पहाड़न, धोबिन, पापिन, मिरासिन

\* पंजाबी में कुछ स्त्रीलिंग फुटकल श्रोतों से आए हैं :  
टँटू टैव; पुँडर पी; धसम रँन।

4. ਹਲਵਾਈ, ਹਲਵੈਣ; ਨਾਈ, ਨੈਣ; ਭੈਣ, ਭਾਈ,  
(ਫਲਧਾਨ) (ਨਾਨ) ਬਹਨ ਭਾई

1.6 ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਨਿਮਨਲਿਖਿਤ ਨਾਮ ਪੁਲਿੰਗ ਏਵੰ ਸ਼ਤਲਿੰਗ ਦੋਨੋਂ ਰੂਪੋਂ ਮੇਂ ਕਧਵਹੁ ਹੋਤੇ ਹੈਂ :

|        |       |
|--------|-------|
| ਵਿਚਾਰ  | ਰੂਹ   |
| ਉਦਾਹਰਣ | ਵਿਹਲ  |
| ਚਰਚਾ   | ਦਰਦ   |
| ਛਤ     | ਆਵਾਜ਼ |
| ਥਾਂ    | ਅਕਲ   |
| ਦਹੀਂ   | ਕਦਰ   |
| ਫਿਕਰ   | ਕਿਆਸ  |
| ਯਾਰ    | ਦਾਤਣ  |

ਬਹੁਵਚਨ ਪ੍ਰਤਧ :

|         |         |         |
|---------|---------|---------|
| ਮੁੰਡੇ,  | ਬੰਦੇ,   | ਡੰਡੇ    |
| ਲਭਕੇ,   | ਬੰਦੇ,   | ਡੰਡੇ    |
| ਭੈਣਾਂ,  | ਕੁੜੀਆਂ, | ਨਿੱਕੀਆਂ |
| ਬਹਨ,    | ਲਭਕੀਆਂ, | ਛੋਟੀਆਂ  |
| ਗਾਂਵਾਂ, | ਮਾਵਾਂ,  | ਛਾਵਾਂ   |
| ਗਾਓਂ,   | ਮਾਏਂ,   | ਛਾਵੇਂ   |
| ਗਾਂਈਂ,  | ਬਲਾਈਂ,  | ਆਹੀਂ    |
| ਗਾਏਂ,   | ਬਲਾਏਂ,  | ਆਹੇਂ    |

ਕੁਝ ਸ਼ਬਦ ਬਹੁ ਵਚਨ ਮੇਂ ਭੀ ਅਵਿਕ੍ਰਿਤ ਰਹੇ ਹੈਂ :

|         |       |           |
|---------|-------|-----------|
| ਘੁਮਾਂ,  | ਭਰਾਂ, | ਮੁੱਲਾਂ    |
| ਧੁਮਾਓਂ, | ਭਾਏਂ, | ਮੁਲਲਾ ਲੋਗ |

ਪ੍ਰਤਧ :

1. ਸੰਖਾਵਾਚੀ :

|       |          |           |         |
|-------|----------|-----------|---------|
| -ਤਣ   | ਕੁੜਤਣ,   | ਪਿਲਤਣ     |         |
|       | ਕਭਾਪਨ,   | ਪੀਲਾਪਨ    |         |
| -ਪੁਣਾ | ਸਾਉਪੁਣਾ, | ਮੁੰਡਪੁਣਾ, | ਲੁਚਪੁਣਾ |
|       | ਸਾਧਪਨ,   | ਲਭਕਪਨ,    | ਲੁਕਾਪਨ  |

## 2. ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣਵਾਚੀ :

- ਅਈ ਸੁਲਫਈ, ਝਟਕਈ, ਨਸਈ  
 ਸੁਲਫਾ ਖਾਨੇ ਵਾਲਾ, ਝਟਕਾ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ, ਨਸ਼ੋਬਾਜ਼  
 -ਡਾ ਦੁਰੇਡਾ,  
 ਦੂਰਤਰ  
 -ਵਾਂ ਢੁਕਵਾਂ, ਲੁਕਵਾਂ, ਵਿਕਾਵਾਂ  
 ਉਪਯੁਕਤ ਰੂਪ ਮੈਂ, ਲੁਪਤ ਰੂਪ ਮੈਂ, ਬਿਕਾਊ  
 -ਰਾ ਵਧੇਰਾ, ਬਧੇਰਾ, ਅਗਲੇਰਾ  
 ਅਧਿਕਤਰ, ਬਹੁਤਰ, ਅਗ਼ਤਰ

## 3. ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ :

- ਓਂ ਬਾਹਰੋਂ, ਅੰਦਰੋਂ, ਅੱਗੋਂ, ਪਿਛੋਂ, ਕੋਲੋਂ  
 ਬਾਹਰ ਸੇ, ਅੰਦਰ ਸੇ, ਆਗੇ ਸੇ, ਪੀਛੇ ਸੇ, ਪਾਸ ਸੇ  
 -ਏ ਅਜੇ, ਹੁਣੇ, ਨੇੜੇ  
 ਆਜ ਹੀ, ਅਮੀ, ਨਿਕਟ  
 -ਈਂ ਦਿਨੀਂ, ਸ਼ਾਮੀਂ, ਦੁਪਹਰੀਂ, ਰਾਤੀਂ  
 ਦਿਨ ਕੋ, ਸ਼ਾਮ ਕੋ, ਦੋਪਹਰ ਕੋ, ਰਾਤ ਕੋ

## ਵਿਕ੍ਰਿਤ ਰੂਪ :

- ਪੁ. ਏਕ ਵ.= ਬਾਬੇ, ਰਾਜੇ, ਰਾਮੇ, ਚੰਗੇ, ਮਾੜੇ, ਮੁੰਡੇ  
 ਬਾਬੇ ਨੇ, ਰਾਜਾ ਨੇ, ਰਾਮ ਨੇ, ਅਚੇ, ਬੁਰੇ, ਲੜਕੇ  
 ਪੁ. ਬਹੁ ਵ.= ਕਾਮਿਆਂ, ਬਹੁਤਿਆਂ, ਮੁੰਡਿਆਂ, ਜਿਹੜਿਆਂ  
 ਕਾਮ ਕਰਨੇ ਵਾਲੇ, ਬਹੁਤਾਂ, ਲੜਕੀਆਂ, ਜਿਨ  
 ਲੜੀ ਬਹੁ ਵ.= ਕੁੜੀਆਂ, ਜਿਹੜੀਆਂ, ਮਾਵਾਂ, ਬਹੁਤੀਆਂ  
 ਲੜਕੀਆਂ, ਜੋ ਜਿਨ, ਮਾਤਾਆਂ, ਬਹੁਤ ਸੀ  
 ਚੰਗਾ ਮੁੰਡਾ, ਚੰਗੇ ਮੁੰਡੇ, ਚੰਗਿਆਂ ਮੁੰਡਿਆਂ ਨੂੰ  
 ਅਚਾ ਲੜਕਾ, ਅਚੇ ਲੜਕੇ, ਅਚੇ ਲੜਕੀਆਂ ਨੂੰ  
 ਚੰਗੀ ਕੁੜੀ, ਚੰਗੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ, ਚੰਗੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਨੂੰ  
 ਅਚੀ ਲੜਕੀ, ਅਚੀ, ਅਚੀ ਲੜਕੀਆਂ  
 ਲੜਕੀਆਂ, ਕੋ

## ਸੰਬੋਧਨ ਪ੍ਰਤਯਯ :

- ਪੁ. ਏਕ ਵ.= (ਵੇ) ਮੁੰਡਿਆ ! ਰੱਬਾ, ਕਾਂਵਾਂ, ਭਰਾਵਾਂ,  
 ਲੜਕੇ ! ਮਹਾਨ, ਕਾਂਵੀ, ਮਾਝੀ



पु. बहु व.= (वे) भुँडिँ, घँदिँ, घाघिँ, काँवें, डराँ  
 लड़कों, बंदों, बाबाओं; काँवें, भाईओ  
 स्त्री एक व.= (नी) कुँडी ऐ, डैटे, माटे  
 हे लड़की, हे बहन, हे मां  
 स्त्री बहु व.= कुँडीँ, डैटे, माटें  
 लड़कियों, बहनों, माताओं

नी मेरीऐ घरीऐ अरी (री) मेरी बच्ची !  
 नी डैटे री बहन  
 वे पिंड दिया भुँडिआ रे गांव के लड़के !  
 नी पिंड दीऐ कुँडीऐ री गांव की लड़की !  
 वे पिंड दिँ घुँडिँ रे गांव के लड़को;  
 नी पिंड दीँ कुँडीँ री गांव की लड़कियों !

कारक :

करण एवं अधिकरण : हवीं, पारीं राहीं वीहीं  
 हाथों, घर में के द्वारा, बीस में  
 अपादान : पारें देहड़िँ, कलकत्ता  
 घर से, आंगन से, कलकत्ता से

सार्वनामिक विशेषण :

ऐह ऐडा, ईँठा, ईँने ऐहे, जिहा  
 यह, इस प्रकार का इतना; इतने; इस, जैसा  
 ऐह, ऐडा, ऐठा ऐने, ऐहे जिहा  
 वह, उस प्रकार का इतना, उतने, उस, जैसा  
 जे, जिडा, जिँठा, जिँठा, जिँने, जिहा  
 जो, जिस प्रकार का, जितना, जितना, जितने जैसा  
 बी, बैट, बिडा, बिँठा बिने, बिहा  
 क्या किए किस प्रकार का कितना, कितने कैसा

भूतकालिक कृदन्त :

देखा, डिगिआ घालिआ, अघवाँइआ मेँइआ  
 देखा गिरा जलाया कहलाया मरा (मुआ)

|         |         |          |          |       |              |
|---------|---------|----------|----------|-------|--------------|
| ਸੁਤਾ,   | ਕੀਤਾ    | ਸੀਤਾ     | ਖਲੋਤਾ,   | ਦਿਤਾ, | ਧੋਤਾ         |
| ਸੋਧਾ    | ਕਿਧਾ    | ਸਿਧਾ     | ਖਭਾ ਹੁਆ  | ਦਿਧਾ  | ਧੀਧਾ         |
| ਪਹੁਤਾ,  | ਨਾਹਾਤਾ, | ਪੀਤਾ,    | ਪਰੇਤਾ    |       |              |
| ਪਹੁੰਚਾ  | ਨਹਾਧਾ   | ਪੀਧਾ     | ਪਿਰੋਧਾ   |       |              |
| ਵੁਆ     | ਨਠਾ,    | ਰੁਠਾ     | ਤੁਠਾ,    | ਡਿਠਾ  | ਮਠਾ,         |
| ਬਰਸਾ    | ਮਾਗਾ    | ਰੁਝ ਹੁਆ  | ਤਸਿਤ ਹੁਆ | ਦੇਖਾ  | ਲੂਟਾ ਗਧਾ     |
| ਪੀਠਾ,   | ਰੁਠਾ    | ਵਿਘਾ     | ਬਧਾ,     | ਖਾਧਾ, | ਗੁਧਾ         |
| ਪੀਸਾ    | ਗਧਾ     | ਬੇਧਾ     | ਬਾਂਧਾ    | ਖਾਧਾ  | ਗੁੰਧਾ        |
| ਵਿਰਿਧਾ, | ਲਧਾ,    | ਰੁਧਾ     | ਘੁਧਾ     | ਛੁਧਾ  | ਫਾਧਾ,        |
| ਰੀੜਾ    | ਤਪਲਧਾ,  | ਬਧਰਤ ਹੁਆ | ਚੂਕ ਗਧਾ  | ਧੁਆ   | ਫਾਸ ਗਧਾ      |
|         |         |          |          |       | (ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਧਾ) |

|         |        |       |           |
|---------|--------|-------|-----------|
| ਭੁਲਾਣਾ, | ਰੁੱਠਾ, | ਭੁੱਠਾ | ਭਿੰਠਾ     |
| ਮੂਲ ਗਧਾ | ਰੋਧਾ   | ਤੋੜਾ  | ਗਿਲਾ ਕੀਧਾ |

### ਵਰਤਮਾਨ ਕਾਲਿਕ ਕ੍ਰਿਦਨਤ :

|               |          |          |         |
|---------------|----------|----------|---------|
| ਪੁ. ਏਕ ਵ.     | ਆਉਂਦਾ    | ਜਾਂਦਾ    | ਦੋੜਦਾ   |
|               | ਆਤਾ      | ਜਾਤਾ     | ਦੌੜਤਾ   |
| ਪੁ. ਬਹੁ ਵ.    | ਆਉਂਦੇ    | ਜਾਂਦੇ    | ਦੋੜਦੇ   |
|               | ਆਤੇ      | ਜਾਤੇ     | ਦੌੜਤੇ   |
| ਸਤ੍ਰੀ. ਏਕ ਵ.  | ਆਉਂਦੀ,   | ਜਾਂਦੀ    | ਦੋੜਦੀ   |
|               | ਆਤੀ      | ਜਾਤੀ     | ਦੌੜਤੀ   |
| ਸਤ੍ਰੀ. ਬਹੁ ਵ. | ਆਉਂਦੀਆਂ, | ਜਾਂਦੀਆਂ, | ਦੋੜਦੀਆਂ |
|               | ਆਤੀਂ     | ਜਾਤੀਂ    | ਦੌੜਤੀਂ  |

### ਕੁਝ ਪੰਜਾਬੀ ਸਮਾਸ

|               |            |
|---------------|------------|
| ਦਾਣਾ ਫੱਕਾ     | ਦਾਨਾ ਫੁਲਕਾ |
| ਕਲ ਮੁਕੱਲਾ     | ਝੁਕੇਲਾ     |
| ਐਤਰਾ ਨਿਖਤਰ    | ਨਿਸ਼ੁਨਤਾਨ  |
| ਡਿੰਗ ਫੜਿੰਗਾ   | ਟੇਫਾ ਸੇਫਾ  |
| ਚੰਗਾ ਰੁਖਾ     | ਅਚਲਾ ਖਾਸਾ  |
| ਫਲਾਣਾ ਫਿਮਕਾਣਾ | ਅਮਕਾ ਫਸਕਾ  |

|               |                 |
|---------------|-----------------|
| पूछ गिछ       | पूछ ताछ         |
| ਉੱਕਾ ਪੁੱਕਾ    | निपट            |
| ਕਾੜ ਬਰੜਾ      | खिचड़ी          |
| ਅੰਗ ਸੰਗ       | साथ साथ         |
| ਨੇੜੇ ਤੇੜੇ     | अड़ोस पड़ोस में |
| ਦਾਣਾ ਪਾਣੀ     | दाना पानी       |
| ਇਕੜ ਦੁਕੜ      | इक्का दुक्का    |
| ਆਲੇ ਦੁਆਲੇ     | आस पास          |
| ਭਾਂਡਾ ਟਿੰਡਰ   | बरतन बरतन       |
| ਢਹੰਦੇ ਗੁੜਦੇ   | गिरते पड़ते     |
| ਸੰਗ ਤੰਗ       | मांग तांग के    |
| ਹਾਸਾ ਫਾਸਾ     | हंसी ठठोल       |
| ਐਵੇਂ 'ਕੈਵੇ'   | ऐसे वैसे, योंही |
| ਠੋਕਠਾਕ ਕੇ     | ठोंक पीट कर     |
| ਚੂਪ ਚਾਪ ਕੇ    | चूस चास के      |
| ਹੱਡ ਬੀਤੀ,     | आप बीती         |
| ਆਪ ਹੁਦਰਾ      | मन चला          |
| ਉਤਸ਼ਾਹ ਵਧਾਉ   | उत्साह वर्धक    |
| ਉਪਰ ਥਲੇ       | ऊपर नीचे        |
| ਬੋਲ ਬੁਲਾਰਾ    | कहा सुनी        |
| ਵਾਧਾ ਘਾਟਾ     | कमी बेशी        |
| ਵਿਚੋਂ ਵਿਚ     | बीचों बीच       |
| ਕਹਿਆ ਧਰਿਆ     | करा धरा         |
| ਵਿਚਾਰ ਵਟਾਂਦਰਾ | विचार विमर्श    |
| ਖਿੱਚੋ ਤਾਣ     | खींच तान        |
| ਗਰਮਾ ਗਰਮ      | गर्म गर्म       |
| ਵੇਖਣਾ ਚਾਖਣਾ   | देखना भालना     |
| ਘਰੇ ਘਰ        | अपने अपने घर की |
| ਦਿਨੋ ਦਿਨ      | दिन प्रतिदिन    |
| ਹਥੇ ਹਥ        | हाथों हाथ       |
| ਵਧੇ ਵਧ        | अलग अलग         |

## ਸਮਾਸ

ਗੁਰ ਪੀਰ  
ਚਿੱਠੀ ਚਪਾਠੀ  
ਕਾਰ ਵਿਹਾਰ  
ਚੇਲਾ ਚਾਟੜਾ  
ਗੰਦ ਮੰਦ  
ਕਿਰਤ ਕਮਾਈ  
ਡੰਗਰ ਵੱਛਾ  
ਨਾਂਹ ਨੁੱਕਰ  
ਉਠਣੀ ਬਹਣੀ  
ਗੰਢ ਤੋਪਾ  
ਉਘ ਸੁਧ  
ਸੋ ਬੋ  
ਰੋਲਾ ਰੁੱਪਾ  
ਲਾਰਾ ਲੁੱਪਾ  
ਠੀਆ ਠੱਪਾ  
ਰੂੰਹਦ ਖੂੰਦ  
ਚੋੜ ਚਪਟ  
ਛੇਕੜ ਬਾਕੜ  
ਛਾਈ ਮਾਈ  
ਵਿਹਲਾ ਵਾਂਦਾ  
ਖੁਲ੍ਹਾ ਡੁਲ੍ਹਾ  
ਇਕੱਲ ਮੁਕੱਲਾ  
ਸੁੰਨ ਮਸੁੰਨਾ  
ਰੰਕ ਕੰਨ  
ਪੀਲਾ ਹਰਦਲ  
ਸੁੱਕਾ ਕੜੰਗ  
ਹਲਕਾ ਫੁੱਲ  
ਇਟ ਖੜਿੱਕਾ

ਗੁਰ ਪੀਰ  
ਚਿਟ੍ਰੀ ਪਤੀ  
ਕਾਸ ਕਾਜ  
ਬੇਲਾ ਚਾਂਟਾ  
ਕੂੜਾ ਕਰਕਟ  
ਕੂਟ੍ਯ  
ਫੋਰ ਡੰਗਰ  
ਆਨਾ ਕਾਨੀ  
ਸੰਗੀਤ  
ਸਾਂਠ ਗੱਠ  
ਸੂਬਨਾ, ਪਤਾ  
ਧੂ ਘਾਸ  
ਸ਼ੋਰ ਗੁਲ  
ਝਾਂਸਾ  
ਤੋਝ ਜੋਝ  
ਰਹਾ ਸਹਾ  
ਚੌਪਟ  
ਤਲਛਟ  
ਓਝਲ, ਅਲੋਪ  
ਨਿਰਲਲਾ, ਨਿਕਮਾ  
ਚਦਾਰ  
ਝਕੇਲਾ  
ਖਾਲੀ  
ਬਾਲ ਬਚ੍ਯਾ  
ਪੀਲਾ ਜੁਰਦ  
ਸੂਖ ਸੂਖ  
ਹਲਕਾ ਫੁਲਕਾ  
ਅਨ ਬਨ

### पंजाबी क्रिया पद

5.1. (क) धातु से बने क्रिया-पदों की काल संरचना

5.1. आज्ञार्थ क्रिया रूप दोनों भाषाओं में समान हैं :

|     |     |      |       |     |     |
|-----|-----|------|-------|-----|-----|
| ਜਾ  | ਖਾ  | ਪੀ   | ਨਿਕਲ  | ਚਲ  | ਕਰ  |
| जा  | खा  | पी   | निकल  | चल  | कर  |
| ਜਾਓ | ਖਾਓ | ਪੀਓ  | ਨਿਕਲੋ | ਚਲੋ | ਕਰੋ |
| जाओ | खाओ | पियो | निकलो | चलो | करो |

स्वरान्त धातु के साथ /-ओ/ लगाने से पूर्व पंजाबी में /-व/ ध्वनि भी जोड़ी जाती है /दे/ से हिन्दी में /दो/ बना है, /ले से/लो/ जो पुरातन रूप में /देवो/ और /लेवो/ या पंजाबी में /दो/ एव /देवो/ दोनों रूप विकल्प से प्रचलित हैं।

प्रत्यक्ष विधिकाल (साधारण) पुलिंग वा स्त्री लिंग :

- |            |           |
|------------|-----------|
| 1. मैं चला | ਅਸੀਂ ਚਲੀਏ |
| ਤੂੰ ਚਲ     | ਤੁਸੀਂ ਚਲੋ |
| ਉਹ ਚਲੇ     | ਉਹ ਚਲਣ    |
| 2. मैं लटा | ਅਸੀਂ ਲਵੀਏ |
| ਤੂੰ ਲੈ     | ਤੁਸੀਂ ਲਵੋ |
| ਉਹ ਲਵੇ     | ਉਹ ਲੈਣ    |

5.1.2. परीक्ष विधि काल :

(क) उधर न देखना      कर के जाना      उत्तर लिख भेजना

(ख) देखियो, आइयो      भेजियो

मध्य पुरुष बहुवचन (तुम अथवा आप) के लिए ये दोनों प्रकार के परीक्ष विधि काल (साधारण) पंजाबी में भी प्रयुक्त हैं किन्तु /ना के स्थान पर /-णा/ बनता जाता है, तथा, देखना (देखना), ज्ञाना, लिखना। और आदर के लिए /जी, शब्द भी अन्त में बढ़ा दिया जाता है। देखीं, ज्ञानीं, भेजीं। इनकी वर्तनी पंजाबी में हिन्दी से विभिन्न है।

मध्यम पुरुष एक वचन के लिए पंजाबी में यों कहेंगे :

- |                  |               |
|------------------|---------------|
| ਤੂੰ ਉਧਰ ਨ ਵੇਖੀਂ। | ਇਹ ਕਰ ਕੇ ਜਾਈਂ |
| ਉਤਰ ਛੇਤੀ ਲਿਖੀਂ।  | ਉਸ ਨੂੰ ਦਸੀਂ   |

## 5.1.3. (ਅਨਿਸ਼ਿਚਤ ਕਰਮਾਨ)

| ਕਾਲ         | ਪੁਲਿੰਗ    | ਅਥਵਾ | ਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ |
|-------------|-----------|------|-----------|
| 1. ਮੈਂ ਕਰਾਂ | ਮੈਂ ਕਰਾਂ  | ਚਲਾਂ | ਹੋਵਾਂ     |
| ਹਮ ਕਰੇਂ     | ਅਸੀਂ ਕਰੀਏ | ਚਲੀਏ | ਹੋਵੀਏ     |
| 2. ਤੂੰ ਕਰੇ  | ਤੂੰ ਕਰੇਂ  | ਚਲੇਂ | ਹੋਵੇਂ     |
| ਤੁਸ ਕਰੋ     | ਤੁਸੀਂ ਕਰੋ | ਚਲੋ  | ਹੋਵੋ      |
| *3. ਕਹ ਕਰੇ  | ਉਹ ਕਰੇ    | ਚਲੇ  | ਕਰੇ       |
| ਕੇ ਕਰੇਂ     | ਉਹ ਕਰਨ    | ਚਲਨ  | ਹੋਵਣ      |

## 5.1.4. ਜੋ ਧਾਤੁਏਂ ਬਿਯੰਜਨਾਂਤ ਅਥਵਾ ਅਕਾਰਾਂਤ ਨਹੀਂ ਹੈਂ ਉਨ ਮੇਂ ਪ੍ਰਾਯ: /ਵ/ ਜੋੜ

ਕਰ ਰੂਪ ਬਨਤੇ ਹੈਂ, ਧਥਾ

|    |             |                               |          |         |
|----|-------------|-------------------------------|----------|---------|
| ਹੋ | ਹੋਆਂ        | ਹੋਵਾਂ                         | ਹੋਈਏ     | (ਹੋਵੀਏ) |
| ਹੋ | ਹੋਆ         | ਹੋਵਾਂ                         | ਹੋਈਏ     | ਹੋਵੀਏ   |
| ਖਾ | ਖਾਵਾਂ       | ਖਾਵੀਏ                         | ਖਾਵੇ ਆਦਿ |         |
| ਖਾ | ਖਾਵਾਂ       | ਖਾਵੀਏ                         | ਖਾਵੇ ਆਦਿ | ਆਦਿ     |
| ਦੇ | ਦਿਆਂ        | ਦੇਵਾਂ, ਦੇਈਏ, ਦੇਵੀਏ, ਦਿਓ, ਦੇਵੇ |          |         |
| ਲੈ | ਲਵਾਂ, ਲਵੀਏ, | ਲਵੇ                           | ਆਦਿ      |         |

## 5.1.5. ਸਾਮਾਨ੍ਯ ਅਨਿਸ਼ਿਚਤ ਕਾਲ

|                |        |         | ਸਤ੍ਰੀ ਲਿੰਗ |
|----------------|--------|---------|------------|
| 1. ਮੈਂ ਕਰਾਂਗਾ  | ਚਲਾਂਗਾ | ਹੋਵਾਂਗਾ | (-ਗੀ**)    |
| 1. ਅਸੀਂ ਕਰਾਂਗੇ | ਚਲਾਂਗੇ | ਹੋਵਾਂਗੇ | (-ਗੀਆਂ)    |
| 2. ਤੂੰ ਕਰੇਗਾ   | ਚਲੇਗਾ  | ਹੋਵੇਗਾ  | (-ਗੀ)      |
| 2. ਤੁਸੀਂ ਕਰੋਗੇ | ਚਲੋਗੇ  | ਹੋਵੋਗੇ  | (-ਗੀਆਂ)    |

\* ਧੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਅੰਕ ਧਾਤ ਰਖਿਏ :

|                 |         |                 |
|-----------------|---------|-----------------|
| 1. ਉਤਮ ਪੁਰੁਸ਼   | ਏਕ ਵਚਨ  | ਮੈਂ ਕੇ ਲਿਏ      |
| ਉਤਮ ਪੁਰੁਸ਼      | ਬਹੁ ਵਚਨ | ਹਮ ਕੇ ਲਿਏ       |
| 2. ਮਧ੍ਯਮ ਪੁਰੁਸ਼ | ਏਕ ਵਚਨ  | ਤੂੰ ਕੇ ਲਿਏ      |
| ਮਧ੍ਯਮ ਪੁਰੁਸ਼    | ਬਹੁ ਵਚਨ | ਤੁਸ (ਆਪ) ਕੇ ਲਿਏ |
| 3. ਅਨ੍ਯ ਪੁਰੁਸ਼  | ਏਕ ਵਚਨ  | ਕਹ ਕੇ ਲਿਏ       |
| ਅਨ੍ਯ ਪੁਰੁਸ਼     | ਬਹੁ ਵਚਨ | ਕੇ ਕੇ ਲਿਏ       |

\*\* ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਗਾ, ਗੇ, ਗੀ, ਕਾ ਅਤਿਰਿਕਤ ਪ੍ਰਯੋਗ ਭੀ ਬੋਲ ਚਾਲ ਮੇਂ ਮਿਲਤਾ ਹੈ, ਧਥਾ ਆਯਾ ਹੈਗਾ, ਆਯਾ ਹੋਗਾ, ਆਦਿ, ਆਇਆ ਹੈਗਾ, ਆਇਆ ਸੀਗਾ, ਆਦਿ।

- |             |       |        |        |
|-------------|-------|--------|--------|
| 3. ਉਹ ਕਰੇਗਾ | ਚਲੇਗਾ | ਹੋਵੇਗਾ | (-ਗੀ   |
| 3. ਉਹ ਕਰਨਗੇ | ਚਲਣਗੇ | ਹੋਵਣਗੇ | (-ਗੀਆਂ |

वर्तमान कालिक कृदन्त (-दा) से बने काल

#### 5.2.1. सामान्य संकेतार्थ काल

- |        |      |      |       |        |
|--------|------|------|-------|--------|
| 1,2,3, | ਕਰਦਾ | ਚਲਦਾ | ਹੋਦਾ* | (-ਦੀ   |
| 1,2,3, | ਕਰਦੇ | ਚਲਦੇ | ਹੋਦੇ  | (-ਦੀਆਂ |

#### 5.2.2. सामान्य वर्तमान काल :

- |    |          |          |          |            |
|----|----------|----------|----------|------------|
| 1. | ਕਰਦਾ ਹਾਂ | ਚਲਦਾ ਹਾਂ | ਹੋਦਾ ਹਾਂ | (-ਦੀ ਹਾਂ   |
| 1. | ਕਰਦੇ ਹਾਂ | ਚਲਦੇ ਹਾਂ | ਹੋਦੇ ਸਾਂ | (-ਦੀਆਂ ਹਾਂ |
| 2. | ਕਰਦਾ ਹੈ  | ਚਲਦਾ ਹੈ  | ਹੋਦਾ ਹੈ  | (-ਦੀ ਹੈ    |
| 2. | ਕਰਦੇ ਹੈ  | ਚਲਦੇ ਹੈ  | ਹੋਦੇ ਹੈ  | (-ਦੀਆਂ ਹੈ  |
| 3. | ਕਰਦੀ ਹੈ  | ਚਲਦਾ ਹੈ  | ਹੋਦਾ ਹੈ  | (-ਦੀ ਹੈ    |
| 3. | ਕਰਦੇ ਹਨ  | ਚਲਦੇ ਹਨ  | ਹੋਦੇ ਹਨ  | (-ਦੀਆਂ ਹਨ  |

#### 5.2.3. अपूर्ण भूत काल :

- |    |            |            |            |              |
|----|------------|------------|------------|--------------|
| 1. | ਕਰਦਾ ਹੋਵਾਂ | ਚਲਦਾ ਹੋਵਾਂ | ਹੋਦਾ ਹੋਵਾਂ | (-ਦੀ ਹੋਵਾਂ   |
| 1. | ਕਰਦੇ ਹੋਵੀਏ | ਚਲਦੇ ਹੋਵੀਏ | ਹੋਦੇ ਹੋਵੀਏ | (-ਦੀਆਂ ਹੋਵੀਂ |
| 2. | ਕਰਦਾ ਹੋਵੇ  | ਚਲਦਾ ਹੋਵੇ  | ਹੋਦਾ ਹੋਵੇ  | (-ਦੀ ਹੋਵੇ    |
| 2. | ਕਰਦੇ ਹੋਵੇ  | ਚਲਦੇ ਹੋਵੇ  | ਹੋਦੇ ਹੋਵੇ  | (-ਦੀ ਹੋਵੇ    |
| 3. | ਕਰਦਾ ਹੋਵੇ  | ਚਲਦਾ ਹੋਵੇ  | ਹੋਦਾ ਹੋਵੇ  | (-ਦੀ ਹੋਵੇ    |
| 3. | ਕਰਦੇ ਹੋਵਣ  | ਚਲਦੇ ਹੋਵਣ  | ਹੋਦੇ ਹੋਣ   | (-ਦੀਆਂ ਹੋਵਣ  |

#### 5.2.4. सामान्य वर्तमान काल :

- |    |               |               |               |               |
|----|---------------|---------------|---------------|---------------|
| 1. | ਕਰਦਾ ਹੋਣਾ ਹਾਂ | ਚਲਦਾ ਹੋਣਾ ਹਾਂ | ਹੋਦਾ ਹੋਣਾ ਹਾਂ | (-ਦੀ ਹੋਣੀ     |
| 1. | ਕਰਦੇ ਹੋਣੇ ਹਾਂ | ਚਲਦੇ ਹੋਣੇ ਹਾਂ | ਹੋਦੇ ਹੋਣੇ ਹਾਂ | (-ਦੀਆਂ ਹੋਣੀਆਂ |
| 2. | ਕਰਦਾ ਹੋਣਾ ਹੈ  | ਚਲਦਾ ਹੋਣਾ ਹੈ  | ਹੋਦਾ ਹੋਣਾ ਹੈ  | (-ਦੀਆਂ ਹੋਣੀਆਂ |
| 2. | ਕਰਦੇ ਹੋਣੇ ਹੈ  | ਚਲਦੇ ਹੋਣੇ ਹੈ  | ਹੋਦੇ ਹੋਣੇ ਹੈ  | (-ਦੀਆਂ ਹੋਣੀਆਂ |
| 3. | ਕਰਦਾ ਹੋਣਾ ਹੈ  | ਚਲਦਾ ਹੋਣਾ ਹੈ  | ਹੋਦਾ ਹੋਣਾ ਹੈ  | (-ਦੀ ਹੋਣੀ     |

\*\* होंदे के स्थान पर हुंदे/हुँदे/रुप पहाड़र बोली की भांति पंजाबी में भी प्रचलित है।

(हन्) के स्थान पर बोल चाल में/ने/ने/का प्रयोग अधिक है, यथा हां, हैं, हो, है के स्थान पर ओ, ऐं, ओ, ए भी प्रयुक्त हैं यथा करदे ने, आखदे ने = करते हैं, कहते।

3. ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਹਨ ਚਲਦੇ ਹੋਏ ਹਨ ਹੋਏ ਹੋਏ ਹਨ (-ਦੀਆਂ ਹੋਣੀਆਂ)

#### 5.2.5. ਸੰਦਿਗ਼ ਵਰਤਮਾਨ ਕਾਲ :

- |             |          |          |            |
|-------------|----------|----------|------------|
| 1. ਕਰਦਾ ਸਾਂ | ਚਲਦਾ ਸੈਂ | ਹੋਦਾ ਸਾਂ | (-ਦੀ ਸਾਂ*  |
| 1. ਕਰਦੇ ਸਾਂ | ਚਲਦੇ ਸਾਂ | ਹੋਦੇ ਸਾਂ | (-ਦੀਆਂ ਸਾਂ |
| 2. ਕਰਦਾ ਸੈਂ | ਚਲਦਾ ਸੈਂ | ਹੋਦਾ ਸੈਂ | (-ਦੀ ਹਸੈਂ  |
| 2. ਕਰਦੇ ਸਉ  | ਚਲਦੇ ਸਉ  | ਹੋਦੇ ਸਉ  | (-ਦੀ ਸਉ    |
| 3. ਕਰਦਾ ਸੀ  | ਚਲਦਾ ਸੀ  | ਹੋਦਾ ਸੀ  | (-ਦੀ ਸੀ    |
| 3. ਕਰਦੇ ਸਨ  | ਚਲਦੇ ਸਨ  | ਹੋਦੇ ਸਨ  | (-ਦੀਆਂ ਸਨ  |

#### 5.2.6. ਅਪੂਰਨ ਸੰਕੇਤਾਰਥ ਕਾਲ :

- |                   |             |       |                |
|-------------------|-------------|-------|----------------|
| 1,2,3 ਕਰਦਾ ਹੋਂਦਾਂ | ਚਲਦਾ ਹੋਂਦਾਂ | ਹੋਂਦਾ | **(-ਦੀ ਹੋਂਦੀ   |
| 1,2,3 ਕਰਦੇ ਹੋਂਦੇ  | ਚਲਦੇ ਹੋਂਦੇ  | ਹੋਂਦੇ | (-ਦੀਆਂ ਹੋਂਦੀਆਂ |

ਸੂਚਨਾ—1. 'ਦਾ' ਵਰਤਮਾਨ ਕ੍ਰਿਦਾਂਤ ਧਾਤੁ ਦੇ ਸਾਥ ਲਗਤਾ ਹੈ :

ਕਿੰਨ੍ਹ ਸਵਰਾਂਤ ਧਾਤੁ ਦੇ ਸਾਥ ਪਹਲੇ ਅਨੁਨਾਸਿਕ ਲਗ ਜਾਤਾ ਹੈ :  
ਜਾਂਦਾ, ਕਰਾਉਂਦਾ, ਪੀਂਦਾ, ਹੋਂਦਾ।

2. ਪੰਜਾਬੀ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਬੀਚ ਸੋ ਅਥਵਾ ਅੰਤ ਸੋ (ਹ) ਧੁਨਿ ਕਾਫੀ ਕਮਜ਼ੋਰ ਹੈ। ਕਹ ਪ੍ਰਾਯ: ਸਮੀਪਵਰਤੀ ਸਵਰ ਸੋ ਗੁਸ ਹੋ ਜਾਤੀ ਹੈ ਐਓਰ ਏਕ ਸੁਰ ਸਾ ਬਾਕੀ ਰਹ ਜਾਤਾ ਹੈ। ਏਸੀ ਪਰਿਸਥਿਤਿ ਸੋ (ਹ) ਦੇ ਸਾਥ ਆਯਾ ਹੁਆ ਕ੍ਰਿਯਾ ਪਦ ਵਰਤਮਾਨ ਕਾਲ ਸੋ ਅਨੁਸਾਰਯੁਕਤ ਹੋ ਜਾਤਾ ਹੈ :

ਬੁੱਢੀ ਚੱਕੀ ਪੀਹਦੀ ਹੈ; ਮਕਾਨ ਢਹਿੰਦਾ ਹੈ, ਬੱਚੀ ਕਹਿੰਦੀ ਹੈ।

ਬੁਝੜੀ ਚਕਕੀ ਪੀਂਦੀ ਹੈ, ਮਕਾਨ ਢਿੰਦਾ ਹੈ। ਕੱਢੀ ਕੰਦੀ ਹੈ।

- 5.3 ਪੰਜਾਬੀ ਦੇ ਕ੍ਰਿਯਾ ਪਦਾਂ ਕਾ ਭੂਤਕਾਲਿਕ ਕ੍ਰਿਦਾਂਤ /—ਆ/ ਦੇ ਸਥਾਨ ਪਰ ਪ੍ਰਾਯ: /—ਝਆ/ ਹੈ :

|        |       |
|--------|-------|
| ਝੁੱਝਿਆ | ਝੁੱਝਾ |
| ਆਇਆ    | ਆਯਾ   |
| ਗਾਇਆ   | ਗਾਯਾ  |
| ਦੌੜਿਆ  | ਦੌੜਾ  |
| ਜਾਗਿਆ  | ਜਾਗਾ  |

\* ਬੋਲ ਚਾਲ ਕੀ ਪੰਜਾਬੀ ਸੋ ਸਬ ਰੂਪੋਂ ਕੇਵਲ /—ਸੀ/ ਲਗਾਏ ਹੋਂ :  
ਅਸੀ ਆਏ ਸੀ, ਉਹ ਆਏ ਸੀ, ਤੂੰ ਆਇਆ ਸੀ, ਆਦਿ।

\*\* ਹੋਂਦਾ ਹੋਂਦਾ ਰੂਪ ਅਕਥਾ ਪ੍ਰਤੀਤ ਹੋਤਾ, ਇਸ ਲਿਏ ਕੇਵਲ ਹੋਂਦਾ ਪ੍ਰਯੁਕਤ ਹੈ।  
ਕਰ+ਦਾ = ਕਰਦਾ, ਦੌੜ+ਦਾ = ਦੌੜਦਾ



|       |      |
|-------|------|
| ਛੁਟਿਆ | ਛੂਟਾ |
| ਚਲਿਆ  | ਚਲਾ  |

ਕੁਝ ਕ੍ਰਿਆ ਪਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਪੰਜਾਬੀ ਦੇ ਅਲਗ ਧੁਨਿਆਂ ਰਖਦੇ ਹਨ :

|          |             |
|----------|-------------|
| ਦੇਖ      | ਵੇਖਿਆ       |
| ਚਲਾ      | ਟੁਰਿਆ       |
| ਟੂਟਾ     | ਟੁਟਿਆ       |
| ਗਿਰਾ     | ਡਿਗਿਆ       |
| ਸੂਕਾ     | ਸੁਕਿਆ       |
| ਖਟ ਖਟਾਯਾ | ਖੜਕਾਇਆ      |
| ਬਜਾਯਾ    | ਬਜਾਇਆ       |
| ਜਲਾਯਾ    | ਬਾਲਿਆ ਬਾੜਿਆ |
| ਸੁਨਾਯਾ   | ਸੁਣਾਇਆ      |
| ਬਿਠਾਯਾ   | ਬਿਠਾਲਿਆ     |
| ਖਿਲਾਯਾ   | ਖਵਾਲਿਆ      |
| ਸਿਲਕਾਯਾ  | ਸਿਵਾਇਆ      |
| ਕਹਲਾਯਾ   | ਅਖਵਾਇਆ      |
| ਗਿਰਕਾਯਾ  | ਡਿਗਵਾਇਆ     |
| ਗਿਰ ਪੜਾ  | ਡਿਗ ਪਇਆ     |
| ਰੋ ਪੜਾ   | ਰੋ ਪਇਆ*     |

ਭੂਤ ਕਾਲਿਕ ਕ੍ਰਿਦੰਤ ਦੇ ਬਨੇ ਕ੍ਰਿਆ ਪਦ

### 5.3.1 ਸਾਮਾਨ੍ਯ ਭੂਤ ਕਾਲ

|                  |                 |      | ਸ਼੍ਰੀ ਲਿੰਗ |
|------------------|-----------------|------|------------|
| ਮੈਂ (ਨੇ)** ਕੀਤਾ  | ਮੈਂ ਚਲਿਆ ਚਲੀ    | ਹੋਇਆ | (ਹੋਈ)      |
| ਅਸਾਂ (ਨੇ) ਕੀਤਾ   | ਅਸੀਂ ਚਲੇ/ਚਲੀਆਂ  | ਹੋਏ  | (ਹੋਈਆਂ)    |
| ਤੂੰ ਕੀਤਾ         | ਤੂੰ ਚਲਿਆ/ਚਲੀ    | ਹੋਇਆ | (ਹੋਈ)      |
| ਤੁਸਾਂ (ਨੇ) ਕੀਤਾ  | ਤੁਸੀਂ ਚਲੇ/ਚਲੀਆਂ | ਹੋਏ  | (ਹੋਈਆਂ)    |
| ਉਸ (ਨੇ) ਕੀਤਾ     | ਉਹ ਚਲਿਆ/ਚਲੀ     | ਹੋਇਆ | (ਹੋਈਆਂ)    |
| ਉਨ੍ਹਾਂ (ਨੇ) ਕੀਤਾ | ਉਹ ਚਲੇ/ਚਲੀਆਂ    | ਹੋਏ  | (ਹੋਈਆਂ)    |

\* ਰਹਿਆ, ਪਇਆ, ਗਇਆ, ਏਵਾਂ ਰਿਹਾ, ਪਿਆ, ਗਿਆ, ਕਿਹਾ ਦੋਨਾਂ ਰੂਪ ਪੰਜਾਬੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨਾਂ ਦੇ ਮਿਲਦੇ ਹਨ।

\*\* ਨੇ ਕਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਪੰਜਾਬੀ ਸੁਰਿਖਰ ਨਹੀਂ ਹੈ ਇਸ ਲਿਓ ਅਸਾਂ ਨੇ ਜਾਣਾ ਹੈ = ਹਸ ਨੇ ਜਾਨਾ ਹੈ ਜੈਸੇ ਪ੍ਰਯੋਗ ਅਕਰਮਕ ਕ੍ਰਿਆਓਂ ਦੇ ਸਾਥ ਆਂ ਹੋ ਜਾਏ ਹੈ।

## 5.3.2. ਆਸਾਨ੍ਯ ਭੂਤ ਕਾਲ

|                |                     |          |         |
|----------------|---------------------|----------|---------|
| ਮੈਂ ਕੀਤਾ ਹੈ    | ਮੈਂ ਚਲਿਆ ਹਾਂ/ਲੀ ਹਾਂ | ਹੋਇਆ ਹਾਂ | (ਈ ਹਾਂ  |
| ਅਸਾਂ ਕੀਤਾ ਹੈ   | ਅਸੀਂ ਚਲੇ ਹਾਂ/-ਲੀਆਂ  | ਹੋਏ ਹਾਂ  | (-ਈਆਂ   |
| ਤੂੰ ਕੀਤਾ       | ਤੂੰ ਚਲਿਆ ਹੈ/-ਲੀ-    | ਹੋਈ ਹੈ   | (-ਈ-    |
| ਤੁਸਾਂ ਕੀਤਾ ਹੈ  | ਤੁਸੀਂ ਚਲੇ ਹੋ/-ਲੀਆਂ  | ਹੋਏ ਹੋ   | (-ਹੋਈਆਂ |
| ਉਸ ਕੀਤਾ ਹੈ     | ਉਹ ਚਲਿਆ ਹੈ/-ਲੀ-     | ਹੋਇਆ ਹੈ  | (-ਈ-    |
| ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੀਤਾ ਹੈ | ਉਹ ਚਲੇ ਹਨ/-ਲੀਆਂ-    | ਹੋਏ ਹਨ   | (-ਈਆਂ-  |

## 5.3.3. ਪੂਰ੍ਯ ਭੂਤ ਕਾਲ

|                |                      |          |         |
|----------------|----------------------|----------|---------|
| ਮੈਂ ਕੀਤਾ ਸੀ    | ਮੈਂ ਚਲਿਆ ਸਾਂ/-ਲੀ ਸਾਂ | ਹੋਇਆ ਸਾਂ | (-ਈ ਸਾਂ |
| ਅਸਾਂ ਕੀਤਾ ਸੀ   | ਅਸੀਂ ਚਲੇ ਸਾਂ/ਲੀਆਂ--  | ਹੋਏ ਸਾਂ  | (-ਈਆਂ-  |
| ਤੂੰ ਕੀਤਾ ਸੀ    | ਤੂੰ ਚਲਿਆ ਸੈ/-ਲੀਆਂ-   | ਹੋਇਆ ਸੈ- | (-ਈ-    |
| ਤੁਸਾਂ ਕੀਤਾ ਸੀ  | ਤੁਸੀਂ ਚਲੇ ਸਉ/-ਲੀਆਂ-  | ਹੋਏ ਸਉ   | (-ਈਆਂ   |
| ਉਸ ਕੀਤਾ ਸੀ     | ਉਹ ਚਲਿਆ ਸੀ/-ਲੀ-      | ਹੋਇਆ ਸੀ  | (-ਈ-    |
| ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੀਤਾ ਸੀ | ਉਹ ਚਲੇ ਸਨ/-ਲੀਆਂ      | ਹੋਏ ਸਨ   | (-ਈਆਂ-  |

## 5.3.4. ਸਾਮਾਨ੍ਯ ਭੂਤ ਕਾਲ

|                  |                      |            |         |
|------------------|----------------------|------------|---------|
| ਮੈਂ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ    | ਮੈਂ ਚਲਿਆ ਹੋਵਾਂ/-ਲੀ-  | ਹੋਇਆ ਹੋਵਾਂ | (-ਈ ਸਾਂ |
| ਅਸਾਂ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ   | ਅਸੀਂ ਚਲੇ ਹੋਵੀਏ/-ਲੀਆਂ | ਹੋਏ ਹੋਵੀਏ  | (-ਈਆਂ-  |
| ਤੂੰ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ    | ਤੂੰ ਚਲਿਆ ਹੋਵੇ/-ਲੀ    | ਹੋਇਆ ਹੋਵੇ  | (-ਈ-    |
| ਤੁਸਾਂ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ  | ਤੁਸੀਂ ਚਲੇ ਹੋਵੇ/-ਲੀਆਂ | ਹੋਈਆਂ ਹੋਵੇ | (-ਈਆਂ   |
| ਉਸ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ     | ਉਹ ਚਲਿਆ ਹੋਵੇ/-ਲੀ-    | ਹੋਇਆ ਹੋਵੇ  | (-ਈ-    |
| ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ | ਉਹ ਚਲੇ ਹੋਵਣ/-ਲੀਆਂ-   | ਹੋਏ ਹੋਵਣ   | (-ਈਆਂ   |

## 5.3.5. ਸੰਦਿਗ੍ਧ ਭੂਤ ਕਾਲ

|                   |                        |             |         |
|-------------------|------------------------|-------------|---------|
| ਮੈਂ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇਗਾ   | ਮੈਂ ਚਲਿਆ ਹੋਵਾਂਗਾ/ਚਲੀ   | ਹੋਇਆ        | /ਹੋਈ    |
|                   | ਹੋਵਾਂਗੀ                | ਹੋਵਾਂਗਾ     | ਹੋਵਾਂਗੀ |
| ਅਸਾਂ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇਗਾ  | ਅਸੀਂ ਚਲੇ ਹੋਵਾਂਗੇ/-ਲੀਆਂ | ਹੋਵਾਂਗੇ/-ਈ  | ਰੀਆਂ    |
|                   | -ਰੀਆਂ                  |             |         |
| ਤੂੰ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇਗਾ   | ਤੂੰ ਚਲਿਆ ਹੋਵੇਗਾ/-ਲੀਆਂ  | ਹੋਵੇਗਾ      | (-ਈ-ਰੀ  |
| ਤੁਸਾਂ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇਗਾ | ਤੁਸੀਂ ਚਲੇ ਹੋਵੇ/ਲਿਆਂ    | ਹੋਇਆ ਹੋਵੇਗਾ | (-ਈ-    |
| ਉਸ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ      | ਉਹ ਚਲਿਆ ਹੋਵੇ/-ਲੀ-      | ਹੋਇਆ ਹੋਵੇ   | (-ਈ-    |
| ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ  | ਉਹ ਚਲੇ ਹੋਵਣ/-ਲੀਆਂ-     | ਹੋਏ ਹੋਵਣ    | (ਈਆਂ    |

### 5.3.6. ਧੂਰ੍ਣ ਸੰਕੇਤਾਰਥ ਕਾਲ

|                  |                       |           |         |
|------------------|-----------------------|-----------|---------|
| ਮੈਂ ਕੀਤਾ ਹੋਦਾ    | ਮੈਂ ਚਲਿਆ ਹੋਦਾ/-ਲੀ-ਦੀ  | ਹੋਇਆ ਹੋਦਾ | (-ਈ ਦੀ  |
| ਅਸਾਂ ਕੀਤਾ ਹੋਦਾ   | ਅਸੀਂ ਚਲੇ ਹੋਦੇ/-ਲੀਆਂ   | ਹੋਏ ਹੋਦੇ  | (-ਈਆਂ   |
|                  | -ਦੀਆਂ                 | ਦੀਆਂ      |         |
| ਤੂੰ ਕੀਤਾ ਹੋਦਾ    | ਤੂੰ ਚਲਿਆ ਹੋਦਾ/-ਲੀ-ਦੀ  | ਹੋਇਆ ਹੋਦਾ | (-ਈ-ਦੀ  |
| ਤੁਸਾਂ ਕੀਤਾ ਹੋਦਾ  | ਤੁਸੀਂ ਚਲੇ ਹੋਦੇ/-ਲੀਆਂ  | ਹੋਏ ਹੋਦੇ  | (-ਈਆਂ   |
|                  | -ਦੀਆਂ                 | ਦੀਆਂ      |         |
| ਉਸ ਕੀਤਾ ਹੋਦਾ     | ਤੁਸੀਂ ਚਲੇ ਹੋਦੇ/-ਲੀ-ਦੀ | ਹੋਇਆ ਹੋਦਾ | (-ਈ, ਦੀ |
| ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੀਤਾ ਹੋਦਾ | ਉਹ ਚਲੇ ਹੋਦੇ/-ਲੀਆਂ     | ਹੋਏ ਹੋਦੇ  | (-ਈਆਂ   |
|                  | -ਦੀਆਂ                 |           |         |

5.4. ਪ੍ਰੇਰਣਾਰਥਕ ਕ੍ਰਿਯਾ ਪ੍ਰਾਧ: ਹਿੰਦੀ ਜੈਸੀ ਹੈਂ ਕਿੰਨ੍ਹ ਜਹਾਂ ਹਿੰਦੀ ਮੈਂ/-ਲਾਨਾ/ਵੇਥ ਰੂਪ ਨਹੀਂ ਆਤਾ ਬਲਿਕ/-ਆਨ/ਏਵੰ/ਬਾਨਾ ਹੋਤਾ ਹੈ ਵਹਾਂ ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ /ਆਕੁਯ/ ਰੂਪ ਬਨਤਾ ਹੈ।

|      |         |        |          |           |
|------|---------|--------|----------|-----------|
| ਜਲਣਾ | ਜਾਣਾ    | ਸੁਣਨਾ  | ਸੁਣਾਉਣਾ  | ਸੁਣਵਾਉਣਾ  |
| ਬਲਣਾ | ਬਾਲਣਾ   | ਪੜ੍ਹਨਾ | ਪੜ੍ਹਾਉਣਾ | ਪੜ੍ਹਵਾਉਣਾ |
|      |         | ਸਿਖਣਾ  | ਸਿਖਾਉਣਾ  | ਸਿਖਵਾਉਣਾ  |
|      |         | ਸੀਣਾ   | ਸਿਉਣਾ    | ਸਿਣਵਾਉਣਾ  |
|      | ਬੈਠਣਾ   |        | ਬਿਠਲਣਾ   |           |
|      |         |        | ਬਿਹਾਉਣਾ  |           |
|      | ਪੜ੍ਹਨਾ  |        | ਪੜ੍ਹਾਉਣਾ |           |
|      | ਦੇਣਾ    |        | ਦਿਵਾਉਣਾ  |           |
|      | ਮਿਲਣਾ   |        | ਮਿਲਾਉਣਾ  |           |
|      | ਧੋਣਾ    |        | ਧਵਾਉਣਾ   |           |
|      | ਪੀਣਾ    |        | ਪਿਆਉਣਾ   |           |
|      | ਦਬਾਣਾ   |        | ਦਬਾਉਣਾ   |           |
|      | ਲੁਟਣਾ   |        | ਲੁਟਾਉਣਾ  |           |
|      | ਘੁਲਣਾ   |        | ਘੋਲਣਾ    |           |
|      | ਮਰਨਾ    |        | ਮਾਰਣਾ    |           |
|      | ਫਿਰਨਾ   |        | ਫੇਰਣਾ    |           |
|      | ਖੁਲ੍ਹਨਾ |        | ਖੋਲਣਾ    |           |
|      | ਡਿਗਣਾ   |        | ਡੇਗਣਾ    |           |

|       |        |
|-------|--------|
| ਛਟਣਾ  | ਛੋੜਣਾ  |
| ਟੁਟਣਾ | ਤੇੜਣਾ  |
| ਫਟਣਾ  | ਫੋੜਨਾ  |
| ਵਿਕਣਾ | ਵੇਚਣਾ  |
| ਉਡਣਾ  | ਉਡਾਉਣਾ |
| ਜਾਗਣਾ | ਜਗਾਉਣਾ |
| ਭਿਜਣਾ | ਭਿਉਣਾ  |

### 5.5. ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ/ਨੇ/ਕਾ ਪ੍ਰਯੋਗ

(ਕ) ਪੰਜਾਬੀ ਮੈਂ ਸਕਰਮਕ ਕ੍ਰਿਆ ਦੇ ਭੂਤ ਕਾਲ ਦੇ ਸਾਥ 'ਨੇ' ਕਾ ਪ੍ਰਯਾਗ ਅਸਥਾਈ ਰੂਪ ਮੈਂ ਹੋਤਾ ਹੈ :

1. ਮੈਂ ਕਹਿਆ ਜੀ=ਅਜੀ, ਮੈਂ ਨੇ ਕਹਾ।
2. ਉਸ ਮੇਰੀ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਸਮਝੀ=ਉਸ ਨੇ ਮੇਰੀ ਬਾਤ ਨਹੀਂ ਸਮਝੀ।
3. ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਾਰੀਆਂ ਰਾਜਿਆਂ ਫਕੀਰ ਕੀਤੇ।
4. ਕਾਲੂ ਕਹਿਆ, ਨਾਨਕ! ਤੂੰ ਪੜ੍ਹ।

(ਖ)

1. ਉਨ੍ਹਾਂ ਮੇਰੀ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਸਮਝੀ।
2. ਤੁਸਾਂ ਮੇਰੀ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਸਮਝੀ।
3. ਅਸਾਂ ਤੁਹਾਡੀ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਸਮਝੀ।

इन वाक्यों में उन्हां, तुसां एवं असां के साथ (ने) का उल्लेख नहीं, किन्तु उस की छाया के कारण ही ਉਹ, ਤੁਸੀਂ, ਅਸੀਂ के रूप बदल गए हैं और क्रिया का रूप कर्म (गल) के अनुसार है।

(ग) दूसरी ओर ऐसे वाक्य भी मिलते हैं :

1. ਨੈਕਰ ਨੇ ਸਾਰੀ ਗੱਲ ਦੱਸ ਦਿੱਤੀ।
2. ਮੁੰਡੇ ਨੂੰ ਕਿਸ ਨੇ ਝਿੜਕਿਆ ਹੈ ?
3. ਉਸ ਨੇ ਹਾਲੀ ਤਕ ਚਿੱਠੀ ਨਹੀਂ ਲਿਖੀ।
4. ਤੁਸਾਂ ਨੇ ਵੀ ਤਰਸ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ।
5. ਅਸਾਂ ਨੇ ਦੱਸ ਦਿੱਤਾ ਸੀ, ਪਈ ਉਹ ਚੋਰ ਹੈ।

(घ) ऐसे वाक्यों में (ने) का प्रयोग स्पष्ट रूप में मिलता है।

1. ਉਸ ਨੇ ਕਿਥੇ ਜਾਣਾ ਹੈ।
2. ਅਸਾਂ ਨੇ ਖਵਰੇ ਕੀ ਕੁਝ ਵੇਖਣਾ ਹੈ।
3. ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਜਦੋਂ ਵੀ ਇਥੇ ਆਉਣਾ ਸਾਨੂੰ ਜ਼ਰੂਰ ਮਿਲਣਾ।

इन वाक्यों में [ने] को अतिरिक्त और अयोग्य रूप में बरता गया है, हिन्दी में कहेंगे :

1. उसको (उसे) कहां जाना है।
  2. हम को (हमें) जाने क्या कुछ देखना है।
  3. उनका जब भी यहाँ जाना होता, (वे) हमें जरूर मिलते।
- यह भी पंजाबी बात चीत में स्वाभाविक है कि मैं के साथ (ने) का प्रयोग बिरले ही होता है।

### अंकों के नाम :

|   |      |   |        |    |              |
|---|------|---|--------|----|--------------|
| 1 | ऐका  | 5 | पाँचा  | 8  | आठा          |
| 2 | दुआ  | 6 | छाँका  | 9  | नाइआं        |
| 3 | तीआ  | 7 | सात्ता | 10 | इका बिंदी दस |
| 4 | चैका |   |        |    |              |

### संख्यावाचक :

|    |              |    |        |    |          |
|----|--------------|----|--------|----|----------|
| 1  | इक           | 18 | अठारां | 35 | पैती     |
| 2  | दो           | 19 | ਉੱਨੀ   | 36 | ਛੱਤੀ     |
| 3  | ਤਿੰਨ         | 20 | ਵੀਹ    | 37 | ਸੈੱਤੀ    |
| 4  | ਚਾਰ          | 21 | ਇੱਕ    | 38 | ਅਠੱਤੀ    |
| 5  | ਪੰਜ          | 22 | ਬਾਈ    | 39 | ਉਣਤਾਲੀ   |
| 6  | ਛੇ           | 23 | ਤੇਈ    | 40 | ਚਾਲੀ     |
| 7  | ਸੱਤ          | 24 | ਚੌਵੀ   | 41 | ਇਕਤਾਲੀ   |
| 8  | ਅੱਠ          | 25 | ਪੰਝੀ   | 42 | ਬਿਤਾਲੀ   |
| 9  | ਨੌਂ          | 26 | ਛੱਬੀ   | 43 | ਤ੍ਰਿਤਾਲੀ |
| 10 | ਦਸ           | 27 | ਸਤਾਈ   | 44 | ਚੇਤਾਲੀ   |
| 11 | ਗਿਆਰਾਂ ਯਾਰਾਂ | 28 | ਅਠਾਈ   | 45 | ਪੈਤਾਲੀ   |
| 12 | ਬਾਰਾਂ        | 29 | ਉੱਨਤੀ  | 46 | ਛਿਤਾਲੀ   |
| 13 | ਤੇਰਾਂ        | 30 | ਤੀਹ    | 47 | ਸੈਤਾਲੀ   |
| 14 | ਚੌਦਾਂ        | 31 | ਇਕੱਤੀ  | 48 | ਅਠਤਾਲੀ   |
| 15 | ਪੰਦਰਾਂ       | 32 | ਬੱਤੀ   | 49 | ਉਣ੍ਹਜਾ   |
| 16 | ਸੋਲਾਂ        | 33 | ਤੇਤੀ   | 50 | ਪੰਜਾਹ    |
| 17 | ਸਤਾਰਾਂ       | 34 | ਚੌਤੀ   | 51 | ਇਕਵੰਜਾ   |

|             |            |             |
|-------------|------------|-------------|
| 52 ਬਵੰਜਾ    | 69 ਉਨੱਤਰ   | 86 ਛਿਆਸੀ    |
| 53 ਤ੍ਰਿਵੰਜਾ | 70 ਸੱਤਰ    | 87 ਸਤਾਸੀ    |
| 54 ਚੁਰੰਜਾ   | 71 ਇੱਕਹਤਰ  | 88 ਅਠਾਸੀ    |
| 55 ਪਚਵੰਜਾ   | 72 ਬਹੱਤਰ   | 89 ਉਣਾਨਵੇ   |
| 56 ਛਿਵੰਜਾ   | 73 ਤਿਹੱਤਰ  | 90 ਨਵੇ      |
| 57 ਸਤਵੰਜਾ   | 74 ਚੌਹੱਤਰ  | 91 ਇਕਾਨਵੇ   |
| 58 ਅਠਵੰਜਾ   | 75 ਪੰਜੱਤਰ  | 92 ਬਾਨਵੇ    |
| 59 ਉਣਾਠ     | 76 ਛਿਹੱਤਰ  | 93 ਤ੍ਰਿਨਵੇ  |
| 60 ਸੱਠ      | 77 ਸਤੱਤਰ   | 94 ਚੌਰਾਨਵੇ  |
| 61 ਇਕਾਠ     | 78 ਅਠੱਤਰ   | 95 ਪਚਾਨਵੇ   |
| 62 ਬਾਹਠ     | 79 ਉਣਾਸੀ   | 96 ਛਿਆਨਵੇ   |
| 63 ਤੇਰਠ     | 80 ਅੱਸੀ    | 97 ਸਤਾਨਵੇ   |
| 64 ਚੌਰਠ     | 81 ਇਕਾਸੀ   | 98 ਅਠਾਨਵੇ   |
| 65 ਪੈਰਠ     | 82 ਬਿਆਸੀ   | 99 ਨਤ੍ਰਿਨਵੇ |
| 66 ਛਿਆਹਠ    | 83 ਤ੍ਰਿਆਸੀ | 100 ਸੇ      |
| 67 ਸਿਤਾਹਠ   | 84 ਚੌਰਾਸੀ  | 1000 ਹਜ਼ਾਰ  |
| 68 ਅਠਾਹਠ    | 85 ਪੰਜਾਸੀ  | 100000 ਲੱਖ  |

**ਪਰਿਯਾਸ ਗਾਚਕ :**

|                        |      |                          |          |
|------------------------|------|--------------------------|----------|
| $\frac{1}{4}$ ਪਾਇਆ, ਪਾ | ਧਾਵ  | $2\frac{1}{2}$ ਢਾਈ       | ਅਫਾੜੀ    |
| $\frac{1}{2}$ ਅੱਧਾ     | ਆਧਾ  | $3\frac{1}{2}$ ਸਾਢੇ ਤਿੰਨ | ਸਾਢੇ ਤੀਨ |
| $\frac{3}{4}$ ਪੋਣਾ     | ਪੈਨਾ | $4\frac{1}{4}$ ਸਵਾ ਚਾਰ   | ਸਥਾ ਚਾਰ  |
| $1\frac{1}{4}$ ਸਵਾ     | ਸਥਾ  | $4\frac{1}{2}$ ਸਾਢੇ ਚਾਰ  | ਸਾਢੇ ਚਾਰ |
| $1\frac{1}{2}$ ਡੇਢ     | ਡੇਢ  | $4\frac{3}{4}$ ਪੋਣੇ ਚਾਰ  | ਪੈਨੇ ਚਾਰ |

**ਗੁਣ ਗਾਚਕ :**

|        |       |       |       |         |       |
|--------|-------|-------|-------|---------|-------|
| ਪਹਲਾ   | ਦੂਜਾ  | ਤੀਜਾ  | ਚੌਥਾ  | ਪੰਜਵਾਂ  | ਛੇਵਾਂ |
| ਪਹਲਾ   | ਦੂਸਰਾ | ਤੀਸਰਾ | ਚੌਥਾ  | ਪਾਂਚਵਾਂ | ਛਟਾ   |
| ਸਤਵਾਂ  | ਅਠਵਾਂ | ਨੌਵਾਂ | ਦਸਵਾਂ | ਆਦਿ     |       |
| ਸਾਤਵਾਂ | ਆਠਵਾਂ | ਨਵਾਂ  | ਦਸਵਾਂ |         |       |

**ਸਮੂਹ ਗਾਚਕ :**

|           |           |
|-----------|-----------|
| ਦੋਵੇਂ ਭਰਾ | ਦੋਨੀਂ ਭਾਈ |
| ਤਿੰਨੇ ਭਰਾ | ਤੀਨੀਂ ਭਾਈ |

|          |           |
|----------|-----------|
| ਚਾਰੇ ਭਰਾ | ਘਾਰੋਂ ਭਾई |
| ਪੰਜੇ     | ਪਾਚੌਂ     |
| ਛੇਵੇਂ    | ਛੇਔਂ      |
| ਸੱਤ      | ਸਾਤੌਂ     |
| ਅੱਠੇ     | ਆਠੌਂ      |

**ਆਵ੍ਰਤਿ ਧਾਚਕ :**

|          |            |       |
|----------|------------|-------|
| ਦੋ ਗੁਣਾ  | ਦੁਗਣਾ ;    | ਦੂਣਾ  |
| ਤਿਗੁਣਾ   | ਤਿਗੁਣਾ ;   | ਤੀਣਾ  |
| ਚੌਗੁਣਾ   | ਚਾਰ ਗੁਣਾ ; | ਚੋਣਾ  |
| ਪਾਂਧਗੁਣਾ | ਪੰਜ ਗੁਣਾ ; | ਪੰਜਣਾ |

**ਅਨਿਸ਼ਿਚਤ ਪਰਿਮਾਣ :**

|        |         |
|--------|---------|
| ਚੋਖਾ   | ਕਾਫੀ    |
| ਕੁਝ    | ਕੁਝ     |
| ਵੀਹ ਕੁ | ਕੋਈ ਬੀਸ |
| ਸੋ ਕੁ  | ਕੋਈ ਸੌ  |

**ਗੁਣਵਾਲੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਅਵਸਥਾ :**

ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ (—ਤਰ) ਲਗਾ ਕਰ ਬਨੇ ਉਤਰਾਵਸਥਾ ਰੂਪ ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਹੈ :

|         |        |
|---------|--------|
| ਅਗੋਤਰ   | ਉਪਸਰਗ  |
| ਪਿਛੇਤਰ  | ਪਰਸਰਗ  |
| ਉਚੇਰਾ   | ਉਚਤਰ   |
| ਅਗਲੇਤਰਾ | ਅਗ੍ਰਤਰ |

ਚੰਗੇਰਾ, ਛੁਟੇਰਾ, ਪਤਲੇਰਾ, ਬਥੇਰਾ, ਲੰਮੇਰਾ, ਵਡੇਰਾ ਦੁਰੇੜਾ (ਦੂਰਤਰ)

ਉਤਮਾਵਸਥਾ—ਸਭ ਤੋਂ ਚੰਗਾ, ਸਭ ਨਾਲੋਂ ਚੰਗਾ, ਸਭ ਵਿਚੋਂ ਚੰਗਾ।

**ਪਹਾੜੇ**

2

|              |                 |
|--------------|-----------------|
| ਇਕ ਦੂਣੀ ਦੂਣੈ | ਛੇ ਦੂਣੇ ਬਾਰਾਂ   |
| ਦੋ ਦੂਣੇ ਚਾਰ  | ਸੱਤ ਦੂਣੇ ਚੋਦਾਂ  |
| ਤਿੰਨ ਦੂਣੇ ਛੇ | ਅੱਠ ਦੂਣੇ ਸੋਲਹਾਂ |
| ਚਾਰ ਦੂਣੇ ਅੱਠ | ਨੌ ਦੂਣੇ ਅਠਾਰਾਂ  |
| ਪੰਜ ਦੂਣੇ ਦਸ  | ਦਸ ਦੂਣੇ ਵੀਹ     |

3

ਇਕ ਤੀਆ ਤੀਆ  
ਦੇ ਤੀਏ ਛੇ  
ਤਿੰਨ ਤੀਏ ਨੇ  
ਚਾਰ ਤੀਏ ਬਾਰਾਂ  
ਪੰਜ ਤੀਏ ਪੰਦ੍ਰਾਂ

4

ਇਕ ਚੋਕਾ ਚੋਕਾ  
ਦੇ ਚੋਕੇ ਅੱਠ  
ਤਿੰਨ ਚੋਕੇ ਬਾਰਾਂ  
ਚਾਰ ਚੋਕੇ ਸੋਲਹਾਂ  
ਪੰਜ ਚੋਕੇ ਵੀਹ  
ਛੇ ਚੋਕੇ ਚੋਵੀ  
ਸੱਤ ਚੋਕੇ ਅਠਾਈ  
ਅੱਠ ਚੋਕੇ ਬੱਤੀ  
ਨੌ ਚੋਕੇ ਛੱਤੀ  
ਦਸ ਚੋਕਾ ਚਾਲੀ

ਛੇ ਤੀਏ ਅਠਾਰਾਂ  
ਸਤ ਤੀਏ ਇੱਕੀ  
ਅੱਠ ਤੀਏ ਚੋਵੀ  
ਨੌ ਤੀਏ ਸਤਾਈ  
ਦਸ ਤੀਆ ਤੀਹ

5

ਇਕ ਪਾਂਜਾ ਪਾਂਜਾ  
ਦੇ ਪਾਂਜਾ ਦਸ  
ਤਿੰਨ ਪਾਂਜਾ ਪੰਦ੍ਰਾਂ  
ਚਾਰ ਪਾਂਜਾ ਵੀਹ  
ਪੰਜ ਪਾਂਜਾ ਪੱਚੀ  
ਛੇ ਪਾਂਜਾ ਤੀਹ  
ਸੱਤ ਪਾਂਜਾ ਪੈਤੀ  
ਅੱਠ ਪਾਂਜਾ ਚਾਲੀ  
ਨੌ ਪਾਂਜਾ ਪੰਜਤਾਲੀ  
ਦਸ ਪਾਂਜਾ ਪੰਜਾਹ

### ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਨਾਂ ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਨਾਮ

|         |         |            |                                    |           |                       |
|---------|---------|------------|------------------------------------|-----------|-----------------------|
| ਐਤਵਾਰ   | ਭੁੱਤਵਾਰ | ਬੁੱਧਵਾਰ    | ਬੁੱਧਵਾਰ                            | ਸ਼ਨੀਚਰਵਾਰ | ਸ਼ਨੀਵਾਰ,<br>ਸ਼ਨੀਚਰਵਾਰ |
| ਸੋਮਵਾਰ  | ਸੋਮਵਾਰ  | ਵੀਰਵਾਰ     | ਵੀਰਵਾਰ,<br>ਬ੍ਰਹਸਪਤਿਵਾਰ,<br>ਗੁਰੁਵਾਰ |           |                       |
| ਮੰਗਲਵਾਰ | ਮੰਗਲਵਾਰ | ਸ਼ੁੱਕ੍ਰਵਾਰ | ਸ਼ੁੱਕ੍ਰਵਾਰ                         |           |                       |

### ਮਹੀਨਿਆਂ ਦੇ ਨਾਂ ਮਹੀਨਿਆਂ ਦੇ ਨਾਮ

|       |       |       |       |      |      |     |     |
|-------|-------|-------|-------|------|------|-----|-----|
| ਚੇਤ   | ਫੇਰ   | ਹਾੜ   | ਫਾੜ   | ਅਸੂ  | ਅਸੂ  | ਪੋਹ | ਪੋਹ |
| ਵਿਸਾਖ | ਵਿਸਾਖ | ਸਾਉਣ  | ਸਾਉਣ  | ਕੱਤਕ | ਕੱਤਕ | ਮਾਘ | ਮਾਘ |
| ਜੇਠ   | ਜੇਠ   | ਭਾਦੋਂ | ਭਾਦੋਂ | ਮੱਘਰ | ਮੱਘਰ | ਫਗਣ | ਫਗਣ |

### ਕੁਝ ਪੰਜਾਬੀ ਮੁਹਾਵਰੇ

- ਉਭੇ ਸਾਹ ਲੈਣੇ                      ਠੰਡੀ ਸਾਂਸ ਭਰਨਾ
- ਆਪਣੀ ਪੀੜ੍ਹੀ ਹੇਠ ਮੋਟਾ ਫੇਰਨਾ      ਅਪਣੇ ਅਵਗੁਣ ਦੇਖਣੇ ਕਾ ਸਾਹਸ ਕਰਨਾ



3. अलख भुकाਉਣा समूल नष्ट करना
4. अलूਣੀ मिल चटणी नीरस एवं कठिन काम करना
5. आधे लगाना कहना मानना
6. आछा ललूण लड़ाई छेड़ देना
7. आवारा छूट जाना सारी टोली का बिगड़ जाना
8. अंग पालना साथ देना
9. अंगूठी पै जाना अंधेर-गंदी मच जाना
10. टिके डगे पिंड मंगाना एक ही बार में बड़ा काम समाप्त करने का प्रयत्न करना
11. सलूणा चारुना सालन पकाना
12. सुंती कल्ला नगाਉਣੀ पुराने मुरदे उखेड़ना
13. मिर ते बुंदा न होना बुरे कामों से रोकने वाले का अभाव होना
14. मिर मूना के औतवार पुढा गलती कर चुकने के पश्चात सलाह पुछना
15. हॉध पैर पै जाना घबरा जाना
16. हॉध वॉध के देणे हस्ताक्षर कर देना
17. हथी ढावां करनीआं बहुत सत्कार करना
18. हॉथी पैना हाथा पाई करना
19. हिंक् ते भुंग दलना छाती पर मूंग दलना
20. होलिआं पैना लज्जित होना
21. कॅधां ते होले होना बहुत हीन होना
22. कॅचा पैना लज्जित होना, खसियाना होना
23. कॅम टेरना काम चलाना
24. करीद आਉਣੀ घृणा होना
25. काचला पैना उतावला होना
26. कुढर घगि के दाङ्गी पुंटी मित्र बन के अपमान करना
27. कॅन होना चैतावनी होना
28. कॅनी कतराਉਣा जी चुराना, खिसक जाना
29. कानिछिं जाना कुछ न सूझना बुद्धि भ्रष्ट होना
30. कुंघ टपटी बहुत ज्यादा पीटना

- |                                 |                                 |
|---------------------------------|---------------------------------|
| 31. ਗਲ ਪੈਣਾ                     | ਲੜਨੇ ਕੋ ਤੈਧਾਰ ਹੋਨਾ              |
| 32. ਗਿਲਾ ਪੀਹਣਾ ਪਾਉਣਾ            | ਲਭਾ ਟੰਟਾ ਖੜਾ ਕਰਨਾ               |
| 33. ਘਰ ਪੂਰਾ ਕਰਨਾ                | ਹਕ ਦੇਨਾ                         |
| 34. ਘਾਹ ਵਢਣਾ                    | ਜਲਦੀ ਮੈਂ, ਬੇਪਰਵਾਹੀ ਮੈਂ ਕਾਮ ਕਰਨਾ |
| 35. ਘੋਟਾ ਲਾਉਣਾ                  | ਰਟਾ ਲਗਾਨਾ, ਕੰਠਰਥ ਕਰਨਾ           |
| 36. ਚਪਣੀ ਵਿਚ ਨੱਕ ਡੋਬ ਕੇ ਮਰਨਾ    | ਚੁਲ੍ਹੂ ਮਰ ਪਾਨੀ ਮੈਂ ਡੂਬ ਮਰਨਾ     |
| 37. ਚਾਂਦੀ ਦੀ ਜੁੱਤੀ ਮਾਰਨੀ        | ਘੁੱਸ ਦੇਨਾ                       |
| 38. ਛਾਲ ਮਾਰਨੀ                   | ਝਲਾਂਗ ਲਗਾਨਾ                     |
| 39. ਜੱਫਾ ਪਾਉਣਾ                  | ਆਲੰਗਨ ਕਰਨਾ                      |
| 40. ਜਾਨ ਮਾਰਨੀ                   | ਕਠੋਰ ਪਰਿਸ਼ਰਮ ਕਰਨਾ               |
| 41. ਜੁਤੀਆਂ ਭਿਉਂ ਭਿਉਂ ਕੇ ਮਾਰਨੀਆਂ | ਬੁਰੀ तरह ਲਜ਼ਿਜਤ ਕਰਨਾ            |
| 42. ਜਬਾਨ ਫੇਰ ਲੈਣੀ               | ਮੁਕਰ ਜਾਨਾ                       |
| 43. ਜੰਦਰਾ ਮਾਰਨਾ                 | ਤਾਲਾ ਲਗਾਨਾ                      |
| 44. ਝੱਗ ਛਡਣੀ                    | ਕ੍ਰੋਧ ਸੇ ਪਾਗਲ ਹੋਨਾ              |
| 45. ਟਿੱਲ ਲਾਉਣਾ                  | ਏਫ਼ੀ ਚੋਟੀ ਕਾ ਜੋਰ ਲਗਾਨਾ          |
| 46. ਠੰਡੇ ਦੁੱਧ ਨੂੰ ਫੂਕਾਂ ਮਾਰਨੀਆਂ | ਅਕਾਰਣ ਹੀ ਕਿਸੀ ਕੋ ਧਮਕਾਨਾ         |
| 47. ਠੁੱਡਾ ਖਾਣਾ                  | ਠੋਕਰ ਖਾਨਾ                       |
| 48. ਢਿਡ ਵਿਚ ਰਖਣਾ                | ਭੇਦ ਰਖਣਾ                        |
| 49. ਢੇਰੀ ਢਾਹੁਣੀ                 | ਹਿੰਮਤ ਹਾਰ ਕੇ ਬੈਠਨਾ              |
| 50. ਤਾ ਦੇਣਾ                     | ਆਂਧ ਦਿਖਾਨਾ                      |
| 51. ਤਾਟ ਪੈਣੀ                    | ਟੀਸ ਚਠਤਾ                        |
| 52. ਖੁੱਕੀ ਵੜੇ ਪਕਾਉਣੇ            | ਕੇਵਲ ਬਾਤਾਂ ਸੇ ਕਾਮ ਚਲਾਨਾ         |
| 53. ਦਾ ਲਾਉਣਾ                    | ਦਾਂਭ ਲਗਾਨਾ                      |
| 54. ਦਲੂਜਾਂ ਉਚੇੜ ਮਾਰਨੀਆਂ         | ਬਾਰ ਬਾਰ ਦਰ ਪਰ ਆਨਾ               |
| 55. ਦੂਰੋਂ ਮੱਥਾ ਟੇਕਣਾ            | ਦੂਰ ਸੇ ਪ੍ਰਣਾਮ (ਸਲਾਮ)            |
| 56. ਦਿਲ ਹੋਲਾ ਕਰਨਾ               | ਜੀ ਹਾਰਨਾ                        |
| 57. ਨਾਂ ਕਢਣਾ                    | ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਹੋਨਾ                    |
| 58. ਨੱਕ ਤੇ ਮੱਖੀ ਨ ਬਹਿਣ ਦੇਣੀ     | ਅਪਨੇ ਆਪ ਕੋ ਬੜਾ ਸਮਝਨਾ            |
| 59. ਨੱਕ ਰਖਣਾ                    | ਲਾਜ ਰਖਣਾ                        |
| 60. ਨੱਕ ਚਾੜ੍ਹਨਾ                 | ਘੁਣਾ ਕਰਨਾ                       |
| 61. ਪੱਗ ਲਾਹੁਣੀ                  | ਪਗੜੀ ਉਤਾਰਨਾ                     |

- |                           |                                            |
|---------------------------|--------------------------------------------|
| 62. पिंठ पुरनी            | सहायता करनी                                |
| 63. पैर पाउंटा            | पधारना                                     |
| 64. हूब चाडुनी (देनी)     | चापलूसी करना                               |
| 65. हूहडी पाउंटी          | सोग मनाना                                  |
| 66. डेरा भारना            | फेरी लगाना                                 |
| 67. घुंले लुटना           | मौज करना                                   |
| 68. घुहा लाहुंटा          | दरवाजा खोलना                               |
| 69. डंठा घहिटा            | हानी होना                                  |
| 70. डारा ते पैटा          | मिलन करवाना                                |
| 71. डंग बुजनी             | उजड़ जाना, दरिद्र होना                     |
| 72. डेडा पैटा             | लज्जित होना                                |
| 73. डंगडा पैटा            | भंगड़ा नाच होना                            |
| 74. डंघल बूमे धाटा        | चक्कर में पड़ना                            |
| 75. मरचां लगनीआं          | बुरा मानना, जलभुन जाना                     |
| 76. मँवू ठपटा             | नाका बंदी करना                             |
| 77. मँस डुंटी             | मसैं भीगना लवान होना                       |
| 78. मगर पैटा              | पीछे पड़ना                                 |
| 79. मँघा डहटा             | लड़ाई छेड़ बैठना                           |
| 80. मँघे लाउंटा           | जिम्मे लगाना, किसी के सिर जिम्मेवारी डालना |
| 81. मूँह ते लेंघी लाहुंटी | मर्यादा एवं लाज की अवहेलना                 |
| 82. मिंटी पाउंटा          | बात छिपाना                                 |
| 83. लहू पंथरना            | कोह ममता का भाव जगाना                      |
| 84. लँघ घनूटा             | कमर बांधना, तैयार होना                     |
| 85. लूडी लाउंटी           | चुगनी करना, लगाई बुझाई करना                |
| 86. लीक लगनी              | बदनानी होना                                |
| 87. लीक भारनी             | रद्द करना, लेखा साफ कर देना                |
| 88. वँटा पैटा             | उदास होना                                  |
| 89. वा नाल लड़ना          | अकारण लड़ना                                |
| 90. वा वँग जाटी           | बुरे विचारों की हवा लग जाना                |

### ਸ਼ੋਮਨ ਭਾਸ਼ਾ

ਸ਼ਿਸ਼ਟਾਚਾਰ ਕੇ ਕਾਰਣ ਕੜ੍ਹੇ ਬਾਰ ਅਸ਼ੁਮ ਬਾਤ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਸ਼ਬਦਾਂ ਮੇਂ ਛਾਂਪ ਕਰ ਕਹੀ ਜਾਤੀ ਹੈ। ਇਸੇ ਸ਼ੋਮਨ ਭਾਸ਼ਾ ਕਹਤੇ ਹੈਂ। ਧਰਾਂ ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਇਸਕੇ ਕੁਝ ਨਮੂਨੇ ਦਿਓ ਜਾਤੇ ਹੈਂ :

|                             |                                 |
|-----------------------------|---------------------------------|
| ਦੁਕਾਨ ਵਧਾ ਦਿੱਤੀ             | — ਦੁਕਾਨ ਬੰਦ ਕਰ ਦਿੱਤੀ            |
| ਚੂੜਾ ਵਧਾ ਦਿੱਤਾ              | — ਚੂੜਾ ਲਾਹ ਦਿੱਤਾ                |
| ਦਾਣੇ ਵਧ ਗਏ                  | — ਦਾਣੇ ਮੁਕ ਗਏ                   |
| ਦੀਵਾ ਵਡਾ ਕੀਤਾ               | — ਦੀਵਾ ਬੁੜਾ ਦਿੱਤਾ               |
| ਦੁਧ ਸੇਰ ਗਇਆ                 | — ਦੁਧ ਫਟ ਗਇਆ                    |
| ਦੂਜੀ ਸੈ                     | — ਗਊ ਦਾ ਮਾਸ                     |
| ਸੁਰੀ ਸੈ                     | — ਗਊ ਦਾ ਮਾਸ ਹਰਾਮ                |
| ਪੂਰਾ ਹੋ ਗਇਆ                 | — ਮਰ ਗਇਆ                        |
| ਫੁੱਲ ਗੰਗਾ ਵਿਚ ਤਾਰਨ ਗਏ       | — ਹੱਡੀਆਂ ਗੰਗਾ ਵਿਚ ਪ੍ਰਵਾਹ ਕਰਨ ਗਏ |
| ਮਿੱਟੀ ਟਿਕਾਣੇ ਲਾਈ            | — ਸਰੀਰ ਦਾ ਦਾਹ ਕੀਤਾ              |
| ਤੁਹਾਨੂੰ ਸਾਹਬ ਨੇ ਯਾਦ ਕੀਤਾ ਹੈ | — ਸਾਹਬ ਨੇ ਤੁਹਾਨੂੰ ਬੁਲਾਇਆ ਹੈ     |
| ਦੁਧ ਵਧਾਉਣਾ                  | — ਦੁੱਧ ਜਮਾਉਣਾ                   |
| ਜੰਗਲ ਜਾਣਾ                   | — ਟੱਟੀ ਜਾਣਾ                     |
| ਕਪੜੇ ਆਉਣਾ                   | — ਮਾਹਵਾਰੀ ਆਉਣਾ                  |
| ਉਮੇਦਵਾਰੀ ਹੋਣਾ               | — ਗਰਭਵਤੀ ਹੋਣਾ                   |
| ਕੇਸ ਕਤਲ ਕਰਕੇ                | — ਜ਼ੋਰੀ ਕੇਸ ਕਟਾਏ                |
| ਦਾੜ੍ਹੀ ਫੁਲ ਪਾਉਣਾ            | — ਨਿਰਾਦਰ ਕਰਨਾ                   |

## खण्ड 7

# हस्तलेख एवं साहित्यिक नमूने

### पंजाबी हस्तलेख

मुद्रित अक्षर अधिक स्पष्ट और निश्चित रूप में रेखाएं रखते हैं। लेखनी से लिखते समय उन में कई प्रकार के परिवर्तनों की सम्भावना बनी रहती है। प्रायः शिक्षा गुरु अथवा माता-पिता की लेख-शैली का प्रभाव देर तक रहता है किन्तु व्यक्तिगत रुचियों के कारण भी अक्षरों के आकार में अन्तर पड़ जाता है। लेखनी जब वेग से चलती है तो मात्राओं से अंकित करने में व्यंजनों के सिर पैर भी जुड़ने लगते हैं।

पंजाबी हस्त-लेख पढ़ सकने की योग्यता उत्पन्न करने के लिए यहाँ कुछ नमूने प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इन को पढ़ने का अभ्यास अवश्य लाभप्रद होगा।

ਸਾਡੇ ਮੀਰਰ ਦਿਹ ਤੁਹੰਕਾ ਘਇਆ ਤੇਇਅਨ ਤੇ ਫਿ  
 ਮਨੁਖ ਵਿਚਾਰਦਾਨ ਜੀਹ ਤੇ ਅਤੇ ਤੇਰੇ ਕੰਮ ਕਰਨ ਖਰਿਅਤ  
 ਦਿਹ ਵਿਚਾਰੇ ਤੇ ਆਸਰੇ ਤੁਹੰਕਾ ॥ ਅਖਰੇ ੨੧ ਆਸਰੇ  
 ਖੋਲ੍ਹੇ ਇਸ ਮਿਸਰ ਤੇ ਪੁਜੀ ॥ ਤੇ ਦਿਹ ਮੇਰੇ ਤੇਰੇ ਤੇ।  
 ਮਨੁਖ ਸੁਭਾਵ ਤੇ ਆਸਰੇ ਤੁਹੰਕਾ ਤੇ। ਦਿਹਾਰੇ ਆਸਰੇ  
 ਨਹੀਂ ਤੁਹੰਕਾ। ਦਿਹਾਰੇ ਮਨੁਖ ਆਪਣੀ ਸੁਭਾਵੇ  
 ਕ੍ਰਿਤਿਆ ਤੇ ੨੧੨ ਸਾਧਨ ਕਰਨ ਖਰੇ ਕਾਹਨ ਕਾਹਨ ਤੇ।  
 ਭਾਵੇਂ ਤੇ ਕਿ ਰਿਹਿਆ ਤੇ ੨੧੩ ਤੇ ਕਾਮ, ਕ੍ਰੋਧ ਆਰੇ  
 ਤੇ ਆਸਰੇ ਤੁਹੰਕਾ ਤੇ ਪਰ ਆਪਣੇ ਕਰਨ ਤੇ ੨੧੪ ਸਾਧਨ  
 ਕਰਨ ਖਰੇ ਮਨੁਖ ਵਿਚਾਰੇ ਤੇ ਪਰ। ਉਹ ਤੇ ਪਾਠੇ।  
 ੨੧੫ ਕਾਹ ਦਿਹ ਤੇ ਕਿ ਸਾਧਨ ਬਧੀ ਕੰਮ ਕਰਨ  
 ਖਿਰਦੇ ਕਰਨ ਖਰਿਆ ਆਪਣੇ ਪਿਛੇ  
 ਤੁਹੰਕਾ ਤੇ ਪੋਖ ਕੇ ਉਹ ਤੇ ਕਾਹੇ ਦਿਹ  
 ਤੇ ਨਹੀਂ ਕੰਮ ਕਰਨ ਤੇ। ਆਰਥੀ ਤੇ ਆਪਣੇ  
 ਸੀਧਾ ਤੇ ਪਾਤਾਲ ਤੇ ਉਸ ਤੇ ਰਿਆਸ ਤੇ ਸੀਧਿ  
 ਕਰਨ ਤੇ। ਰਿਹਾ ਕਾਹ ਰਿਸੇ ਤੇ ਰਹਿਆ  
 ਨਹੀਂ ਉਸਦਾ ਸੁਰ ਉਹ ਕਾਹ ਨਹੀਂ ਸੁਰਦਾ।  
 ਤੇ ਉਹ ਕਾਹ ਕਾਹ ਕਾਹ ਕਾਹ ਤੇ ਉਸ ਤੇ  
 ਸੁਰ ਤੇ ਉਹ ਕਾਹ ਕਾਹ ਕਾਹ ਕਾਹ ਕਾਹ  
 ਕਾਹ ਕਾਹ ਰਿਹਾ ਉਸ ਤੇ ਕਾਹ ਕਾਹ  
 ਕਾਹ ਕਾਹ ਰਿਸੇ ਰਿਸੇ ਰਿਸੇ ਰਿਸੇ ਰਿਸੇ  
 ਉਸ ਕੇ ਆਪਣੇ ਤੁਹੰਕਾ ਤੇ ਤੇ ਰਿਹਾਰੇ।

ਸੋਧਸਿੰਘ

ਸਾਡੇ ਅੰਦਰ ਇਹ ਭੁਲੇਖਾ ਪਾਇਆ ਹੋਇਆ ਹੈ ਕਿ ਮਨੁਖ ਵਿਚਾਰਵਾਨ ਜੀਵ ਹੈ ਅਤੇ ਹਰ ਕੰਮ ਕਰਨ ਲਗਿਆਂ ਇਹ ਵਿਚਾਰ ਦੇ ਆਸਰੇ ਤੁਰਦਾ ਹੈ। ਅਜਕਲ ਦੀ ਮਾਨਸਿਕ ਖੋਜ ਇਸ ਸਿੱਟੇ ਤੇ ਪੁੱਜੀ ਹੈ ਕਿ ਮਨੋਤ ਗਲਤ ਹੈ। ਮਨੁਖ ਸੁਭਾਵ ਦੇ ਆਸਰੇ ਤੁਰਦਾ ਹੈ। ਵਿਚਾਰ ਦੇ ਆਸਰੇ ਨਹੀਂ ਤੁਰਦਾ। ਵਿਚਾਰ ਨੂੰ ਮਨੁਖ ਆਪਣੀ ਸੁਭਾਵਿਕ ਕਿਰਿਆ ਨੂੰ ਠੀਕ ਸਾਬਤ ਕਰਨ ਲਈ ਬਹੁਤਾ ਵਰਤਦਾ ਹੈ। ਭਾਵ ਇਹ ਹੈ ਕਿਰਿਆ ਦੀ ਨੀਂਹ ਤਾਂ ਕਾਮ, ਕ੍ਰੋਧ ਆਦਿ ਦੇ ਆਸਰੇ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਪਰ ਆਪਣੇ ਕਰਮਾਂ ਨੂੰ ਠੀਕ ਸਾਬਤ ਕਰਨ ਲਈ ਮਨੁਖ ਵਿਚਾਰ ਦਾ ਪਰਦਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੇ ਪਾਂਦਾ ਹੈ। ਦੂਜੀ ਗੱਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡੀ ਬੁਧੀ ਕੋਈ ਨਵਾਂ ਨਿਰਣਾ ਕਰਨ ਲਗਿਆਂ ਆਪਣੇ ਪਿਛਲੇ ਤਜਰਬਿਆਂ ਨੂੰ ਘੋਖ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਚਾਨਣੇ ਵਿਚ ਹੀ ਨਵਾਂ ਫੈਸਲਾ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਆਦਮੀ ਦੇ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਪਰਤਾਵੇ ਹੀ ਉਸ ਦੇ ਗਿਆਨ ਨੂੰ ਸੀਮਿਤ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਜਿਹੜਾ ਫਲ ਕਿਸੇ ਨੇ ਚਖਿਆ ਨਹੀਂ ਉਸਦਾ ਸੁਆਦ ਉਹ ਦਸ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ। ਜੇ ਉਹ ਨਵਾਂ ਫਲ ਚਖ ਵੀ ਲਵੇ ਤਾਂ ਉਸ ਦੇ ਸੁਆਦ ਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਫਲਾਂ ਦੇ ਸੁਆਦ ਰਾਹੀਂ ਦਸਣ ਦਾ ਜਤਨ ਕਰੇਗਾ ਜਿਹੜਾ ਉਸ ਨੇ ਮਸੇ ਖਾਧੇ ਹੋਏ ਹਨ। ਕਿਸੇ ਇਕ ਵਿਅਕਤੀ ਦਾ ਗਿਆਨ ਉਸਦੇ ਆਪਣੇ ਤਜਰਬੇ ਤੇ ਹੀ ਨਿਰਭਰ ਹੈ।

ਜੋਧ ਸਿੰਘ

ਅਸਲ ਵਿਚ ਪੈਸਾਚੀ ਵਿਧਰਮੀਆਂ  
 ਰੁਆਗ ਅਖੌਲਾਈ ਜਾਲ ਕਰਕੇ  
 ਭਾਰਤੀਆਂ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਅਲਗ ਹੋਣ ਦੀ  
 ਨਿਗਾਹ ਨਾਲ ਵੇਖੀ ਜਾਂਦੀ ਰਹੀ ॥  
 ਤਾਂਹੀ ਉਂਤਾਂ ਗੁਲਾਮ ਦੁਆਰੇ ਨੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ  
 ਅਧਿਆਪਨ ਦੀ ਸ਼ਰਤ ਵਿਚ  
 ਹਾਰ ਕੇ ਇਸ ਉਪੇਖਿਆਤ  
 ਬੋਲੀ ਵਿਚ ਲਿਖਿਆ ਸੀ। ਇਹ  
 ਤਾਂ ਬਾਹਰਲੇ ਪ੍ਰਯਾਸ ਹਨ। ਪੈਸਾਚੀ  
 ਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਦਾ ਵਿਗਿਆਨਕ  
 ਟਾਕਰਾ ਵੀ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਜਨਮ-  
 ਜਨਿਤ ਦੇ ਸੰਬੰਧਾਂ ਦੀ ਪੁਸ਼ਟੀ  
 ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ। ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਫਰਕ  
 ਧੁਨੀਆਂ ਦੇ ਅਖੌਲੀ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿਚ  
 ਵਿਚ ਮਿਲਦਾ ਹੈ।

— ਸ਼ਿਯੋਂਸ਼ਵਰ ਦੁਰਘ

੨੦-੬-੧੯੬੭



ਅਸਲ ਵਿਚ ਪੈਸ਼ਾਚੀ ਵਿਧਰਮੀਆਂ ਦੁਆਰਾ ਅਪਣਾਈ ਜਾਣ ਕਰਕੇ ਭਾਰਤੀਆਂ ਵਲੋਂ ਅਣਗਹਲੀ ਦੀ ਨਿਗਾਹ ਨਾਲ ਵੇਖੀ ਜਾਂਦੀ ਰਹੀ ਹੈ। ਤਾਹੀਉਂ ਤਾਂ ਗੁਣਾਢਯ ਨੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਅਧਿਆਪਨ ਦੀ ਸ਼ਰਤ ਵਿਚ ਹਾਰ ਖਾ ਕੇ ਇਸ ਉਪੇਖਿਅਤ ਬੋਲੀ ਵਿਚ ਲਿਖਿਆ ਸੀ। ਇਹ ਤਾਂ ਬਾਹਰਲੇ ਪ੍ਰਮਾਣ ਹਨ। ਪੈਸ਼ਾਕੀ ਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਦਾ ਵਿਗਿਆਨਕ ਟਾਕਰਾ ਵੀ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਜਨਨੀ-ਜਨਿਤ ਦੇ ਸੰਬੰਧਾਂ ਦੀ ਪੁਸ਼ਟੀ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ। ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਫਰਕ ਧੁਨੀਆਂ ਦੇ ਅਪਭ੍ਰੰਸ਼ੀ ਪਰਿਵਰਤਨ ਵਿਚ ਮਿਲਦਾ ਹੈ।

20.6.1967

—ਸਿੱਧੇਸ਼ਵਰ ਵਰਮਾ

SIKHBOOKCLUB.COM

ਵਿਦਿਆ ਉਹ ਹੈ ਜੋ ਮਨੁਖ ਨੂੰ  
 ਛੁਟਕਾਰਾ ਦਿਵਾਉਂਦੀ ਹੈ—ਅਗਿਆਨ ਤੋਂ, ਡਰ  
 ਤੋਂ, ਡਰ ਤੋਂ ਅਤੇ ਅਸਮਰਥਤਾ ਤੋਂ,  
 ਇਸ ਛੁਟਕਾਰੇ ਤੋਂ ਮੁਕਤੀ ਦਾ  
 ਸਾਧਨ ਹੈ ਤਪਸਿਆ ਤੇ ਹੋਰ  
 ਤਪਸਿਆ।

ਇਸ਼ਰਾਤੁਲ-ਕਾਦਰ  
 ੨੮ - ੮

SIKHBOOKCLUB.COM

ਵਿਦਿਆ ਉਹ ਹੈ ਜੋ ਮਨੁਖ ਨੂੰ ਛੁਟਕਾਰਾ ਦਿਵਾਉਂਦੀ ਹੈ—ਅਗਿਆਨ ਤੋਂ, ਡਰ  
 ਤੋਂ ਅਤੇ ਅਸਮਰਥਤਾ ਤੋਂ, ਇਸ ਛੁਟਕਾਰੇ ਤੋਂ ਮੁਕਤੀ ਦਾ ਸਾਧਨ ਹੈ ਤਪਸਿਆ ਤੇ ਹੋਰ  
 ਤਪਸਿਆ।

28.8.67

ਇੰਦਰਜੀਤ ਕੌਰ

ਫੇਰ ਤੈਨੂੰ ਯਾਦ ੨/੧। ਅੱਗ ਨੂੰ ਚੁੰਮਿਆ ਅਸਾਂ  
 ਇਸਕ ਪਿਆਲਾ ਜਹਿਰ ਦਾ, ਇੱਕ ਘੁੱਟ ਫਿਰ ਮੰਗਿਆ ਅਸਾਂ  
 ਘੋਲ ਕੇ ਸੂਰਜ ਅਸਾਂ  
 ਧਰਤੀ ਨੂੰ ਡੋਬਾ ਦੇ ਲਿਆ  
 ਤਾਰਿਆਂ ਦੇ ਨਾਲ  
 ਕੋਠਾ ਗਗਨ ਦਾ ਲਿੰਬਿਆ ਅਸਾਂ  
 ਫੇਰ ਤੈਨੂੰ ਯਾਦ ਕੀਤਾ.....

੧੨.੧.੬੭

ਮ/੨੩.੨/੭੭

SIKHBROOKCLUB.COM

ਫੇਰ ਤੈਨੂੰ ਯਾਦ ਕੀਤਾ  
 ਅੱਗ ਨੂੰ ਚੁੰਮਿਆ ਅਸਾਂ  
 ਇਸਕ ਪਿਆਲਾ ਜਹਿਰ ਦਾ  
 ਇੱਕ ਘੁੱਟ ਫਿਰ ਮੰਗਿਆ ਅਸਾਂ  
 ਘੋਲ ਕੇ ਸੂਰਜ ਅਸਾਂ  
 ਧਰਤੀ ਨੂੰ ਡੋਬਾ ਦੇ ਲਿਆ  
 ਤਾਰਿਆਂ ਦੇ ਨਾਲ  
 ਕੋਠਾ ਗਗਨ ਦਾ ਲਿੰਬਿਆ ਅਸਾਂ  
 ਫੇਰ ਤੈਨੂੰ ਯਾਦ ਕੀਤਾ.....

12.1.67

—ਆਮ੍ਰਿਤਾ ਪ੍ਰੀਤਮ

ਪਾਣੀ ਜਗਾਂ ਦੇ  
 ਸੁਰ ਚੱਲੇ, ਸੁਰ ਚੱਲੇ, ਸੁਰ ਚੱਲੇ।  
 ਹੋਏ ਤਾ ਰਿਲਾਂ ਦੇ  
 ਹੁਰ ਚੱਲੇ, ਹੁਰ ਚੱਲੇ, ਹੁਰ ਚੱਲੇ॥

ਜਲੇ ਮਾਣਾਂ ਦੇ ਮੱਤੇ,  
 ਰਹੇ ਤੇਜ਼ ਤੇ ਰਹੇ,  
 ਤੁਰ ਚੱਲੇ, ਤੁਰ ਚੱਲੇ, ਤੁਰ ਚੱਲੇ॥

SIKHBOOKCLUB.COM

ਗਿਣ ਗਿਣ ਕਦਮ ਦਰੇ,  
 ਜੀਤਰ ਜੁਲੇ ਹਰੇ,  
 ਤਿਸ ਚੁਕਰੇ ਨੀ,  
 ਸੁਰ ਚੱਲੇ, ਸੁਰ ਚੱਲੇ, ਸੁਰ ਚੱਲੇ॥

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ — ਮੋਹਨ ਸਿੰਘ  
 ੧੯੬੬

ਪਾਣੀ ਸਰਾਂ ਦੇ  
ਸੁਕ ਚੱਲੇ, ਸੁਕ ਚੱਲੇ, ਸੁਕ ਚੱਲੇ ।  
ਹੱਥ ਤਾਰਿਆਂ ਦੇ  
ਰੁਕ ਚੱਲੇ, ਰੁਕ ਚੱਲੇ, ਰੁਕ ਚੱਲੇ ॥

ਬੜੇ ਮਾਣਾਂ ਦੇ ਮਤੇ,  
ਲਹੂ ਤੇਜ਼ ਤੇ ਤੱਤੇ,  
ਝੁਕ ਚੱਲੇ, ਝੁਕ ਚੱਲੇ, ਝੁਕ ਚੱਲੇ ॥

ਗਿਣ ਗਿਣ ਕਦਮ ਧਰੇ,  
ਸੰਭਲ ਬੁੱਕ ਭਰੇ,  
ਤਲ ਖੁਹਰੜੇ ਜੀ,  
ਮੁਕ ਚੱਲੇ, ਮੁਕ ਚੱਲੇ, ਮੁਕ ਚੱਲੇ ॥

14 ਸਤੰਬਰ, 1967

—ਮੋਹਨ ਸਿੰਘ

ਤੇ ਸੇਵਕ ਮਾਪਦੀਆਂ ਮਨ-ਘੜਤ ਕਰਾਈਆ  
 ਮਾਪਦੇ ਘੜਾਏਯੋਂ ਦੇ ਜੀਵਨ ਧ੍ਰਿਤਾਂਤਾਂ ਵਿਚ ਸਿੱਖ  
 ਰੇਣਾ ਸੁਤ ਸੇਵਾ ਸਮਝਦੇ ਹਨ, ਜਿਤਨਾ ਮੰਨਿਆ  
 ਉਹ ਮਾਪਦੇ ਘੜਾਏਯੋਂ ਨਾਲ ਮਨੁੱਖੀ  
 ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਉਤਨਾ ਨਾਇਕ ਉਤਨਾ ਦੇ ਕੰਨ  
 ਦਿਖਾਈ ਭੀ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ। ਸਮਾਂ ਮੰਨਾ  
 ਕਮ ਜੇਰ ਦਿਨ ਮੰਗੀ ਮਿਲਾਵਟ ਉਘੜ  
 ਮਾਓਦੀ, "ਤਾਂ ਸੇਵਾ ਦਿਨ ਮਏ ਤੇ  
 ਦਿਹਾੜਾ ਮਾਏ ਕਈ ਦਿਨ ਕੀਤਾ ਮਿਲਾ  
 ਸੁਖੀ ਦੀ ਮਨਾ ਨਾਲ ਕੰਮ ਤੇ ਕੰਮ  
 ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਦਿਨ ਸਭੀ ਦਿਤਿਆਂ ਵਿਚ ਮਨ-  
 ਕਲਪ ਮਿਲਾਵਟ ਨਾਲ ਕਾਇਮ ਨਾਨਕਾ  
 ਸਭ ਸਭ ਮਨਾਂ ਅਤੇ ਕਈ ਘੜਾਂ ਮਿਲਾਂ  
 ਹੋਣਾ ਹੋਣਾ ਜਾਂਦਾ" ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਮਨ ਕਈ ਭੀ  
 ਘੜਾ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਕੁਝ ਮਾਪਦੇ  
 ਕੁਝ, ਉਨ ਉਘੜ ਕੀਤਾ ਕੁਝ ਮਾਓਦੀ,  
 ਕੁਝ ਕੁਝ ਕੀਤਾ ਨਾਨਕਾ ਸੇਵਾ ਮਨੁੱਖੀ।

ਗੁਰੂ ਸਿੰਘ  
 19.7.67

ਜੋ ਲੇਖਕ ਆਪਣੀਆਂ ਮਨ-ਘੜਤ ਕਹਾਣੀਆਂ  
ਆਪਣੇ ਬਜ਼ੁਰਗਾਂ ਦੇ ਜੀਵਨ ਬ੍ਰਿਤਾਂਤਾਂ ਵਿਚ ਮਿਲਾ  
ਦੇਣਾ ਸੁਭ ਸੇਵਾ ਸਮਝਦੇ ਹਨ, ਜਿਤਨਾ ਅੰਨਿਆਇ  
ਓਹ ਆਪਣੇ ਬਜ਼ੁਰਗਾਂ ਨਾਲ ਅਭੋਲ ਹੀ ਕਰ  
ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਉਤਨਾ ਸ਼ਾਇਦ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕੱਟੜ  
ਵਿਰੋਧੀ ਭੀ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ। ਸਮਾਂ ਪੈ ਜਾਣ  
ਨਾਲ ਜਦ ਇਕ ਅੱਧੀ ਮਿਲਾਵਟ ਉੱਘੜ  
ਆਉਂਦੀ ਹੈ, ਤਾਂ ਸ਼ੱਕ ਵਿਚ ਪਏ ਹੋਏ  
ਵਿਚਾਰਵਾਨ ਪਾਠਕ ਕਈ ਇਕ ਠੀਕ ਵਾਕਿਆਤ  
ਨੂੰ ਭੀ ਸ਼ੱਕ ਦੀ ਨਜ਼ਰ ਨਾਲ ਵੇਖਦੇ ਹੋਏ ਠੁਕਰਾ  
ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿਚ ਮਨੋ  
ਕਲਪਤ ਮਿਲਾਵਟਾਂ ਨਾਲ ਫ਼ਾਇਦੇ ਨਾਲੋਂ ਨੁਕਸਾਨ  
ਸਦਾ ਲਈ ਪੱਕਾ ਅਤੇ ਕਈ ਗੁਣਾਂ ਜ਼ਿਆਦਾ  
ਹੁੰਦਾ ਚਲਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜਿਸਨੂੰ ਮੁੜ ਕਦੀ ਭੀ  
ਪੂਰਾ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਝੂਠ ਆਖਰ  
ਝੂਠ ਹੈ, ਉਹ ਉੱਘੜ ਭੀ ਜ਼ਰੂਰ ਆਉਣਾ ਹੈ।  
ਕੂੜ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦਾ ਲੁਕਿਆ ਸੋ ਘਾੜਤ ਘੜੀਏ।

—ਗੰਡਾ ਸਿੰਘ

19.7.67

## ਦੇਸਾਖੀ ਪੁਸਤਕ

ਦੇਸਾਖੀ ਮੇਜਾਖੀ ਤਿਉਹਾਰੀ ॥ ਜੇਸਕੀ ਲੋਕ ਵਿਸਤਰੇ  
 ਰਿਹੇ ਤੇ ਮਾਉਰੇ ਮਾਨੇ ਮਾਜਿਐ ਵਿਚ ਦੇਸਾਖੀ ਨੂੰ  
 ਵਿਸਤਰੇ, ਸ੍ਰੀਗੁਰੂ ਮਾਨੇ ਦੇਸਾਖੀ ਵਿਚ ਕਰਕੇ ਖਾਖਾਵੀ ਵਿ  
 ਪਰਿਲ ਤੇ ਦੇਸਾਖੀ ਨੂੰ ਮਾਨੇ ਪ੍ਰਭਾਤ, ਦੇਸਾਖੀ ਮਾਨੇ  
 ਮਾਨੇ ਤੇ ਦੇਸਾਖੀ ਨੂੰ ਮਾਨੇ ਤੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ  
 ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਦੇ ਰਹੇ ਪੁਸਤਕ ਦੀ ਮਾਨਿਲਾ ਪੁਸਤਕ  
 ਕੀਤੀ ਜੀ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੇ ਮਾਨੇ ੧੬੨੬ ਚਿੰਨ੍ਹ ਮੀ (੧੫੬੬੬੬)  
 ਵਿਚ ਦੇਸਾਖੀ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ, ਮਾਨੇ  
 ਦੀ ਇਹ ਮਾਨੇ ਪੁਸਤਕ ਕੀਤੀ। ਵਿਚ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ  
 ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਦੇ ਵਿਚ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ, ਮਾਨੇ ਲਈ ਪੁਸਤਕ  
 ਕੀਤੀ। ਇਹ ਮਾਨੇ ਦੀ ਮਾਨੇ, ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ  
 ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਦੇਸਾਖੀ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ  
 ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਦੇਸਾਖੀ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ  
 ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਦੇਸਾਖੀ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ  
 ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਦੇਸਾਖੀ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ

ਪਰਿਲ ਤਿਉਹਾਰੀ ਮਾਨੇ ਦੀ ਮਾਨੇ ਪੁਸਤਕ  
 ਸ੍ਰੀ ਮਾਨੇ ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਤੇ ਮਾਨੇ - ਮਾਨੇ ਤੇ ਲਭਾ  
 ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ, ਵਿਚ ਮਾਨੇ ਦੇਸਾਖੀ ਪੁਸਤਕ ਕੀਤੀ  
 ਦੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ

ਮਾਨੇ ਮਾਨੇ  
 ਮਾਨੇ ੧੫/੬/੬੦



### ਵੈਸਾਖੀ ਪੁਰਬ

ਵੈਸਾਖੀ ਮੋਸਮੀ ਤਿਓਹਾਰ ਹੈ। ਸੰਸਾਰੀ ਲੋਕ ਇਸ ਨੂੰ ਚਿਰਾਂ ਤੋਂ ਮਨਾਉਂਦੇ ਆ ਰਹੇ ਹਨ। ਸਿੱਖਾਂ ਵਿਚ ਵੈਸਾਖੀ ਨੂੰ ਵਿਸੇਖਤਾ, ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਮਰਦੇਵ ਨੇ ਇਸ ਕਰਕੇ ਬਖਸ਼ੀ ਕਿ ਪਹਿਲੇ ਤੇ ਦੂਜੇ ਗੁਰੂਜਾਮੇ ਦਾ ਪ੍ਰਗਾਸ ਵੈਸਾਖ ਮਹੀਨੇ ਅੰਦਰ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਹਜ਼ੂਰੀ ਤੇ ਸਥਾਨਕ ਸਿੱਖਾਂ ਨੇ ਸਰਬ ਖਾਲਿਸਾ ਸਿੱਖਾਂ ਦੇ ਦਰਸ-ਪਰਸ ਦੀ ਅਭਿਲਾਖਾ ਪ੍ਰਗਟ ਕੀਤੀ ਸੀ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੇ ਸੰਮਤ 1626 ਬਿੱਕ੍ਰਮੀ (1569 ਈ.) ਵਿੱਚ ਵੈਸਾਖ ਮਹੀਨੇ 'ਸਰਬ ਸਿੱਖ ਸਮੇਲਨ' ਸੱਦਕੇ, ਸਿੱਖਾਂ ਦੀ ਇਹ ਸੱਧਰ ਪੂਰੀ ਕੀਤੀ। ਇਹ ਮਹਾਸਮਾਗਮ ਦਾ ਸੁਭ ਨਾਮ, ਆਪਣੇ 'ਵਿਸੇਅ ਦਰਸ' ਰੱਖ ਕੇ, ਸਦਾ ਲਈ ਪ੍ਰਚਲਤ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਇਤਿਫਾਕ ਦੀ ਗੱਲ ਹੈ; ਕਿ ਤੀਜੇ ਸਤਿਗੁਰਾਂ ਦਾ ਆਪਣਾ ਜੋਤਿਜਾਮਾ ਭੀ ਵੈਸਾਖ ਮਹੀਨੇ ਵਿਚ ਹੀ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਇਸ ਲਈ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਾਮਦਾਸ ਵਾਸਤੇ 'ਵਿਸੇਆ ਦ ਰਸ' ਦੀ ਮਹਾਨਤਾ ਤ੍ਰੈਗੁਣੀ ਹੋ ਗਈ। ਸਿੱਖਾਂ ਦਾ ਇਹ ਮਹਾਨ ਸਤਿ-ਸੰਗ ਸਾਰਾ ਵੈਸਾਖ ਮਹੀਨਾ ਬਣਿਆ ਰਹਿੰਦਾ ਸੀ।

ਪਹਿਲੇ ਤਿੰਨਾਂ ਸਤਿਗੁਰਾਂ ਦੀ ਸੰਸਾਰਕ ਪੀੜ੍ਹੀ, ਰਘੁਬੰਸੀ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮਚੰਦ੍ਰ ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਦੋ ਭਰਾਵਾਂ ਭਰਬ ਤੇ ਲਛਮਨ ਨਾਲ ਜਾ ਮਿਲਦੀ ਹੈ; ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਵੈਸਾਖੀ ਪੁਰਬ ਭੀ ਤਿੰਨਾਂ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਬਣ ਗਇਆ।

ਰਣਧੀਰ ਸਿੰਘ

ਮਿਤੀ 15.6.67

ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਪਹਾੜ, ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਫੁਲ, ਉਸਦੇ ਪੰਛੀਆਂ ਦੇ ਗੀਤ, ਉਸ ਦੀਆਂ  
 ਮੁਟਿਆਰਾਂ ਦੇ ਹਾਸੇ, ਸਮੁੱਚੇ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਤਰਤੀਬ ਵਿੱਚ ਪੰਜਾਬ ਦੀਆਂ ਸਮਸਿਆਵਾਂ  
 ਉਸਦੇ ਸਾਹਿਤ ਤੋਂ ਸਾਮਰਤਥ ਦਿਸਣ—ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਾ ਹੋਵੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ।  
 ਸਾਹਿਤ ਉਚਾ ਉਠੇ ਜ਼ਾਤੀ ਸ਼ੁਹਰਤ ਦੀ ਭੁੱਖ ਤੋਂ, ਉਸਦੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵਿਚੋਂ ਨਿਰਵੈਰਤਾ  
 ਅਤੇ ਨਿਰਭੈਤਾ ਲਿਸ਼ਕਦੀਆਂ ਦਿਸਣ ਇਹੀ ਉਤੇਜਨਾ ਹੈ ਜੋ ਇਸ ਪਲ ਬੇਕਰਾਰੀ ਕਰ  
 ਰਹੀ ਹੈ।

੨੩.੧.੧੯੬੭  
 ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਿੰਘ ਸਫੀਰ

ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਪਹਾੜ, ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਫੁਲ, ਉਸਦੇ ਪੰਛੀਆਂ ਦੇ ਗੀਤ, ਉਸ ਦੀਆਂ  
 ਮੁਟਿਆਰਾਂ ਦੇ ਹਾਸੇ, ਸਮੁੱਚੇ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਤਰਤੀਬ ਵਿੱਚ ਪੰਜਾਬ ਦੀਆਂ ਸਮਸਿਆਵਾਂ  
 ਉਸਦੇ ਸਾਹਿਤ ਤੋਂ ਸਾਮਰਤਥ ਦਿਸਣ—ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਾ ਹੋਵੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ।

ਸਾਹਿਤ ਉਚਾ ਉਠੇ ਜ਼ਾਤੀ ਸ਼ੁਹਰਤ ਦੀ ਭੁੱਖ ਤੋਂ, ਉਸਦੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵਿਚੋਂ ਨਿਰਵੈਰਤਾ  
 ਅਤੇ ਨਿਰਭੈਤਾ ਲਿਸ਼ਕਦੀਆਂ ਦਿਸਣ ਇਹੀ ਉਤੇਜਨਾ ਹੈ ਜੋ ਇਸ ਪਲ ਬੇਕਰਾਰੀ ਕਰ  
 ਰਹੀ ਹੈ।

23.1.1967

—ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਿੰਘ ਸਫੀਰ

ਇਹ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਬੜਾ ਦੁਰਭਾਗ ਹੈ ਕਿ ਅਸੀਂ ਕਈ ਵਾਰੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਸਵਾਲ ਨੂੰ ਧਰਮ ਨਾਲ ਜੋੜ ਲੈਂਦੇ ਹਾਂ, ਜਦ ਕਿ ਅਸਲ ਵਿਚ ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਧਰਮ ਦੇ ਨਾਲ ਕੋਈ ਸਿੱਧਾ ਸੰਬੰਧ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਕੰਮ ਹੈ ਸਾਡੇ ਦਿਲ ਦੇ ਭਾਵਾਂ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਨ ਕਿਸੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਪ੍ਰਗਟਾਉਣਾ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਭਾਸ਼ਾ ਮੁਖ ਰੂਪ ਤੇ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜਿਕ ਜੀਵਨ ਦਾ ਅੰਗ ਹੈ, ਪਰ ਧਰਮ ਸਾਡੀ ਅੰਦਰੂਨੀ ਤੇ ਨਿਜੀ ਚੀਜ਼ ਹੈ। ਦੋਹਾਂ ਨੂੰ ਆਪਸ ਵਿਚ ਰਲਾਉਣਾ ਠੀਕ ਨਹੀਂ।

ਦੇਵੀ ਦੱਤ ਸ਼ਰਮਾ

23.6.67

ਇਹ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਬੜਾ ਦੁਰਭਾਗ ਹੈ ਕਿ ਅਸੀਂ ਕਈ ਵਾਰੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਸਵਾਲ ਨੂੰ ਧਰਮ ਨਾਲ ਜੋੜ ਲੈਂਦੇ ਹਾਂ, ਜਦ ਕਿ ਅਸਲ ਵਿਚ ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਧਰਮ ਦੇ ਨਾਲ ਕੋਈ ਸਿੱਧਾ ਸੰਬੰਧ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਕੰਮ ਹੈ ਸਾਡੇ ਦਿਲ ਦੇ ਭਾਵਾਂ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਨ ਕਿਸੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਪ੍ਰਗਟਾਉਣਾ, ਇਸ ਕਰਕੇ ਭਾਸ਼ਾ ਮੁਖ ਰੂਪ ਤੇ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜਿਕ ਜੀਵਨ ਦਾ ਅੰਗ ਹੈ, ਪਰ ਧਰਮ ਸਾਡੀ ਅੰਦਰੂਨੀ ਤੇ ਨਿਜੀ ਚੀਜ਼ ਹੈ। ਦੋਹਾਂ ਨੂੰ ਆਪਸ ਵਿਚ ਰਲਾਉਣਾ ਠੀਕ ਨਹੀਂ।

23.6.67

—ਦੇਵੀ ਦੱਤ ਸ਼ਰਮਾ

ਪੰਜਾਬੀ ਨਹਿਤੁ ਹੈ  
 ਪੰਜਾਬ ਤਰ  
 ਸੀਲਿਤੁ ਨ ਹੋਏ।  
 ਮਸੀ ਨਹਿਤੁ ਰਾਹੁ ਗੰ।  
 ਵਾਜਾਤੀਤੁ  
 ਦੁਖਾਤੀਤੁ  
 ਮਧੁਰਾਤੀਤੁ  
 ਮਧੁਰਾਤੀਤੁ  
 ਮਧੁਰਾਤੀਤੁ ਮਧੁਰਾਤੀਤੁ  
 ਮਧੁਰਾਤੀਤੁ ਮਧੁਰਾਤੀਤੁ

ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਨੂੰ  
ਪੰਜਾਬ ਤਕ ਸੀਮਿਤ ਨ ਰਖੋ

ਅਸੀਂ ਸਾਹਿਤਕਾਰ ਹਾਂ ।  
ਕਾਲਾਤੀਤ  
ਦੇਸ਼ਾਤੀਤ  
ਸਬਦਾਤੀਤ  
ਅਰਥਾਤੀਤ

ਸਬਦਾਂ ਤੋਂ ਪਰ੍ਹੇ ।  
ਅਰਥਾਂ ਤੋਂ ਪਰ੍ਹੇ ।  
ਦੇਸ਼ ਤੋਂ ਪਰ੍ਹੇ ।  
ਕਾਲ ਤੋਂ ਪਰ੍ਹੇ ।  
ਆਪਣੇ ਆਪ ਤੋਂ ਪਰ੍ਹੇ ।

BOOKCLUB.COM

12 ਜਨਵਰੀ 1967

—ਦੇਵਿੰਦਰ ਸਤਿਆਰਥੀ

ਮਾਇਆ ਅਤੇ ਮੁਖੀ ਦੇ ਅਧੀਨ ਸੀਤੇ ਰਹਿ  
 ਪੁਰਾ ਜਗਤ ਦੇ ਰਾਜਾ ਬਣੇ ਹਨ। ਪ੍ਰਭੂ ਦੇ ਰਾਜ  
 ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਜਗਤ ਮਰਦਾਂ ਦੇ ਹੋਣ  
 ਵਾਲਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਪੁਰਾ ਅਤੇ ਪਾਪ, ਸੁਰਾ  
 ਅਤੇ ਸਰ — ਇਹ ਸਾਰੇ ਤ੍ਰਿਗੁਣੀ ਸੰਸਾਰ  
 ਦੀ ਉਤਪਤੀ ਮਗਰੋਂ ਵਧੇ ਹੋਏ ਹਨ। ਪ੍ਰਭੂ  
 ਦੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਤੂੰ ਸੁਰਾਗ ਹੋ ਜਾਣ ਦੀ ਵੀ  
 ਇੱਕੋ ਤਰ੍ਹਾਂ ਰਹਿੰਦੀ, ਜਾਂ ਹੀ ਉਹ ਸਰ ਤੋਂ  
 ਵੱਧੀ ਹੋਵੇ ਹਨ। ਸੱਚੇ ਸਿਖ ਪੁਰਾ ਪਾਪ,  
 ਸੁਰਾਗ ਸਰ ਤੋਂ ਉਪਰ ਉਹ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।  
 ਉਹ ਪ੍ਰਭੂ ਤੂੰ ਮਾਤਮ - ਸਮਝਣ ਵਾਲਾ ਹੈ।  
 ਉਹ ਦੇ ਮਾਤਮ ਵਾਲੇ ਪ੍ਰਭੂ ਦੇ ਰਾਜ-  
 ਸਿਖਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਹੈ।

ਸਤਿਨਾਮੁ ਸਿਖ  
 ਕੋਟੀ

20-6-67

ਮਾਇਆ ਅਤੇ ਹਉਮੈ ਦੇ ਅਧੀਨ ਕੀਤੇ ਕਰਮ  
ਪੁਨਰ ਜਨਮ ਦਾ ਕਾਰਨ ਬਣਦੇ ਹਨ। ਪ੍ਰਭੂ ਦੇ ਨਾਮ  
ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਤੋਂ ਬਿਨਾ ਜਨਮ ਮਰਨ ਦਾ ਗੇੜ  
ਚਲਦਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਪੁੰਨ ਅਤੇ ਪਾਪ, ਸ੍ਰਗ  
ਅਤੇ ਨਰਕ—ਇਹ ਸ਼ਬਦ ਤ੍ਰੈਗੁਣੀ ਸੰਸਾਰ  
ਦੀ ਉਤਪਤੀ ਮਗਰੋਂ ਵਰਤੋਂ ਵਿਚ ਆਏ।  
ਪ੍ਰਭੂ ਦੇ ਭਗਤਾਂ ਨੂੰ ਸ੍ਰਗ ਵਿਚ ਜਾਣ ਦੀ ਵੀ  
ਇੱਛਾ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦੀ, ਨਾ ਹੀ ਉਹ ਨਰਕ ਤੋਂ  
ਭੈਭੀਤ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਸੱਚਾ ਸਿਖ ਪੁੰਨ ਪਾਪ,  
ਸ੍ਰਗ ਨਰਕ ਤੋਂ ਉਪਰ ਉਠ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।  
ਉਹ ਪ੍ਰਭੂ ਨੂੰ ਆਤਮ-ਸਮਰਪਣ ਕਰਦਾ ਹੈ।  
ਉਸ ਦਾ ਆਦਰਸ਼ ਕੇਵਲ ਪ੍ਰਭੂ ਦੇ ਚਰਨ-  
ਕੰਵਲਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਹੈ।

20.6.67

—ਸੁਰਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਕੋਹਲੀ

ਮੇਰੇ ਜਨਮ ਵੇਲੇ ਮੇਰੀਆਂ ਭੈਣਾਂ ਤੇ ਮਾਸੀਆਂ  
 ਸਮੁੱਚੀ ਪ੍ਰੀਤ ਨੇ ਉਦਘਾਟਨ ਕੀਤਾ ਤੇ ਮੇਰੇ  
 ਗੀਤਾਂ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹ ਕੇ ਕੀਤੇ ਉਹ ਸਭ ਮੇਰੇ ਮਨ ਪੁਰ  
 ਅੱਜ ਪੜ੍ਹ ਕੇ ਜਾਣੇ ਨੇ। ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲੀ ਦੀ  
 ਮਹੁਰ ਧੁਨੀ ਨੂੰ ਮਾਣਕੇ ਮੈਂ ਇਹ ਸਮਾਜਕ ਪ੍ਰਾਣੀ  
 ਬਣਿਆ। ਮੇਰੀ ਸਿਮਰੀ ਮਾਂ ਦੇ ਦੁੱਧ ਨਾਲ  
 ਇਹ ਬੋਲੀ ਮੇਰੇ ਰੋਮ ਰੋਮ 'ਚ ਰਹੀ ਅਤੇ  
 ਮੇਰੇ ਅੰਤਰਿਕਸ ਵਿਚ ਇਹ ਪ੍ਰੀਤ ਮਾਂ ਦੇ ਸਮਾਜ  
 ਦੀ ਸਿਮਰਨ ਬਣਿਆ ਰਹਿਆ। ਮਾਂ ਦੀ ਭੈਣ  
 ਸੁਰਗ ਸਮਾਨ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਮਾਤ ਬੋਲੀ ਭੀ ਸਾਨੂੰ  
 ਸੁਰਗ, ਵਿਚਾਰਸ਼ੀਲ ਨਾਗਰਿਕ ਬਣਾਏ ਤੁਰੰਤ ਦਰਸਾ  
 ਕਾਰ-ਦਿੱਤੀ ਹੈ। ਮਾਂ ਸਮਝਦਾ ਹੈ ਇਸੇ ਲਈ  
 ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਦੀ ਮਹੱਤਾ ਜਤਨ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਹੈ।

੧੨ ਏ ੬੭



ਮੇਰੇ ਜਨਮ ਵੇਲੇ ਮੇਰੀਆਂ ਭੈਣਾਂ ਤੇ ਮਾਸੀਆਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਪ੍ਰਸੰਨਤਾ ਦੇ ਉਦਘਾਟਨ  
 ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਾਕਾਂ ਤੇ ਗੀਤਾਂ ਵਿਚ ਪ੍ਰਗਟ ਕੀਤੇ ਉਹ ਮੇਰੇ ਅਚੇਤ ਮਨ ਪੁਰ ਅਵੱਸ਼ ਪ੍ਰਭਾਵ  
 ਰਖਦੇ ਰਹੇ। ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲੀ ਦੀ ਮਹੁਰ ਧੁਨੀ ਨੂੰ ਮਾਣਕੇ ਮੈਂ ਇਕ ਸਮਾਜਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਬਣਿਆਂ।  
 ਮੇਰੀ ਪਿਆਰੀ ਮਾਂ ਦੇ ਦੁੱਧ ਵਾਂਗ ਇਹ ਬੋਲੀ ਮੇਰੀ ਰੋਮ ਰੋਮ 'ਚ ਰਚ ਗਈ ਅਤੇ ਮੇਰੇ  
 ਅੰਤਰਿਕਸ ਵਿਚ ਇਸ ਪ੍ਰੀਤ ਮਾਂ ਵਰਗਾ ਹੀ ਪਿਆਰ ਵਿਗਸਦਾ ਰਹਿਆ। ਮਾਂ ਦੀ ਬੋਲੀ  
 ਸੁਰਗ ਸਮਾਨ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਮਾਤ ਬੋਲੀ ਭੀ ਸਾਨੂੰ ਸੁਚੱਜਾ, ਵਿਚਾਰਸ਼ੀਲ ਨਾਗਰਿਕ ਬਣਾਏ  
 ਸੁਰਗਾਂ ਵਰਗਾ ਸੁਖ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਇਸੇ ਲਈ ਮਾਤ ਬੋਲੀ ਦੀ ਮਹੱਤਾ ਬਹੁਤ  
 ਵਿਸ਼ਾਲ ਹੈ।



ਬੋਲੀ ਦੇ ਧਰਮ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧ  
ਜੋੜਨਾ ਤੀਰ ਨਹੀਂ। ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ  
ਇਹ ਵਿਚਾਰ ਰੱਖਣਾ ਭਾਵੇਂ ਸੋਭਾ ਨਹੀਂ ਦੇਂਦਾ ਕਿ ਕਿਸੇ ਬੋਲੀ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਧਰਮ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਦੀ  
ਕਿੰਨੀ ਦੇਣ ਹੈ, ਪਰ ਅੱਜ ਇਹ ਜ਼ਰੂਰਤ ਮਹਿਸੂਸ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ ਕਿ ਆਪਣੇ ਹਿੰਦੂ ਵੀਰਾਂ ਨੂੰ  
ਸਮਝਾਇਆ ਜਾਵੇ ਤੇ ਦੱਸਿਆ ਜਾਵੇ ਕਿ ਜਿਸ ਬੋਲੀ ਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਆਪ ਪਾਲ-ਪੋਸ ਕੇ ਜਵਾਨ  
ਕੀਤਾ ਹੈ, ਅੱਜ ਉਸਦਾ ਵਿਰੋਧ ਕਰਨਾ—ਠੀਕ ਨਹੀਂ।

ਅਗਸਤ, 15, 1967.

ਵਿਸ਼ਵਾ ਨਾਥ ਤਿਵਾੜੀ

ਬੋਲੀ ਦਾ ਧਰਮ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧ ਜੋੜਨਾ ਠੀਕ ਨਹੀਂ। ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਇਹ  
ਵਿਚਾਰ ਕਰਨਾ ਭਾਵੇਂ ਸੋਭਾ ਨਹੀਂ ਦੇਂਦਾ ਕਿ ਕਿਸੇ ਬੋਲੀ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਧਰਮ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਦੀ  
ਕਿੰਨੀ ਦੇਣ ਹੈ, ਪਰ ਅੱਜ ਇਹ ਜ਼ਰੂਰਤ ਮਹਿਸੂਸ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ ਕਿ ਆਪਣੇ ਹਿੰਦੂ ਵੀਰਾਂ ਨੂੰ  
ਸਮਝਾਇਆ ਜਾਵੇ ਤੇ ਦੱਸਿਆ ਜਾਵੇ ਕਿ ਜਿਸ ਬੋਲੀ ਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਆਪ ਪਾਲ-ਪੋਸ ਕੇ ਜਵਾਨ  
ਕੀਤਾ ਹੈ, ਅੱਜ ਉਸਦਾ ਵਿਰੋਧ ਕਰਨਾ—ਠੀਕ ਨਹੀਂ।

ਅਗਸਤ, 15 1967

—ਵਿਸ਼ਵਾ ਨਾਥ ਤਿਵਾੜੀ

ਪਾਣਿਨੀ ਦੇ ਵਿਆਕਰਣ ਦਾ ਮਹਤ੍ਵ ਬਹੁਤ ਘਟ ਲੋਕ ਸਮਝਦੇ ਹਨ। ਵਾਸਤਵ ਵਿਚ ਉਸ ਨੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਅਨੁਪਮ ਸੇਵਾ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਪਾਣਿਨੀ ਦਾ ਵਿਆਕਰਣ ਸਮੇਂ ਦੀ ਇਕ ਬੜੀ ਭਾਰੀ ਆਵੇਸ਼ਕਤਾ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਸੀ। ਆਰਿਆਈ ਭਾਸ਼ਾ ਬੜੀ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਲੋਕਾਂ ਵਿਚ ਫੈਲ ਰਹੀ ਸੀ ਜੋ ਆਰਿਆਈ ਨਸਲ ਦੇ ਨਹੀਂ ਸਨ। ਅਨਾਰੀਆ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਬੋਲਣ ਨਾਲ ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਸ਼ੁੱਧਤਾ ਉਤੇ ਸੱਟ ਵਜਣੀ ਸੁਭਾਵਿਕ ਸੀ ਜਿਸ ਦਾ ਉੱਲੇਖ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਗ੍ਰੰਥਾਂ ਵਿਚ ਸਪਸ਼ਟ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਦੂਸਰੇ ਪਾਸੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਭਿੰਨ ਭਿੰਨ ਭਾਗਾਂ ਦੀਆਂ ਬੋਲੀਆਂ ਆਪਣੇ ਵਿਕਾਸ ਦੀ ਤੋਰ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਤੁਰਦੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਆਰੀਆ ਭਾਸ਼ਾ ਤੋਂ ਦੂਰ ਹੁੰਦੀਆਂ ਜਾ ਰਹੀਆਂ ਸਨ।

ਵਿਗਿਆਨਕਤਾ ਅਤੇ

SIKHBOOKCLUB.COM

ਪਾਣਿਨੀ ਦੇ ਵਿਆਕਰਣ ਦਾ ਮਹਤ੍ਵ ਬਹੁਤ ਘਟ ਲੋਕ ਸਮਝਦੇ ਹਨ। ਵਾਸਤਵ ਵਿਚ ਉਸ ਨੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਅਨੁਪਮ ਸੇਵਾ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਪਾਣਿਨੀ ਦਾ ਵਿਆਕਰਣ ਸਮੇਂ ਦੀ ਇਕ ਬੜੀ ਭਾਰੀ ਆਵੇਸ਼ਕਤਾ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਸੀ। ਆਰਿਆਈ ਭਾਸ਼ਾ ਬੜੀ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਲੋਕਾਂ ਵਿਚ ਫੈਲ ਰਹੀ ਸੀ ਜੋ ਆਰਿਆਈ ਨਸਲ ਦੇ ਨਹੀਂ ਸਨ। ਅਨਾਰੀਆ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਬੋਲਣ ਨਾਲ ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਸ਼ੁੱਧਤਾ ਉਤੇ ਸੱਟ ਵਜਣੀ ਸੁਭਾਵਿਕ ਸੀ ਜਿਸ ਦਾ ਉੱਲੇਖ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਗ੍ਰੰਥਾਂ ਵਿਚ ਸਪਸ਼ਟ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਦੂਸਰੇ ਪਾਸੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਭਿੰਨ ਭਿੰਨ ਭਾਗਾਂ ਦੀਆਂ ਬੋਲੀਆਂ ਆਪਣੇ ਵਿਕਾਸ ਦੀ ਤੋਰ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਤੁਰਦੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਆਰੀਆ ਭਾਸ਼ਾ ਤੋਂ ਦੂਰ ਹੁੰਦੀਆਂ ਜਾ ਰਹੀਆਂ ਸਨ।

## ਕੁਝ ਸਾਹਿਤਿਕ ਰਚਨਾਏ

ਪਾਯ: ਭਾਸ਼ਾ ਸਿਖਾਨੇ ਵਾਲੀ ਪੁਸਤਕਾਂ ਮੇਂ ਸਾਹਿਤਿਕੀ ਕੋਝੀ ਚਰਚਾ ਨਹੀਂ ਹੋਤੀ, ਕਿਨ੍ਹੁ ਭਾਸ਼ਾ ਕਾ ਅਭਿਆਸ ਵਾਡਮਧ ਕੇ ਅਧਧਧਨ ਬਿਨਾ ਨਿਰਬਲ ਔਰ ਅਧੂਰਾ ਜੀ ਰਹ ਜਾਤਾ ਹੈ। ਪੰਜਾਬੀ ਜੀਵਨ ਕੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ ਤੋ ਧਹਾਂ ਕੇ ਨਿਵਾਸਿਧੀਂ ਕੀ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤਿ, ਦਿਨਚਰਧੀ ਔਰ ਭਾਵਭੰਗਿਸਾ ਕੀ ਝਾਂਕਿਧੀਂ ਦੁਵਾਰਾ ਹੀ ਪ੍ਰਕਟ ਹੋਤੀ ਹੈ। ਝੀਸੀ ਲਿਏ ਧਹੀਂ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤਿਕ ਮੇਂ ਸੇ ਕੁਝ ਸੰਖਿਸ਼ਿਤ ਉਦਾਹਰਣ ਪ੍ਰਸਤੁਤ ਕੀਏ ਗਏ ਹੈਂ। ਝਨ ਕੀ ਸੁਗੰਧਿ ਕਾ ਮਹਤਵ ਵਧਾਕਰਣ ਕੇ ਨਿਧਮੀਂ ਸੇ ਅਧਿਕ ਹੈ।

ਪਾਠਕਗਣ ਅਪਨੀ ਅਪਨੀ ਰੁਚਿ ਕੇ ਅਨੁਸਾਰ ਸਾਹਿਤਿਕਾਰੀਂ ਕੀ ਰਚਨਾਏ ਪੜ੍ਹਨੇ ਕਾ ਉਦਧਸ ਕਰੇਂਗੇ, ਏਸੀ ਆਸ਼ਾ ਰਖਨਾ ਅਵਾੱਛਨੀਧ ਨਹੀਂ ਹੈ।

ਪੰਜਾਬੀ ਉਦਾਹਰਣੀਂ ਕੇ ਲਿਏ ਹਿਨ੍ਦੀ ਰੂਪਾਨ੍ਤਰ ਭੀ ਦਿਏ ਗਏ ਹੈਂ, ਕਿਨ੍ਹੁ ਝਨ ਕੇ ਬਿਨਾ ਭੀ ਭਾਵ ਸਮਝਨੇ ਕਾ ਪ੍ਰਧਤਨ ਕੀਝਿਏ।

### ਵਾਰਸ ਸ਼ਾਹ

### ਬਾਰਸ ਸ਼ਾਹ

|                                 |                                |
|---------------------------------|--------------------------------|
| ਕੀਰ੍ਹੁ ਕੰਨ ਪੜ੍ਹਾਇਕੇ ਜੀਵਦਾ ਹੈ,   | ਕੈਸੇ ਕਾਨ ਪੜ੍ਹਵਾ ਕੇ ਜੀ ਰਹਾ ਹੈ   |
| ਗਲ ਸੁਣਦਿਆਂ ਹੀ ਜਿੰਦਾ ਗਈ ਜੇ ਨੀ।   | ਬਾਤ ਸੁਨਤੇ ਹੀ ਜਾਨ ਗਈ ਹੈ ਰੀ।     |
| ਉਹਦਾ ਦੁਖੜਾ ਰੇਵਣਾ ਜਦੋਂ ਸੁਣਿਆ,    | ਉਸ ਕਾ ਦੁਖ ਔਂ ਰੁਦਨ ਸੁਨਾ ਜਬ ਸੇ   |
| ਮੁਠੀ ਮੀਟ ਕੇ ਮੈਂ ਬਹਿ ਗਈ ਜੇ ਨੀ।   | ਬਨ੍ਦ ਕਰ ਮੁਟ੍ਰੀ ਬੈਠ ਗਈ ਹੂੰ ਰੀ॥  |
| ਮਸੂ ਤਿੰਨੇ ਦਾ ਨਾਉਂ ਜਾ ਲੈਂਦੀਆਂ ਉ, | ਭੀਧੀ ਮਸੀਂ ਵਾਲੀਂ ਕਾ ਨਾਮ ਜਬ ਤੁਮ  |
|                                 | ਲੇਤੀ ਹੋ,                       |
| ਜਿੰਦ ਸੁਣਦਿਆਂ ਹੀ ਲੁੜ੍ਹ ਗਈ ਜੇ ਨੀ। | ਤਬ ਵਾਰਤੀ ਪ੍ਰਾਣ ਹੂੰ ਰੀ।         |
| ਕਿਵੇਂ ਵੇਖੀਏ ਉਸ ਮਸਤਾਨੜੇ ਨੂੰ,     | ਕੈਸੇ ਦੇਖਿਏ ਸੁਧ ਮਸਤਾਨ ਪ੍ਰਿਧ ਕੋ  |
| ਜੇਦੀ ਧੁੰਮ ਤਿੰਨਣੀ ਪਈ ਜੇ ਨੀ।      | ਭਟ੍ਰ-ਮੰਡਲੀ ਮੇਂ ਮਚੀ ਧੂਮ ਜਿਸ ਕੀ। |
| ਵੇਖਾਂ ਕੇਹੜੇ ਦੇਸ ਦਾ ਉਹ ਜੋਗੀ      | ਦੇਖੂੰ ਕੌਨ ਸੇ ਦੇਸ਼ ਕਾ ਵਹ ਜੋਗੀ   |
| ਉਸ ਤੋਂ ਕੋਣ ਪਿਆਰੀ ਰੁਸ ਗਈ ਜੇ ਨੀ।  | ਉਸ ਸੇ ਕੌਨ ਪ੍ਰਾਰੀ ਰੂਠ ਗਈ ਹੈ ਰੀ॥ |

ਇਹ ਕਾਵਿ-ਟੋਟਾ ‘ਹੀਰ’ ਦੇ ਕਿਸੇ ਵਿਚੋਂ ਲਏਆ ਗਏਆ ਹੈ। ਰਾਂਝਾ ਜਦੋਂ ਨਿਰਾਸ਼ ਹੋ ਕੇ ਕੰਨ ਪੜ੍ਹਵਾ ਲੈਂਦਾ ਹੈ, ਉਹ ਹੀਰ ਦੇ ਦਰਸਨ ਲਈ ਆਉਂਦਾ ਹੈ। ਹੀਰ ਇਹ ਬ੍ਰਿਤਾਂਤ ਸੁਣ ਕੇ ਦੁਖ ਵਿਚ ਆਖਦੀ ਹੈ।

## ਪ੍ਰੋ. ਪੂਰਨ ਸਿੰਘ

ਇਹ ਬੇਪਰਵਾਹ ਪੰਜਾਬ ਦੇ,  
ਮੋਤ ਨੂੰ ਮਖੌਲਾਂ ਕਰਨ,  
ਮਰਨ ਥੀ ਨਹੀਂ ਡਰਦੇ।

## ਸ਼੍ਰੀ. ਪੂਰਨ ਸਿੰਹ

ਏ ਬੇਪਰਵਾਹ ਪੰਜਾਬ ਕੇ (ਵਾਸੀ)  
ਮੀਤ ਕੋ ਠਹੋਲ ਕਰਤੇ  
ਮਰਨੇ ਸੇ ਨਹੀਂ ਡਰਤੇ !

ਪਿਆਰ ਨਾਲ ਇਹ ਕਰਨ ਗੁਲਾਮੀ  
ਜਾਨ ਕੋਹ ਆਪਣੀ ਵਾਰ ਦਿੰਦੇ  
ਪਰ ਤੈਂ ਨਾ ਮੰਨਣ ਕਿਸੀ ਦੀ  
ਖਲੇ ਜਾਣ ਡਾਗਾਂ ਮੋਢੇ ਤੇ  
ਉਲਾਰ ਕੇ।

ਪਿਆਰ ਸੇ ਏ ਕਰੇਂ ਗੁਲਾਮੀ  
ਅਪਨੀ ਜਾਨ ਮਾਰ ਕਰ ਵਾਰ ਦੇਤੇ  
ਪਰ ਹੇਕਝੀ ਨ ਮਾਨਤੇ ਕਿਸੀ ਕੀ  
ਮੌਢੇ ਪਰ ਲਾਠੀਆਂ ਕਰ ਕਰ ਝੱਕੀ  
ਖਭੇ ਜੋ ਜਾਤੇ ਫਟ ਕਰ !

ਮੰਨਣ ਬਸ ਇਹ ਆਪਣੀ ਜਵਾਨੀ ਦੇ  
ਜੋਰ ਨੂੰ ਅਖੜ-ਖਾਂਦ, ਅਲਬੇਲੇ, ਪੁਰ ਥੀ  
ਸਤਿਗੁਰਾਂ ਦੇ  
ਅਜਾਦ ਕੀਤੇ ਇਹ ਬੰਦੇ।.....

ਮਾਨਤੇ ਏ ਕੇਵਲ  
ਅਪਨੀ ਜਵਾਨੀ ਕੇ ਜ਼ੋਰ ਕੋ।  
ਨਟਕਟ, ਅਲਬੇਲੇ ਧੁਰ ਸੇ  
ਸਦ ਗੁਰੂਆਂ ਕੇ ਆਜ਼ਾਦ ਕੀਏ ਏ ਬੰਦੇ।

ਪਿਆਰ ਦਾ ਨਾਮ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਿੱਖਿਆ,  
ਦਿਲ ਜਾਨ ਵਾਰਨ ਇਹ ਪਿਆਰ ਤੇ,  
ਮੱਚੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਵਾਸੀ ਦਾ ਇਹ  
ਈਮਾਨ ਹੈ,  
ਰਾਏਟਤੇ ਦੇ ਨਿੱਕੇ ਵੱਡੇ ਭਰਾ ਸਾਰੇ,  
ਬੇਲਿਆਂ ਤੇ ਰੱਖਾਂ ਵਿਚ ਕੂਕਾਂ ਮਾਰਦੇ।

ਪਿਆਰ ਕਾ ਨਾਮ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸੀਖਾ  
ਦਿਲ ਜਾਨ ਵਾਰੇਂ ਏ ਪਿਆਰ ਪਰ  
ਸਚੇ ਪੰਜਾਬ ਕੇ ਵਾਸੀ ਕਾ ਧਰਮ  
ਭੈਰਵ ਹੈ।  
ਚੱਲਣੇ ਕੇ ਛੋਟੇ ਬਡੇ ਭਾਈ ਸਾਰੇ  
ਜਗਲ ਬਨਸਥਲੀ ਮੇਂ ਕੂਕ ਰਹੇ !

ਇਹ ਕਵਿਤਾ 'ਜਵਾਨ ਪੰਜਾਬ ਦੇ' ਪ੍ਰੋ. ਪੂਰਨ ਸਿੰਘ ਦੀ ਪੁਸਤਕ 'ਖੁਲ੍ਹੇ ਮੈਦਾਨ'  
ਵਿਚੋਂ ਲਈ ਗਈ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਕਵੀ ਨੇ ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ ਦਸੀ ਹੈ।

## ਭਾਈ ਵੀਰ ਸਿੰਘ

ਸ਼ਹਿਰ, ਗਿਰਾਂ, ਮਹਿਲ ਨਹੀਂ ਮਾੜੀ,  
ਕੁੱਲੀ ਢੇਕ ਨਾ ਭਾਲਾਂ  
ਮੀਂਹ, ਹਨੇਰੀ, ਗੜੇ, ਪੁੱਪ ਵਿਚ,  
ਨੰਗੇ ਸਿਰ ਦਿਨ ਘਾਲਾ।

## ਭਾਈ ਵੀਰ ਸਿੰਹ

ਸ਼ਹਰ ਗਰਾਮ ਸਹਲ ਨਹੀਂ ਸੰਭਪ,  
ਪੁਰਾ ਕੁਟੀ ਨ ਫੁੱਫੂ  
ਬਰਾ, ਆਂਧੀ, ਰੁਝਾਰਏ ਧੂਪ ਮੇਂ,  
ਨੰਗੇ ਸਿਰ ਦਿਨ ਕਾਟੂੰ।

ਲੇ ਅਰਸਾਂ ਦੇ ਵਾਲੀ ਵੰਨੇ,  
ਹੋਰ ਲਾਲਸਾ ਨਾਹੀਂ।  
ਗਿੱਠ ਥਾਉਂ ਧਰਤੀ ਤੋਂ ਲੀਤੀ,  
ਵਧਾਂ ਟਿਕਾਂ ਇਸ ਮਾਹੀਂ।  
ਫੁੱਲਾਂ, ਫਲਾਂ, ਖਿੜਾਂ, ਰਸ ਚੇਵਾਂ,  
ਰਹਿ ਅਛੋਤ ਟੁਰ ਜਾਵਾਂ।  
ਕੁਲੀ, ਗੁਲੀ, ਜੁਲੀ ਦੁਨੀਆਂ  
ਬਿਨ ਮੰਗੇ ਮਰ ਜਾਵਾਂ।

ਲੈ ਸਵਾਗੀਂ ਕੇ ਸਵਾਮੀ ਪ੍ਰਤਿ  
ਔਰ ਲਾਲਸਾ ਨਾਹੀਂ।  
ਹਾਥ—ਅਰ ਜਗਹ ਧਰਤੀ ਸੇ ਲੀ ਹੈ।  
ਕਫ਼੍ਰ ਟਿਕ੍ਰ ਇਸ ਮਾਹੀਂ।  
ਫੂਲ੍ਰ ਫਲ੍ਰ ਖਿਲ੍ਰ ਰਸ ਘੂਤਾ  
ਰਹ ਅਛੂਤ ਚਲ ਬਸਤਾ।  
ਘਰ, ਰੋਟੀ ਔ ਕਧੜਾ ਦੁਨਿਆ !  
ਬਿਨ ਮਾਂਗੇ ਸਰ ਜਾਤਾ

ਇਹ ਪੰਗਤੀਆਂ ਕਵਿਤਾ 'ਕਿੱਕਰ' ਵਿਚੋਂ ਲਈਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਕਵੀ ਨੇ ਕਿੱਕਰ ਦੇ ਇਕਰਸ ਵਿਰਾਗ ਦਾ ਚਿਤ੍ਰ ਖਿਚਿਆ ਹੈ। ਵੇਖੋ ਸੰਗ੍ਰਹਿ 'ਲਹਿਰਾਂ ਦੇ ਹਾਰ'।

### ਅਮ੍ਰਿਤਾ ਪ੍ਰੀਤਮ

ਅਜ ਆਖਾਂ ਵਾਰਸਸ਼ਾਹ ਨੂੰ  
ਕਿਤੋਂ ਕਬਰਾਂ ਵਿਚੋਂ ਬੋਲ।  
ਤੇ ਅੱਜ ਕਿਤਾਬੇ ਇਸ਼ਕ ਦਾ  
ਕੋਈ ਅਗਲਾ ਵਰਕਾ ਫੋਲ।  
ਇਕ ਰੋਈ ਸੀ ਧੀ ਪੰਜਾਬ ਦੀ  
ਵੇ ਤੂੰ ਲਿਖ ਲਿਖ ਮਾਰੇ ਵੈਣ,  
ਅੱਜ ਲਖਾਂ ਧੀਆਂ ਰੋਈਆਂ  
ਤੇ ਤੈਨੂੰ, ਵਾਰਸ ਸ਼ਾਹ ਨੂੰ ਕਹਿਣ।  
ਵੇ ਦਰਦਮੰਦਾਂ ਦਿਆਂ ਦਰਦੀਆ।  
ਉਠ! ਤਕ ਆਪਣਾ ਪੰਜਾਬ,  
ਅੱਜ ਬੇਲੇ ਲਾਸ਼ਾਂ ਵਿੱਛੀਆਂ  
ਤੇ ਲਹੂ ਦੀ ਭਰੀ ਚਨਾਬ।.....  
ਅੱਜ ਸਭੇ ਕੈਦੇ ਬਣ ਗਏ  
ਹੁਸਨ ਇਸ਼ਕ ਦੇ ਚੋਰ।  
ਅੱਜ ਕਿਥੋਂ ਲਿਆਈਏ ਟੋਲਕੇ।  
ਵੇ ਵਾਰਸ ਸ਼ਾਹ ਇਕ ਹੋਰ।

### ਅਸ੍ਰੁਤਾ ਪ੍ਰੀਤਮ

ਵਾਰਹ ਸ਼ਾਹ ਕੀ ਆਜ ਕਹੂੰ ਮੈਂ  
ਕਬਰੀਂ ਮੇਂ ਸੇ ਬੋਲ !  
ਆਜ ਕਿਤਾਬ—ਏ—ਏਕ ਕਾ  
ਕੋਈ ਅਗਲਾ ਪੰਨਾ ਖੋਲ !  
ਏਕ ਬੇਟੀ ਰੋਈ ਪੰਜਾਬ ਕੀ  
ਤੁ ਲਿਖ ਲਿਖ ਗਾਏ ਬੈਨ।  
ਪੁਤ੍ਰਿਯੋਂ ਲਾਖੀਂ ਰੋ ਰਹੀਂ  
ਤੁਝ ਬਾਰਸ ਪ੍ਰਤਿ ਪੁਕਾਰ।  
ਹੇ ਦਦੇਮੰਦੀਂ ਕੇ ਸਿਰਵਰ !  
ਚਠ ਦੇਖ ਅਪਨਾ ਪੰਜਾਬ,  
ਬਨ ਮੇਂ ਲਾਸ਼ੀਂ ਬਿਛ ਗਈ।  
ਔ ਲਹੂ ਸੇ ਮਰੀ ਚਨਾਬ।  
ਸਬ ਕੈਦੀ ਆਜ ਹੈਂ ਬਨ ਗਏ  
ਰੇ ਪ੍ਰੇਸ ਹੁਸਨ ਕੇ ਚੋਰ।  
ਲਾਏਂ ਕਹਾਂ ਸੇ ਫੁੱਫ ਕਰ  
ਰੇ ਵਾਰਸ ਸ਼ਾਹ ਏਕ ਔਰ।

ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਵੰਡ ਮਗਰੋਂ ਜੇ ਫ਼ਸਾਦ ਹੋਏ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਪੰਜਾਬ ਦੀਆਂ ਧੀਆਂ ਨੂੰ ਵਧੇਰੇ ਦੁਖ ਸਹਣੇ ਪਏ। ਕਵਿਤ੍ਰੀ ਨੇ ਭਾਵੁਕਤਾ ਨਾਲ ਇਹ ਕਵਿਤਾ 'ਵਾਰਸ਼ ਸ਼ਾਹ ਨੂੰ' ਲਿਖੀ ਹੈ।

## ਲੋਕ-ਸਾਹਿਤ

## ਲੋਕ ਸਾਹਿਤ

ਅੰਨ੍ਹਾ ਵਿਆਜ ਸਾਹ ਨੂੰ ਖੋਵੇ  
ਰੰਨ ਨੂੰ ਖੋਵੇ ਹਾਂਸੀ।  
ਆਲਸ ਨੀਂਦ ਕਿਰਸਾਨ ਨੂੰ ਖੋਵੇ  
ਜਿਵੇਂ ਚੋਰ ਨੂੰ ਖਾਂਸੀ ॥ ੧ ॥  
ਕੱਲਰ ਖੇਤ, ਕਸੂਤ ਹਲ  
ਘਰ ਕਲਹਿਣੀ ਨਾਰ।  
ਚੋਥੇ ਮੈਲੇ ਕਪੜੇ  
ਮਰਗ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਚਾਰ ॥ ੨ ॥  
ਕੱਲਰ ਖੇਤਰ, ਨ ਲੱਗੇ ਰੁੱਖ।  
ਖੇਤ ਲਗ ਲਗ ਜਾਂਦੀ ਸੁੱਕ ॥  
ਭਾਵੇਂ ਕਿਤਨੀਆਂ ਕਰੀਆਂ ਪੁਟ।  
ਉਥੇ ਮੂਲ ਨਾ ਲਥੇ ਭੁੱਖ ॥ ੩ ॥  
ਅੱਤ ਨਾ ਬਾਹਲੇ ਮੇਘਲੇ।  
ਅੱਤ ਨਾ ਬਾਹਲੀ ਧੁੱਪ ॥  
ਅੱਤ ਨਾ ਬਾਹਲਾ ਬੋਲਣਾ  
ਅੱਤ ਨਾ ਬਾਹਲੀ ਚੁੱਪ ॥ ੪ ॥

ਅੰਧਾ ਬਿਆਜ ਸਾਹ ਨੂੰ ਖੋਵੇ,  
ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਖੋਵੇ ਹਾਂਸੀ।  
ਆਲਸ ਨੀਂਦ ਕਿਸਾਨ ਨੂੰ ਖੋਵੇ  
ਜੈਸੇ ਚੋਰ ਨੂੰ ਖਾਂਸੀ ॥ ੧ ॥  
ਕਲਰ ਖੇਤ, ਕੇਫ਼ ਹਲ  
ਔਰ ਘਰ ਮੇਂ ਕੁਲਚਿਨੀ ਨਾਰ।  
ਚੌਥੇ ਮੈਲੇ ਕਪੜੇ  
ਮ੍ਰਤ੍ਯੁ—ਚਿਹ੍ਨ ਏ ਚਾਰ ॥ ੨ ॥  
ਕਲਰ ਖੇਤ ਨ ਲਗੇ ਰੁੱਖ  
ਖੇਤੀ ਲਗ ਲਗ ਜਾਏ ਸੂਰ੍ਯ  
ਚਾਹੇ ਕਿਤਨੀ ਚਲਾਏ ਕੁਦਾਲ  
ਵਹਾਨੂੰ ਨਿਪਟ ਨ ਉਤਰੇ ਮੂਰ੍ਖ ॥ ੩ ॥  
ਅਤਿ ਰੂਪਿ ਨ ਅਚੀ ਮੇਘ ਕੀ  
ਅਤਿ ਆਤਪ ਨ ਸੁਹਾਏ  
ਅਤਿ ਭਾਭਣ ਨ ਕਾਸ ਕਾ  
ਅਤਿ ਚੁਪ ਕਾਸ ਨ ਆਏ ॥ ੪ ॥

ਇਨ੍ਹਾਂ ਅਖਾਣਾਂ ਵਿਚ ਜੀਵਨ ਦੇ ਉਪਯੋਗੀ ਤੱਥ ਦਿਤੇ ਹਨ।

## ਕੁੜੀ ਦਾ ਵਿਦਾਈ ਗੀਤ

ਸਾਡਾ ਚਿੜੀਆਂ ਦਾ ਚੰਬਾ ਵੇ ਬਾਬਲਾ  
ਅਸੀਂ ਉਡ ਜਾਣਾ।  
ਸਾਡੀ ਲੰਮੀ ਉਡਾਰੀ ਵੇ ਬਾਬਲਾ।  
ਅਸੀਂ ਦੂਰ ਜਾਣਾ।  
ਐਹ! ਮੇਰੀਆਂ ਗੁੱਡੀਆਂ  
ਵੇ ਬਾਬਲਾ! ਅਜ ਕੌਣ ਖੇਡੇ?  
'ਮੇਰੀਆਂ ਖੇਡਣ ਪੋਤੀਆਂ  
ਜਾਈਏ ਘਰ ਜਾਹ ਆਪਣੇ।'  
'ਮੇਰਾ ਛੂਟਾ ਕਸੀਦੜਾ  
ਵੇ ਬਾਬਲਾ! ਅੱਜ ਕੌਣ ਕੱਢੇ?

## ਕਨ੍ਯਾ ਕਾ ਵਿਦਾ ਗੀਤ

ਹਮ ਚਿਝੀਯੋਂ ਕੀ ਡਾਰ, ਹੇ ਬਾਬੁਲ  
ਹਮੇਂ ਚੜ੍ਹ ਜਾਨਾ।  
ਲੰਬੀ ਚੜ੍ਹਾਨ ਹਮਾਰੀ ਹੇ ਬਾਬੁਲ !  
ਹਮੇਂ ਚੜ੍ਹ ਜਾਨਾ।  
'ਏ ਰਹੀਂ ਮੇਰੀ ਗੁਡੀਯਾਂ  
ਹੇ ਬਾਬੁਲ ! ਆਜ ਕੌਨ ਖੇਲੇ ?'  
'ਮੇਰੀ ਖੇਲੇਂਗੀ ਪੋਤੀਯਾਂ ਆਪ  
ਬੇਟੀ ! ਤੂ ਜਾ ਘਰ ਅਪਨੇ।'  
'ਮੇਰਾ ਛੂਟਾ ਕਸੀਦਾ ਆਜ  
ਹੇ ਬਾਬੁਲ ਕੌਨ ਕਾਢੇ ?

‘ਮੇਰੀਆਂ ਕੱਢਣ ਪੇੜੀਆਂ,                    ਸੇਰੀ ਪੋਤੀਆਂ ਕਾਫ਼ੇਂਗੀ ਆਪ  
ਨੀ ਧੀਏ! ਘਰ ਜਾਹ ਆਪਣੇ।’            ਹੇ ਬੇਟੀ ! ਤੂੰ ਜਾ ਘਰ ਅਪਣੇ ॥

ਕੁੜੀ ਆਪਣੇ ਵਿਆਹ ਮਗਰੋਂ ਜਦੋਂ ਪੇਕਾ ਘਰ ਛੱਡਣ ਲਗਦੀ ਹੈ ਇਹ ਵਿਦਾਈ ਗੀਤ ਉਸ ਵੇਲੇ ਦੇ ਭਾਵਾਂ ਦਾ ਚਿਤ੍ਰਨ ਕਰਦਾ ਹੈ।

### ਸਾਉਪੁਣਾ

ਸਾਉ ਲੋਕ ‘ਭਈ ਨਈਂ ਦੇ ਸਾਈਂ’ ਹੁੰਦੇ ਸਨ। ਚੰਗੇ ਖਾਂਦੇ ਤੇ ਸੋਹਣਾ ਹੰਢਾਂਦੇ ਸਨ। .....ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਪਹਿਰਾਵਾ ਠੁਕ ਅਬਰੇ ਵਾਲਾ ਤੇ ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਲਈ ਨਮੂਨੇ ਦਾ ਕੰਮ ਦਿੰਦਾ ਸੀ। ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਬੇਲ ਮਿੱਠੇ, ਕੋਮਲ ਤੇ ਸਭਿੱਤਾ ਵਾਲੇ ਹੁੰਦੇ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮੇਕੇ ਸਿਰ ਪਹਿਲੀ ਗੱਲ ਆਖਣ ਦੀ ਜਾਚ ਆਉਂਦੀ ਸੀ। ਚਾਲ ਢਾਲ ਵਿਚ ਬਿਨਾਂ ਹੈਕੜ ਦੇ ਗੰਭੀਰ, ਅਝੱਕ ਹੋਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਨਿਮ੍ਹੀ ਨਿਮ੍ਹੀ ਲੱਜਾ ਵਾਲੇ ਤੇ ਹੇਛੇ ਦਿਖਾਵੇ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਉਦਾਰ-ਚਿੱਤ ਤੇ ਮਿਤਰਾਨਾ ਸਲੂਕ ਵਾਲੇ ਹੁੰਦੇ ਸਨ। ਆਪਣੀ ਅਣਖ ਉਤੇ ਮਰ ਮਿਟਣਾ, ਬਾਂਹ ਫੜੀ ਦੀ ਲਾਜ ਰਖਣੀ, ਬਚਨ ਦਾ ਪੱਕਾ ਹੋਣਾ, ਐਕੜ ਦੇ ਵੇਲੇ ਢੇਰੀ ਨ ਢਾਹ ਬਹਿਣਾ, ਬਲਕਿ ਖਿੱਤੇ ਮਥੇ ਹੋਸਲੇ ਨਾਲ ਮੁਸੀਬਤ ਦਾ ਟਾਕਰਾ ਕਰਨਾ—ਇਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਖਾਸ ਗੁਣ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

—ਪ੍ਰਿੰ. ਤੇਜਾ ਸਿੰਘ

ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਤੇਜਾ ਸਿੰਘ ਆਧੁਨਿਕ ਪੰਜਾਬੀ ਗੱਦ ਦੇ ਉਘੇ ਲਿਖਾਰੀ ਸਨ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਲੇਖ ਬਹੁਤ ਸੁੰਦਰ ਤੇ ਠੇਠ ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਚ ਅੰਕਿਤ ਹੋਏ ਹਨ। ਇਹ ਟੋਟਾ ਵੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਇਕ ਲੇਖ ਦਾ ਅੰਸ਼ ਹੈ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਇਹ ਪੁਸਤਕਾਂ ਪੜ੍ਹਨ-ਯੋਗ ਹਨ :

ਨਵੀਆਂ ਸੋਚਾਂ, ਸਹਿਜ ਸੁਭਾ, ਸਭਿਆਚਾਰ, ਆਰਸੀ, ਘਰ ਦਾ ਪਿਆਰ।

### ਸਾਧੁਤਾ

ਸਾਧੁਜਨ ਜਲ ਥਲ ਕੇ ਸਵਾਮੀ ਹੋਂਦੇ ਥੇ। ਅਛਲਾ ਖਾਤੇ ਔਰ ਸੁੰਦਰ ਪਹਨਤੇ ਥੇ। .....ਤਨਕਾ ਪਹਰਾਕਾ ਤਪਯੁਕਤ ਪ੍ਰਤਿਛਾ ਕਾਲਾ ਆਂ ਆਮ ਲੋਗੋਂ ਕੇ ਲਿਏ ਆਦਰਸ਼ ਕਾ ਕਾਮ ਦੇਤਾ ਥਾ। ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਕਰ ਤਨ ਕੇ ਬੋਲ ਸੀਠੇ, ਕੋਮਲ ਆਂ ਸਮਯਤਾ ਕਾਲੇ ਹੋਂਦੇ ਥੇ।

ਤਨਕੋ ਸੈਂਕੇ ਪਰ ਪਹਲੀ ਕਾਤ ਕਹਨੇ ਕਾ ਫੰਗ ਆਤਾ ਥਾ। ਚਾਲ ਫਾਲ ਮੈਂ ਬਿਨਾ ਹੇਕੜ ਕੇ ਗੰਭੀਰ, ਨਿਰਮੀਕ ਹੋਂਦੇ ਕੇ ਕਾਵਜੂਦ ਹਲਕੀ ਸੀ ਲਯਜਾ ਕਾਲੇ ਔਰ ਔਛੇ ਦਿਖਾਵੇ ਕੇ ਬਿਨਾ ਤਦਾਰ-ਚਿਤ ਆਂ ਮਿਤ੍ਰਤਾ ਕੇ ਕਾਵਹਾਰ ਕਾਲੇ ਹੋਂਦੇ ਥੇ। ਅਪਨੀ ਆਨ ਪਰ ਸਰ ਮਿਟਨਾ, ਜਿਸਕਾ ਹਾਥ ਪਕੜਤੇ (ਸ਼ਰਣ ਦੇਨੇ ਕੇ) ਕਰਤਕਾ ਕੀ ਲਾਜ

ਰਖਤੇ। ਵਚਨ ਕੇ ਪਕਕੇ ਹੋਤੇ ਥੇ, ਬਲਿਕਿ ਖਿਲੇ ਸਾਥੇ ਹੀਸਲੇ ਕੇ ਸਾਥ ਸੁਸੀਬਤ ਕਾ ਸਾਸਨਾ ਕਰਨਾ—ਏ ਤਨ ਕੇ ਖਾਸ ਗੁਣ ਹੋਤੇ ਥੇ।

—ਪ੍ਰਿ. ਤੇਜਾ ਸਿੰਘ

### ਮੇਰਾ ਪੰਜਾਬ

ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਦਾ ਨਾਂ ਹੈ ਪੰਜਾਬ। ਹਰੇ-ਭਰੇ ਖੇਤਾਂ ਵਾਲਾ, ਮਿੱਠੇ ਨਿਰਮਲ ਪਾਣੀਆਂ ਵਾਲਾ ਖੁਲ੍ਹਾ ਭੂਲ੍ਹਾ ਹਸਦਾ ਰਸਦਾ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਹੈ ਮੇਰਾ ਪੰਜਾਬ।

ਹਾਲੀਆਂ, ਕਾਮਿਆਂ ਤੇ ਜੋਧਿਆਂ ਦੀ ਇਹ ਭੂਮੀ ਸੰਤਾਂ, ਸੂਫੀਆਂ ਤੇ ਗੁਰੂਆਂ ਦੀ ਬਾਣੀ ਨਾਲ ਗੂੰਜਦੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਸਾਂਝੀਵਾਲਤਾ, ਉਦਾਰ-ਮਨੁਖਤਾ ਤੇ ਸਹਨਸੀਲਤਾ ਦੀ ਤਪਸਿਆ ਇਥੋਂ ਦੀ ਵਸੋਂ ਨੇ ਚਿਰਾਂ ਤੋਂ ਸਿੱਖੀ ਹੈ। ਸੁਨਹਰੀ ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਉਸਾਰਨ ਵੇਲੇ ਗੁਰੂ ਅਮਰਦਾਸ ਨੇ ਲਾਹੌਰ ਦੇ ਸੂਫੀ ਮੀਆਂ ਮੀਰ ਦੇ ਹੱਥੋਂ ਇਸ ਦਾ ਨੀਂਹ-ਪੱਥਰ ਰਖਵਾ ਕੇ ਸੰਪ੍ਰਦਾਇਕਤਾ ਅਤੇ ਜਾਤ-ਪਾਤ ਦੇ ਵਿਤਕਰਿਆਂ ਤੋਂ ਜਨ-ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਮੁਕਤ ਕਰਨ ਦਾ ਉਪਰਾਲਾ ਕੀਤਾ।

ਦਿਵਾਲੀ ਦੀ ਰਾਤ ਨੂੰ ਹਰਿਮੰਦਰ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਜਗਮਗ ਮਹਿਮਾ ਵੇਖਣ-ਜੋਗ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਲਿਸ਼ਕਦਾ ਪਾਣੀ, ਟਿਮ-ਟਿਮ ਦੀਵੇ, ਸ਼ਰਧਾਂ-ਭਰੀਆਂ ਅੱਖਾਂ—ਮਾਨੋ ਕਵਿਤਾ ਨੂੰ ਨੂਰ ਦੇ ਅੱਖਰਾਂ ਵਿਚ ਚਿਤ੍ਰਿਆ ਗਇਆ ਹੋਵੇ।

ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਜੀਵਨ-ਕਾਵਿ ਸੂਰਬੀਰਤਾ ਦੀ ਅਣਖ ਰਖਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਅਣਖ ਨੇ ਸਿਕੰਦਰ ਮਹਾਨ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬ ਤੋਂ ਅੱਗੇ ਜਾਣ ਜੋਗਾ ਨਹੀਂ ਸੀ ਛਡਿਆ। ਪੋਰਸ ਦੇ ਜੋਧਿਆਂ ਨੇ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ ਤੇ ਦ੍ਰਿੜ੍ਹਤਾ ਦਾ ਸਬੂਤ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿਚ ਅੰਕਿਤ ਕੀਤਾ ਸੀ।

ਬਾਬਰ ਦੇ ਹੱਲੇ ਵੇਲੇ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਨੇ ਖੂਨ ਦੇ ਸੋਹਲੇ ਗਾ ਗਾ ਕੇ ਜਨਤਾ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਦੁਰਦਸ਼ਾ ਤੋਂ ਮੁਕਤ ਹੋਣ ਦਾ ਹੌਸਲਾ ਬਖਸ਼ਿਆ। ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ, ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ, ਅਤੇ ਹਕੀਕਤ ਰਾਏ ਨੇ ਮਹਾਨ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਕਰ ਕੇ ਅਹਿੰਸਾਵਾਦੀ ਸਾਧਨਾਂ ਨਾਲ ਜਨ-ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਦੇ ਉਪਰਾਲੇ ਕੀਤੇ।

ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ਾਂ ਦੇ ਸਮੇਂ ਜਲਿਆਂਵਾਲਾ ਬਾਗ ਵਿਚ ਜਨਰਲ ਓ ਡਾਇਰ ਨੇ ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਬੰਦਿਆਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਅਜ਼ਾਦੀ ਲਈ ਅਵਾਜ਼ ਉਠਾਉਣ ਵਜੋਂ ਗੋਲੀਆਂ ਨਾਲ ਸ਼ਹੀਦ ਕੀਤਾ।

ਮਹਾਰਾਜਾ ਰਣਜੀਤ ਸਿੰਘ ਤੋਂ ਬਾਦ ਲਾਲਾ ਲਾਜਪਤ ਰਾਏ ਨੂੰ ‘ਪੰਜਾਬ ਕੋਸਰੀ’ ਆਖਿਆ ਗਇਆ। ਭਗਤ ਸਿੰਘ, ਰਾਜਗੁਰੂ, ਸੁਖਦੇਵ ਦੀ ਸਮਾਧ ਸਤਲੁਜ ਦੇ ਕੰਢੇ ਅਜ ਵੀ ਮੌਜੂਦ ਹੈ। ਉਥੋਂ ਅਵਾਜ਼ ਗੂੰਜਦੀ ਹੈ—‘ਪਗੜੀ ਸੰਭਾਲ ਜੱਟਾ!’

ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ, ਲੁਧਿਆਣੇ, ਬਟਾਲੇ, ਜਲੰਧਰ ਆਦਿ ਨਗਰਾਂ ਵਿਚ ਭਾਰੀ ਉਦਯੋਗ ਵਧ-ਵਲ ਰਹੇ ਹਨ ਅਤੇ ਭਾਖੜੇ ਦੀ ਸਿੰਚਾਈ ਤੇ ਬਿਜਲੀ ਯੋਜਨਾ ਨੇ ਖਾਧ ਸਮਸਿਆ ਨੂੰ



ਹੱਲ ਕਰਨ ਵਿਚ ਚੋਖੀ ਸਹਾਇਤਾ ਦਿਤੀ ਹੈ।

ਵਿਸਾਖੀ ਉਤੇ ਭੰਗੜੇ ਪਾਉਂਦੇ ਗਭਰੂਆਂ ਤੇ ਗਿੱਧਾ ਪਾਉਂਦੀਆਂ ਮੁਟਿਆਰਾਂ ਦੇ ਇਕੱਠ ਮਾਨੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਲੋਕ-ਜੀਵਨ ਦੇ ਉਤਸ਼ਾਹ ਨੂੰ ਸਾਕਾਰ ਕਰਨ ਵਿਚ ਰੁਝ ਜਾਂਦੇ ਹਨ—

1. ਤੇਰੇ ਲੋਗ ਦਾ ਪਿਆ ਲਿਸਕਾਰਾ, ਹਾਲੀਆਂ ਦੇ ਹਲ ਰੁਕ ਗਏ।
2. ਜਦੋਂ ਬਿਸਨੀ ਬਾਗ਼ ਚੋਂ ਨਿਕਲੀ, ਭੋਰਾਂ ਨੂੰ ਭੁਲੇਖਾ ਪੈ ਗਿਆ।
3. ਜਾਗਦੇ ਰਹਿਣਾ, ਜਾਗਦੇ ਰਹਿਣਾ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਰਾਖੀ ਖਾਤਰ, ਤੁਸੀਂ ਜਾਗਦੇ ਰਹਿਣਾ।

—ਡਾ. ਸੀਤਾਰਾਮ ਬਾਹਰੀ

### ਮੇਰਾ ਪੰਜਾਬ

ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਕਾ ਨਾਮ ਹੈ ਪੰਜਾਬ ਹਰੇ-ਭਰੇ ਖੇਤਾਂ ਵਾਲਾ; ਸੀਠੇ, ਨਿਰਮਲ ਪਾਨੀਯੋਂ ਵਾਲਾ; ਖੁਲਾ, ਉਦਾਰ ਹੰਸਤਾ ਮਾਲਤਾ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਹੈ ਮੇਰਾ ਪੰਜਾਬ।

ਕ੍ਰਿਸ਼ੀਕੋਂ, ਮਯੂਰੀਕੋਂ, ਯੋਧਾਕੋਂ ਕੀ ਯਹ ਭੂਮਿ ਸੰਤਾਂ, ਸੂਫ਼ਿਯੋਂ ਔਰ ਗੁਰੂਕੋਂ ਕੀ ਬਾਨੀ ਸੇ ਗੂੰਜਤੀ ਰਹੰਤੀ ਹੈ। ਸਹਯੋਗ, ਉਦਾਰ ਮਨੁਸ਼ਯਤਾ ਆਂ ਸਹਨਸ਼ੀਲਤਾ ਕੀ ਤਪਸਯਾ ਯਹੂੰ ਕੇ ਨਿਵਾਸਿਯੋਂ ਨੇ ਦੇਰ ਸੇ ਸੀਖੀ ਹੁਏ ਹੈ। ਸ੍ਵਰ੍ਣ ਗੁਰੂਦਵਾਰਾ ਅਮ੍ਰਤਸਰ ਕੇ ਨਿਰਮਾਣ ਕੇ ਸਮਯ ਗੁਰੂ ਅਮਰ ਦਾਸ ਨੇ ਲਾਹੌਰ ਸੂਫ਼ੀ ਮਿਯਾਂਸੀਰ ਕੇ ਹਾਥੋਂ ਇਸਕਾ ਸ਼ਿਲਾ-ਨ੍ਯਾਸ ਕਰਵਾ ਕਰ ਮਾਨੋ ਸਾਮ੍ਪ੍ਰਦਾਯਿਕਤਾ ਆਂ ਜਾਤਿ ਪਾਤਿ ਕੇ ਬਖੇਡੋਂ ਸੇ ਜਨਜੀਵਨ ਕੋ ਸੁਕਤ ਕਰਨੇ ਕਾ ਪ੍ਰਯਤਨ ਕੀਯਾ।

ਦਿਵਾਲੀ ਕੀ ਰਾਤ ਕੋ ਹਰਿਮੰਦਿਰ ਸਾਹਬ ਕੀ ਜਗਮਗ ਮਹਿਮਾ ਦੇਖਨੇ ਯੋਗਯ ਹੋਤੀ ਹੈ। ਚਮਕਤਾ ਪਾਨੀ, ਟਿਮਟਿਮਾਤੇ ਦੀਪਕ, ਸ਼ਰਦ੍ਧਾ-ਮਰੀ ਆਂਖੋਂ-ਮਾਨੋ ਕਵਿਤਾ ਕੋ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਕੇ ਅਕਸ਼ਰੋਂ ਮੇਂ ਚਿਤ੍ਰਿਤ ਕੀਯਾ ਗਯਾ ਹੋ।

ਪੰਜਾਬ ਕਾ ਜੀਵਨ-ਕਾਵਯ ਸ਼ੂਰਵੀਰਤਾ ਕੀ ਆਨ ਰਖਤਾ ਹੈ। ਇਸ ਆਨ ਨੇ ਸਿਕੰਦਰ ਮਹਾਨ ਕੋ ਪੰਜਾਬ ਸੇ ਆਗੇ ਜਾਨੇ ਯੋਗਯ ਨਹੀਂ ਛੋਡਾ ਥਾ। ਪੋਰਸ ਕੇ ਯੋਧਾਕੋਂ ਨੇ ਪੰਜਾਬ ਕੀ ਸ਼ਕਤਿ ਆਂ ਟੁਫ਼ਤਾ ਕੀ ਸਾਖੀ ਇਤਿਹਾਸ ਮੇਂ ਅੰਕਿਤ ਕੀ ਥੀ।

ਬਾਬਰ ਕੇ ਆਕ੍ਰਮਣ ਕੇ ਸਮਯ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਨੇ ਖ਼ੂਨ ਕੇ ਸੋਹਲੇ ਗਾ ਗਾ ਕਰ ਜਨਤਾ ਕੋ ਅਪਨੀ ਦੁਰਦਸ਼ਾ ਸੇ ਸੁਕਤ ਹੋਨੇ ਕਾ ਹੌਸਲਾ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕੀਯਾ। ਗੁਰੂ ਅਰ੍ਜੁਨ ਦੇਵ, ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦੁਰ, ਆਂ ਹਕੀਕਤ ਰਾਏ ਨੇ ਮਹਾਨ ਬਲਿਦਾਨ ਕਰਕੇ ਅਹਿੰਸਾਵਾਦੀਰ ਸਾਧਨੋਂ ਕੇ ਸਾਥ ਜਨ-ਕ੍ਰਾਂਤਿ ਕੇ ਪ੍ਰਯਤਨ ਕੀਏ।

ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੋਂ ਕੇ ਸਮਯ ਜਲਿਯਾਂਵਾਲਾ ਬਾਗ਼ ਮੇਂ ਜਨਰਲ ਔ ਡਾਯਰ ਨੇ ਹਜ਼ਾਰੋਂ ਆਦਮਿਯੋਂ ਕੋ ਅਪਨੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਕੇ ਲਿਏ ਆਵਾਜ਼ ਉਠਾਨੇ ਕੇ ਕਾਰਣ ਗੋਲਿਯੋਂ ਕੇ

साथ शहीद किया।

महाराजा रणजीत सिंह के बाद लाला लाजपत राए को 'पंजाब केसरी' कहा गया। भक्त सिंह, राज गुरु, सुखदेव की समाधि सतलुज के किनारे आज भी मौजूद है। वहाँ आवाज़ गूँजती है—'पगड़ी संभल जट्टा !'

अमृतसर, लुधियाना, बटाला, जालंधर आदि नगरों में भारी उद्योग फल फूल रहे हैं और भाखड़ा की सिंचाई एवं बिजली योजना ने खाद्य समस्या को हल करने में काफी सहायता दी है।

बैसाखी पर भंगड़ा नृत्य करते नवयुवक और 'गिधा' नृत्य करती नवयुवतियों का समूह मानो पंजाब के लोक-जीवन के उत्साह को साकार करने में व्यस्त है :

1. तेरे लौंग दा पिआ लिशकारा, हालीआँ दे हल रुक गए;
2. जदों बिशनी बाग चों निकली, भौरा नूं भुलेखा पै गिआ।
3. जागदे रहिणा, देश दी राखी खातर। तुसीं जागदे रहिणा !

SIKHBOOKCLUB.COM

## ਖਧਡ 8

### ਸ਼ਬਦ ਕੋਸ਼

#### (ਕ) ਹਿਨ੍ਦੀ-ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਮਾਨ੍ਯ ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ

|           |             |         |         |
|-----------|-------------|---------|---------|
| ਅੰਗੀਠੀ    | ਅੰਗੀਠੀ      | ਅਸਰ     | ਅਸਰ     |
| ਅੰਗੂਠੀ    | ਅੰਗੂਠੀ      | ਅਸਾਮੀ   | ਅਸਾਮੀ   |
| ਅੰਗੂਰ     | ਅੰਗੂਰ       | ਆਟਾ     | ਆਟਾ     |
| ਅੰਦਰ      | ਅੰਦਰ        | ਆਦਤ     | ਆਦਤ     |
| ਅੰਦਾਜ਼ਾ   | ਅੰਦਾਜ਼ਾ     | ਆਦਮੀ    | ਆਦਮੀ    |
| ਅਗਲਾ      | ਅਗਲਾ        | ਆਦਰ     | ਆਦਰ     |
| ਅਛਾ       | ਅੱਛਾ        | ਆਨਾ     | ਆਉਣਾ    |
| ਅਜਬ       | ਅਜਬ         | ਆਪ      | ਆਪ      |
| ਅਟਕਨਾ     | ਅਟਕਣਾ       | ਆਫ਼ਤ    | ਆਫ਼ਤ    |
| ਅਟਕਲ      | ਅਟਕਲ        | ਆਰਤੀ    | ਆਰਤੀ    |
| ਅਡ        | ਅਡ          | ਆਰਾ     | ਆਰਾ     |
| ਅਡਨਾ      | ਅਡਨਾ        | ਆਰੀ     | ਆਰੀ     |
| ਅਦਲ-ਬਦਲ   | ਅਦਲ-ਬਦਲ     | ਆਲੂ     | ਆਲੂ     |
| ਅਥੇਡ      | ਅਥੇਡ        | ਆਸ      | ਆਸ      |
| ਅਨਥਕ      | ਅਣਥੱਕ       | ਆਸਨ     | ਆਸਨ     |
| ਅਨਪਛ      | ਅਣਪੜ੍ਹ      | ਆਸਰਾ    | ਆਸਰਾ    |
| ਅਨਬੋਲ     | ਅਣਬੋਲ       | ਭਤਵਾਰ   | ਭੈਤਵਾਰ  |
| ਅਨਾਜ      | ਅਨਾਜ        | ਭਧਰ     | ਇਧਰ/ਏਧਰ |
| ਅਨਾਰ      | ਅਨਾਰ        | ਭਧਰ-ਭਧਰ | ਇਧਰ-ਉਧਰ |
| ਅਨੋਖਾ     | ਅਨੋਖਾ/ਅਣੋਖਾ | ਭਨਾਸ    | ਇਨਾਸ    |
| ਅਪਨਾ      | ਅਪਣਾ        | ਭਮਾਰਤ   | ਇਮਾਰਤ   |
| ਅਫਰਾ-ਤਫਰੀ | ਹਫੜਾ-ਦਫੜੀ   | ਭਲਾਕਾ   | ਇਲਾਕਾ   |

|        |         |        |        |
|--------|---------|--------|--------|
| ਅਫੀਸਦੀ | ਅਫੀਸਦੀ  | ਇਲਾਜ   | ਇਲਾਜ   |
| ਅਮਿਸਾਨ | ਅਭਿਮਾਨ  | ਉਂਗਲੀ  | ਉਂਗਲੀ  |
| ਅਮਿਟ   | ਅਮਿਟ    | ਉਂਗਣਾ  | ਉਂਗਣਾ  |
| ਅਮ੍ਰਿਤ | ਅੰਮ੍ਰਿਤ | ਉਚਕਾ   | ਉਚਕਾ   |
| ਅਰਦਲੀ  | ਅਰਦਲੀ   | ਉਛਲਨਾ  | ਉਛਲਨਾ  |
| ਅਰਮਾਨ  | ਅਰਮਾਨ   | ਉਜਾੜ   | ਉਜਾੜ   |
| ਅਰੋਗ   | ਅਰੋਗ    | ਉਜਾੜਨਾ | ਉਜਾੜਨਾ |
| ਅਰਕ    | ਅਰਕ     | ਉਠਣਾ   | ਉਠਣਾ   |
| ਅਲਬੇਲਾ | ਅਲਬੇਲਾ  | ਉਡਣਾ   | ਉਡਣਾ   |
| ਅਲਮਾਰੀ | ਅਲਮਾਰੀ  | ਉਡਾਉਣਾ | ਉਡਾਉਣਾ |
| ਭਤਾਵਲਾ | ਉਤਾਵਲਾ  | ਕਾਕਾ   | ਕਾਕਾ   |
| ਭਧਾਰ   | ਉਧਾਰ    | ਕਾਜ    | ਦਾਜ    |
| ਭਲਟਨਾ  | ਉਲਟਣਾ   | ਕਾਠੀ   | ਕਾਠੀ   |
| ਭਲਟਾ   | ਉਲਟਾ    | ਕਾਨਾ   | ਕਾਣਾ   |
| ਭਲੂ    | ਉਲੂ     | ਕਾਬੂ   | ਕਾਬੂ   |
| ਭਸਰਨਾ  | ਉਸਰਨਾ   | ਕਾਲਾ   | ਕਾਲਾ   |
| ਭੁਤ    | ਉਤ      | ਕਿਰਾਯਾ | ਕਿਰਾਇਆ |
| ਏਕ     | ਇਕ      | ਕੀੜਾ   | ਕੀੜਾ   |
| ਏਂਟ    | ਐਂਟ     | ਕੀਲਨਾ  | ਕੀਲਣਾ  |
| ਏਨਕ    | ਐਨਕ     | ਕੁੰਜੀ  | ਕੁੰਜੀ  |
| ਏਬ     | ਐਬ      | ਕੁੰਮੀ  | ਕੁੰਮੀ  |
| ਏਬੀ    | ਐਬੀ     | ਕੁੱਤਾ  | ਕੁੱਤਾ  |
| ਕੰਘਾ   | ਕੰਘਾ    | ਕੁੱਪਾ  | ਕੁੱਪਾ  |
| ਕੰਜੂਸ  | ਕੰਜੂਸ   | ਕੁਰਕੀ  | ਕੁਰਕੀ  |
| ਕਚਾ    | ਕੱਚਾ    | ਕੁਲਫੀ  | ਕੁਲਫੀ  |
| ਕਾਜਲ   | ਕੱਜਲ    | ਕੁਸ਼ੀ  | ਕੁਸ਼ੀ  |
| ਕਛਾ    | ਕੱਟਾ    | ਕੂਚੀ   | ਕੂਚੀ   |
| ਕਟਾਇ   | ਕਟਾਈ    | ਕੂੜਾ   | ਕੂੜਾ   |
| ਕਟੋਰਾ  | ਕਟੋਰਾ   | ਕ੍ਰਪਾਨ | ਕ੍ਰਪਾਨ |
| ਕੜਾਹੀ  | ਕੜਾਹੀ   | ਕੈਂਚੀ  | ਕੈਂਚੀ  |
| ਕਤਰਨਾ  | ਕੱਤਰਨਾ  | ਕੋਠਾ   | ਕੋਠਾ   |

|         |         |          |          |
|---------|---------|----------|----------|
| कताई    | कडाटी   | कोरा     | केरा     |
| कपड़छान | कपड़छाह | कोल्हू   | केहलू    |
| कपड़े   | कपड़े   | कौड़ी    | केंडी    |
| कबड्डी  | कबड्डी  | खच्चर    | खँचर     |
| कबीलदार | कबीलदार | खजूर     | खजूर     |
| कबूतर   | कबूतर   | खटमिह्वा | खटमिँठा  |
| कमाई    | कमाई    | खटास     | खटाम     |
| कल      | कल      | खट्टा    | खँटा     |
| कसना    | कसना    | खमीर     | खमीर     |
| कसाई    | कसाई    | खर्चना   | खरचला    |
| कसूर    | कसूर    | खरा      | खरा      |
| कसौटी   | कसौटी   | खराब     | खराब     |
| कहानी   | कहानी   | खसम      | खसम      |
| खाकी    | खाकी    | गीत      | गीत      |
| खारा    | खारा    | गुंडा    | गुंडा    |
| खिचड़ी  | खिचड़ी  | गुच्छा   | गुच्छा   |
| खीर     | धीर     | गुजारा   | गुजारा   |
| खीरा    | धीरा    | गुड      | गुड      |
| खुर     | धुर     | गुड्डा   | गुड्डा   |
| खुरपा   | धुरपा   | गुफा     | गुहा     |
| खेत     | धेउ     | गुबारा   | गुबारा   |
| खोखला   | धेखला   | गुम      | गुम      |
| खोटा    | धेटा    | गुरगाबी  | गुरगाबी  |
| खोलना   | धेल्ना  | गुलकन्द  | गुलकंद   |
| खौलना   | धेला    | गुलदस्ता | गुलदस्ता |
| गंजा    | गंजा    | गुलाबी   | गुलाबी   |
| गंडासा  | गंडासा  | गुलूबन्द | गुलूबंद  |
| गंदगी   | गंदगी   | गोंद     | गोंद     |
| गंदा    | गंद     | गोट      | गोट      |
| गत्ता   | गत्ता   | गोटा     | गोटा     |
| गदेला   | गदेला   | गोदाम    | गोदाम    |

|        |        |        |              |
|--------|--------|--------|--------------|
| ਗਵੀ    | ਗੱਦੀ   | ਗੋਬੀ   | ਗੋਭੀ         |
| ਗਘ     | ਗਪ     | ਗੋਰਾ   | ਗੋਰਾ         |
| ਗਮਲਾ   | ਗਮਲਾ   | ਗੋਲ    | ਗੋਲ          |
| ਗਰੀਬ   | ਗਰੀਬ   | ਗੋਲਾ   | ਗੋਲਾ         |
| ਗਲਤ    | ਗਲਤ    | ਗੋਲੀ   | ਗੋਲੀ         |
| ਗਲਾ    | ਗਲਾ    | ਘਟਾ    | ਘਟਾ          |
| ਗਲੀ    | ਗਲੀ    | ਘੜਾ    | ਘੜਾ          |
| ਗਵਾਹ   | ਗਵਾਹ   | ਘੜੀ    | ਘੜੀ          |
| ਗਾਜਨਾ  | ਗੱਜਣਾ  | ਘਰ     | ਘਰ           |
| ਗਾਜਰ   | ਗਾਜਰ   | ਘਰ-ਘਾਟ | ਘਰ-ਘਾਟ       |
| ਗਾਰਾ   | ਗਾਰਾ   | ਘਸੀਟਨਾ | ਘਸੀਟਣਾ       |
| ਗਾਹਕ   | ਗਾਹਕ   | ਘਾਟ    | ਘਾਟ          |
| ਗਿਨਤੀ  | ਗਿਣਤੀ  | ਘੁਈ    | ਘੁੱਟੀ        |
| ਗਿਨਾ   | ਗਿਣਨਾ  | ਘੂਰਨਾ  | ਘੂਰਨਾ        |
| ਗਿਲਾਸ  | ਗਿਲਾਸ  | ਘੁਧਾ   | ਘਿਊਣਾ        |
| ਘੇਰਨਾ  | ਘੇਰਨਾ  | ਘੁਮਨਾ  | ਚੁਭਣਾ        |
| ਘੋੜਾ   | ਘੋੜਾ   | ਘੁੜੀ   | ਚੁੜੀ         |
| ਚੰਗਾ   | ਚੰਗਾ   | ਘੂਰਨ   | ਚੁਰਨ         |
| ਚੰਗੇਰ  | ਚੰਗੇਰ  | ਘੂਸਨਾ  | ਚੁਪਣਾ        |
| ਚਟ     | ਚੰਟ    | ਘੂਹੜਾ  | ਚੁਹੜਾ        |
| ਚਕਮਕ   | ਚਕਮਕ   | ਘੂਹਾ   | ਚੁਹਾ         |
| ਚਕਰ    | ਚੱਕਰ   | ਘੇਲਾ   | ਚੇਲਾ         |
| ਚਕਕੀ   | ਚੱਕੀ   | ਚੋਟੀ   | ਚੋਟਹੀ        |
| ਚਢਾਈ   | ਚੜਾਈ   | ਚੋਰ    | ਚੋਰ          |
| ਚਢਾਵਾ  | ਚੜਾਵਾ  | ਚੋਰੀ   | ਚੋਰੀ         |
| ਚਤੁਰ   | ਚਤੁਰ   | ਚੋਲਾ   | ਚੋਲਾ         |
| ਚਤੁਰਾਈ | ਚਤੁਰਾਈ | ਚੌਕੜੀ  | ਚੋਕੜੀ        |
| ਚਘਾ    | ਚੱਘਾ   | ਚੌਕਨਾ  | ਚੋਕਨਾ        |
| ਚਘੂ    | ਚੱਘੂ   | ਚੌਕਾ   | ਚੋਕਾ         |
| ਚਮੜਾ   | ਚੱਮੜਾ  | ਚੌਕੀ   | ਚੋਕੀ         |
| ਚਮਾਰ   | ਚਮਿਆਰ  | ਚੌਗੁਨਾ | ਚੋਗਣਾ, ਚਹੁਰਾ |

|        |          |        |          |
|--------|----------|--------|----------|
| चमच    | चमच      | चौड़ा  | चेड़ा    |
| चरखा   | चरखा     | चौथा   | चेघा     |
| चरना   | चरना     | छकड़ा  | हँकड़ा   |
| चसका   | चमका     | छज्जा  | हँसा     |
| चाकर   | चाकर     | छटाक   | हटाक     |
| चाचा   | चाचा     | छत     | हँउ      |
| चादर   | चादर     | छतरी   | हँउरी    |
| चाबुक  | चाबक     | छपाई   | हपष्टी   |
| चारा   | चारा     | छप्पर  | हँपर     |
| चाल    | चाल      | छल     | हल       |
| चासनी  | चासनी    | छलकना  | हलकटा    |
| चिट्ठी | चिंठी    | छल्ला  | हँला     |
| चिमटा  | चिमटा    | छांटना | हँटना    |
| चीरना  | चीरना    | छाछ    | ह्राह    |
| चुगना  | चुंगना   | छाती   | ह्राडी   |
| चुगली  | चुगली    | छाबड़ा | ह्राधड़ा |
| चुटकी  | चुटकी    | छापना  | ह्रापना  |
| चुप    | चुप      | छाला   | ह्राला   |
| छोट    | ह्रीट    | टट्टी  | टँटी     |
| छेड़ना | ह्रेड़ना | टलना   | टलना     |
| छैला   | ह्रैला   | टहलना  | टहलना    |
| छोड़ना | ह्रेड़ना | टांका  | टांका    |
| जंजाल  | जंजाल    | टाट    | टाट      |
| जंजीर  | जंजीरी   | टालना  | टालना    |
| जड़    | जड़      | टिड्डी | टिंडी    |
| जनानी  | जनानी    | टीका   | टीका     |
| जपना   | जपना     | टोकना  | टोकना    |
| ज़हर   | जहर      | टोकरा  | टोकरा    |
| जादू   | जादू     | टोली   | टोली     |
| जान    | जान      | ठंडा   | ठंडा     |
| जानना  | जाटना    | ठग     | ठंग      |

|          |          |         |
|----------|----------|---------|
| ਜਾਨਾ     | ਜਾਣਾ     | ਠਗਣਾ    |
| ਜਾਮਾ     | ਜਾਮਾ     | ਠੀਕ     |
| ਜਾਲ      | ਜਾਲ      | ਠੀਕਰਾ   |
| ਜੀਮ      | ਜੀਤ      | ਠੋਕਰ    |
| ਜੁਲਾਬ    | ਜੁਲਾਬ    | ਝੰਡਾ    |
| ਜੂੜਾ     | ਜੂੜਾ     | ਝੱਬਾ    |
| ਜੇਠ      | ਜੇਠ      | ਝਰ      |
| ਜੇਬ      | ਜੇਬ      | ਝਰਾਕਲ   |
| ਜੋਗੀ     | ਜੋਗੀ     | ਝੈਣ     |
| ਜੋੜ      | ਜੋੜ      | ਝਾਕਾ    |
| ਜੋਸ਼ਾਂਦਾ | ਜੁਸ਼ਾਂਦਾ | ਝਾਕੀਆ   |
| ਝਜ਼ਝਰ    | ਝੱਜਰ     | ਝਾਕੂ    |
| ਝਮੇਲਾ    | ਝਮੇਲਾ    | ਝਾਰ     |
| ਝਾਡਨਾ    | ਝਾਡਨਾ    | ਝਿਗਣਾ   |
| ਝਾਡੂ     | ਝਾਡੂ     | ਝੁਗਡੁਗੀ |
| ਝਾਲਰ     | ਝਾਲਰ     | ਝੇਰਾ    |
| ਝਿਝਕਨਾ   | ਝਿਜਕਣਾ   | ਝੋਰ     |
| ਝੂਠ      | ਝੂਠ      | ਝੋਰਾ    |
| ਝੋਲਾ     | ਝੋਲਾ     | ਝੋਰੀ    |
| ਟੰਟਾ     | ਟੰਟਾ     | ਝੋਲ     |
| ਟਕਸਾਲ    | ਟਕਸਾਲ    | ਝੰਝੋਰਾ  |
| ਫਲਾਝ     | ਫਲਾਈ     | ਝੀਰ     |
| ਫਾਝ      | ਫਾਈ      | ਝੂਤ     |
| ਫਾਲ      | ਫਾਲ      | ਝੈਰਨਾ   |
| ਫਲਘਾਂ    | ਫਾਲਘਾਂ   | ਝੋੜਨਾ   |
| ਫੀਠ      | ਫੀਠ      | ਝੋਤਲਾ   |
| ਫੁੰਫਨਾ   | ਫੁੰਫਣਾ   | ਝੋਤਾ    |
| ਫੇਰ      | ਫੇਰ      | ਝੋਲ     |
| ਫੋਨਾ     | ਫੋਣਾ     | ਝੋਲੀਆ   |
| ਤੰਗੀ     | ਤੰਗੀ     | ਝੱਕਣਾ   |
| ਤਸ਼ਬੂ    | ਤੰਬੂ     | ਝਾਪ     |



|         |        |         |         |
|---------|--------|---------|---------|
| तम्बूरा | ਤੰਬੂਰਾ | थाल     | घाल     |
| तकना    | ਤੱਕਣਾ  | थैला    | बैला    |
| तकलीफ़  | ਤਕਲੀਫ਼ | थोड़ा   | बोझा    |
| तखती    | ਤਖ਼ਤੀ  | दंगा    | दंगा    |
| तजना    | ਤਜਣਾ   | दंड     | दंड     |
| तड़का   | ਤੜਕਾ   | दगा     | दगा     |
| तप      | ਤਪ     | दाबना   | दँबना   |
| तबेला   | ਤਬੇਲਾ  | दबाना   | दबाणा   |
| तमाशा   | ਤਮਾਸ਼ਾ | दम      | दम      |
| तरस     | ਤਰਸ    | दमड़ी   | दमड़ी   |
| तलवार   | ਤਲਵਾਰ  | दरवाज़ा | दरवाज़ा |
| तलाशी   | ਤਲਾਸ਼ੀ | दरी     | दरी     |
| तसवीर   | ਤਸਵੀਰ  | दरज़ी   | दरज़ी   |
| ताई     | ਤਾਈ    | दलाली   | दलाली   |
| ताकत    | ਤਾਕਤ   | दवाई    | दवाही   |
| ताजा    | ਤਾਜ਼ਾ  | दवात    | दवात    |
| तान     | ਤਾਨ    | दस      | दस      |
| ताया    | ਤਾਇਆ   | दसवां   | दसवां   |
| तार     | ਤਾਰ    | दाई     | दाही    |
| तारा    | ਤਾਰਾ   | दाढ़    | दाहड़ी  |
| तालू    | ਤਾਲੂ   | दादा    | दादा    |
| तिल     | ਤਿਲ    | दादी    | दादी    |
| दान     | ਦਾਨ    | धमक     | धमक     |
| दाना    | ਦਾਣਾ   | धाक     | धाक     |
| दानी    | ਦਾਨੀ   | धागा    | धागा    |
| दाल     | ਦਾਲ    | धान     | धान     |
| दावा    | ਦਾਵਾ   | धार     | धार     |
| दिन     | ਦਿਨ    | धावा    | धावा    |
| दिमाग़  | ਦਿਮਾਗ਼ | धुंधला  | धुंधला  |
| दिल     | ਦਿਲ    | धुन     | धुन     |
| दिलासा  | ਦਿਲਾसा | धोखा    | धोखा    |

|         |             |         |         |
|---------|-------------|---------|---------|
| ਦਿਵਾਲਾ  | ਦਿਵਾਲਾ      | ਧੋਤੀ    | ਧੋਤੀ    |
| ਦੀਧਾ    | ਦੀਵਾ        | ਧੋਬੀ    | ਧੋਬੀ    |
| ਦੁਕਾਨ   | ਦੁਕਾਨ       | ਧੌਂਸ    | ਧੌਂਸ    |
| ਦੁਗਨਾ   | ਦੇਗੁਣਾ/ਦੁਣਾ | ਨੰਗਾ    | ਨੰਗਾ    |
| ਦੁਤਹੀ   | ਦੁਤਹੀ       | ਨਕਦ     | ਨਕਦ     |
| ਦੁਲੱਤੀ  | ਦੁਲੱਤੀ      | ਨਖਰਾ    | ਨਖਰਾ    |
| ਦੁਸ਼ਾਲਾ | ਦੁਸ਼ਾਲਾ     | ਨਟ      | ਨਟ      |
| ਦੁਹਾਈ   | ਦੁਹਾਈ       | ਨਥਨਾ    | ਨਥਨਾ    |
| ਦੂਸਰਾ   | ਦੂਸਰਾ       | ਨਿਬੇੜਨਾ | ਨਿਬੇੜਨਾ |
| ਦੂਰ     | ਦੂਰ         | ਨਮੂਨਾ   | ਨਮੂਨਾ   |
| ਦੇਨਾ    | ਦੇਨਾ        | ਨਰਮ     | ਨਰਮ     |
| ਦੇਰ     | ਦੇਰ         | ਨਲ      | ਨਲ      |
| ਦੇਵਰ    | ਦੇਵਰ        | ਨਸ਼ੀਲਾ  | ਨਸ਼ੀਲਾ  |
| ਦੇਸ਼    | ਦੇਸ਼        | ਨਸ      | ਨਸ      |
| ਦੋ      | ਦੋ          | ਨਸੀਬ    | ਨਸੀਬ    |
| ਦੋਗਲਾ   | ਦੋਗਲਾ       | ਨਹਰ     | ਨਹਰ     |
| ਦੋਹਰਾ   | ਦੋਹਰਾ       | ਨਾਇ     | ਨਾਇ     |
| ਦੌਡ     | ਦੌਡ         | ਨਾਥ     | ਨਾਥ     |
| ਦੌੜਨਾ   | ਦੌੜਨਾ       | ਨਾਡੀ    | ਨਾਡੀ    |
| ਦੌਲਤ    | ਦੌਲਤ        | ਨਾਤਾ    | ਨਾਤਾ    |
| ਧੰਧਾ    | ਧੰਧਾ        | ਨਾਨਾ    | ਨਾਨਾ    |
| ਧਕਕਾ    | ਧਕਕਾ        | ਨਾਲੀ    | ਨਾਲੀ    |
| ਧਯਾ     | ਧਯਾ         | ਨਿੰਬੂ   | ਨਿੰਬੂ   |
| ਧੜਕ     | ਧੜਕ         | ਨਿਕਮਾ   | ਨਿਕਮਾ   |
| ਧੜਕਾ    | ਧੜਕਾ        | ਨਿਖਟੂ   | ਨਿਖਟੂ   |
| ਨਿਚੋੜਨਾ | ਨਿਚੋੜਨਾ     | ਪਹਰਾ    | ਪਹਰਾ    |
| ਨਿਭਾਨਾ  | ਨਿਭਾਨਾ      | ਪਹਲਾ    | ਪਹਲਾ    |
| ਨਿਯਮ    | ਨਿਯਮ        | ਪਹਾੜ    | ਪਹਾੜ    |
| ਨਿਰਾ    | ਨਿਰਾ        | ਪਾਨ     | ਪਾਨ     |
| ਨਿਸ਼ਾਨ  | ਨਿਸ਼ਾਨ      | ਪਾਲਕ    | ਪਾਲਕ    |
| ਨੀਂਦ    | ਨੀਂਦ        | ਪਾਲਕੀ   | ਪਾਲਕੀ   |

|        |        |          |             |
|--------|--------|----------|-------------|
| नील    | नील    | पाला     | पाला        |
| नीलाम  | नीलाम  | पावा     | पावा        |
| नेक    | नेक    | पिंजरा   | पिंजरा      |
| नेड़े  | नेड़े  | पिंडा    | पिंडा       |
| नैन    | नैन    | पिछला    | पिछला       |
| नोक    | नेक    | पीपा     | पीपा        |
| नौकर   | नैकर   | पीला     | पीला        |
| पंगत   | पंगत   | पुरजा    | पुरजा       |
| पंच    | पंच    | पूजना    | पूजना       |
| पंजा   | पंजा   | पूरब     | पूरब        |
| पंथ    | पंथ    | पूरा     | पूरा        |
| पकड़ना | पकड़ना | पेटी     | पेटी        |
| पकौड़ा | पकौड़ा | पेटू     | पेटू        |
| पक्का  | पक्का  | पेशा     | पेशा        |
| पगड़ी  | पगड़ी  | पैदल     | पैदल        |
| पटका   | पटका   | पैर      | पैर         |
| पट्टी  | पट्टी  | पैसा     | पैसा        |
| पडताल  | पडताल  | पोथी     | पोथी        |
| पढ़ना  | पढ़ना  | प्यार    | पिआर        |
| पतंग   | पतंग   | प्रसाद   | पूसाद/परसाद |
| पतला   | पतला   | फक्कड़   | ढक्कड़      |
| पता    | पता    | फिटकारना | ढिटकारना    |
| पत्ती  | पत्ती  | फतह      | ढातिह       |
| परदा   | परदा   | फुहारा   | ढुहारा      |
| परनाला | परनाला | फांसी    | ढांसी       |
| परसों  | परसों  | फाटक     | ढाटक        |
| परे    | परे    | फाड़ना   | ढाड़ना      |
| पसीना  | पसीना  | फिर      | ढिर         |
| फिरना  | ढिरना  | बरफी     | घरढी        |
| फुरती  | ढुरती  | बल       | बल          |
| फुटा   | ढुटा   | बला      | बला         |

|         |         |         |         |
|---------|---------|---------|---------|
| ਫੇਰ     | ਫੇਰ     | ਬਸਤਾ    | ਬਸਤਾ    |
| ਫੇਰਨਾ   | ਫੇਰਨਾ   | ਬਾਜ਼ੀ   | ਬਾਜ਼ੀ   |
| ਫੋੜਾ    | ਫੋੜਾ    | ਬਾਪੂ    | ਬਾਪੂ    |
| ਬੰਜਰ    | ਬੰਜਰ    | ਬਾਬਤ    | ਬਾਬਤ    |
| ਬੰਦ     | ਬੰਦ     | ਬਾਬਾ    | ਬਾਬਾ    |
| ਬੰਦਰ    | ਬੰਦਰ    | ਬਾਬਲ    | ਬਾਬਲ    |
| ਬੰਦਾ    | ਬੰਦਾ    | ਬਾਰੂਦ   | ਬਾਰੂਦ   |
| ਬੰਦੂਕ   | ਬੰਦੂਕ   | ਬਾਲਟੀ   | ਬਾਲਟੀ   |
| ਬਕਰਾ    | ਬਕਰਾ    | ਬਾਹਰ    | ਬਾਹਰ    |
| ਬਗਲ     | ਬਗਲ     | ਬਿਚਾਰਾ  | ਬਿਚਾਰਾ  |
| ਬਗਲਾ    | ਬਗਲਾ    | ਬਿੱਛੂ   | ਬਿੱਛੂ   |
| ਬਾਗੀਚਾ  | ਬਾਗੀਚਾ  | ਬਿਜਲੀ   | ਬਿਜਲੀ   |
| ਬਾਘਨਾ   | ਬਾਘਨਾ   | ਬਿਲੀ    | ਬਿਲੀ    |
| ਬਾਜਰੀ   | ਬਾਜਰੀ   | ਬੀਜ     | ਬੀਜ     |
| ਬਾਜਾਜ   | ਬਾਜਾਜ   | ਬੋਰੀ    | ਬੋਰੀ    |
| ਬਲਟੋਹੀ  | ਬਲਟੋਹੀ  | ਬੋਲਨਾ   | ਬੋਲਨਾ   |
| ਬਡਬੋਲਾ  | ਬਡਬੋਲਾ  | ਬੋਲੀ    | ਬੋਲੀ    |
| ਬੱਤੀ    | ਬੱਤੀ    | ਭੰਡ     | ਭੰਡ     |
| ਬਦਨਾਮੀ  | ਬਦਨਾਮੀ  | ਭੰਡਾਰ   | ਭੰਡਾਰ   |
| ਬਦਮਾਸ਼ੀ | ਬਦਮਾਸ਼ੀ | ਭਟਾ     | ਭਟਾ     |
| ਬਦਲਾ    | ਬਦਲਾ    | ਭਟੀ     | ਭਟੀ     |
| ਬਦਲੀ    | ਬਦਲੀ    | ਭਡਮੂੰਜਾ | ਭਡਮੂੰਜਾ |
| ਬਦੀ     | ਬਦੀ     | ਭਟੀਜਾ   | ਭਟੀਜਾ   |
| ਬਧਾਇ    | ਬਧਾਇ    | ਭਦਾ     | ਭਦਾ     |
| ਬਭੂਤ    | ਬਭੂਤ    | ਭਿਨਕ    | ਭਿਨਕ    |
| ਬਰਕਤ    | ਬਰਕਤ    | ਭਰਮਾਰ   | ਭਰਮਾਰ   |
| ਬਰਧਾ    | ਬਰਧਾ    | ਭਰੋਸਾ   | ਭਰੋਸਾ   |
| ਬਰਛਾ    | ਬਰਛਾ    | ਭਸਮ     | ਭਸਮ     |
| ਬਰਸਾਤ   | ਬਰਸਾਤ   | ਭਾਡਾ    | ਭਾਡਾ    |
| ਬਰਸਾਤੀ  | ਬਰਸਾਤੀ  | ਭਾਪ     | ਭਾਪ     |
| ਬਰਾਬਰ   | ਬਰਾਬਰ   | ਭਾਰ     | ਭਾਰ     |

|         |         |        |        |
|---------|---------|--------|--------|
| भिड़ना  | भिड़ना  | मुरदा  | मुरदा  |
| भीड़    | भीड़    | मूंग   | मूंग   |
| भूलावा  | भूलावा  | मूरत   | मूरत   |
| भूखा    | भूखा    | मूली   | मूली   |
| भेड़    | भेड़    | मेख    | मेख    |
| भेली    | भेली    | मेटना  | मेटना  |
| भैंस    | भैंस    | मेला   | मेला   |
| भोग     | भोग     | मैदान  | मैदान  |
| भोला    | भोला    | मैला   | मैला   |
| मंडी    | मंडी    | मोची   | मोची   |
| मक्की   | मक्की   | मोटा   | मोटा   |
| मकड़ी   | मकड़ी   | मोड़   | मोड़   |
| मकौड़ा  | मकौड़ा  | मोती   | मोती   |
| मक्खन   | मक्खन   | मोम    | मोम    |
| मक्खी   | मक्खी   | मोर    | मोर    |
| मरजी    | मरजी    | मौजी   | मौजी   |
| मच्छर   | मच्छर   | मौत    | मौत    |
| मजदूर   | मजदूर   | मौसम   | मौसम   |
| मतलब    | मतलब    | यकीन   | यकीन   |
| मदारी   | मदारी   | यतीम   | यतीम   |
| मन      | मन      | यमदूत  | यमदूत  |
| मनका    | मनका    | याद    | याद    |
| मलना    | मलना    | रंग    | रंग    |
| मलाई    | मलाई    | रंगाई  | रंगाई  |
| महीन    | महीन    | रंदना  | रंदना  |
| मासी    | मासी    | रंदा   | रंदा   |
| मिट्टी  | मिट्टी  | रई     | रई     |
| मिठास   | मिठास   | रकम    | रकम    |
| मुंडासा | मुंडासा | रखवाला | रखवाला |
| मुक्का  | मुक्का  | रग     | रग     |
| मुछी    | मुछी    | रगड़   | रगड़   |

|        |        |         |         |
|--------|--------|---------|---------|
| ਮੁੜਨਾ  | ਮੁੜਨਾ  | ਰਗੜਨਾ   | ਰਗੜਨਾ   |
| ਮੁਨਾਰਾ | ਮੁਨਾਰਾ | ਰਦਦੀ    | ਰੱਦੀ    |
| ਮੁਰਬਾ  | ਮੁਰੱਬਾ | ਰਫੂ     | ਰਫੂ     |
| ਰਬਾਬ   | ਰਬਾਬ   | ਲੇਖਾ    | ਲੇਖਾ    |
| ਰਸੋਈ   | ਰਸੋਈ   | ਲੇਨਾ    | ਲੈਣਾ    |
| ਰਸਸਾ   | ਰੱਸਾ   | ਲੋਭੀ    | ਲੋਭੀ    |
| ਰਾਜ    | ਰਾਜ    | ਲੋਹਾ    | ਲੋਹਾ    |
| ਰਾਜਾ   | ਰਾਜਾ   | ਧਰਦੀ    | ਧਰਦੀ    |
| ਰਾਤ    | ਰਾਤ    | ਧਸੀਲਾ   | ਧਸੀਲਾ   |
| ਰਾਨੀ   | ਰਾਣੀ   | ਧਾਰਦਾਤ  | ਧਾਰਦਾਤ  |
| ਰਾਹ    | ਰਾਹ    | ਧਾਰਨਾ   | ਧਾਰਨਾ   |
| ਰੀਤ    | ਰੀਤ    | ਵੈਦ     | ਵੈਦ     |
| ਰੀਸ    | ਰੀਸ    | ਬੈਰੀ    | ਬੈਰੀ    |
| ਰੇਤ    | ਰੇਤ    | ਸ਼ਕ     | ਸ਼ੱਕ    |
| ਰੇਸ਼ਮੀ | ਰੇਸ਼ਮੀ | ਸ਼ਕਕਰ   | ਸ਼ੱਕਰ   |
| ਰੋਟੀ   | ਰੋਟੀ   | ਸ਼ਰਬਤ   | ਸ਼ਰਬਤ   |
| ਰੋੜਾ   | ਰੋੜਾ   | ਸ਼ਰਮ    | ਸ਼ਰਮ    |
| ਰੌਨਕ   | ਰੋਨਕ   | ਸ਼ਰਮੀਲਾ | ਸ਼ਰਮੀਲਾ |
| ਲੰਗੜਾ  | ਲੰਗੜਾ  | ਸ਼ਰੀਕ   | ਸ਼ਰੀਕ   |
| ਲੰਗਰ   | ਲੰਗਰ   | ਸ਼ਰਤ    | ਸ਼ਰਤ    |
| ਲੰਘਨਾ  | ਲੰਘਣਾ  | ਸ਼ਾਦੀ   | ਸ਼ਾਦੀ   |
| ਲਕੜੀ   | ਲਕੜੀ   | ਸ਼ਾਮ    | ਸ਼ਾਮ    |
| ਲਕੀਰ   | ਲਕੀਰ   | ਸ਼ਾਮਤ   | ਸ਼ਾਮਤ   |
| ਲਗਾਮ   | ਲਗਾਮ   | ਸ਼ਿਕਾਰ  | ਸ਼ਿਕਾਰ  |
| ਲੜਨਾ   | ਲੜਨਾ   | ਸ਼ੀਸ਼ਾ  | ਸ਼ੀਸ਼ਾ  |
| ਲੜਾਈ   | ਲੜਾਈ   | ਸ਼ੀਸ਼ੀ  | ਸ਼ੀਸ਼ੀ  |
| ਲਸਸੀ   | ਲੱਸੀ   | ਸ਼ੇਰ    | ਸ਼ੇਰ    |
| ਲਹੂ    | ਲਹੂ    | ਸ਼ੇਰਨੀ  | ਸ਼ੇਰਨੀ  |
| ਲਾਗਤ   | ਲਾਗਤ   | ਸ਼ੈਤਾਨ  | ਸ਼ੈਤਾਨ  |
| ਲਾਮ    | ਲਾਭ    | ਸੰਗੀ    | ਸੰਗੀ    |
| ਲਾਲਚ   | ਲਾਲਚ   | ਸੰਤਰਾ   | ਸੰਤਰਾ   |

|         |        |             |           |
|---------|--------|-------------|-----------|
| लिखना   | लिखਣਾ  | संदूक       | संदूक     |
| लीक     | लीक    | सच          | सँच       |
| लुच्चा  | लुँचा  | सजना        | सजना      |
| लुटेरा  | लुटेरा | सजनी        | सजनी      |
| लेंहड़ी | लेड़ी  | सजा         | सजा       |
| लेई     | लेही   | सड़क        | सड़क      |
| सदा     | सदा    | सूद         | सूद       |
| सदी     | सदी    | सूली        | सूली      |
| सफ़र    | सहर    | सेब         | सेब       |
| सफ़ाई   | सहाई   | सेर         | सेर       |
| सबूत    | सबूत   | सेवा        | सेवा      |
| समझना   | समझना  | सैकड़ा      | सैकड़ा    |
| समुन्दर | समुंदर | सोग         | सोग       |
| समेत    | समेत   | सोचना       | सोचना     |
| सराप    | सराप   | सोना        | सेना      |
| सराफ़   | सराफ़  | सौना        | सेना      |
| सलाह    | सलाह   | सौ          | से        |
| सवेरा   | सवेरा  | हक          | हक        |
| सांझ    | साँझ   | हकीम        | हकीम      |
| साई     | सांटी  | हक्का-बक्का | हँका-बँका |
| साग     | साग    | हजामत       | हजामत     |
| साधु    | साधू   | हटना        | हटना      |
| सारंगी  | सारंगी | हट्टी       | हँटी      |
| सारा    | सारा   | हथियार      | हथियार    |
| सालन    | सालन   | हरा         | हरा       |
| सहूकार  | सहूकार | हल          | हल        |
| सिक्का  | सिँका  | हलवाई       | हलवाई     |
| सितार   | सितार  | हवाले       | हावले     |
| सिपाही  | सिपाही | हवेली       | हवेली     |
| सिर     | सिर    | हांडी       | हांडी     |
| सिरका   | सिरका  | हाथी        | हाथी      |

|       |       |          |          |
|-------|-------|----------|----------|
| ਸਿਰਾ  | ਸਿਰਾ  | ਹਾਰ      | ਹਾਰ      |
| ਸੀਟੀ  | ਸੀਟੀ  | ਹਿੰਮਤ    | ਹਿੰਮਤ    |
| ਸੀਧਾ  | ਸਿੱਧਾ | ਹਿਰਨ     | ਹਿਰਨ     |
| ਸੁਝ   | ਸੂਈ   | ਹਿੰਸਾ    | ਹਿੰਸਾ    |
| ਸੁਖ   | ਸੁਖ   | ਹੀਰਾ     | ਹੀਰਾ     |
| ਸੁਰ   | ਸੁਰ   | ਹੇਰਾਫੇਰੀ | ਹੇਰਾਫੇਰੀ |
| ਸੁਰਖੀ | ਸੁਰਖੀ | ਹੋਸ਼     | ਹੋਸ਼     |
| ਸੁਸਤ  | ਸੁਸਤ  | ਹੈਸਲਾ    | ਹੈਸਲਾ    |

## (ਖ) ਪੰਜਾਬੀ ਮੇਂ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਅੰਗ੍ਰੇਜੀ ਸ਼ਬਦ

|                |             |          |                |
|----------------|-------------|----------|----------------|
| agent          | ਏਜੰਟ        | cuff     | ਕਫ਼            |
| almirah        | ਅਲਮਾਰੀ      | cup      | ਕਪ             |
| appeal         | ਅਪੀਲ        | dam      | ਡੈਮ            |
| arrowroot      | ਅਰਾਰੂਟ      | decree   | ਡਿਗਰੀ          |
| ball           | ਬਾਲ         | degree   | ਡਿਗਰੀ          |
| band           | ਬੈਂਡ        | deputy   | ਡਿਪਟੀ          |
| bank           | ਬੈਂਕ        | design   | ਡਿਜ਼ਾਈਨ/ਡਿਜ਼ੈਨ |
| bench          | ਬੈਂਚ        | director | ਡਾਇਰੈਕਟਰ       |
| bicycle        | ਬਾਈਸਾਈਕਲ    | doctor   | ਡਾਕਟਰ          |
| bill           | ਬਿਲ         | dolly    | ਡਾਲੀ           |
| biscuit        | ਬਿਸਕੁਟ      | drawing  | ਡ੍ਰਾਈਂਗ, ਡ੍ਰੋਗ |
| blade          | ਬਲੇਡ        | driver   | ਡਰਾਈਵਰ, ਡ੍ਰੈਵਰ |
| blood pressure | ਬਲਡ ਪ੍ਰੈਸ਼ਰ | duty     | ਡੀਊਟੀ          |
| boot           | ਬੂਟ         | engine   | ਇੰਜਨ           |
| box            | ਬਕਸ         | engineer | ਇੰਜਨੀਅਰ        |
| bundle         | ਬੰਡਲ        | fail     | ਫੇਲ            |
| bus            | ਬਸ          | fees     | ਫੀਸ            |
| button         | ਬਟਨ         | football | ਫੁਟਬਾਲ         |
| cake           | ਕੇਕ         | form     | ਫਾਰਮ           |
| camera         | ਕੈਮਰਾ       | gass     | ਗੈਸ            |
| certificate    | ਸਰਟੀਫੀਕੇਟ   | gate     | ਗੇਟ            |



|              |              |            |            |
|--------------|--------------|------------|------------|
| chemise      | ਸ਼ਮੀਜ਼       | governor   | ਗਵਰਨਰ      |
| cheque       | ਚੈਕ          | headmaster | ਹੈਡਮਾਸਟਰ   |
| chimney      | ਚਿਮਨੀ        | high court | ਹਾਈ ਕੋਰਟ   |
| clerk        | ਕਲਰਕ         | hockey     | ਹਾਕੀ       |
| clip         | ਕਲਿਪ         | horn       | ਹਾਰਨ       |
| coat         | ਕੋਟ          | hospital   | ਹਸਪਤਾਲ     |
| collar       | ਕਾਲਰ         | hostel     | ਹੋਸਟਲ      |
| college      | ਕਾਲਜ         | hotel      | ਹੋਟਲ       |
| committee    | ਕਮੇਟੀ        | ice cream  | ਆਈਸ ਕਰੀਮ   |
| compounder   | ਕੰਪੋਡਰ       | inspector  | ਇੰਸਪੈਕਟਰ   |
| cricket      | ਕ੍ਰਿਕਟ       | interview  | ਇੰਟਰਵਿਊ    |
| jail         | ਜੇਲ          | photo      | ਫੋਟੋ       |
| jersy        | ਜਰਸੀ         | pin        | ਪਿਨ        |
| judge        | ਜੱਜ          | plate      | ਪਲੇਟ       |
| leader       | ਲੀਡਰ         | platform   | ਪਲੇਟਫਾਰਮ   |
| library      | ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀ    | police     | ਪੁਲਸ       |
| list         | ਲਿਸਟ         | polish     | ਪਾਲਿਸ਼     |
| lorry        | ਲਾਰੀ         | post-card  | ਪੋਸਟ-ਕਾਰਡ  |
| machine      | ਮਸ਼ੀਨ        | president  | ਪ੍ਰੈਜੀਡੈਂਟ |
| magistrate   | ਮਜਿਸਟ੍ਰੇਟ    | principal  | ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ  |
| major        | ਮੇਜਰ         | project    | ਪ੍ਰੋਜੈਕਟ   |
| manager      | ਮਨੇਜਰ        | professor  | ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ   |
| master       | ਮਾਸਟਰ        | pump       | ਪੰਪ        |
| match        | ਮੈਚ          | pus        | ਪਸ         |
| money order  | ਮਨੀ-ਆਰਡਰ     | radio      | ਰੇਡੀਓ      |
| motor car    | ਮੋਟਰ-ਕਾਰ     | rail       | ਰੇਲ        |
| motor cycle  | ਮੋਟਰ ਸਾਇਕਲ   | ration     | ਰਾਸ਼ਨ      |
| municipality | ਮਿਊਨਿਸਿਪੈਲਟੀ | record     | ਰਿਕਾਰਡ     |
| necklace     | ਨੈਕਲਸ        | referee    | ਰੈਫਰੀ      |
| note         | ਨੋਟ          | register   | ਰਜਿਸਟਰ     |
| notice       | ਨੋਟਿਸ        | registrar  | ਰਜਿਸਟਰਾਰ   |

|                   |          |             |               |
|-------------------|----------|-------------|---------------|
| nurse             | ਨਰਸ      | rest house  | ਰੈਸਟ ਹਾਊਸ     |
| officer           | ਅਫ਼ਸਰ    | rifle       | ਰਾਇਫ਼ਲ        |
| over-coat         | ਓਵਰ-ਕੋਟ  | salad       | ਸਲਾਦ          |
| pantaloon         | ਪਤਲੂਣ    | school      | ਸਕੂਲ          |
| parade            | ਪਰੇਡ     | science     | ਸਾਇੰਸ         |
| parcel            | ਪਾਰਸਲ    | seat        | ਸੀਟ           |
| pass              | ਪਾਸ      | school      | ਸਕੂਲ          |
| passport          | ਪਾਸਪੋਰਟ  | service     | ਸਰਵਿਸ         |
| pastery           | ਪੇਸਟਰੀ   | signal      | ਸਿਗਨਲ         |
| pen               | ਪੈਨ      | slate       | ਸਲੇਟ          |
| pencil            | ਪਿਨਸਲ    | soda        | ਸੋਡਾ          |
| petrol            | ਪਟ੍ਰੋਲ   | spring      | ਸਪ੍ਰਿੰਗ       |
| petticoat         | ਪੇਟੀਕੋਟ  | stage       | ਸਟੇਜ          |
| station           | ਸਟੇਸ਼ਨ   | town-hall   | ਟਾਊਨ-ਹਾਲ      |
| store             | ਸਟੋਰ     | tray        | ਟ੍ਰੇ          |
| suit              | ਸੂਟ      | truck       | ਟ੍ਰਕ          |
| summons           | ਸਮਨ      | trunk       | ਟ੍ਰੰਕ         |
| sweater           | ਸ਼੍ਵੈਟਰ  | tubewell    | ਟੂਬਵੈਲ (ਬਾਬੀ) |
| tax               | ਟੈਕਸ     | type        | ਟਾਈਪ          |
| tea party         | ਟੀ ਪਾਰਟੀ | tyre        | ਟਾਇਰ          |
| telephone         | ਟੈਲੀਫੋਨ  | vote        | ਵੋਟ           |
| theatre           | ਥੇਟਰ     | warrant     | ਵਰੰਟ          |
| thermometer       | ਥਰਮਾਮੀਟਰ | workshop    | ਵਰਕਸ਼ਾਪ       |
| ticket            | ਟਿਕਟ     | university  | ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ    |
| tie               | ਟਾਈ      | volley ball | ਵਾਲੀਬਾਲ       |
| tincture (iodine) | ਟਿੰਚਰ    |             |               |

ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਪੰਜਾਬੀ ਰੂਪ ਵਧੇਰੇ ਧਿਆਨ-ਯੋਗ ਹਨ

|       |         |        |         |
|-------|---------|--------|---------|
| ਅਰਦਲੀ | orderly | ਪਿਨਸ਼ਨ | pension |
| ਇਸਟਾਮ | stamp   | ਬਟਣ    | button  |
| ਕਪਤਾਨ | captain | ਬੰਬ    | bomb    |

|         |           |         |                  |
|---------|-----------|---------|------------------|
| कारतूस  | cartridge | बाਈसिकल | bicycle          |
| क्वैन   | quinine   | बिलटी   | bill for loading |
| गार्डर  | girder    | ब्रश    | brush            |
| गार्ड   | guard     | मरीकन   | American         |
| जनरैल   | genreral  | मेम     | madam            |
| टिचन    | attention | रंगरूट  | recruit          |
| डिग्ररी | decree    | रपट     | report           |
| डीप     | depot     | लाट     | lord             |
| दुमाररा | demarage  | लाम     | alarm            |

### (ग) पंजाबी की विशेष शब्दावली

|        |                |         |                 |
|--------|----------------|---------|-----------------|
| उसातू  | विकासशील       | अकटा    | ऊबना            |
| उह     | वह             | अकडेवां | अकड़            |
| उकटा   | चूकना          | अकाउटा  | उबाना, तंग करना |
| उकरना  | कुरेद कर लिखना | अंधर    | अक्षर           |
| उगाली  | जुगाली         | अधीरला  | अंतिस           |
| उयचना  | निखरना         | असेज    | अखरोट           |
| उया    | प्रसिद्ध       | अंगा    | आगा             |
| उचा    | उच्चा, ऊंचा    | अगलेरा  | अधिकतर          |
| उज     | वैसे           | अंग     | आग              |
| उफाउ   | ग़िलाफ         | अरोउरा  | पेशगी           |
| उडटा   | उड़ना          | अचिनचेउ | अचानक           |
| उडीकटा | प्रतीक्षा करना | अढेपला  | ऊपरी, सरसरी     |
| उठालटा | उठाना          | अज      | आज              |
| उउ     | ऊपर            | अजेरा   | ऐसा             |
| उवे    | वहां           | अजेवा   | आजका            |
| उपालटा | अपहरण करना     | अंठा    | आठा             |
| उनुं   | उन्होंने       | अडरा    | विलग            |
| उपठाला | उपाय           | अंडी    | एंडी            |
| उवें   | उसी तरह        | अटख     | मान, गैरत       |
| उरे    | उरे, यहां      | अटजाट   | अनजान           |

|           |                         |         |               |
|-----------|-------------------------|---------|---------------|
| ਉਰਲਾ      | ਤਰੇਕਾ, ਧਰਾਂ ਕਾ          | ਅਣਮੁੱਲਾ | ਅਨਮੋਲ         |
| ਉਲਟਾਉਣਾ   | ਤਲਟਾਨਾ                  | ਅਤੇ     | ਅਤ: ਔਰ        |
| ਉਲੂਆ      | ਤਪਾਲਸ਼                  | ਅਤਿ     | ਅਤਿਅਤ ਅਤਿਆਚਾਰ |
| ਉਠ        | ਭੱਟ                     | ਅਬਰੂ    | ਅਸ਼ੁ          |
| ਉਤ        | ਬੇਕਕੂਫ                  | ਅਧਖੜ    | ਅਧੇੜ ਅਵਸਥਾ    |
| ਉਦਰਨਾ     | ਤਦਾਸ ਹੋਨਾ               | ਅਧ-ਪਚਧ  | ਲਗ ਭਗ ਆਧਾ     |
| ਉਦੈ       | ਤਭ                      | ਅਧਮੋਇਆ  | ਅਧਮਰਾ         |
| ਉਵੈ       | ਤਸ਼ ਤਰਹ, ਵੈਸੇ           | ਅਧੋਅਧ   | ਆਧਾ ਆਧਾ       |
| ਉੜਕ       | ਅੰਤ ਮੈਂ                 | ਅਨਿਆਂ   | ਅਨਿਆਧ         |
| ਅਸ਼ਕੇ     | ਸ਼ਾਬਾਸ਼                 | ਅਨੁਰਾ   | ਅੰਧੇਰਾ        |
| ਅਸਾਡਾ     | ਹਮਾਰਾ                   | ਅਪੜਨਾ   | ਪਹੁੰਚਨਾ       |
| ਅਸੀਂ      | ਹਮ                      | ਅਬੜਵਾਹਾ | ਕਚੀ ਨੀਂਦ ਮੈਂ  |
| ਅਬਾਦ      | ਆਬਾਦ                    | ਅੰਬੜੀ   | ਮਾਤਾ          |
| ਅਮ੍ਹਾਤੜ   | ਹਮ ਜੈਸੇ                 | ਇਉ      | ਇਸ਼ ਪ੍ਰਕਾਰ    |
| ਅਰਕ       | ਕੋਹਨੀ                   | ਇਸਤ੍ਰੀ  | ਸਤ੍ਰੀ, ਔਰਤ    |
| ਅਰਦਾਸ     | ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ                | ਇਸਨਾਨ   | ਸਨਾਨ          |
| ਅਲੂਣਾ     | ਅਲਕਣ, ਬੇਨਮਕ             | ਇਹ      | ਧਹ            |
| ਅਵੱਲਾ     | ਕੁਫ਼ਰ                   | ਇਕ ਅੱਧ  | ਏਕ ਆਧ         |
| ਆਉਣਾ      | ਆਨਾ                     | ਇਕਸਾਰ   | ਬਰਾਬਰ, ਸਮਤਲ   |
| ਆਹੇ       | ਜੀ ਹਾਂ                  | ਇਕੱਠ    | ਏਕਤ੍ਰਤਾ, ਭੀੜ  |
| ਆਕੜਨਾ     | ਅਕੜਨਾ                   | ਇਕੱਲਾ   | ਇਕੇਲਾ         |
| ਆਖਣਾ      | ਕਹਨਾ                    | ਇਚਰਾਂ   | ਅਭੀ           |
| ਆਂਡਾ      | ਅੰਡਾ                    | ਇਜੜ     | ਰੇਕੜ          |
| ਆਂਦਰਾਂ    | ਅੰਤਰਿਧਾਂ                | ਇੱਟ     | ਇੱਟ           |
| ਆਪੇ       | ਅਪਨੇ ਆਪ                 | ਇੱਡਾ    | ਇਤਨਾ          |
| ਆਪੇ ਆਪਣਾ  | ਅਪਨਾ ਅਪਨਾ               | ਇੱਥੇ    | ਧਹਾਂ          |
| ਆਫਰਨਾ     | ਅਫ਼ਾਰ ਹੋਨਾ, ਮਦਮਸ਼ਤ ਹੋਨਾ | ਇੱਦਾਂ   | ਇਸ਼ ਪ੍ਰਕਾਰ    |
| ਆਲਾ ਦੁਆਲਾ | ਪਰਿਬੇਸ਼, ਵਾਤਾਵਰਣ        | ਇਨ੍ਹਾਂ  | ਇਨ੍ਹਾਂਨੇ      |
| ਆਲੂਣਾ     | ਘੋਂਸਲਾ                  | ਇੱਲ     | ਚੀਲ           |
| ਆੜੀ       | ਸਿਤਰ                    | ਇਵੇਂ    | ਧੀਂਹੀ         |
| ਐਠਨਾ      | ਏਂਠਨਾ                   | ਈਨ      | ਹਠ            |

|              |               |          |                |
|--------------|---------------|----------|----------------|
| औतकां        | अबकी          | ਈਰਖਾ     | ईर्ष्या        |
| औतवार        | इतवार         | ਏਕਾ      | एकता           |
| औपर          | किन्तु        | ਏਡਾ      | इतना           |
| औहें         | योंही, मुफ़्त | ਏਥੇ      | यहां           |
| औरा          | नींव          | ਇੰਜ      | यों, इस प्रकार |
| औकड़         | अड़चन         | ਇੰਨ ਬਿੰਨ | हू, बहु        |
| औध           | कठिनाई        | ਇੰਨਾ     | इतना           |
| औधड़         | विकट समय      | ਸਈ       | सखी            |
| औउरा         | अपुत्र        | ਸਸ       | सास            |
| औउ पेंउ      | अनावृष्टि     | ਸਹੁਰੀ    | सुसरी          |
| अंगाली-संगली | साथ साथ       | ਸਕਣਾ     | सकना           |
| अंगिआर       | चिंगारी       | ਸੱਕਾ     | सगा            |
| अंज          | अंग           | ਸਕੱਤਰ    | Secretary      |
| अंन          | अन्न          | ਸਗਵਾਂ    | समरूप          |
| अंनु         | अन्धा         | ਸਗੋਂ     | बल्कि          |
| सचे सच       | सच सच         | ਸਿਓਂਕ    | दीमक           |
| सजरा         | ताज़ा, टटका   | ਸਿੱਖਣਾ   | सीखना          |
| सँजा         | दायां, सीधा   | ਸਿਖਾਉਣਾ  | सिखाना         |
| सँट          | चोट           | ਸਿੰਗ     | सिंग           |
| सँठ          | साठ           | ਸਿਜਣਾ    | भीगना          |
| सटे          | समेत          | ਸਿੰਜਣਾ   | सींचना         |
| सँउ          | सात           | ਸਿਰਨਾਵਾਂ | सिरनामा        |
| सदाਉਣा       | बुलवाना       | ਸੁਆਦ     | स्वाद          |
| सदी          | शदी           | ਸੁਆਮੀ    | स्वामी         |
| सँप          | साँप          | ਸੁਆਰਨਾ   | संवारना        |
| सड           | सब            | ਸੁਕਣਾ    | सूखना          |
| समझाਉਣा      | समझाना        | ਸੁਖਾਲਾ   | सरल            |
| समीधिआ       | समीक्षा       | ਸੁਝਣਾ    | सूझना          |
| सरथी         | प्रभात        | ਸੁੰਘਣਾ   | सुंघता         |
| सरमाਉਣा      | शर्माना       | ਸੁਚੱਮ    | शौच, पवित्रता  |
| सरां         | सराय          | ਸੁਟਣਾ    | फँकना          |

|         |               |        |            |
|---------|---------------|--------|------------|
| ਸਰਾਪ    | ਸ਼ਾਪ          | ਸੁੱਤਾ  | ਸੋਧਾ       |
| ਸਰ੍ਹੋਂ  | ਸਰਸੀਂ         | ਸੁਦਾਈ  | ਸੌਦਾਈ      |
| ਸਲੂਣਾ   | ਬੰਧਨਾ         | ਸੁਨੇਹਾ | ਸੰਦੇਸਾ     |
| ਸਲੂਥਾ   | ਨਮੀ           | ਸੁਲਫ਼ਈ | ਸੁਲਫ਼ੀ     |
| ਸਵਖਤੇ   | ਸਮਧ ਪਰ        | ਸੁਣਾ   | ਸੁਸੂਤ ਹੋਨਾ |
| ਸਵੇਲੇ   | ਸਵੇਰੇ         | ਸੈਦ    | ਸ਼ਾਧਦ      |
| ਸਾਉਣ    | ਸਾਕਨ          | ਸੋਚਣਾ  | ਸੋਚਨਾ      |
| ਸਾਹ     | ਸਾਂਸ          | ਸੋਟਾ   | ਸੌਟਾ       |
| ਸਾਕ     | ਸੰਬਧਾ         | ਸੋਹ    | ਸੌਗੰਧ      |
| ਸਾਨ੍ਹ   | ਸਾਂਡ          | ਸੋਖਾ   | ਸੁਖਦ       |
| ਸਾਂਭਣਾਂ | ਸੰਮਾਲਨਾ       | ਸੋਣਾ   | ਸਾਨਾ, ਨਿਦਾ |
| ਸਾਵਾ    | ਹਰਾ           | ਸੋੜ    | ਤੰਗੀ       |
| ਸਾਵੀਂ   | ਬਰਾਬਰ         | ਸੰਗਲ   | ਸਗਲ        |
| ਸਾੜਨਾ   | ਜਲਾਨਾ         | ਸੰਗਣਾ  | ਹਿਚਕਿਚਾਨਾ  |
| ਸਿਆਣਪ   | ਸਮਝਦਾਰੀ       | ਸੰਘ    | ਗਲਾ        |
| ਸਿਆਣਾ   | ਸਧਾਨਾ         | ਸੰਘਣਾ  | ਸਧਨ        |
| ਸਿਆਪਾ   | ਸਾਤਮ          | ਸੰਝ    | ਸਾਂਝ       |
| ਸੰਢਾ    | ਸੈਂਸਾ         | ਕਢਣਾ   | ਨਿਕਾਲਨਾ    |
| ਸੰਤੋਖ   | ਸਨ੍ਤੋਖ        | ਕਣਕ    | ਕਨਕ        |
| ਸੰਨ੍ਹ   | ਸੇਂਧ          | ਕੜੂਰਾ  | ਪਿਲਾ       |
| ਹੱਛਾ    | ਅਚੱਛਾ, ਸੁਚੱਛਾ | ਕਦੇ    | ਕਮੀ        |
| ਹੱਥ     | ਹਾਥ           | ਕਦੀ    | ਕਮੀ        |
| ਹਵਾੜ    | ਭਾਫ           | ਕਦੇਂ   | ਕਥ         |
| ਹੜ੍ਹ    | ਭਾਫ਼          | ਕਮਲਾ   | ਪਾਗਲ       |
| ਹਾਸਾ    | ਹੰਸੀ          | ਕਮਾਉਣਾ | ਕਮਾਨਾ      |
| ਹਾਕ     | ਹਾਂਕ          | ਕਰੜਾ   | ਕੜਾ        |
| ਹਿੱਕ    | ਛਾਤੀ          | ਕਰੰਡੀ  | ਕਰਨੀ       |
| ਹੀਂਗਣਾ  | ਹੀਂਗਨਾ        | ਕੱਲਾ   | ਝੁਕੇਲਾ     |
| ਹੁਸੜਨਾ  | ਉਦਾਸ ਹੋਨਾ     | ਕਲਾਵਾਂ | ਭੁਜ-ਭਰ     |
| ਹੁਣ     | ਅਬ            | ਕੜਛਾ   | ਕਲਛਾ       |
| ਹੁਣੇ    | ਅਮੀ           | ਕੜਾਹ   | ਹਲਵਾ       |

|          |               |         |              |
|----------|---------------|---------|--------------|
| हेक      | टेर           | वां     | कव्वा        |
| हेठां    | नीचे          | बाबा    | बच्चा, नन्हा |
| हैद      | अस्तित्व      | बाबी    | बच्ची, नन्ही |
| हेर      | और            | बाभ     | कार्य, विवाह |
| हंगुतरा  | हुंकार        | बाठा    | काना         |
| हंभु     | अश्रु         | बाठी    | लेखनी, तीर   |
| हंभला    | हल्ला         | बालभ    | कालिख        |
| बहाउरुणा | कहलाना        | बिछुंने | क्योंकि      |
| बहाली    | कहानी         | बिहडा   | कौनसा        |
| बॅध      | कख, तिनका     | बिहा    | कैसा         |
| बॅच      | कंच           | बिमे    | किसी         |
| बॅह      | काँख          | बिँडा   | कितना        |
| बॅहा     | कछनी          | बिउते   | कहीं         |
| बहु      | कछुआ          | बिँधे   | कहां         |
| बॅजटा    | ढांपना        | बिदां   | कैसे         |
| बटला     | काटना         | बिँना   | कितना        |
| बॅठा     | इकटठा         | बिठिआना | किराना       |
| बिहें    | कैसे          | बंप     | दीवार        |
| बी       | क्या          | बंन     | कान          |
| बीबू     | क्योंकर       | बंघटा   | काँपना       |
| बीता     | किया          | बंम     | काम          |
| बुँकज    | सुर्गा        | भरचा    | चालाक        |
| बुँहज    | गोद           | भटिआਈ   | खटाई         |
| बुझ      | कुछ           | भडी     | क्षत्रिय     |
| बुँघा    | कुबड़ा        | भरभूजा  | खरबूजा       |
| बुँडी    | कुतिया        | भाठा    | खाना         |
| बुटला    | कूटना, तोड़ना | भारा    | खारी         |
| बुवेला   | असमय          | भुँड    | बिल          |
| बुडी     | लड़की         | भिआल    | ख्याल        |
| बुझमाਈ   | सगाई          | भिडैठा  | खिलौना       |
| बुखटा    | चीखना         | भुलुटा  | खुलना        |

|        |                  |        |                   |
|--------|------------------|--------|-------------------|
| ਫੂਲਾ   | ਕੋਮਲ             | ਖੇਡ    | ਖੇਲ               |
| ਕੋਓੜਾ  | ਕਯੋੜਾ            | ਖੈਰ    | ਮਿੱਖਾ, ਸੁਖ ਸ਼ਾਂਤਿ |
| ਕੋਹਾ   | ਕੈਸਾ             | ਖੈਰੜਾ  | ਪੀਛਾ              |
| ਕੋਡਾ   | ਕਿਤਨਾ            | ਖੇੜਾ   | ਗਦਹਾ              |
| ਕੈਹਾਂ  | ਕਾਂਸੀ            | ਖੋਪਾ   | ਖੋਪਾ              |
| ਕੋੜਾ   | ਕੁਰੂਪ            | ਖੇੜਾ   | ਦਲਦਲ              |
| ਕੋਠਾ   | ਕਮਰਾ             | ਖੇਰ    | ਵੈਰ               |
| ਕੋਰੜਾ  | ਕੋੜਾ             | ਖੋਲਾ   | ਖੰਡਰ              |
| ਕੋਲ    | ਪਾਸ              | ਖੋਲੁਣਾ | ਖੋਲਨਾ             |
| ਕੋਲਾ   | ਕੋਯਲਾ            | ਖੰਡ    | ਖਾਂਡ              |
| ਕੋਣ    | ਕੌਨ              | ਖੰਡਾ   | ਤਲਵਾਰ             |
| ਕੋੜਾ   | ਕੜਕਾ             | ਖੰਡ    | ਪੱਖ               |
| ਕੰਗਾਲ  | ਨਿਰੰਨ            | ਗਾਹਣਾ  | ਗਹਨਾ              |
| ਕੰਘਾ   | ਕੰਘੀ             | ਗੱਜਣਾ  | ਗਜਨਾ              |
| ਕੰਜਰੀ  | ਕੰਚਨੀ            | ਗੱਡਾ   | ਛਕੜਾ, ਬਹਲੀ        |
| ਕੰਡਾ   | ਕਾਂਟਾ            | ਗਡਵਾ   | ਗਡਵਾ              |
| ਕੰਢਾ   | ਕਿਨਰਾ            | ਗਭਰੂ   | ਯੁਵਕ              |
| ਗਰਬ    | ਗਰਵ              | ਘੁਟ    | ਘੁੱਟ              |
| ਗੱਲ    | ਬਾਤ              | ਘੁੰਡ   | ਘੁੰਘਟ             |
| ਗਲੁ    | ਗਾਲ              | ਘੋਲ    | ਕੁਸ਼ੀ             |
| ਗਵਾਂਢ  | ਪੜੋਸ             | ਘੰਡੀ   | ਗਲਾ               |
| ਗਾਂ    | ਗਾਏ              | ਚੱਟਣਾ  | ਚਾਟਨਾ             |
| ਗਾਲੜ   | ਗਿਲਹਰੀ           | ਚੱਟੀ   | ਦਡ                |
| ਗਾਉਣਾ  | ਗਾਨਾ             | ਚਜ     | ਜਾਂਚ              |
| ਗਾਲੂ   | ਗਾਲੀ             | ਚਲਾਉਣਾ | ਚਲਾਨਾ             |
| ਗਿੱਚੀ  | ਗਰਦਨ             | ਚਲਾਕ   | ਚਾਲਾਕ             |
| ਗਿਝਣਾ  | ਹਿਲਮਿਲ ਜਾਨਾ      | ਚੁੰਢੀ  | ਚੌਬੀਸ             |
| ਗਿੱਟਾ  | ਟਖਨਾ             | ਚਾਉਲ   | ਚਾਵਲ              |
| ਗਿੱਟੜ  | ਗੀਦੜ             | ਚਾਨਣ   | ਚਾँਦਨੀ, ਪ੍ਰਕਾਸ਼   |
| ਗਿੱਧਾ  | ਏਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕਾ ਨਾਚ | ਚਿੱਕੜ  | ਕੀਚੜ              |
| ਗੁਆਚਣਾ | ਗੁਮ ਹੋਨਾ         | ਚਿੱਥ   | ਗਢਾ               |



|            |            |              |                 |
|------------|------------|--------------|-----------------|
| गुँझा      | गुप्त      | चिर          | देर             |
| गुट        | गट्टा      | चिझी         | चिड़िया         |
| गुँडा      | पतंग       | चीकड़ा       | चीखना, चिल्लाना |
| गुँउ       | बेनी       | चुँकड़ा      | उठान            |
| गोझ        | फेरा       | चुँज         | चोंच            |
| गोहिआ      | गोबर       | चुँनी        | चूनरी           |
| गोरा       | फिरंगी     | चुढेर        | चारों ओर        |
| गोका       | गाए का     | चुँडी        | गोता            |
| गोगाड़     | पेट        | चुँली        | कुल्ला          |
| गोडा       | घुटने      | चुँटे        | काकपक्ष केश     |
| गंघ        | गांठ       | चुँडी        | घुटकी           |
| गंघड़ी     | गठड़ी      | चुँडा        | लिट             |
| गुँटा      | धूल        | चुपड़ा       | चूसना           |
| गुणा       | घना        | चेउते रधला   | याद रखना        |
| गुा        | घास        | चेर          | चंवर            |
| गुाटी      | घानी       | चेल          | चावल            |
| गुि        | घी         | चंगा         | ठीक             |
| चंदरा      | बुरा, नटखट | निछिं        | ज्यों           |
| चंघड़ना    | चिमटना     | निहड़ा       | जो              |
| हकड़ा      | सेवन करना  | निचिर        | जितनी देर तक    |
| हॉज        | छाज        | निवे         | जहां            |
| हट         | बोरी       | निंता        | जितना           |
| हड्डा      | छोड़ना     | निमीदार्     | जमींदार         |
| हटकला      | झुंझना     | नीछिंटा      | जीना            |
| हँना       | कटोरा      | नी आदिआं नूँ | स्वागतम्        |
| हमक        | छड़ी       | ने           | यदि             |
| हाह        | छाछ        | निहड़ा       | जो              |
| हाह वेल्ला | सवेरा      | नोपटा        | तोलना           |
| हां        | छांह, छाया | नोरा         | योग्य           |
| हालनी      | छलनी       | नोड़ा        | पौशाक           |
| हाषा       | टोकरा      | नोँ          | जौँ             |

|       |                      |             |                     |
|-------|----------------------|-------------|---------------------|
| ਛਾਲ   | छलांग                | ਜੰਘ         | ਜਾਂਘ                |
| ਛਿੱਕ  | छींक                 | ਜੰਘ         | ਬਾਰਾਤ               |
| ਛਿੱਕਾ | छींका                | ਜੰਮਣਾ       | ਜਨਮਨਾ               |
| ਛਿਟ   | छींटा                | ਝੰਝਣ        | ਆਂਧੀ                |
| ਛਿੱਤਰ | जूते                 | ਝੱਗਾ        | ਝਾਗ                 |
| ਛਿੱਲੜ | छिलका                | ਝਰਾ         | ਕੁਰਤਾ               |
| ਛੇਕ   | छेद                  | ਝਟ          | ਝਟ-ਪਟ               |
| ਛੇਤੀ  | जल्दी                | ਝਟਕਾ        | ਝਟਕਾ (ਕ੍ਰਪਾਣ ਕੇ)    |
| ਛੇਹ   | छवि                  |             | एक ही बार में पशु   |
| ਛੇਲੈ  | चने                  |             | को मार डालना)       |
| ਜੱਟ   | जाट                  | ਝੱਲਾ        | ਪਾਗਲ                |
| ਜਣਾ   | जना                  | ਝੇਲਾ        | ਝੋਲੀ; ਥੈਲਾ          |
| ਜੱਤ   | जटा                  | ਝਾਟਾ        | ਲਿਟ                 |
| ਜਦੋਂ  | जब                   | ਝਿਉਰ        | ਝੀਂਵਰ               |
| ਜੱਫੀ  | कलावा (भुजभर भेंटना) | ਝੀਤ         | ਦਰਾਡ                |
| ਜਾਣੂ  | वाकिफ, ज्ञाता        | ਝੁਕਾਉਣਾ     | ਝੁਕਾਨਾ              |
| ਜਾਪਣਾ | प्रतीत होना          | ਝੁੱਗੀ       | ਝੌਂਪੜੀ              |
| ਝੁੱਟੀ | झपट्टा               | ਠਾਠਾ        | ਥਾਨਾ, ਸਥਾਨ          |
| ਝੁੱਲ  | कम्बल                | ਠੀਕਰ        | ਠੀਕਰੀ               |
| ਝੁਟਾ  | हिलोर                | ਠੁਕ ਬੰਨ੍ਹਣਾ | ਧਾਕ ਜਮਾਨਾ           |
| ਝੇੜਾ  | झगड़ा                | ਠੁੱਡਾ       | ਠੋਕਰ                |
| ਝੇਟਾ  | भैंसा                | ਠੁੱਗਾ       | ਠੀਂਗਾ               |
| ਝੇਨਾ  | धान                  | ਠੇਡੀ        | ਠੋਡੀ                |
| ਝੇਰਾ  | ग्लानि               | ਠਕਣਾ        | ਰੋਕਨਾ               |
| ਝੰਗੀ  | घना जंगल             | ਠੰਗਰ        | ਢੋਰ ਪਸ਼ੁ            |
| ਟੱਕ   | काट                  | ਠੰਡ         | ਸ਼ੋਰ                |
| ਟਡਣਾ  | पसारना               | ਠੰਡੂ        | ਮੈਂਦਕ               |
| ਟੱਪਣਾ | उछलना                | ਠਾਂਗਾ       | ਲਾਠੀ                |
| ਟੱਲੀ  | घंटी                 | ਠਿਗਣਾ       | ਗਿਰਨਾ               |
| ਟਾਹਣੀ | शाखा                 | ਠੀਕ ਲਾਉਣਾ   | एक सांस में पी जाना |
| ਟਾਹਲੀ | शीशम                 | ਠੂੰਘਾ       | ਗਹਰਾ                |

|         |                    |           |                  |
|---------|--------------------|-----------|------------------|
| टांडा   | डंठल               | डेह       | डयोड़ा           |
| टिकाणा  | ठिकाना             | डोला      | मटका, डोला       |
| टिचकर   | व्यंग              | डोंडी     | डुंडिया          |
| टिंड    | लोटा, सिर          | डंग       | जून, डंक         |
| टिंल    | कठोर प्रयत्न       | डंग भारना | डंक मारना, डसना  |
| टीरा    | टेर                | छहटा      | गिरना            |
| टूक     | टुकड़ा, रोटी       | छबटा      | ढांकना           |
| टुंघी   | डुबकी              | छंगा      | बैल              |
| टुंघना  | कुरेदना, गुदगुदाना | छंटा      | सांड बैल         |
| टुरना   | रवाना होना         | छाहटा     | गिराना           |
| टूना    | टोना               | छाहटी     | मंडली            |
| टैघ     | गहना               | छाघा      | होटल             |
| टैर     | टट्टू (स्त्री)     | छिंड      | पेट              |
| टेआ     | गढ़ा               | छिला      | ढीला             |
| टेभा    | गढ़ा               | छीम       | ढेला             |
| टेलना   | ढूंढना             | उकटा      | ताकना            |
| ठलुना   | थामना              | उकड़ा     | तगड़ा, स्वरथ     |
| उकड़ी   | तकड़ी              | घां       | स्थान            |
| उंठा    | गर्म               | घिड़कटा   | घूकना            |
| उद      | तब                 | घिंपा     | चिकना            |
| उरना    | तैरना              | घुंक्     | थूक              |
| उरला    | मिन्नत             | घेरी      | खण्डहर           |
| उला     | तालाब              | दहीं      | दही              |
| उली     | हथेली              | दमटा      | बताना            |
| उां     | तब                 | दघटा      | दाबना            |
| उांघ    | उत्सुकता           | दल्लिंदर  | दरिद्र, दरिद्रता |
| उिआर    | तैयार              | दज दटटा   | चुप साधना        |
| उिह     | प्यास, तृष्णा      | दज        | दहेज             |
| उिकालां | त्रिकाल संध्या     | दाउ       | देन              |
| उिंन    | तीन                | दिहाड़ा   | दिक्स, दिन       |
| उिहरा   | तीन गुना           | दिवाली    | देवरानी          |

|         |                   |         |                 |
|---------|-------------------|---------|-----------------|
| ਤੀਕਰ    | ਤਕ                | ਦੀਵਾ    | ਦਿਆ, ਦੀਪਕ       |
| ਤੀਣਾ    | ਤੀਨ ਗੁਨਾ          | ਦੁਆਲੇ   | ਚਾਰों ओर        |
| ਤੀਲਾ    | ਤਿਨਕਾ             | ਦੁੱਧ    | ਦੂਧ             |
| ਤੀਵੀਂ   | ਤਿਯਾ, ਸਤ੍ਰੀ       | ਦੁਣਾ    | ਦੁਗਨਾ           |
| ਤੁਪਕਾ   | ਬੂੰਦ              | ਦੇਣਾ    | ਦੇਨਾ            |
| ਤੂੜੀ    | ਭ੍ਰੂਸਾ            | ਦੰਦ     | ਦਾਂਤ            |
| ਤੇ      | ਅਤ, ਔਰ            | ਧਾਈਂ    | ਧਾਨ             |
| ਤੇਹ     | ਪ੍ਰਾਸ             | ਧਾੜ     | ਹਮਲਾ, ਆਕ੍ਰਮਣ    |
| ਤੇੜ     | ਕਟਿ ਪਰ ਬਾਂਧਾ ਕਪੜਾ | ਧਾੜਵੀ   | ਲੁਟੇਰਾ          |
| ਤੇਪਾ    | ਬਖਿਯਾ             | ਪਿੰਗਾਣੇ | ਬਲਾਤ            |
| ਤੇੜੀ    | ਅੰਤ ਤਕ            | ਧਿਰ     | ਪੱਖ             |
| ਤੋਂ     | ਸੇ                | ਪੁਖਣਾ   | ਸੁਲਗਨਾ          |
| ਤੇਖਲਾ   | ਧੋਖਾ              | ਪੁਵਾਈ   | ਧੁਲਾई           |
| ਤੰਦ     | ਤਾਂਤ              | ਪੁੱਪ    | ਧੂਪ             |
| ਤਿੰਦਣ   | ਸਿੰਤ੍ਰੀਯੋਂ ਦੀ ਸਭਾ | ਪੁੰਨੀ   | ਨਾਮਿ, ਤੁਝੀ      |
| ਥਕੇਵਾਂ  | ਥਕਾਵਟ             | ਪੁੰ     | ਧੁਆਂ            |
| ਥਲੇ     | ਨੀਚੇ              | ਪੈਣ     | ਗਰਦਨ, ਗਲਾ       |
| ਨਹੂੰ    | ਨਖ                | ਪਟ      | ਜੰਘਾ            |
| ਨੱਕ     | ਨਾਕ               | ਪੱਠਾ    | ਹਰਾ ਚਾਰਾ        |
| ਨਚਣਾ    | ਨਾਚਨਾ             | ਪਤ      | ਭ੍ਰਜਤ           |
| ਨਠਣਾ    | ਦੌੜਨਾ             | ਪਤੀਜਣਾ  | ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਕਰਨਾ    |
| ਨਠਾਣ    | ਨਨਦ               | ਪਰਸ਼ਾਦ  | ਪ੍ਰਸਾਦ          |
| ਨਰੇਲ    | ਨਾਰਿਯਲ            | ਪਰਚਾਉਣਾ | ਸ਼ਾਤਮਪੁਰਸੀ ਕਰਨਾ |
| ਨਵਾਂ    | ਨਵੀਨ              | ਪਰਲੇ    | ਪ੍ਰਲਯ           |
| ਨਾਸ     | ਨਥਨਾ              | ਪਰਾਹੁਣਾ | ਅਤਿਥਿ, ਮੇਹਮਾਨ   |
| ਨਾੜ     | ਰਗ                | ਪਾਉਣਾ   | ਡਾਲਨਾ, ਪਾਵਨਾ    |
| ਨਾੜਾ    | ਅਜ਼ਾਰਬੰਦ          | ਪਾਸਕੂ   | ਪਾਸੰਗ           |
| ਨਾਨਕੇ   | ਨਨ੍ਹਾਲ            | ਪਿਓ     | ਪਿਤਾ            |
| ਨਿਆਣਾ   | ਅਜ਼ਾਨ, ਅਬੋਧ       | ਪਿੰਡ    | ਗਾਂਥ            |
| ਨਿਓਣਾ   | ਨਮਨ               | ਪਿੰਡਾ   | ਸ਼ਰੀਰ           |
| ਨਿਸਤਾਰਾ | ਭਬਾਰ              | ਪਿੰਨਾ   | ਗੋਲਾ            |

|         |                |         |              |
|---------|----------------|---------|--------------|
| निँका   | छोटा           | पिशाघ   | पेशाब, मूत्र |
| निधट्ट  | निकम्मा        | पुटला   | उखेड़ना      |
| निष्ठा  | उष्ण           | पुठा    | उलटा         |
| निँड    | छींक           | पुड़ी   | पुड़िया      |
| निषड़ना | सुलझना         | पुँगर   | पोच          |
| नीह     | नीच            | पुँझना  | पोंछना       |
| नीगर    | युवक           | पिह्वा  | पीछा         |
| नीवां   | नमन            | पेवे    | मायके        |
| नुकर    | नुकड़          | पेचना   | पोतना        |
| नूँह    | बहू            | पेला    | जूता         |
| नेड़े   | नज़दीक, निकट   | पंप     | पथ           |
| नूँछिना | नहाना          | ढँका    | मुट्ठी भर    |
| पंका    | पंखा           | ढँट     | धाव          |
| पँग     | पाग            | ढञ्जना  | पकड़ना       |
| पह्ना   | छेदना          | ढाही    | फांसी        |
| पज      | ओट, मिस, बहाना | ढिसना   | दब कर फटना   |
| पजामा   | पायजामा        |         | कुचला जाना   |
| ढिटिआ   | अकड़ा हुआ      | भरजायी  | भोजाई        |
| ढूक     | फूंक           | भरवँटे  | भवें         |
| ढुँढर   | फूफा           | भरा     | भ्राता, भाई  |
| ढुहड़ी  | चटाई           | भलके    | सवेरे        |
| ढेग     | कचरा           | भुंड़ा  | बर्तन        |
| ढंग     | पंख            | भुना    | इच्छा        |
| ढंड     | पिट्टाई        | भान     | रेजगारी      |
| घषझना   | प्रदान करना    | भुंघर   | अग्नि        |
| घँदल    | बादल           | भुवें   | चाहे         |
| घघेरा   | बहुतेरा        | भिउला   | भिगोना       |
| घनेरा   | मुंडेर         | भिधमंगा | भिखारी       |
| घलद     | बैल            | भिडिआ   | अष्ट         |
| घाहला   | बहुत           | भीड़ा   | तंग          |
| घांदर   | बंदर           | भूँध    | भूख          |

|        |             |         |               |
|--------|-------------|---------|---------------|
| ਬਾਰੀ   | ਖਿਡਕੀ       | ਭੂਆ     | ਬੁਆ           |
| ਬਾਲਣ   | ਝੰਧਨ        | ਭੁੰਡ    | ਮਿਡ           |
| ਬਾਲਣਾ  | ਜਲਾਨਾ       | ਭੇਡ     | ਮੇਡ           |
| ਬਿਹਾ   | ਬਾਸੀ        | ਭੈਣ     | ਬਹਨ           |
| ਬਿਮਾਰ  | ਬੀਮਾਰ       | ਭੈੜਾ    | ਬੁਰਾ          |
| ਬੀਜਣਾ  | ਬੀਜ, ਭੀਜ    | ਭਾਲਨਾ   | ਭ੍ਰਸ਼ਟ        |
| ਬੁਕੱਲ  | ਪਲਾ         | ਭੰਨਣਾ   | ਤੋੜਨਾ ਫੋੜਨਾ   |
| ਬੁਝਣਾ  | ਬੂਝਨਾ       | ਮਸਿਆ    | ਅਮਾਵਸ਼ਿਆ      |
| ਬੁਲ੍ਹ  | ਹੌਂਠ        | ਮਹਿੰ    | ਮੈਂਸ, ਮਹਿਥੀ   |
| ਬੁਰਕੀ  | ਗ੍ਰਾਸ       | ਮਗਰ     | ਪੀਚੇ          |
| ਬੂਹਾ   | ਦਰਵਾਜਾ      | ਮਝ      | ਮੈਂਸ          |
| ਬੂਥਾ   | ਸੁੰਢ, ਥੁਥਨੀ | ਮੱਥਾ    | ਮਾਥਾ          |
| ਬੋਝਾ   | ਬੋਝਾ, ਜੇਬ   | ਮਾਸ     | ਮਾੱਸ          |
| ਬੋਲਾ   | ਬਹਰਾ        | ਮਾਂਹ    | ਮਾਸ਼          |
| ਭਜਣਾ   | ਭਾਗਨਾ       | ਮਾਝਾ    | ਮੈਂਸਕਾ        |
| ਭਣਵਈਆ  | ਬਹਨਾਓ       | ਮਾਖਿਉਂ  | ਸ਼ਾਹਦ, ਮਸ਼ਿਕਾ |
| ਭਣੇਵੀਂ | ਭਾਯੀ        | ਮਾਝਾ    | ਬੁਰਾ          |
| ਮਿੱਝ   | ਮਯਜਾ, ਮਗਯ   | ਲੂਣ     | ਨਮਕ           |
| ਮੀਟਣਾ  | ਸੁੰਦਨਾ      | ਲੋਕ     | ਲੋਗ           |
| ਮਿੱਠਾ  | ਮੀਠਾ        | ਵਸੋਂ    | ਬਸਤੀ, ਆਬਾਦੀ   |
| ਮੁਕਣਾ  | ਸਮਾਪਤ ਹੋਨਾ  | ਵਣ      | ਬਹਾਵ          |
| ਮੁੱਛ   | ਸੁੱਚ        | ਵਹੁਟੀ   | ਬਹੂ, ਬਧੂਟੀ    |
| ਮੁਟਿਆਰ | ਸੁਕੀ        | ਵਖਰ     | ਕੁਨਬਾ, ਰਾਸ਼ਿ  |
| ਮੁੰਡਾ  | ਲਝਕਾ        | ਵਖਰਾ    | ਅਲਗ           |
| ਮੇਤਰਨਾ | ਨਾਪਨਾ       | ਵਗਾ     | ਵਰਗ, ਰੇਵਡ     |
| ਮੇਕਲਾ  | ਖੁਲਾ        | ਵੱਟ     | ਬੱਤੀ          |
| ਮੰਜੀ   | ਚਾਰਪਾਏ      | ਵਟਣਾ    | ਬਦਲਨਾ         |
| ਮੰਡਾ   | ਚਪਾਤੀ       | ਵਟਾਂਦਰਾ | ਅਦਲ ਬਦਲ       |
| ਮੰਦਾ   | ਬੁਰਾ        | ਵਢਣਾ    | ਵਧ ਕਰਨਾ       |
| ਰੱਖ    | ਝੰਝਰ        | ਵਢੀ     | ਰਿਸ਼ਵਤ        |
| ਰੁੱਖ   | ਵ੍ਰੁੱਖ      | ਵਧਣਾ    | ਬਢਨਾ          |

|         |           |        |              |
|---------|-----------|--------|--------------|
| वृं     | रुई       | हपोरे  | अधिकतर       |
| रिंदुटा | रांधना    | हवुना  | वरसना        |
| रिझवटा  | मथना      | हवु    | वर्ष         |
| रेव     | नकद       | हलढल   | छल कपट       |
| रैला    | शोर       | हलेटटा | लपेटना       |
| रैघा    | खुर्पा    | हझना   | दाखिल होना   |
| लहटा    | उतरना     | हा     | हवा, वायु    |
| लहुवा   | हलका      | हागी   | हल चलाना     |
| लहंदा   | पच्छिम    | हापु   | फालतू        |
| लव      | कटि, कमर  | हिल्ला | निठल्ला      |
| लाउटा   | लगाना     | हिगाठ  | व्यवहार      |
| लाहा    | लाभ       | हिच    | में, बीच में |
| लांभे   | परे, दूर  | हिचकार | बीच में      |
| लाझा    | दुल्हा    | हिकुटा | बेधना        |
| लमवटा   | लटकना     | हीली   | कलाई         |
| लिमझना  | लतपत होना | हझ     | बांस         |
| लीर     | चीथड़ा    | हँडटा  | बांटना       |
| लीझा    | कपड़ा     | हँन    | रंग          |

## ਪਰਿਸ਼ਿष्ट ਸਹਾਯਕ ਸਾਮਗਰੀ

### ਸਹਾਇਕ ਪੁਸਤਕਾਂ

1. ਉਰਦੂ-ਪੰਜਾਬੀ ਕੋਸ਼ : ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪਟਿਆਲਾ।
2. ਅਦਬੀ ਅਫਸਾਨੇ (ਫਾਰਸੀ ਅਖਰਾਂ ਵਿਚ) : ਜੋਸ਼ੁਆ ਫਜ਼ਲ ਦੀਨ, ਲਾਹੌਰ ਬੁਕ ਸ਼ਾਪ, ਲੁਧਿਆਣਾ।
3. ਸਾਹਿਤ ਭੂਸ਼ਨ : ਗੁਰਬਚਨ ਸਿੰਘ ਤਾਲਿਬ (ਸੰਪਾਦਕ), ਪੰਜਾਬ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ।
4. ਸਾਂਝਾ ਜੀਵਨ : ਐਸ. ਐਸ. ਅਮੇਲ।
5. ਸਾਡਾ ਰਹਿਣ ਸਹਿਣ : ਐਸ. ਐਸ. ਅਮੇਲ।
6. ਸਾਵੇ ਪੱਤਰ (ਕਵਿਤਾ) : ਪ੍ਰੋ. ਮੋਹਨ ਸਿੰਘ, ਹਿੰਦ ਪਬਲਿਸ਼ਰਜ਼, ਜਲੰਧਰ।
7. ਸੋਭਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ (ਪੰਜਾਬੀ ਅਖ਼ਤ ਤੇ ਮੁਹਾਵਰੇ) : ਪ੍ਰੋ. ਸਾਹਿਬ ਸਿੰਘ।
8. ਹੀਰ ਵਾਰਿਸ : ਡਾ. ਜੀਤ ਸਿੰਘ ਸੀਤਲ (ਸੰਪਾਦਕ), ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ।
9. ਕਿੰਗ ਮਿਰਜ਼ਾਂ ਤੇ ਸਪੋਰਾ : ਸੁਰਜੀਤ ਸਿੰਘ ਸੇਠੀ, ਜੀਵਨ ਸਾਹਿਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, ਜਲੰਧਰ।
10. ਘੋੜਾ ਬਾਦਸ਼ਾਹ (ਨਾਵਲ) : ਦੇਵਿੰਦਰ ਸਤਿਆਰਥੀ, ਨਵਯੁਗ ਪ੍ਰੈਸ, ਚਾਂਦਨੀ ਚੌਕ, ਦਿੱਲੀ।
11. ਚਾਹੇ ਸੇ ਪਾਓ : ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪਟਿਆਲਾ।
12. ਚਾਨਣ ਦੇ ਬੀਜ (ਕਾਣੀਆਂ) : ਨਵਤੇਜ ਸਿੰਘ, ਪ੍ਰੀਤ ਨਗਰ (ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ)।
13. ਚੋਣਵੀਂ ਪੰਜਾਬੀ ਕਵਿਤਾ : ਅਮ੍ਰਿਤਾ ਪ੍ਰੀਤਮ, ਸਾਹਿਤ ਅਕਾਦਮੀ।
14. ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀ ਰਾਸ (ਲੇਖ) : ਗੁਰਬਖਸ਼ ਸਿੰਘ, ਪ੍ਰੀਤ ਲੜੀ, ਪ੍ਰੀਤਨਗਰ।
15. ਜ਼ੀਰੋ (ਲੇਖ) : ਧਿਆਨ ਸਿੰਘ।
16. ਤਿਲ ਫੁੱਲ : ਕਨਹੈਯਾ ਲਾਲ ਕਪੂਰ, ਹਿੰਦ ਪਬਲਿਸ਼ਰਜ਼, ਜਲੰਧਰ।
17. ਨਵੀਆਂ ਸੋਚਾਂ (ਲੇਖ) : ਪ੍ਰੋ. ਤੇਜਾ ਸਿੰਘ, ਲਾਹੌਰ ਬੁਕ ਸ਼ਾਪ, ਲੁਧਿਆਣਾ।
18. ਪੰਜਾਬ ਮੇਂ ਉਰਦੂ : ਪ੍ਰੋ. ਹਾਫਿਜ਼ ਮਹਮੂਦ ਸ਼ੀਰਾਨੀ, ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪਟਿਆਲਾ।
19. ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਲੋਕ-ਗੀਤ : ਰੰਧਾਵਾ, ਸਤਿਆਰਥੀ, ਨਵਯੁਗ ਪ੍ਰੈਸ, ਦਿੱਲੀ।
20. ਪੰਜਾਬੀ-ਹਿੰਦੀ ਸ਼ਬਦ ਕੋਸ਼ : ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪਟਿਆਲਾ।
21. ਪੰਜਾਬੀ ਸ਼ਬਦ ਜੋੜ-ਕੋਸ਼ : ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ।
22. ਪੰਜਾਬੀ ਸ਼ਬਦ-ਭੰਡਾਰ : ਬਿਸ਼ਨ ਦਾਸ ਪੁਰੀ।
23. ਪੰਜਾਬੀ ਮੁਹਾਵਰਾ ਕੋਸ਼ : ਪੰਜਾਬ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ।
24. ਪੰਜਾਬੀ ਕਿਵੇਂ ਲਿਖੀਏ : ਪ੍ਰੋ. ਤੇਜਾ ਸਿੰਘ, ਹਿੰਦ ਪਬਲਿਸ਼ਰਜ਼, ਜਲੰਧਰ।
25. ਪੰਜਾਬੀ ਕੋਸ਼ : ਜਿਲਦ 1, 2, 3, 4 ਮਹਿਕਮਾ ਪੰਜਾਬੀ, ਪਟਿਆਲਾ।



26. ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਵਿਆਕਰਣ : ਦੁਨੀ ਚੰਦ, ਪੰਜਾਬ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ।
27. ਪੰਜਾਬੀ ਸਵੈ-ਸਿੱਖਿਅਕ : ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ ਪੰਜਾਬ, ਪਟਿਆਲਾ।
28. ਪੰਜਾਬੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਲਿਖਾਈ (ਉਰਦੂ ਰਾਹੀਂ) : ਡਾ. ਸੀਤਾਰਾਮ ਬਾਹਰੀ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ।
29. ਪੰਜਾਬੀ ਪਰਿਆਈ ਤੇ ਵਿਪਰਿਆਇ ਕੋਸ਼ : ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ।
30. ਪੰਜਾਬੀ ਪਾਰਿਭਾਸ਼ਿਕ ਸ਼ਬਦ-ਸੰਗ੍ਰਹ : ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ।
31. ਪੰਜਾਬੀ ਬਾਤਚੀਤ : ਸਰਧਾ ਰਾਮ ਵਿਲੋਰੀ, ਏ. ਪੀ. ਮਿਸ਼ਨ, ਲੁਧਿਆਣਾ।
32. ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ : ਦੁਨੀ ਚੰਦ, ਪੰਜਾਬ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਪਬਲੀਕੇਸ਼ਨ ਬਿਊਰੋ, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ।
33. ਪੰਜਾਬੀ (ਭਾਰਤ ਭਾਰਤੀ, ਹਿੰਦ ਰਾਹੀਂ) : ਰਾਸ਼ਟ੍ਰ ਭਾਸ਼ਾ ਪਚਾਰ, ਸਮਿਤੀ, ਵਰਧਾ।
34. ਪੰਜਾਬੀ ਲੋਕ-ਕਹਾਣੀਆਂ : ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ।
35. ਪੰਜਾਬੀ ਵੀਰ ਪਰੰਪਰਾ : ਡਾ. ਫੌਜਾ ਸਿੰਘ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ।
36. ਪਰਮ ਮਨੁੱਖ : ਗੁਰਬਖਸ਼ ਸਿੰਘ, ਪ੍ਰੀਤ ਨਗਰ (ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ)।
37. ਪਿੰਡ ਦੇ ਵੈਰੀ : ਜ਼ੋਸ਼ੁਆ ਫਜ਼ਲਦੀਨ, ਲਾਹੌਰ ਬੁਕ ਸ਼ਾਪ, ਲੁਧਿਆਣਾ।
38. ਬੇਸਿਕ ਪੰਜਾਬੀ : ਐਸ. ਐਸ ਅਮੇਲ, ਧਨਪਤ ਰਾਏ ਐਂਡ ਸਨਜ਼, ਜਲੰਧਰ।
39. ਬਾਲਮੀਕੀ ਰਮਾਇਨ : ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪਟਿਆਲਾ।
40. ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਕਿਰਸਾਣੀ ਜੀਵਨ : ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪਟਿਆਲਾ।
41. ਮਹਾਂ ਭਾਰਤ : ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪਟਿਆਲਾ।
42. ਮਹਿਕ ਦੀ ਮੋਤ (ਕਹਾਣੀਆਂ) : ਅਜੀਤ ਕੌਰ, ਨਵਯੁਗ ਪ੍ਰੈਸ, ਦਿੱਲੀ।
43. ਮੜੀ ਦਾ ਦੀਵਾ (ਨਾਵਲ) : ਗੁਰਦਿਆਲ ਸਿੰਘ, ਨਵਯੁਗ ਪ੍ਰੈਸ, ਦਿੱਲੀ।
44. ਮੇਰਾ ਪਿੰਡ (ਲੋਕ-ਜੀਵਨ) : ਗਿਆਨੀ ਗੁਰਦਿਤ ਸਿੰਘ, ਸਾਹਿਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ।
45. ਮੇਰਾ ਵਲੈਤੀ ਸਫ਼ਰਨਾਮਾ : ਕਮਲਾ ਅਕਾਲੀ, ਲਾਹੌਰ ਬੁਕ ਸ਼ਾਪ, ਲੁਧਿਆਣਾ।
46. ਰਾਮ ਕਥਾ : ਬਿਜੂ ਲਾਲ ਸ਼ਾਸਤਰੀ, ਨਵਯੁਗ ਪ੍ਰੈਸ, ਦਿੱਲੀ।
47. ਯਸੂ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ (ਫ਼ਾਰਸੀ ਅਖਰਾਂ ਵਿਚ) : ਜ਼ੋਸ਼ੁਆ ਫਜ਼ਲਦੀਨ, ਖਰਤ।
48. ਰਾਜ-ਪ੍ਰਬੰਧਕ, ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ : ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ।
49. ਲੋਕ ਆਖਦੇ ਹਨ : ਵਣਜਾਰਾ ਬੇਦੀ, ਪੰਜਾਬ ਸਾਹਿਤ ਅਕਾਡਮੀ, ਲੁਧਿਆਣਾ।
50. ਵਿਸ਼ਵ ਦੀ ਨੁਹਾਰ : ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ।

## ਪੰਜਾਬੀ ਪਤ੍ਰਿਕਾਵਾਂ

### (ਕ) ਰੋਜਾਨਾ

1. ਅਕਾਲੀ ਪਤ੍ਰਕਾ, ਜਲੰਧਰ।
2. ਅਜੀਤ, ਜਲੰਧਰ।
3. ਕੌਮੀ ਦਰਦ, ਜਲੰਧਰ।
4. ਦੇਸ਼ ਦਰਪਣ, ਕਲਕੱਤਾ।
5. ਨਵਾਂ ਜਮਾਨਾ, ਜਲੰਧਰ।
6. ਨਵੀਂ ਪ੍ਰਭਾਤ, ਕਲਕੱਤਾ।
7. ਰਣਜੀਤ, ਪਟਿਆਲਾ।

### ਪੰਜਾਬੀ ਫਿਲਮਾਂ

1. ਇਹ ਧਰਤੀ ਪੰਜਾਬ ਦੀ।
2. ਸੱਪਣੀ।
3. ਸੱਸੀ ਪੁੰਨੂੰ।
4. ਸ਼ੋਕਣ ਮੇਲੇ ਦੀ।
5. ਹੀਰ ਸਿਆਲ।
6. ਹੀਰ ਰਾਂਝਾ
7. ਖੇਡਣ ਦੇ ਦਿਨ ਚਾਰ।

## (ਖ) ਹਫਤਾਵਾਰ

1. ਅਮ੍ਰਿਤ ਪਤ੍ਰਿਕਾ, ਦਿੱਲੀ।
2. ਇੰਤਕਾਮ, ਪਟਿਆਲਾ।
3. ਸੰਘਰਸ਼, ਅਮ੍ਰਿਤਸਰ।
4. ਸਮੇਂ ਦੀ ਵੰਗਾਰ, ਪਟਿਆਲਾ।
5. ਸਾਂਝੀ ਦੁਨੀਆਂ, ਜਲੰਧਰ।
6. ਪੋਹ ਵੱਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ।
7. ਫਤਿਹ, ਦਿੱਲੀ।
8. ਫੌਜੀ ਅਖ਼ਬਾਰ, ਦਿੱਲੀ।
9. ਮੇਲ ਮਿਲਾਪ, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ।
10. ਲੋਕ ਰੰਗ, ਦਿੱਲੀ।

## (ਗ) ਮਾਹਵਾਰ

1. ਆਰਸੀ, ਦਿੱਲੀ।
2. ਕਵਿਤਾ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।
3. ਕੰਵਲ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।
4. ਜਨ ਸਾਹਿਤ, ਪਟਿਆਲਾ।
5. ਜਾਗ੍ਰਤੀ, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ।
6. ਨਾਗਮਣੀ, ਨਵੀਂ ਦਿੱਲੀ।
7. ਨਾਰੀ ਸੰਸਾਰ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।
8. ਪੰਜ ਦਰਿਆ, ਲੁਧਿਆਣਾ।
9. ਪ੍ਰੀਤਮ, ਦਿੱਲੀ।
10. ਪ੍ਰੀਤਲੜੀ, ਪ੍ਰੀਤਨਗਰ, (ਪੰਜਾਬ)
11. ਫਿਲਮੀ ਸੰਸਾਰ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।
12. ਬਾਲ ਜਗਤ, ਲੁਧਿਆਣਾ।
13. ਬੀਬਾ ਰਾਣਾ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

## 8. ਗੁੱਡੀ।

9. ਚੋਪੜੀ ਕਰਨੈਲ ਸਿੰਘ।
10. ਜੱਗਾ ਡਾਕੂ।
11. ਜੀਜਾ ਜੀ।
12. ਯੱਕੇ ਵਾਲੀ
13. ਦੁੱਲਾ ਭੱਟੀ।
14. ਦੋ ਲੱਛੀਆਂ।
15. ਧਰਤੀ ਵੀਰਾਂ ਦੀ।
16. ਪਿੰਡ ਦੀ ਕੁੜੀ।
17. ਫਰ।
18. ਬੰਜਾਰਾ।
19. ਭੰਗੜਾ।
20. ਮਦਾਰੀ।
21. ਮਾਈ ਮੁੰਡਾ।
22. ਮਾਮਾ ਜੀ।
23. ਮਿਰਜਾ ਸਾਹਿਬ।
24. ਮੈਂ ਜੱਟੀ ਪੰਜਾਬ ਦੀ।
25. ਮੰਗਤੀ।
26. ਯਮਲਾ ਜੱਟ।
27. ਲਾਜੇ।

## ਪੰਜਾਬੀ ਗ੍ਰਾਮੇਡੇਨ ਰਿਕਾਰਡਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

| ਕ੍ਰਮ | ਵਿਸ਼ੇ               | ਗ੍ਰਾਮੇਡੇਨ ਕੰਪਨੀ | ਨੰਬਰ     |
|------|---------------------|-----------------|----------|
| 1.   | ਇੰਜਨ ਚੂਚਾ, 1, 2     | ਹਿਜ਼ ਮਾਸਟਰ ਵਾਇਸ | N. 13605 |
| 2.   | (i) ਖਚਰਾ ਨੇਕਰ       | "               | N. 94123 |
|      | (ii) ਝੂਠਾ ਰਮਲੀ      | "               | "        |
| 3.   | (i) ਪਖੰਡੀ ਸੰਤ       | "               | N. 94129 |
|      | (ii) ਫੌਜੀ ਦੀ ਫੜ     | "               | "        |
| 4.   | (i) ਸੁਕੀਨ ਹਾਵਿਜ਼    | "               | N. 94140 |
|      | (ii) ਪੋਸਤੀ ਦਾ ਸੁਫਨਾ | "               | "        |

|                               |           |             |
|-------------------------------|-----------|-------------|
| 5. (i) ਜਜਮਾਨ ਜੀ               | "         | N. 13609    |
| (ii) ਮੇਲੇ ਦਾ ਹਾਲ              | "         | "           |
| 6. (i) ਹੁਣ ਆਇਆ ਜਮਾਨਾ ਪੈਸੇ ਦਾ  | "         | N. 94014    |
| (ii) ਬੁਢੇ ਦਾ ਵਿਆਹ             | "         | "           |
| 7. (i) ਠੰਡੀਆਂ ਮਿਠਾਈਆਂ         | "         | N. 4821     |
| (ii) ਪਟਿਆਲੇ ਦੀਆਂ ਬਾਤਾਂ        | "         | "           |
| 8. ਲੰਦਨ ਦੀ ਸੈਰ ਭਾਗ 1, 2 :     | ਕੋਲੰਬੀਆ   | G. E. 26492 |
| ਹਜ਼ਾਰਾ ਸਿੰਘ ਰਮਤਾ              | "         | "           |
| 9. ਲੁਧਿਆਣੇ ਦੀ ਸੈਰ 1, 2 :      | "         | G.E. 39510  |
| ਹਜ਼ਾਰਾ ਸਿੰਘ ਰਮਤਾ              | "         | "           |
| 10. (i) ਰਮਤੇ ਦੀ ਟਬਰ-ਦਾਰੀ 1, 2 | "         | G.E. 26519  |
| (ii) ਰਮਤੇ ਦੀ ਟਬਰ-ਦਾਰੀ 1, 2    | "         | "           |
| 11. (i) ਰਮਤੇ ਦਾ ਪੁੱਤਰ         | "         | G.E. 26830  |
| (ii) ਰਮਤੇ ਦਾ ਪੁੱਤਰ            | "         | "           |
| 12. (i) ਰਮਤੇ ਦਾ ਵਿਆਹ          | "         | G.E. 26505  |
| (i) ਰਮਤੇ ਦਾ ਵਿਆਹ              | "         | "           |
| 13. (i) ਰਮਤਾ ਟੇਸਨ ਤੇ          | "         | G.E. 26538  |
| (ii) ਰਮਤਾ ਸ਼ਹਿਰ ਵਿਚ           | "         | "           |
| 14. (i) ਅਜਕਲ ਦੇ ਰਾਂਝੇ         | "         | G.E. 26538  |
| (ii) ਅਜਕਲ ਦੀਆਂ ਹੀਰਾਂ          | "         | "           |
| 15. (i) ਰਮਤੇ ਦਾ ਦੂਸਰਾ ਵਿਆਹ    | "         | G.E. 39506  |
| (ii) ਰਮਤੇ ਦਾ ਦੂਸਰਾ ਵਿਆਹ       | "         | "           |
| 16. (i) ਗੁਲਾਬ ਤੇ ਕਪਾਹ ਦਾ ਫੁਲ  | ਰੀਗਲ      | R. 280      |
| (ii) ਗੁਲਾਬ ਤੇ ਕਪਾਹ ਦਾ ਫੁਲ     | "         | "           |
| 17. (i) ਜਾਟ ਸਿਪਾਹੀ            | "         | R. 11       |
| (ii) ਮਿਰਾਸੀ ਸਿਪਾਹੀ            | "         | "           |
| 18. (i) ਖਡਾਵਾ                 | ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ | H. 25002    |
| (ii) ਸਿਰਫ ਚਾਹ                 | "         | "           |

#### AIDS TO THE STUDY OF PUNJABI LANGUAGE

- (a) 1. *Anglo-Punjabi Dictionary* : Principal Teja Singh, Lahore Book Shop, Ludhiana.
2. *Comparative Phonolog of Hindi and Panjabi* : Dr. V B Arun Punjabi Sahitya Akadmi, Ludhiana.
3. *Lahndi Phonotics* : Dr. Hardev Bhari; Allahabad.
4. *Punjabi Manual and Grammars* :
- (i) *Punjabi Grammar* : E.P. Newton.

- (ii) *Punjabi Manual and Grammar*, T.F. Cummings and T. Grahme Bailey; Language Deptt., Patiala.
5. *Punjabi Phonetic Reader* : T.G. Bailey; Calcutta.
  6. *Punjabi Phonology and Ludhiana Reader* : Dr. Benarsi Das Jain.
  7. *Punjabi Proverbs and Idiomatic Phrases* : W.P. Hoirs.
  8. *Punjabi-English Dictionary* : Maya Singh, Languages Department Punjab, Patiala.
  9. *Punjabi-English Dictionary* : Prof. Gurcharan Singh and Prof. Saran Singh, Amritsar.
  10. *Punjabi-English Dictionary*; (A.P. Mission, Ludhiana) Language Department, Patiala.
  11. *Reference Grammar of Punjabi* : H.S. Gill.
- (b) Punjabi programmes are generally broadcast in the evenings from the following Radio Stations :
- |                    |              |
|--------------------|--------------|
| Lahore, Rawalpindi | (Pakistan)   |
| Jullundur, Delhi   | (India)      |
| Moscow             | (USSR)       |
| Voice of America   | (Washington) |
| B.B.C.             | (London)     |
- (c) 1. Documentary and feature films in Punjabi on social, cultural and other topics are available with the Films Division, Ministry of Information and Broadcasting, New Delhi.
2. Public Relations and Tourism Department, Punjab, Secretariat, Chandigarh can be helpful for the institutions which need such films in Punjabi.
3. Gramophone Records of skits, plays and talks in Panjabi are available with Gramophone dealers.